नीराजन

2012

उजाले अपनी यादों के
हमारे साथ रहने दो . . .

ब्रह्मलीन बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह

18 मई 1911 - 31 अक्टूबर 1993

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

ब्रह्मलीन श्रद्धास्पद 'बैरिस्टर साहब' जिन्हें वाणी सम्बन्धी तप सिद्ध था

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

उद्वेग न रखने वाला, सत्य प्रिय, हितकारक भाषण,
स्वाध्याय और अभ्यास करना, यह वाणी संबंधी
तप कहा गया है।

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2011-2012

संरक्षक

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह

सचिव

प्रबंध समिति : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

प्रधान सम्पादक

दुर्गेश वाजपेयी

सम्पादक (अंग्रेजी)

तृप्ति प्रेम

सम्पादक मण्डल

डॉ. मनोज शुक्ल

डॉ. मधुलता त्रिपाठी

पवन पाण्डेय

अरुण यह मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।

लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए-समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा-जल।

लहरें टकराती अनन्त की-पाकर जहाँ किनारा।

हेम-कुंभ ले उषा सबरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊँघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा॥

जयशंकर प्रसाद

विषय-सूची

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	पं. रामबालक मिश्र	01
2.	मेरे जीवन के पथ प्रदर्शक	पं. रामबालक मिश्र	02
3.	संपादकीय	दुर्गेश वाजपेयी	
4.	कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन	डॉ. योगेन्द्र भार्गव	03
5.	बैरिस्टर साहब की स्मृति में	कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्छल'	04
6.	विद्यालय की प्रगति आख्या	प्रकाश नारायण वाजपेयी	06
7.	सदाचार व सद्गुणों के अतलनीय पुंज	हरिकृष्ण सेठ	13
8.	तस्यैव जीवितम् श्लाघ्यै यः परार्थे हि जीवति	कुप. सी. सुदर्शन	15
9.	नमन	अटल बिहारी वाजपेयी	17
10.	एक कर्मयोगी की सुगन्धित स्मृति में	शिवशरण शर्मा	19
11.	सौजन्य और श्रेष्ठता के शिखर	रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी	22
12.	बैरिस्टर साहब	डॉ. विश्वेश्वर दयाल शुक्ल	25
13.	एक बहुमुखी व्यक्तित्व	गुलाब दत्त त्रिपाठी	34
14.	दैवी सम्पदा के धनी	डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल	39
15.	हिम शिखर सा वह उज्ज्वल व्यक्तित्व	डॉ. उपेन्द्र	42
16.	समुद्र इव गाम्भीर्ये, धैर्येण हिमानिव	अशोक सिंहल	45
17.	एक युग का पटाक्षेप	जे.पी. श्रीवास्तव	46
18.	बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंहः स्मृति के वातायन से	डॉ. कमल किशोर गुप्त	48
19.	मनः प्रसादः सौम्यत्वम्	ओम शंकर त्रिपाठी	52
20.	ईशावास्यमिदं सर्वम्	ओम शंकर त्रिपाठी	56
21.	एक दिव्य ज्योति का अवसान	गया प्रसाद वर्मा	63
22.	आशीर्वचन	बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह	64
23.	पढ़ाई में सफलता कैसे प्राप्त करें	वीतरागी	67
24.	पाथेय	बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह	69
25.	विद्यालय का वार्षिकोत्सव	श्रुति गुप्ता	71
26.	सत्संगति	श्रुति गुप्ता	78
27.	खुद को बदलो दुनिया तुम्हारे लिये स्वतः बदल जायेगी	आयुष त्रिपाठी	79
28.	महान वैज्ञानिक आइजक न्यूटन	मयंक शुक्ल	81
29.	थॉमस एल्वा एडीसन	मयंक शुक्ल	82
30.	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	अभिजीत त्रिपाठी	83
31.	हिन्दुस्तान का बेटा	मो. निहाल अहमद	84
32.	सुभाष चन्द्र बोस	प्रांजुल ओमर	85
33.	डॉ. विश्वेश्वरैया	अश्विनी अग्निहोत्री	86

34.	अब्राहम लिंकन	प्रणव त्रिपाठी	86
35.	स्वामी विवेकानन्द	अश्विनी कौशल	87
36.	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	उत्कर्ष तिवारी	88
37.	इच्छा पूरण-रवीन्द्र नाथ टैगोर	सचिन अग्निहोत्री	89
38.	लौहपुरुष- सरदार वल्लभभाई पटेल	अनुकृति शुक्ला	92
39.	महामना मदनमोहन मालवीय	शिखर सेंगर	94
40.	सच्चा व्यापार	गीतांशु सिंह	95
41.	गुरु नानक देव	ब्रह्मांश भारद्वाज	95
42.	स्वामी विवेकानन्द	श्रुति गुप्ता	96
43.	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	प्रशान्त सिंह चौहान	97
44.	स्वामिभक्त सरदार-सूरजमल	प्रशान्त सिंह चौहान	98
45.	सुभद्र की कथा	रोहन वर्मा	99
46.	ईमानदारी का फल	अंकित गुप्त	100
47.	गौतम बुद्ध	गीतांशु सिंह	101
48.	राजा की दयालुता	आशीष यादव	101
49.	कुण्डलिया	दुर्गेश वाजपेयी	102
50.	शिवाजी	प्रांजुल ओमर	102
51.	ईमानदारी का फल	राहुल रंजन	103
52.	झूठ का फल	आशीष यादव	103
53.	घर आये भगवान	अनुज ओमर	104
54.	नन्हे बच्चे का वह संदेश याद है	रोहित आजाद	105
55.	ईमानदारी का फल	आकाश गुप्त	105
56.	एलेक्जैंडर ग्राहम बेल	आशुतोष गुप्त	106
57.	तुम बदलोगे तो दुनिया तुम्हारे लिए स्वत: बदल जायेगी	अलंकृत गुप्त	107
58.	गुलियेल्मो मार्कोनी	आशुतोष गुप्त	109
59.	वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु	शिखर सेंगर	110
60.	विद्यार्थी का प्राण गीत	अभिषेक मिश्र	111
61.	वृक्ष	रोहित आनन्द	111
62.	सब कुछ पा जाओगे	पुण्डरीक शुक्ल	112
63.	कानपुर	रोहित राठौर	112
64.	महान लोग	रोहित राठौर	113
65.	जिन्दगी में हो अगर करना करिश्मा	वैभव ओमर	113
66.	सत्यमेव जयते	ऋषभ यादव	114
67.	मन का कुहासा	रितेश कुमार	114
68.	विषय	सत्यम सचान	115

69.	जीवन एक गणित है	निशान्त निगम	115
70.	शिशु आता	निकुंज दीक्षित	115
71.	वीरांगना लक्ष्मीबाई	सुकान्त द्विवेदी	116
72.	समय का चक्र	मोहित पाण्डेय	116
73.	बेटियाँ	अभिषेक कुमार	117
74.	भाग्यशाली	लोकेन्द्र प्रताप सिंह	117
75.	आओ साथी मिलकर पढ़ लें दीनदयाल स्कूल में	दीपांशु तिवारी	118
76.	देशभक्ति गीत	संदीप कुमार	118
77.	मेला	अक्षत	119
78.	सुभाषित	आयुष अग्निहोत्री	119
79.	यह कैसा बाल दिवस	अजीत विक्रम सिंह	120
80.	वतन के खातिर	प्रखर द्विवेदी	121
81.	हम भारत के वीर सिपाही	अभिषेक कुमार	121
82.	प्यासा चातक	सौरभ गुप्त	122
83.	चाह लक्ष्य की	राजीव कुमार	122
84.	माँ	रामनरेश सारस्वत	123
85.	शक्ति तुम्हारी	अभिषेक कुमार	123
86.	लक्ष्मी	अभिषेक शुक्ल	124
87.	वृक्ष हमारी जीवन रेखा	विकास कुमार	124
88.	बूझो तो जाने	प्रखर पाण्डेय	125
89.	जंगल	सौरभ कुमार	125
90.	एक बेटी की चाह	अभिषेक सोनी	125
91.	बड़ा ही महत्त्व	अविनाश कुमार	126
92.	ऐसा क्यों	संकल्प सिंह सेंगर	126
93.	किताबें	सौरभ कुमार	127
94.	साक्षरता का अभियान	अभिषेक कुमार	127
95.	बादल ये यायावार	शुभम श्रीवास्तव	128
96.	हमारा कानपुर	सहस्त्राब्दि सिंह साहू	128
97.	श्री हनुमान	मिली श्रीवास्तव	129
98.	चिड़ियों का संदेश	यथार्थ मिश्र	129
99.	चन्दा मामा	प्रद्युम्न सिंह	130
100.	माँ के संकल्प	अपूर्वा	130
101.	खुद को बदलो दुनिया तुम्हारे लिये स्वतः बदल जायेगी	शुभम् श्रीवास्तव	131
102.	परिणाम		134
103.	एक लोभी हिरन	धीरेन्द्र प्रताप	135

104.	एक ईमानदार लड़की	अभिषेक कुमार	136
105	वो भारत हमें जान से प्यारा	मिली श्रीवास्तव	136
106.	ईमानदारी	आकाश कुशवाहा	137
107	ईमानदारी	काजल	137
108.	जैसा करोगे वैसा भरोगे	अभिषेक राजपूत	138
109.	अब्राहम लिंकन	सुशील कुमार	138
110.	कार्ल मार्क्स	विश्वजीत कुमार	139
111.	लियो टाल्सटाय	अमित कुमार	139
112.	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी की भूमिका	वैभव वाजपेयी	140
113.	अब्दुर्रहीम खानखाना	अर्चित पाण्डेय	141
114.	बाबर	अमित कुमार	141
115.	महान दार्शनिक रूसो	अमित कुमार	142
116.	अनुशासन	राहुल राज	142
117.	नास्तिक पिता आस्तिक पुत्र	दीपक सिंह राठौर	143
118.	बुद्धिवाद और बुद्ध	अश्विनी अग्निहोत्री	143
119.	सुख दु:ख क्या है?	सोनम	144
120.	ममतामयी माँ	अश्वनी शाण्डिल्य	145
121.	वह अधूरा स्वप्न	अनुज ओमर	147
122.	भाषा	आकाश कुशवाहा	147
123.	अन्तर्ज्ञान	यश मिश्र	148
124.	वाह बिस्मिल	आयुष द्विवेदी	149
125.	काम ही मनुष्य का असली शत्रु है	रोहित आनन्द	150
126.	मैं तुझे अमृतमय कर दूँगा	प्रीति कुमारी	151
127.	शांति का मतलब कायरता नहीं	विकास कुमार	151
128.	कोकीन का घातक व्यसन	सुर्यांश सचान	152
129.	जन्म देने वाली माँ और मातृभूमि भारत माता	हर्ष पटेल	152
130.	विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान	हिमांशु यादव	153
131.	अच्छा निबन्ध कैसे लिखें?	हिमांशु यादव	154
132.	अकबर-बीरबल	सहस्त्राब्दि सिंह साहू	155
133.	संत एकनाथ	ऋषभ सिंह	156
134.	वनस्पतियों का हमारे जीवन से सम्बन्ध	रोहन मुकेश	156
135.	सफलता के सूत्र	आलोक कुमार	157
136.	जीवन और मृत्यु का सत्य	अनुज ओमर	158
137.	आचार्य परिवार		159
138.	अंग्रेजी प्रखण्ड		161

INDEX

Article	Name	P.No.
FROM THE EDITOR'S DESK	Mrs. Tripti Prem	161
I MET AN ANGEL	K.K. Gupta "Nishchhal"	162
ANNUAL SPORTS FUNCTION	Mrs. Tripti Prem	163
THANKS MA !	Sankalp Singh Sengar	163
CHIMKI - THE SQUIRREL	Alok Mehrotra	164
LAUGHTER IS THE BEST MEDICINE	Arjun Yadav	165
MY SCHOOL	Dhruv Omer	166
ANIMAL HELPERS	Prakhar Pandey	166
ALWAYS REMEMBER	Archit Pandey	167
GLOBAL WARMING	Aanand Mishra	167
DID YOU KNOW ABOUT TIGERS ?	Kritika Mishra	168
MATHEMAGIC	Rohit Anand	168
SECRETS OF SUCCESS	Lokendra Pratap Singh	169
100% DISCIPLINE	Yash Mishra	169
WHAT IF ???	Prince Singh	170
MANY WONDERS OF THE UNIVERSE	Pranjul Omer	170
THE EVENING IS COMING	Mansi Shukla	171
CHANGE WHAT YOU CAN	Shitanshu Singh Bhadauria	171
ENGLISH	Anukriti Shukla	172
DO YOU KNOW ??	Divya	172

TIPS FOR TRUE FRIENDSHIP	Satyendra Singh Yadav	173
A MATHEMATICAL WEDDING	Harsh Wardhan	174
CHRISTMAS	Preeti Kumari	175
HOW DID THE PLANETS FORM ?	Ajay Kunar	175
DID YOU KNOW ?	Prince Singh	176
DEAR COW	Mansi Shukla	176
MY SISTER	Akshat Dubey	176
THE LAUGHING - MANTRA	Amit Kumar	177
NEW YEAR GREETINGS IN 16 LANGUAGES	Lokendra Pratap Singh	177
WHAT IS I.M.E.I. NUMBER ?	Rohit Anand	178
THE BEST USE OF TIME	Sonam	178
WHO IS A TEACHER ?	Ashutosh Gupta	179
DAYS OF THE WEEK	Harshwardhan	179
KEYS TO SUCCESS	Kartikay Pratap Singh	180
TEACHERS	Jaya Srivastava	180
WINNERS OF VARIOUS COMPETITIONS HELD IN THE PRIMARY WING		181

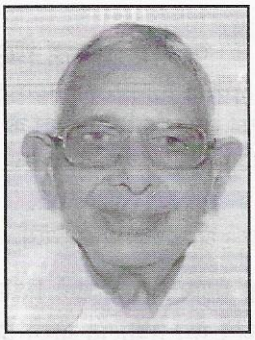

पं. राम बालक मिश्र
एडवोकेट
पूर्व चेयरमैन उ.प्र. बार कौंसिल
चेम्बर नं. 22, मोतीलाल अधिवक्ता भवन

निवास :
11-ए, संकल्प
सर्वोदय नगर, कानपुर

कार्यालय :
74/93, धनकुट्टी, कानपुर
फोन : 2355797

1 जनवरी, 2012

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अपने विद्यालय की पत्रिका ''नीराजन'' इस बार आप विद्यालय के संस्थापक मान्यवर बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह के जन्म शताब्दी वर्ष पर उनकी स्मृति में प्रकाशित करने जा रहे हैं।

इस हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। बैरिस्टर साहब एक धर्म निष्ठा, निष्काम कर्मयोगी, आदर्श अधिवक्ता, परम राष्ट्र भक्त एवं संस्कारयुक्त शिक्षा के प्रबल, प्रसारक थे। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा के स्फुटन एवं उनके जीवन निर्माण का सशक्त माध्यम होती है।

मैं इस पत्रिका की सार्थकता एवं सफलता की हार्दिक शुभ कामना करता हूँ।

आपका

पं. राम बालक मिश्र
(संस्थापना के आदि समय से प्रबन्ध समिति के सदस्य)

मेरे जीवन के पथ-प्रदर्शक

पं. राम बालक मिश्र
अध्यक्ष कानपुर महामण्डल

टिप्पणी : जीवन के नौ उज्ज्वल दशक पार कर चुके आदरणीय पं. रामबालक जी श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के वयोवृद्ध अध्यक्ष हैं। समाज सेवा का उनका लम्बा वृत्तान्त है। श्रद्धेय बैरिस्टर साहब से संभवत: वे नौ वर्ष छोटे हैं, तथा उनका लम्बा साथ रहा है। आज पंडित जी की छत्र-छाया में अनेक संस्थाएँ चल रही हैं। - **संपादक**

पढ़ने योग्य लिखा जाय, इससे लाख गुना बेहतर है कि लिखने योग्य किया जाय -श्रीराम शर्मा आचार्य

मान्यवर बैरिस्टर साहब का ऐसा ही जीवन व कर्म था। उनका जीवन इतना महान था कि उन्हें किसी लेख में आबद्ध नहीं किया जा सकता। मेरे तो वह प्रेरणा स्त्रोत थे। सन् 1944 में जब मैंने वकालत करने हेतु न्यायालय में प्रवेश किया तब उनके दर्शनों का लाभ मिला परन्तु निकटता हुई सन् 1951 से। जब मैं ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल का सदस्य हुआ और एक दशक बाद जब वे अध्यक्ष बने तब, उनकी कृपा से मैं महामण्डल का मंत्री चयनित हुआ। महामंत्री पं. बाबूलाल जी मिश्र के गोलोकवासी हो जाने पर उनके स्थान पर महामंत्री चयनित किया। तत्पश्चात वी.एस.एस.डी. कालेज सनातन धर्म विद्यालयों की प्रबन्ध कमेटियों का सदस्य हुआ। पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना हुई। उसमें विशेष योगदान रहा, श्रद्धेया सुशीला नरेन्द्र जीत सिंह का जिन्होंने न केवल धन ही दिया वरन स्वयं खड़े रहकर मुख्य भवन का निर्माण कराया। माननीय बैरिस्टर साहब ने व्यक्तिगत रुचि लेकर कठिन परिश्रम से पं. दीनदयाल जी के जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के आधार पर अपने प्रदेश का ही नहीं पूरे देश का एक आदर्श विद्यालय खड़ा कर दिया जिसके छात्र आज देश विदेश में ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। इस विद्यालय की गरिमामयी प्रबन्ध कारिणी में माननीय बैरिस्टर साहब के साथ माननीय भाऊराव देवरस, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) आदि राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महापुरुष रहे वहीं बैरिस्टर साहब की कृपा दृष्टि से संस्थापना के समय से मुझे भी सदस्य रहने का सौभाग्य प्राप्त रहा है।

माननीय बैरिस्टर साहब की हार्दिक अभिलाषा, बालिकाओं की शिक्षा के लिए प्रथक विद्यालय खोलने की थी जिसको मूर्त रूप सन् 1983 में बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन के रूप में दिया और उसमें प्रारम्भ से ही अपना सहयोगी रखा। आज वही विद्यालय प्रदेश का सर्वोत्तम विद्यालय होकर राष्ट्र सेवारत है। अब इस विद्यालय में सह शिक्षा हो गयी है जिससे माननीय बैरिस्टर साहब के स्वपनों को साकार करने हेतु बी.एन.एस. डी. शिक्षा निकेतन बालिका विद्यालय मेस्टन रोड की स्थापना की गयी है। दूसरा विद्यालय दुर्गावती दुर्गा प्रसाद सनातन धर्म बालिका विद्यालय भी उन्हीं के स्वपनों का साकार है।

मान्यवर बैरिस्टर साहब सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। प्रदेश के श्रेष्ठ अधिवक्ता, अधिवक्ता परिषद के प्रदेशीय अध्यक्ष, उ.प्र. के संघचालक अंत तक रहे।

मान्यवर बैरिस्टर साहब की प्रेरणा से माननीय अशोक जी सिंहल के माध्यम से सन् 1964 से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का स्वयं सेवक बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ और उन्हीं की प्रेरणा से विश्व हिन्दू परिषद का नगर अध्यक्ष, विभागाध्यक्ष व रामजन्म भूमि के मुक्ति आंदोलन में कार्यकारिणी का सदस्य हुआ। यद्यपि मैं उनसे हर प्रकार से बहुत छोटा था। परन्तु महामण्डल व शिक्षण संस्थाओं में मेरी राय का वे विशेष महत्व देते रहे। यह उनकी महानता का द्योतक है। यद्यपि आज वह पार्थिव शरीर से नहीं है परन्तु उनकी अमर आत्मा हमारा निरन्तर मार्ग दर्शन करती आ रही है, ऐसे महापुरुष को कोटि-कोटि नमन।

सम्पादकीय

''उजाले अपनी यादों के, हमारे साथ रहने दो।
न जाने किस गली में, ज़िंदगी की शाम हो जाए।''

श्रद्धेय बैरिस्टर साहब आज अगर होते तो 101 वर्ष के होते। लेकिन वे नहीं हैं, यह जीवन का सत्य है। सभी को एक अज्ञात निश्चित समय तक इस संसार में रहना है, कर्म-बंधन में बँधना है; और फिर इस संसार को छोड़कर एक अनन्त यात्रा पर चले जाना है। असंख्य लोग इस संसार में आते हैं और चले जाते हैं, वो याद नहीं रहते; लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने पैरों की निशानियाँ छोड़कर जाते हैं। ये निशानियाँ मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती हैं, इनका अर्थ खोलो और अपने पंथ का निर्धारण कर लो। कौन लोग याद रह जाते हैं - वे याद रह जाते हैं जो बड़े-बड़े काम करके जाते हैं, लोगों का दिल जीतकर जाते हैं। बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह ऐसे ही महामानव थे जो सभी का हृदय जीत कर गये हैं, मैं तो बड़ी श्रद्धा से उन्हें हृदयजीत सिंह कहना चाहूँगा। गीता का गहन अध्ययन ही उन्हें नहीं था बल्कि गीता को वे अपने जीवन में जीते थे। गीता के कुछ श्लोक उन्हें अत्यन्त प्रिय थे और उन्हें बैरिस्टर साहब ने अपने जीवन में उतार लिया था। सौ प्रतिशत जीवन में उतार लिया था। उन सभी की व्याख्या का यहाँ अवसर नहीं है, परन्तु **''अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रिय हितं च यत्, स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।''** जो उद्वेग न करने वाला, प्रिय, हितकारक एवं यथार्थ भाषण है तथा जो वेद-शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम जप का अभ्यास है - वही वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। यह वाणी का तप उन्हें सिद्ध था। वे नित्य प्रशान्त आत्मा थे, गुणों के सागर थे। अनेक लोगों ने उनके संस्मरण कहे हैं, जिनका मैंने इस पत्रिका में संकलन किया है। इन संस्मरणों में कुछ अभी लिखे गये हैं, और अधिकांश पुराने हैं। जो पुराने लिखे गये संस्मरण हैं, वे नीराजन के ही पुराने अंकों से अवतरित हैं।

जब अंधेरा होने लगता है तो हमें रोशनी की तलाश होती है। इसलिये वेदों में प्रार्थना की गयी है कि हे ईश्वर तुम हमको अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, असत्य से सत्य की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। बैरिस्टर साहब ने जो जीवन-आदर्श स्थापित किये हैं, वे हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले हैं। आज उन अच्छाइयों की जरूरत महसूस होती है।

-दुर्गेश वाजपेयी

अतीत के पृष्ठों से...

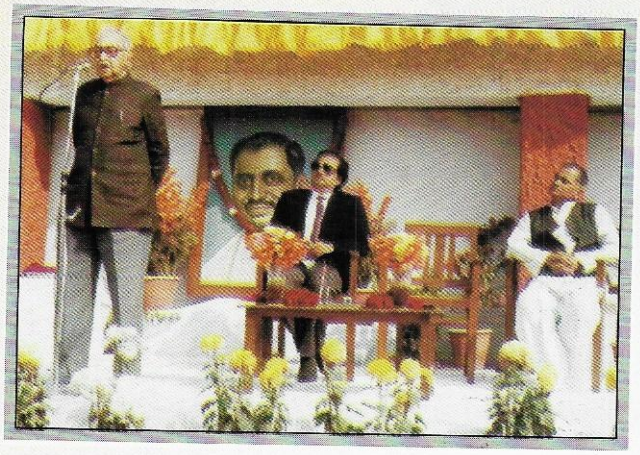

वार्षिक खेलकूद के अवसर पर श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का प्रेरक उद्‌बोधन, पीछे बैठे हैं कानपुर नगर के तत्कालीन जिलाधिकारी श्री रामशरण श्रीवास्तव तथा भूतपूर्व प्रधानाचार्य श्री ओम शंकर त्रिपाठी।

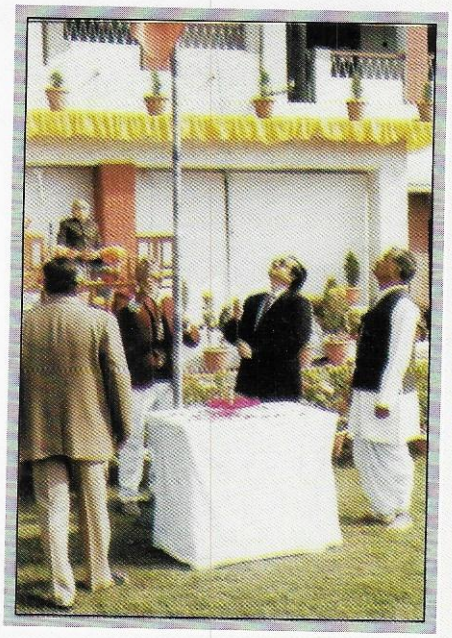

ध्वजारोहण करते हुए जिलाधिकारी श्री रामशरण श्रीवास्तव, भूतपूर्व प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी, आचार्य श्री सुभाष जी तथा मंच पर बैठे हैं बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी।

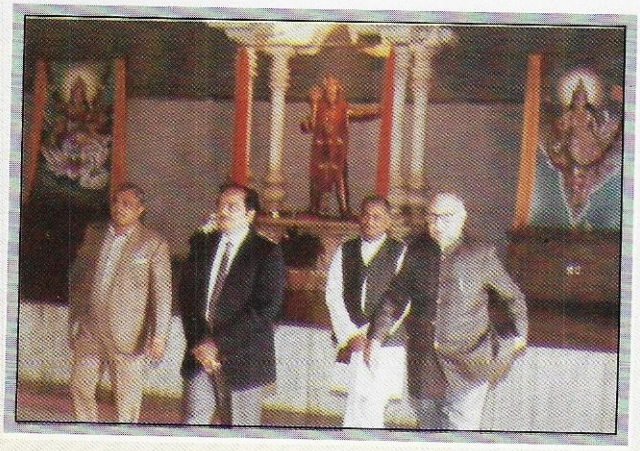

आंजनेय की प्रतिमा पर पुष्पार्पण कर बाहर निकलते हुए श्रद्धेय बैरिस्टर साहब, भूतपूर्व प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी, मुख्याभ्यागत श्री रामशरण श्रीवास्तव तथा श्री प्रयाग जी।

वैचारिक मंथन

कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन

बचपन में हमारा मन कोमल और निश्छल रहता है, हमें अपने भविष्य और अतीत की चिन्ता नहीं रहती थी। बड़े होने पर हम अशान्त हो जाते हैं और हमारे व्यवहार में छल आ जाता है। यदि हम ईश्वर पर अटूट विश्वास रखते हुए निश्छल रहेंगे तो हमको सच्चा सुख मिल सकता है। इस लेख में डॉ. योगेन्द्र भार्गव जी ने यह बात बहुत अच्छे ढंग से समझाई है। - सम्पादक

'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन' हिन्दी फिल्म के इस गीत को सुन कर मुझे अपना बचपन याद आ गया और उन पुरानी यादों में अपने आप को भुला कर एक सुखद अनुभव हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप किसी भी व्यक्ति से इस विषय पर बात करें तो उसके मुख से एक ही बात निकलेगी कि मेरा बचपन बहुत बढ़िया था। मेरे जीवन का स्वर्ण युग था। अब विचार करें क्या कारण है कि बचपन की यादें ताजा करते हुए, सबको सुखद अनुभव होता है। क्या प्रत्येक व्यक्ति के बचपन में सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधन थे, जो धीरे-धीरे समय के साथ छीने गए। सम्भवत: ऐसा नहीं है, तो फिर कुछ और कारण ढूँढ़ना होगा, ताकि हम आज का चिंतित जीवन भी बचपन की तरह आनन्दमय बना सकें।

इस पर मनन करते हुए एक बात सामने आई कि वस्तुत: बचपन में व्यक्ति वर्तमान में जीवन जीता है। बचपन में आने वाले कल की चिंता नहीं होती। बचपन में बीते हुए कल की पीड़ा अथवा खुशी का अहसास भी अधिक समय तक साथ लेकर नहीं चलते थे। क्या हम बचपन में अपने भाई-बहनों के साथ नहीं लड़ते थे? कई बार तो माता-पिता हमारी लड़ाई देख कर हमें अलग-अलग कमरों में बैठा देते थे, परन्तु आधे एक घंटे पश्चात हम पुन: खुशी-खुशी खेलना शुरू कर देते थे। यानि पिछले पल का कोई प्रभाव नहीं। पर आज हम अधिक पढ़े लिखे, समझदार होकर भी भूतकाल की बन्धनकारी स्मृतियों का बोझ लिए चिंतित और अशान्त रहते हैं। सालों पुरानी छोटी-छोटी घर की कहासुनी भी याद रखते हुए अपने व्यवहार में कड़वाहट भरे रहते हैं। आईये इस नववर्ष में संकल्प लें, आज से प्रसन्न मुद्रा में वर्तमान में रहते हुए, हरेक के साथ अपना व्यवहार मृदु रखेंगे। जैसा तुलसीदास जी ने कहा 'सीय राममय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी' और गीता में वर्णित है 'अद्वेष्टा सर्व भूतानाम, मैत्र: करुण एव च'।

पुन: 'बचपन' पर विचार करने पर याद आता है कि क्या हमें इस बात की चिंता होती थी कि खाने का प्रबन्ध कैसे हो रहा है? हमारे स्कूल की फीस कहाँ से आ रही है? सर्दियाँ आ गई तो गरम कपड़े कहाँ से आयेंगे? ऐसे अनेक प्रश्न मन में उठते हैं जिनका उत्तर इतना ही है कि हम तो 'बचपन' में थे, इन सभी का बोझ तो हमारे माता-पिता पर था। हम पूर्णतया निश्चिंत रहते थे, माता-पिता पर अटूट भरोसा रखते थे और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हुए, अपने कर्तव्य-कर्म पूर्ण निष्ठा से करते थे। आज परमपिता परमात्मा की प्रार्थना तो नित्य करते हैं - 'मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी'। पर वास्तव में अपनी चतुराई, छल, बल, कपटी व्यवहार पर भरोसा करते हुए, अपने को भाग्य विधाता मान कर, अहंकारी जीवन जी रहे हैं। अनुकूल परिस्थितियों में कुछ प्रसन्न रहते हैं, परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियाँ आते ही चिंतित और दुखी हो जाते हैं, टूट जाते हैं, अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं। हमें अपनी सोच व विचारों में परिवर्तन कर, अपना स्वकर्म पूरी निष्ठा, लगन व ईमानदारी से करना होगा। फिर जो फल हमें प्राप्त हो, उसे अपने कर्मों के विधान के अनुसार परमात्मा का प्रसाद मान कर सहर्ष स्वीकार करना चाहिये। यदि हम ऐसा कर सकें तो हमें यथार्थ में बचपन जैसा सुखद अनुभव भी होगा और हम उन दिनों जैसा आनछ ले पायेंगे, जहाँ माता-पिता की गोद में हमें चैन और सुकून मिलता था।

-डॉ. योगेन्द्र भार्गव

बैरिस्टर साहब की स्मृति में

कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्छल'
पूर्व प्रवक्ता आँग्ल भाषा
पं. दीन दयाल उपाध्याय स.ध. विद्यालय, कानपुर

टिप्पणी : श्री कृष्ण कुमार जी विद्यालय के सेवानिवृत्त अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता हैं। उनके जैसा मधुर तथा अलंकृत अंग्रेजी संभाषण मैंने संभवतः नहीं सुना है। वे श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का स्नेह पाने वाले सौभाग्यशाली व्यक्ति रहे हैं। मुझे उन्होंने बैरिस्टर साहब के अनेक संस्मरण सुनाए हैं। कवि भावुक होता ही है, इसीलिये उनके इस लेख में भावुकता छलक रही है। - **संपादक**

''शब्द नहीं उस महापुरुष के, करूँ गुणों का मैं वर्णन।
लिये लेखनी बैठा कब से, लिखने उनके संस्मरण।
अश्रुकणों से राख धुल गई, चमक उठे स्मृति-अंगारे
उसकी सुखद आँच का अनुभव, करने लगा पुनः तन मन।
हे विराट! हे महामहिम ! स्वीकारो मेरा पगवन्दन।
मन के दरपन में करता हूँ, मैं आज पुनः तेरे दर्शन।।
मैं आज पुनः तेरे दर्शन।।''

प्रथम चरण

सन् 1954 वी.एस.एस.डी. कालेज में प्रवेश, धीरेन्द्रजीत सिंह जी के साथ अध्ययन करने का अनूठा अनुभव, विक्रमाजीत सिंह मार्ग पर बने विशाल बंगले में आवागमन, बैरिस्टर साहब के आशीर्वचन, ममतमयी बू जी के हाथों परोसा गया स्वादिष्ट भोजन, बाहर के बरामदे में लगा आसन, फूलों के गमलों के बीच हरी घास पर बैठ दीन दुनिया का चिन्तन, बी.एन.एस.डी. ला क्लासेज़ में बिताये गये क्षण। बायें हाथ से लिखे छोटे-छोटे सुन्दर अक्षरों में लीगल प्रैक्टिस करने का ज़ोरदार आमन्त्रण वह भी देश की राजधानी दिल्ली में, क्योंकि कुछ पारिवारिक कारणों से कानपुर में न रहने की उनकी ज़िद तथा माननीय बैरिस्टर साहब द्वारा उन्हें समझाने की सीख-सभी कुछ आज भी याद है...।

द्वितीय चरण

सन् 1988 का महत्वपूर्ण वर्ष। पं. दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में प्रवक्ता के पद के लिए साक्षात्कार, माननीय बैरिस्टर साहब से वार्तालाप, प्राचार्य श्री ओमशंकर जी, श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी, पं. राम बालक जी मिश्र, श्री शिव शरण शर्मा जी आदि महान विभूतियों से समीप का परिचय एवं अविस्मरणीय भेंट, और फिर पूरे 55 मिनट का साक्षात्कार और वह भी बैरिस्टर सर के साथ (बिना पुराना परिचय दिये हुए) सभी कुछ अद्‌भुत तथा अद्वितीय। ओफ! उनके द्वारा पूछे गये प्रश्न, उनके उत्तर, उत्तरों की विवेचना, सारगर्भित टिप्पणी, चिर-परिचित वाणी में प्रशंसा, उनके सुन्दर, स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण आज तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं। कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी - शब्दों का ऐसा सुन्दर तथा सहज सामञ्जस्य, ऐसा उच्चारण न आज तक कहीं सुना है और न आज तक कहीं देखा है। अखिल भारतीय स्तर पर अनेकों साक्षात्कार दिये, बड़े-बड़े विद्वानों से मिला, ढेरों अंग्रेज प्राध्यापकों, भाषणकर्ताओं, धार्मिक गुरुओं से मिला, रेडियो, दूरदर्शन के अनेक मंचों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी के मूर्धन्य विद्वानों से विचार विनिमय किया किन्तु माननीय बैरिस्टर साहब की बात ही कुछ और रही है। उनके जैसा व्यक्तित्व, वैसा ज्ञान, वैसा आचरण, वैसा स्नेह, वैसा आदरभाव, वैसा त्याग, वैसी सरलता, वैसी शालीनता, मानव मन को समझ लेने की वैसी क्षमता न भूतो न भविष्यति है।

इस जन्म शताब्दी वर्ष में ऐसे विराट व्यक्तित्व पर मैं क्या लिखूँ, कितना लिखूँ, कहाँ से लिखूँ, कहाँ समाप्त करूँ, गागर में कैसे सागर भरूँ मेरी समझ में नहीं आता? मैं तो धन्य हो गया हूँ उनके तथा उनके श्रेष्ठ परिवार के सम्पर्क में आकर, उनके साथ इतने वर्ष बिताकर। डा. हेडगेवार जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर मेरी रचित तथा समर्पित ''केशव-कुसुमाञ्जलि'' पुस्तक में उन्हीं के कर कमलों द्वारा लिखी गई भूमिका मेरे जीवन की साहित्यिक साधना तथा सद्‌यात्रा का चिरस्थायी संबल है। काश! वे आज यहाँ होते, तो शायद सहन नहीं कर पाते हमें इस तरह रोते!!

''भावों के गहरे सागर में, है डूब गया मेरा अन्तर्मन।
स्मृति के कितने मणि-मोती बिखरे हैं सागर के आँगन।
किसको समेट लूँ, किसे छोड़ दूँ, निर्णय लेने में मजबूरी-
आती जाती हर साँस मेरी, लिख रही तुम्हारे संस्मरण!!
कह रही तुम्हारे संस्मरण.....!!!''

विद्यालय की प्रगति आख्या

युगद्रष्टा पं. दीन दयाल उपाध्याय के 95वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनंत काल तक आदर्श उद्धरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिये एक चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना-भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य-प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी **पूज्य भाऊराव,** इसकी आधारशिला रखने वाले युग पुरुष **परम पूज्य श्री गुरु जी,** भव्य भवन को मूर्त-रूप देने वाली **ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी** और इसकी कंचन-काया में प्राण संचरित करने वाले **श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिये पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीत जैन जी की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना इकतालीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय की कल्पना - शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति है। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्श पीढ़ी धीरे-धीरे समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है।

महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान-वीथी, भाऊराव-भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य-कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का 'पण्डित दीनदयाल सभागार।'

इस समय प्रथम से द्वादश तक 10 कक्षाओं के 21 अनुभागों में छात्रों की संख्या 975 है। इनमें से 275 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, बंगाल तथा मध्य प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय-परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य अधीक्षकों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान में 34 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रु. से अधिक मूल्य की 15000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में 6 दैनिक, 3 साप्ताहिक तथा 10 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश कक्षा का 1981 में उत्तर-प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (37 वर्षों का		द्वादश (30 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3609		3063	
कुल प्रविष्ट छात्र	3608	99.97	3061	99.93
उत्तीर्ण	3592	99.52	3044	99.37
ससम्मान	1429	39.59	1012	33.03
प्रथम श्रेणी	1801	49.90	1692	55.23
द्वितीय श्रेणी	352	09.75	335	10.93
तृतीय श्रेणी	0010	00.27	05	00.16

वर्ष 2011 का परीक्षा परिणाम निम्नांकित है –

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	137	141
कुल प्रविष्ट छात्र	137	140
उत्तीर्ण	137	140
ससम्मान	70	123
प्रथम श्रेणी	66	17
द्वितीय श्रेणी	01	00
तृतीय श्रेणी	00	00

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ –

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की की संख्या	प्रतिशत
3043	गणित 2691	आई.आई.टी.	318	11.81%
		अन्य इंजीनियरिंग संस्थान	1737	64.54%
	जीव विज्ञान 341	मेडिकल परीक्षायें	87	25.51%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं –

जे. ई. ई./संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई.आई.टी. मर्चेण्ट नेवी, धनबाद खनन महाविद्यालय तथा सी.बी.एस.ई.)	21
यू.पी.टी.यू./(क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	52
अन्य संस्थानों में चयनित छात्र	15
कुल (इंजीनियरिंग में) चयनित छात्र	73
प्रशासनिक सेवाएँ	03

एन.डी.ए. और सी.डी.एस. के माध्यम से सेना में पहुँचे लगभग 38 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 25 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस वर्ष चि. पीयूष वर्मा, महेन्द्र बहादुर सिंह तथा चि. पीयूष कटियार ने आई.ए.एस. परीक्षा में चयनित होकर विद्यालय के गौरव में श्री वृद्धि की है। विशेष बात यह है कि इन सबके विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित ''राष्ट्रीय प्रतिभा खोज'' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित ''संस्कृति ज्ञान परीक्षा'' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 52 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति
श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति
श्रीमती सावित्री अग्रवाल
श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल
श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति
श्री प्रेम नारायण जी सोमानी
आई.जे.एस. ट्रस्ट कानपुर
श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर कानपुर

श्रीमती संजना मित्तल

पूर्व छात्र चि. प्रवीण भागत

पूर्व छात्र चि. संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि. हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि. अजय गुप्त

कुल मिलाकर 41 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार वेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य

अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं –

अष्टम कथा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहे हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। साफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित साफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issues की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerized करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerized कर सकेंगे।

युग भारती

बाल, किशोर और तरुण-भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-सम्पर्क-योजनाओं आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष दिनांक 25 सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10.00 बजे से युग भारती का वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। यह वर्ष 1986 बैच के छात्रों का रजत जयन्ती वर्ष है, अतः इस बैच के अधिकाधिक विद्यार्थी अधिवेशन में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित शिशुओं के जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी.एस.एस.डी. महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। विद्यालय के सह-सचिव श्री यतीन्द्र जीत सिंह जी के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मन्दिर के द्वारा पालित - पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 30 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

समाज के आर्थिक रूप से अभावग्रस्त परन्तु प्रतिभाशाली, वंचित वर्ग के छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए तीन वर्ष पूर्व विद्यालय में प्रतिभा प्रोत्साहन प्रकल्प के माध्यम से समाज के इस वर्ग के बालको को निःशुल्क शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ हुआ था।

इस वर्ष इस योजना को और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से वंचित वर्ग के छात्रों को विद्यालय में प्रवेश देकर उन्हें निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था प्रारम्भ हो रही है।

भारतीय चिन्तन में **''शिक्षा का उद्देश्य''** विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

धन्यवाद!

प्रकाश नारायण वाजपेयी
प्रधानाचार्य

सदाचार व सद्‌गुणों के अतुलनीय पुंज–बैरिस्टर साहब

हरिकृष्ण सेठ
(वरिष्ठ अधिवक्ता, सदस्य
विद्यालय प्रबंध समिति)

टिप्पणी : आदरणीय हरिकृष्ण सेठ जी वयोवृद्ध, वरिष्ठ अधिवक्ता, विचार तथा संवेदनशीलता से युक्त महानुभाव हैं। श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का विराट व्यक्तित्व था, जो भी उनके सम्पर्क में आया, उनसे प्रभावित हुआ। सेठ साहब का बैरिस्टर साहब से लम्बा सम्पर्क रहा है। इस लेख में वे अपने कुछ संस्मरण सुना रहे हैं। – संपादक

महामानव राष्ट्र एवं समाज की जीवात्मक चेतना को अपनी उपस्थिति से दिव्यताओं का बोध प्रदान करते हैं। राष्ट्र एवं समाज ऐसे व्यक्तित्व का अभिनन्दन करता है और उनके तमाम अक्षरों को पढ़ने एवं सर्वहितकारी कृतित्व एवं मार्गदर्शन का अनुसरण करता है।

श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी चतुर्मुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके जीवन में ऐसे तत्त्व थे जो अपने व्यक्तित्व से दूसरों की जीवात्मक व्यावहारिकता को जाग्रत कर नयी स्फूर्ति एवं अनुभूति प्रदान करते थे। वे मानव जीवन की पाषाण शिला पर जीवन ज्ञान के प्रकाश बनकर उत्कीर्ण हुए थे। वे निष्काम कर्मयोगी, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़संकल्पी साधक थे। सरलता, सौम्यता, सादगी, सुशीलता, सदाचार एवं शिष्टाचार की प्रतिमूर्ति थे। धन, सम्पदा, वैभव, सम्मान सभी कुछ प्राप्त होते हुए भी उनमें अभिमान या दर्प छू नहीं गया था। वे कुशल अधिवक्ता व विधिवेत्ता होने के साथ-साथ मानवीय विधि विधाओं के प्रवक्ता रहे। उनके लोकसेवी व्यक्तित्व की छाया में कितनी ही शैक्षिक, आध्यात्मिक, समाजसेवी संस्थाओं की स्थापना हुई व उनके संवर्धन में उन्होंने सक्रिय योगदान किया। वे भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के पोषक थे। उनसे मिलकर शायद ही कोई निराश लौटा हो। जीवन पर्यन्त उन्होंने हर क्षेत्र में उत्कृष्ट मानव धर्म का निर्वाह किया। उनका जीवन निष्कलंक रहा।

सन् 1952 में कानपुर कचहरी में प्रवेश पर बैरिस्टर साहब के निकट से प्रथम दर्शन का सुअवसर मिला। गौरवर्ण, स्वस्थ, देदीप्यमान मुखमण्डल व उन्नत ललाट वाले उनके आकर्षक व्यक्तित्व से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। धीरे-धीरे निकट से उनके सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिला। निकटता बढ़ती गयी। जैसे-जैसे उन्हें जानने और समझने का अवसर मिला उनके गुणों से प्रभावित होकर, उनके प्रति सम्मान बढ़ता गया। कुछ व्यक्तिगत अनुभवों का ही यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ।

एक मुकदमे में अपने से बहुत सीनियर वकील से मुकाबला पड़ने के कारण, मैंने मुकदमें में बहुत अच्छी तैयारी की और डट कर बहस की। जब बैरिस्टर साहब मेरी बहस का उत्तर देने के लिये खड़े हुए, तब उन्होंने खुले न्यायालय में अपनी बहस प्रारम्भ करने के पूर्व कहा कि सबसे पहले मैं विरोधी पक्ष के नौजवान वकील की प्रशंसा करता हूं। जिस प्रकार से और जिस योग्यता से उसने अपने पक्ष को प्रस्तुत किया है वह प्रशंसनीय है। यह उनकी उदारता ही थी कि उन्होंने अपने से बहुत जूनियर वकील और वह भी विरुद्ध पक्ष के वकील की प्रशंसा की और उसे प्रोत्साहित किया।

कुछ वर्षों बाद उन्होंने एक दिन मुझे बुलाया और कहा कि श्री विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय में विधि विभाग में प्रवक्ता का स्थान रिक्त होने वाला है जिस पर वह मुझे नियुक्त करना चाहते हैं। जिसे मैंने स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद उन्होंने जिन अनेक संस्थाओं से वे सम्बन्धित थे उनके मुकदमों की पैरवी व विधिक सलाह देने का भी कार्यभार मुझे सौंपा। बैरिस्टर साहब का मुझ पर भरोसा बढ़ता रहा और अपने कुछ मुकदमों में भी वे मुझे अपने साथ लेने लगे। अस्वस्थता के कारण, उन्होंने सामान्यतः न्यायालयों में जाना जब बन्द कर दिया था तब कानपुर के तत्कालीन एक बड़े औद्योगिक संस्थान में जिसके वे स्थायी अधिवक्ता थे, संस्थान द्वारा मांगे जाने पर अपने स्थान पर, मेरा नाम भेज दिया। वह पारखी थे मेरा सौभाग्य था कि उनका मुझ पर भरोसा था।

उनकी एक और उदारता जो मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ। मेरी एक पुत्री का विवाह एकाएक तय हो गया। वर पक्ष एक अन्य नगर का था। आये मेहमानों को ठहराने हेतु कोई जगह की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। मैंने बातों-बातो में इसका उल्लेख उनसे किया। उन्होंने कुछ क्षण सोचा और मुझसे कहा कि अगर कोई जगह न मिल पाए तब वे अपने निवास में ही ऊपरी मंजिल के चार कमरे मेहमानों को ठहराने के लिये उपलब्ध करा देंगे। उनकी इस उदारता की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। बाद में स्थान का प्रबन्ध अन्यत्र हो गया लेकिन अपने निकटवर्ती लोगों के लिये उनके मन में कितनी आत्मीयता थी यह उनकी उपरोक्त उदारता से स्पष्ट होता है।

बैरिस्टर साहब एक कर्मयोगी थे। वे किसी बात को दूसरे दिन के लिये नहीं छोड़ते थे और न अपने दायित्व से कभी पीछे हटते थे। जिन संस्थाओं से वे सम्बन्धित रहे उनकी फाइलें व अन्य कागजात नित्य आदेश हेतु उनके पास आते थे और बिना किसी विलम्ब के उनका समुचित निस्तारण वे कर देते थे। उनमें तत्काल निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता थी।

वर्षों विदेश में रहकर शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त भी उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदर्शों का पालन-पोषण व प्रसारण किया। घर में वे सदैव धोती-कुर्ता ही पहनते थे। पत्राचार भी अधिकतर हिन्दी में ही करते थे, हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुत्व के प्रति उनकी प्रगाढ़ आस्था थी। परन्तु वह अन्य धर्मों व मजहबों का भी बहुत आदर करते थे।

उल्लेखनीय है कि आपतकाल में, जेल प्रवास के दौरान कुछ मुस्लिम धर्मावलम्बी भी जेल में बन्द थे। उन्हीं में से एक ने मुझे बताया कि उस दौरान जेल में जब फल या खाने-पीने की कोई चीज आती थी तब उनका यही निर्देश था कि वह इतनी संख्या में भेजी जाये जिससे उनके साथ रह रहे सभी लोगों को बराबर-बराबर मिले।

उन्होंने दायित्वपूर्ण कृतित्व के अनेक अध्याय लिखे जिनका शाब्दिक वर्णन इस लेख में सम्भव नहीं।

उनका प्रेरणादायी व्यक्तित्व अब सशरीर नहीं है लेकिन उनके सानिध्य में जो अनुसरणीय सीख व मार्गदर्शन मुझे मिला वह मेरे जीवन की बहुमूल्य धरोहर है। इन्हीं कुछ शब्दों के साथ मैं बैरिस्टर साहब को अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा हूँ। वे चिरस्मरणीय रहेंगे।

स्मृतियाँ

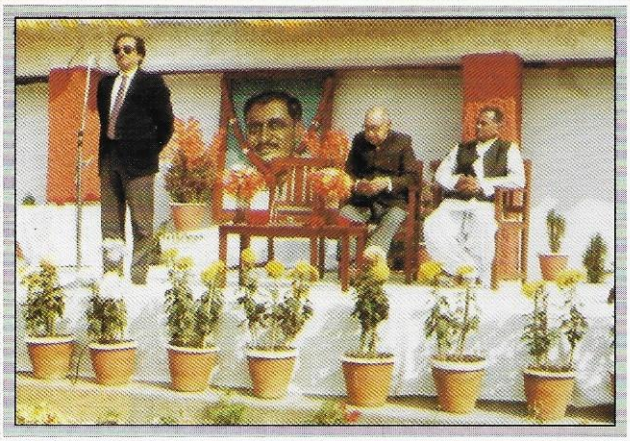

मंच पर बैठे हुए श्रद्धास्पद बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी, ओमशंकर जी तथा माइक पर श्री रामशरण श्रीवास्तव जी।

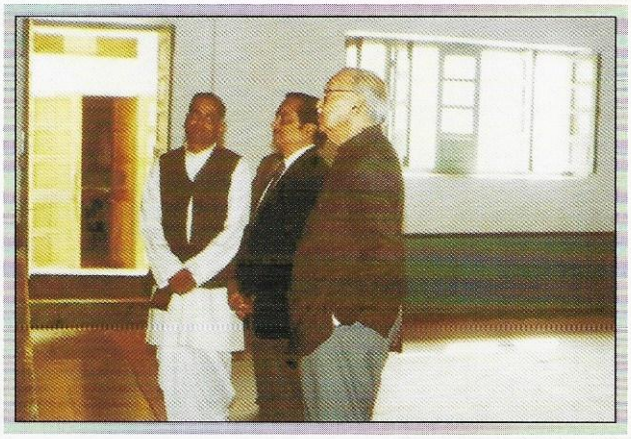

विद्यालय के विशाल कक्ष में मुख्य अतिथि श्री रामशरण श्रीवास्तव, प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी के साथ भारत माता के चित्र को देखकर विभोर हुए बैरिस्टर साहब।

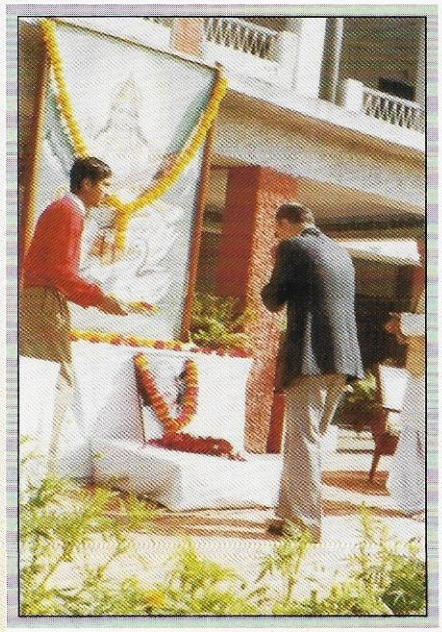

पुण्यात्मा बैरिस्टर साहब के गोलोकवासी होने के बाद एक कार्यक्रम में उनके चित्र पर पुष्पार्पण करते हुए उनके यशस्वी सुपुत्र श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी।

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

विशाल कक्ष से कार्यक्रम स्थल की ओर जाते हुए मुख्य अतिथि माननीय भैया जी जोशी, मा. सचिव जी तथा प्रधानाचार्य जी।

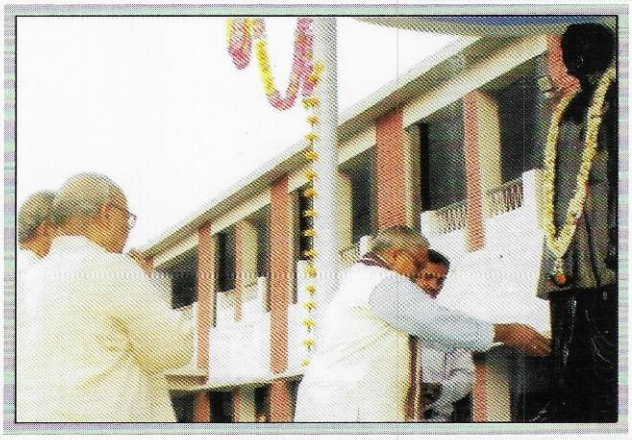

पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्पार्पण करते हुए मा. भैया जी जोशी।

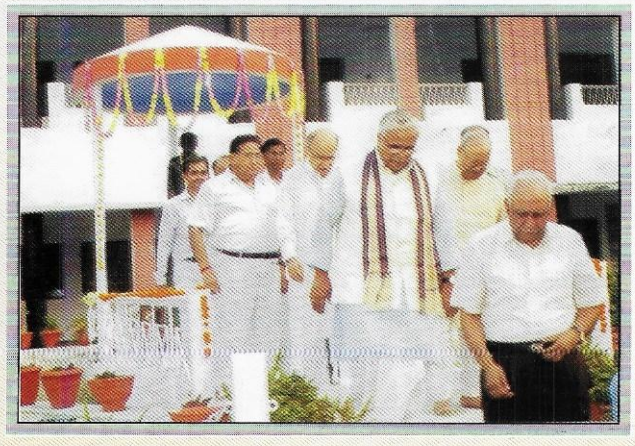

पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्पार्पण करने के बाद वापस लौटते हुए मा. भैया जी जोशी, मा. सचिव जी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि।

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

मंचस्थ दाहिने से मा. ईश्वर चन्द्र गुप्त, पं. रामबालक मिश्र, डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, मा. भैया जी, सचिव जी, डॉ. योगेन्द्र भार्गव तथा प्रधानाचार्य जी।

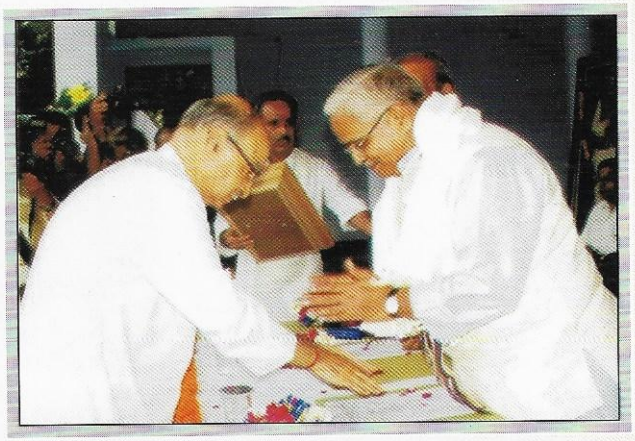

मुख्य अतिथि मा. भैया जी जोशी का स्वागत करते हुए विद्यालय प्रबंध समिति के सचिव मा. वीरेन्द्र जी।

विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल को निर्धन-मेधावी छात्रों के सहायतार्थ चेक प्रदान करते हुए प्रबंध समिति के सदस्य श्री ओमप्रकाश जी भार्गव।

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

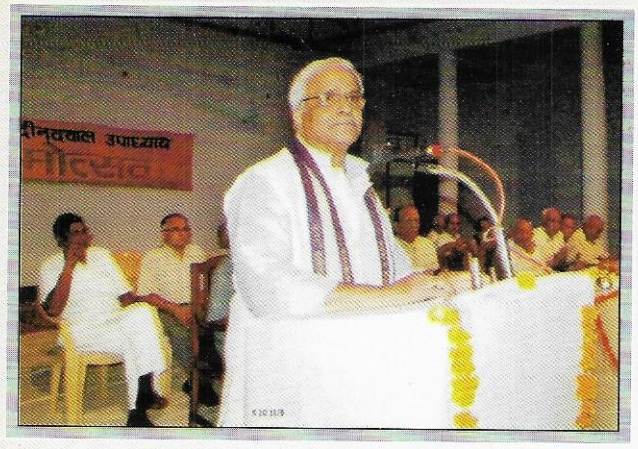

मा. भैया जी जोशी का प्रेरक उद्‌बोधन।

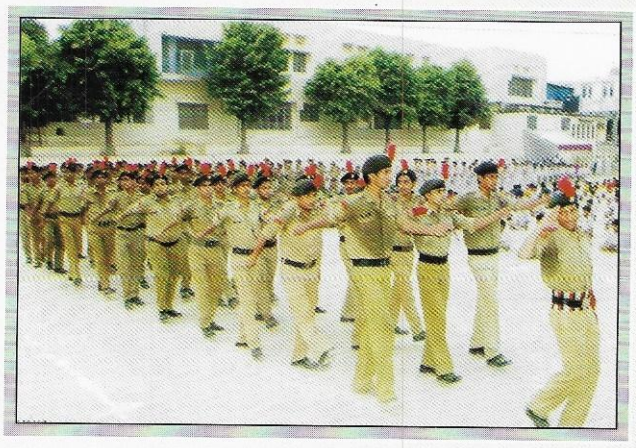

एन.सी.सी. परेड

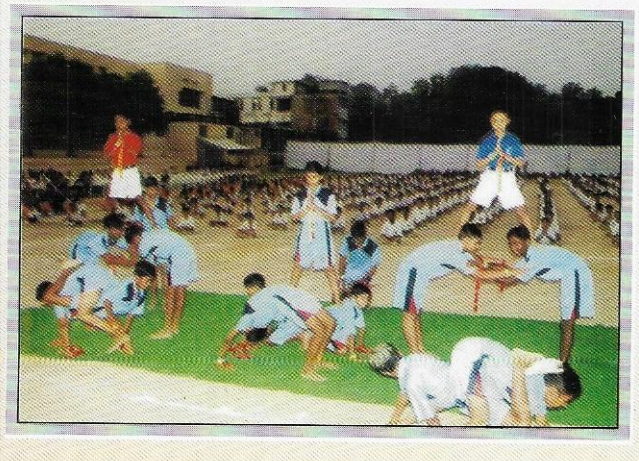

पिरामिड बनाकर शारीरिक कौशल का प्रदर्शन करते छात्र।

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

प्रख्यात विचारक और समाजसेवी श्री गोविन्दाचार्य जी को सम्मानित करते हुए प्रबंध समिति के पदाधिकारी तथा प्रधानाचार्य जी।

मा. गोविन्दाचार्य जी ने मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया।

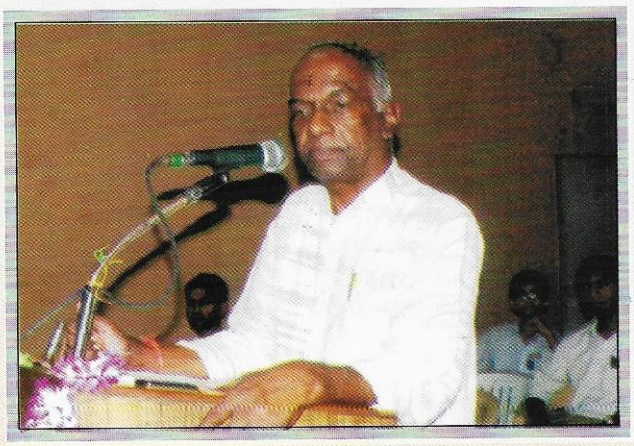

ज्ञान की अग्नि में तप्त ताम्र की भाँति तेजस्वी मा. गोविन्दाचार्य जी जिन्होंने सच्चे अर्थों में पं. दीनदयाल उपाध्याय के गुणों को धरोहर के रूप में संजोया है।

रंगमंचीय कार्यक्रम

श्री राम वन-गमन के वृत्तांत पर आधारित नाटक में वन जाने के लिए माताओं से आज्ञा माँगते हुए राम के रूप में चि. सौरभ, लक्ष्मण के रूप में चि. आदित्य तथा कुमारी अपूर्वा, अदिति तथा कृतिका।

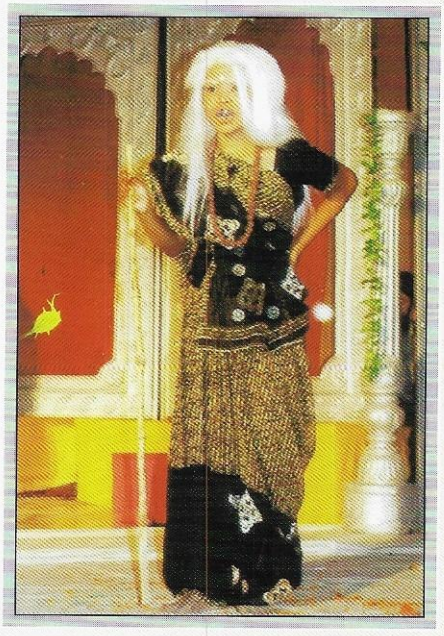

''हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती, नाहीं तो मौन रहब दिन-राती'' कुमारी अन्नू ने मंथरा के चरित्र को मंच पर जीवंत किया।

राम-राम कहि राम कहि, राम-राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरह, राउ गयउ सुरधाम।।

दशम कक्षा के चि. शान्तनु ने दशरथ का किरदार बखूबी निभाया।

रंगमंचीय कार्यक्रम

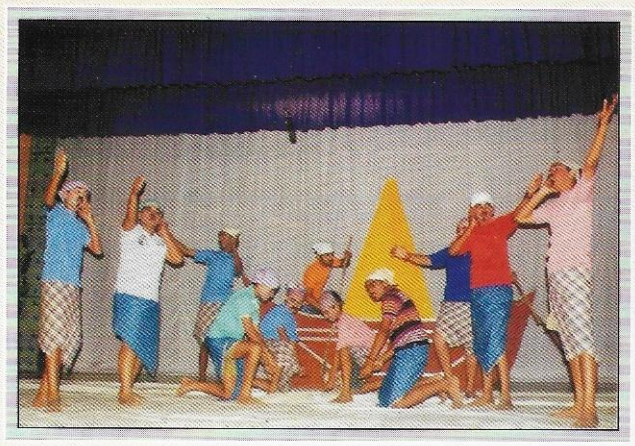

मछुवारा नृत्य

राधा कृष्ण नृत्य में वात्सल्य मंदिर की बालिकाएँ मोहक मुद्रा में।

रंगमंचीय कार्यक्रमों के बाद बाल कलाकारों के मध्य में बैठे हैं ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति श्री के.बी. पाण्डेय, प्रबंध समिति के सचिव श्री वीरेद्र जी तथा प्रधानाचार्य जी।

गीत गायन प्रतियोगिता

वार्षिकोत्सव में होने वाली गीत-गायन प्रतियोगिता में दीनदयाल विद्यालय की छात्रा कुमारी अनुकृति शुक्ला, हारमोनियम पर अंकुर जी तथा तबला वादन करते हुए चि. सुयश।

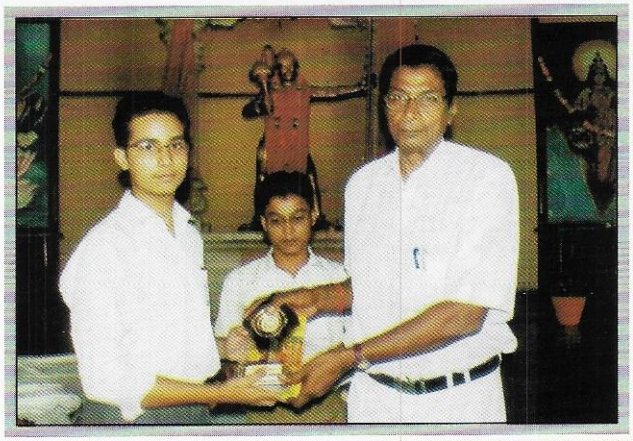

पुरस्कार वितरण करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी।

गीत-गायन प्रतियोगिता में अपने विद्यालय तथा आमंत्रित विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

अन्तर-विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वादश कक्षा के छात्र चि. शुभम श्रीवास्तव।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यालय के प्रतिभागी छात्र चि. आयुष त्रिपाठी को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. के. के. गुप्त।

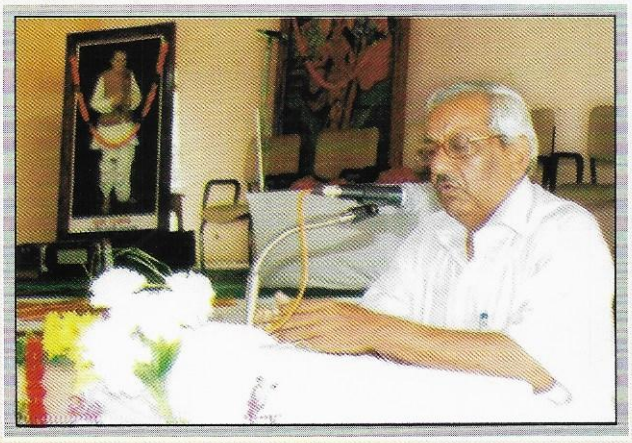

विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए जुगल देवी विद्यालय के प्रबंधक डॉ. कमल किशोर जी गुप्त।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

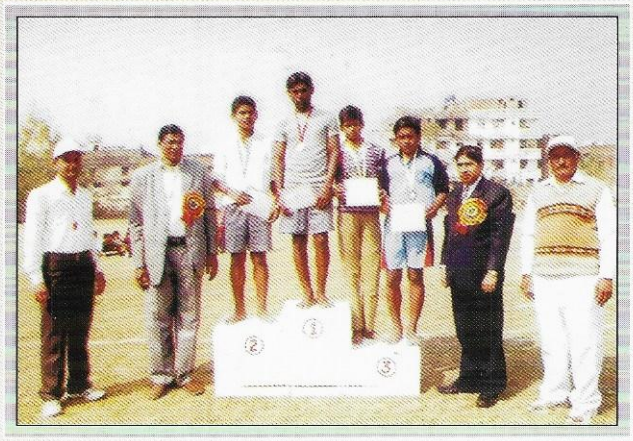

800 मीटर दौड़ के विजेता छात्रों के साथ एच.बी.टी.आई. के रजिस्ट्रार श्री नरेश कुमार, प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी तथा आचार्य श्री सुभाष जी।

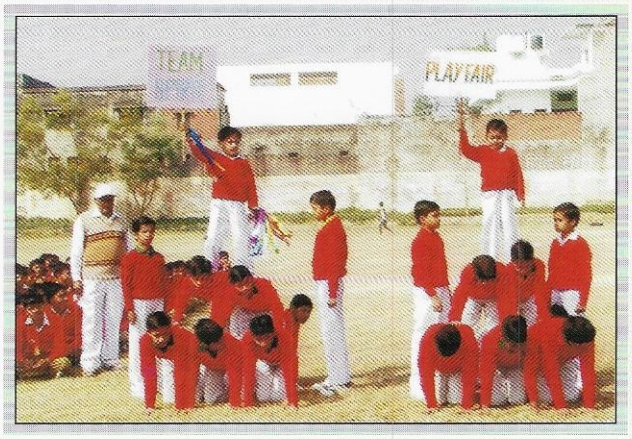

मीनार निर्माण करते हुए प्राथमिक कक्षाओं के छात्र।

कन्दुक व्यायाम करते हुए कक्षा प्रथम के शिशु।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

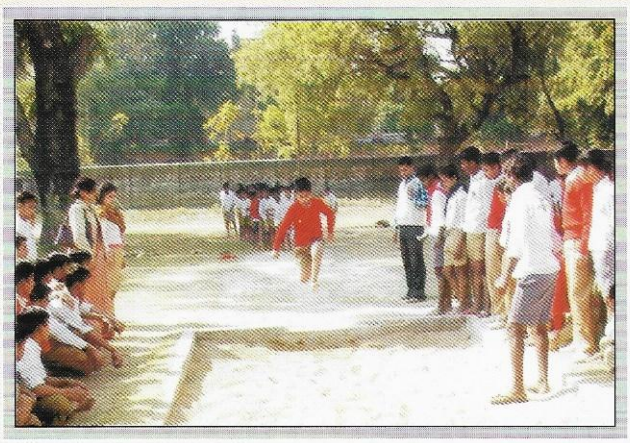

ध्रुव दल की लम्बी कूद

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में धैर्य कुंज प्रथम स्थान पर रहा। मेजर हरीन्द्र त्रिपाठी से विजय-ट्राफी प्राप्त करते हुए धैर्य कुंज के प्रभारी आचार्य श्री दिनेश जी, मनजीत जी तथा प्रमुख छात्र चि. रण विजय सिंह साथ में क्रीड़ा प्रभारी सुभाष जी।

लवकुश दल रिले रेस के विजेता छात्रों के साथ वात्सल्य-भाव-पूरित सचिव श्री वीरेन्द्रजी सिंह जी तथा आचार्यगण।

मेधावी छात्र

प्रियम सिंह
द्वादश 'क'
82% अंक

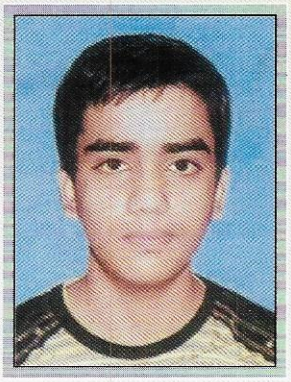

अंकित गुप्त
नवम 'ख'
85% अंक

राहुल कुमार
सप्तम 'ग'
93.5% अंक

देवांग पटेल
अष्टम 'क'
91.07% अंक

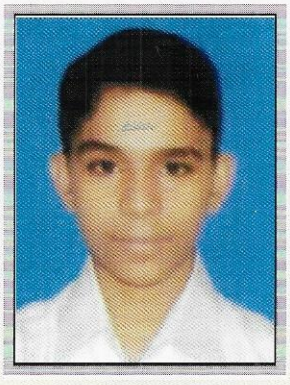

जयशंकर कुमार
षष्ठ 'ख'
96.4% अंक

तस्यैव जीवितम् श्लाघ्यै यः परार्थे हि जीवति

कुप. सी. सुदर्शन
भूतपूर्व सरसंघ चालक

मा. बैरिस्टर साहब अपने साथ एक पूरा इतिहास समेट कर ले गए। आरम्भ से ही उत्तर प्रदेश में संघकार्य को उन जैसे प्रभावी व्यक्तित्व का जो सम्बल मिला, विशेषकर उन दिनों में जब संघ के साथ जुड़ना कोई गौरवपूर्ण बात नहीं मानी जाती थी, उस क्षेत्र में कार्य की वृद्धि के लिए बहुत बड़ा आधार बना। स्वयं बैरिस्टर साहब के कथनानुसार उन्हें संघ के एक उत्सव में सर्वप्रथम ले जाने का श्रेय पड़ोस के एक बाल स्वयंसेवक के अतीव आग्रह को था। उस बाल स्वयंसेवक की लगन ने उन्हें संघकार्य का प्रथम दर्शन कराया और वे संघ के ही हो गये। सब प्रकार के उतार-चढ़ाव, अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में उनके नेतृत्व की प्रखरता ने 'स्वयंसेवकों को प्रेरित किया और वे कार्य को ऊँचाईयों तक ले जाने में समर्थ हुए। उनके नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में जिन संस्थाओं का जन्म हुआ, उन संस्थाओं ने न केवल कानपुर में अपितु सम्पूर्ण देश के शैक्षणिक जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। उनके साथ सामाजिक कार्यों में स्व. बूजी ने समर्थ के सक्षम सहयोग ने सोने में सोहागे का कार्य किया।

मा. बैरिस्टर साहब के सर्वप्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे उस समय मिला जब मैं जबलपुर में इंजीनियरिंग महाविद्यालय में पढ़ रहा था।

बात सन् 49-50 की होगी। तीन शाखाओं के एक मंडल का दायित्व मुझ पर था। नागपुर की बैठक के लिए जाते या लौटते समय बैरिस्टर साहब जबलपुर आये। हम लोगों को सूचना मिली कि उत्तर प्रदेश के प्रांत संघचालक आये हैं और कार्यकर्ताओं व प्रमुख स्वयंसेवकों की एक बैठक कार्यालय में आयोजित है। हम लोग उत्सुकता पूर्वक बैठक के लिए गये। माननीय बैरिस्टर साहब के दिव्य व्यक्तित्व ने हम सब लोगों को प्रभावित किया। उनके गौर वर्ण, आजानुबाहु शरीर, वाणी की अत्यधिक मृदुता और सदैव-स्मित ने हर किसी को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

शाखाओं आदि के संबंध में पूछताछ के बाद उन्होंने देश के संबंध में छोटे-छोटे प्रश्न पूछने प्रारम्भ किये। कुछ के उत्तर हम लोग दे पाये, कुछ के नहीं। कुछ देर इसी प्रकार हमारे सामान्य ज्ञान की परीक्षा के बाद बैरिस्टर साहब ने एक छोटा सा वाक्य कहा जो सदा के लिए मेरे मानस पटल पर अंकित हो गया। वह वाक्य था 'आप अपने देश के बारे में जितना अधिक जानेंगे उतना ही आपके मन में देश के लिए प्रेम व अपनापन उत्पन्न होगा और उतनी ही देश के लिए कार्य करने की प्रेरणा अन्तःकरण में जागेगी' यह वाक्य मेरे जीवन का पाथेय बन गया। जब मैं अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख बना तब इसी को आधार बनाकर मैंने बौद्धिक योजना प्रस्तुत की। आगे चलकर मुझे योगिराज अरविन्द की भी इसी आशय की

एक वाणी मिली- 'भूतकाल का गौरव, वर्तमान की पीड़ा, और भविष्य के सुनहरे सपने ही किसी देश को आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।'

बाद में तो नागपुर की बैठकों व कानपुर में भी अनेक बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उनसे मेरी हर भेंट एक नया ज्ञान व नई प्रेरणा देने वाली सिद्ध होती रही। उनका अकृत्रिम स्नेह सबको समन रूप से आकृष्ट कर लेता था जिससे छोटे-बड़े की समस्त दूरियाँ समाप्त हो जाती थीं और रह जाता था केवल अपनापन।

उनका उत्तुंग व्यक्तित्व आज हमारे बीच में नहीं है, किन्तु उनकी अनेक स्मृतियाँ प्रेरणा देने के लिए हमारे साथ हैं। उनके सम्बन्ध में आए हुए सहस्त्रों लोगों की मधुर स्मृतियों का संकलन अनेक कार्यकर्ताओं के लिए पाथेय का कार्य करेगा।

(नीराजन रजत जयन्ती अंक)

***

संस्कृति

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म-विज्ञान, साहित्य कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं। यही राष्ट्र संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है। जहाँ अतीत वर्तमान के लिये भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान को जकड़कर नहीं रखना चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्टि करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं।

- वासुदेव शरण अग्रवाल

नमन

अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमंत्री

ऊँचा कद, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, स्त्रेहसिक्त आँखें, मुख पर बुद्धि, विवेक और कुलीनता की आभा – जब मैंने बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह को पहली बार देखा तो उनका व्यक्तित्व मन मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ गया।

सन् 1945-46 की बात है। मैं ग्वालियर से बी.ए. करने के बाद एम.ए., एल.एल.बी. के लिए कानपुर गया था। वहाँ दोनों कोर्स तीन की बजाय दो वर्ष में ही पूरे कर लेने की सुविधा थी। मैंने डी.ए.वी. कॉलेज में प्रवेश लिया। छात्रावास में रहने लगा। जाते-आते बैरिस्टर साहब के बंगले पर नजर पड़ जाती। एक दिन भीतर जाने का अवसर मिला। छात्र स्वयंसेवकों की बैठक थी। बैरिस्टर साहब से परिचय हुआ। थोड़ी सी बातचीत भी हुई। बड़ा अच्छा लगा। बड़प्पन के भार को इतने सहज ढंग से ढोने की उनकी विशिष्टता हृदय में घर की गयी।

उन दिनों कानपुर में दो घरानों की बड़ी धूम थी। एक श्री ब्रजेन्द्र स्वरूप का घराना जो डी.ए.वी. कॉलेज का संचालक था। दूसरा श्री विक्रमाजीत सिंह का परिवार जो एस.डी. कॉलेज का कर्ता-धर्ता था। दोनों परिवारों का व्यापक प्रभाव था। दोनों में प्रतिस्पर्धा भी थी। किंतु सब कुछ सीमा के भीतर, शालीनता की परम्परा के अनुकूल। मुझे वह दिन याद है जब छात्रावास शाखा के वार्षिकोत्सव में श्री वीरेन्द्र स्वरूप जी आये थे और संघचालक के नाते बैरिस्टर साहब उनके साथ ही एक मंच पर बैठे थे।

दो वर्ष बाद मेरा कानपुर से नाता छूट गया, किंतु बैरिस्टर साहब से बराबर सम्पर्क बना रहा। वे 'राष्ट्रधर्म' और 'पाञ्चजन्य' के अंक बड़ी रुचि से देखते। कभी सुझाव भी देते। उनसे मिलकर प्रसन्नता होती, प्रोत्साहन मिलता।

जब उन्हें संघ के कार्यक्रमों और शिविरों में पूर्ण गणवेश (खाकी हाफ पैण्ट + सफेद शर्ट) में शामिल होते, स्वयंसेवकों के साथ चौबीस घण्टे रहते-सहते, खाते-पीते, शौचालय के लिए लाइन में लगते देखता तो अंत:करण उनके प्रति आदर से भर उठता। सुख-सुविधाओं में जन्में-पले व्यक्ति के लिए, और वह भी उम्र बढ़ जाने के बाद, किशोरों-तरुणों के लिए बने अनुशासन में स्वयं को हँसी-खुशी ढालना, बाल-सुलभ कार्यक्रमों में रस लेना, और फिर उसी रस को स्वयंसेवकों में बाँट कर उन्हें ध्येय-निष्ठा के पथ पर आगे बढ़ाने का प्रयास करना, बड़ा कठिन कार्य है, किंतु संघ की कार्यपद्धति की विशेषता और बैरिस्टर साहब के व्यक्तित्व की असाधारणता से यह नितांत सहज और स्वाभाविक दिखायी देता था।

बैरिस्टर साहब कानून के ज्ञाता थे, अत: समय-समय पर संविधान में किस प्रकार के संशोधन

अभीष्ट हैं, इसके सुझाव दिया करते थे। संविधान का अनुच्छेद 31-सी जब काफी विवाद का विषय बना था तो उन्होंने एक छोटा सा संशोधन सुझाकर सारी समस्या को हल करने का एक सुगम तथा सरल मार्ग दिखाया था। उनका कहना था कि विद्यालय चलाने की अनुमति केवल अल्पसंख्यक समुदाय को ही नहीं, सभी समुदायों को होनी चाहिए।

द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गोलवलकर 'गुरु जी' जिन व्यक्तियों के परामर्श को काफी महत्त्व देते थे उनमें बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह का स्थान प्रमुख था। एक बार राष्ट्रीय एकात्मता परिषद द्वारा गठित उपसमिति ने साम्प्रदायिकता की समस्या पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। वह एक सर्वदलीय समिति थी जिसके अध्यक्ष श्री अशोक मेहता थे। श्रीमती इंदिरा गांधी भी एक सदस्य थीं। जनसंघ के प्रतिनिधि के नाते मुझे भी लिया गया था। संघ ने लाला हंसराज गुप्त और बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह को अपना पक्ष रखने के लिए भेजा। बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में चर्चा हुई। संघ की दृष्टि में कौन राष्ट्रीय है, यह प्रश्न उठा। बैरिस्टर साहब ने कहा कि जो इस देश को अपनी मातृभूमि तथा पुण्यभूमि मानते हैं, वे राष्ट्रीय हैं, फिर उनका मत या मजहब कुछ भी हो। एक सदस्य ने कहा कि अनेक देशों में रहने वाले बौद्ध भारत को पुण्यभूमि मानते हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि अपनी मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा में कोई कमी है। बैरिस्टर साहब ने कहा कि जो बौद्ध भारत को पुण्यभूमि मानते हैं वे अपनी-अपनी मातृभूमि को पुण्यतर (Holier than Holy) मानते हैं और उसके लिए मर-मिटने को तैयार रहते हैं। जो लोग भारत को अपनी पुण्यभूमि से भी अधिक पुण्यवान मानते हैं, वे राष्ट्रीय हैं और इसमें मत-मतान्तर बाधक नहीं होना चाहिए। बैरिस्टर साहब और लाला जी के उत्तरों से काफी सदस्यों का काफी सीमा तक समाधान हुआ। कम से कम उनके इस भ्रम का तो निराकरण हो ही गया कि मुस्लिम समाज हज के लिए मक्का जाता है केवल इसलिए उसे राष्ट्रीय नहीं माना जाता।

और भी ऐसे प्रसंग होंगे जो बैरिस्टर साहब के सौम्य किंतु दृढ़ व्यक्तित्व और कीर्तिशाली कृतित्व पर प्रकाश डालेंगे। उन सब का संग्रह आवश्यक है। मुझे खेद है कि मैं उने निकट सम्पर्क में रहने का सौभाग्य नहीं पा सका।

उनकी पुण्य स्मृति में मेरा नमन।

(नीराजन 1994 के अंक से)

एक कर्मयोगी की सुगन्धित स्मृति में

शिवशरण शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, प्रबंध समिति
पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः। शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥
तुल्यनिन्दास्तुतिमौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्ये प्रियोः नरः॥

(गीता, द्वादश अध्याय, 18, 19)

बाल्यकाल में 'नरेन्द्र' नाम से पुकारा जाने वाला सिंह समान वीर बालक जब विज्ञान एवं विधिशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करके विदेश से स्वदेश लौटा तो वह शीघ्र ही 'बैरिस्टर साहब' के सम्मानसूचक नाम से जाना जाने लगा। उनका विवाह स्व. दीवान बद्रीनाथ की सुयोग्य पुत्री सुशीला जी से हुआ। तदनन्तर उन्होंने उपनिषदों और विशेष रूप से गीता का गहन अध्ययन किया जिससे उनके आन्तरिक गुणों के विकास के साथ उनका 'विवेक' जाग्रत हुआ। इससे उनके जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र-सेवा में लगा दिया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दर्शन एवं कार्यपद्धति से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने एक समर्पित स्वयंसेवक की भाँति तन-मन-धन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया।

मैं मा. बैरिस्टर साहब के निकट सम्पर्क में बाल्यकाल से ही आ गया था। उनके सौम्य स्वभाव एवं शील ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में मुझे उनके मार्गदर्शन एवं निर्देशन में दीर्घ काल तक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। वे एक उच्च कोटि के शिक्षाविद् थे और उन्हें अनेक विषयों का पर्याप्त ज्ञान था। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, कानपुर प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर परास्नातक स्तर तक की शिक्षा प्रदान करने हेतु कई ख्याति प्राप्त विद्यालयों तथा एक महाविद्यालय का बड़ी सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इन संस्थाओं तथा अन्य अनेक ऐसी संस्थाओं से जुड़े हुए मा. बैरिस्टर साहब किसी के अध्यक्ष, किसी के सचिव और किसी के संरक्षक के रूप में निःस्वार्थ भाव से निष्ठापूर्वक कार्य करते रहे। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। परीक्षा सम्बन्धी उत्कृष्ट उपलब्धियों के अतिरिक्त छात्रों को पूर्णरूपेण स्वस्थ, चरित्रवान एवं श्रेष्ठ राष्ट्रभक्त बनाने में उनकी विशेष रुचि थी। इसके लिए नियमित रूप से उनके बीच कुछ समय तक रहना उनका सुनिश्चित कार्यक्रम था।

गीता में वर्णित जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के अनुसार उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम करने का दृढ़ संकल्प बहुत पहले ही ले लिया था, और अपने अर्जित धन के एक बड़े भाग को समाजोपयोगी कार्यों में लगाना प्रारम्भ कर दिया था। उनकी धर्मपत्नी ने भी इस दिशा में उनका पूरा साथ

दिया। पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म (उच्चतर माध्यमिक) विद्यालय, कानपुर की स्थापना एवं उसका सफल संचालन इसका एक प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय उदाहरण है, जो उनके त्यागमय जीवन का द्योतक है।

मा. बैरिस्टर साहब उच्च कोटि के अधिवक्ता तो थे ही, उनका चिन्तन, तथा उनके विचार भी वैज्ञानिक थे। तर्क की कसौटी पर वे हर बात को परखते थे, और प्रत्येक दृष्टि से सही पाने पर ही उसे स्वीकार करते थे। वे देश में पर्याप्त समृद्धि चाहते थे, परन्तु वे भौतिकवादी नहीं थे। उनका जीवन अध्यात्म से ओत-प्रोत था। जब से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने, वे कठोरतम जीवन को प्रसन्नतापूर्वक जीने के अभ्यस्त हो गये थे। वे जीवन के अन्त तक अवध प्रान्त के संघचालक रहे। संघ पर जब भी सरकार की दृष्टि टेढ़ी हुई, उसके कार्यकर्ताओं को जेल भेज दिया गया, जहाँ उन्हें कठोरतम जीवन व्यतीत करना पड़ा। मा. बैरिस्टर साहब को लम्बी अवधि तक दो बार ऐसा जीवन जीने का अनुभव हुआ, ज़हाँ उन्होंने अपने धैर्य तथा व्यवहार से अन्य संगठनों के बड़े-बड़े नेताओं एवं कार्यकर्ताओं तक को अत्यन्त प्रभावित किया। वे सब आज तक उनके प्रति स्नेह, सम्मान एवं श्रद्धा की भावना से युक्त हैं, और उन्होंने मा. बैरिस्टर साहब के देहावसान के पश्चात् श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रमों में भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किये हैं। उनके मानवीय गुणों, जीवन-मूल्यों एवं आदर्शों ने समाज की विभिन्न विचारधाराओं से जुड़े हुए व्यक्तियों पर भी गहरा प्रभाव डाला है, और वे आज भी उन्हें अपना प्रिय मित्र मानते हुए गर्व का अनुभव करते हैं।

त्याग, तपस्या, सत्य, अहिंसा, आत्मीयता, प्राणि मात्र के प्रति दया, सादा शुद्ध जीवन व उच्च चिन्तन, आत्म-संयम समबुद्धि, दृढ निश्चय, मन-वाणी-कर्म में एकरूपता आदि अनेक विशेषताएँ मा. बैरिस्टर साहब के जीवन का अभिन्न अंग थीं। वे एक सच्चे हिन्दू राष्ट्रभक्त थे। राग-द्वेष से मुक्त और दैवी गुणों से युक्त होने के कारण वे सबके प्रिय थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि 'सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः' अर्थात् परमात्मा सब प्राणियों के हृदय में स्थिर है तथा 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः' अर्थात् परमात्मा सब प्राणियों के हृदय में स्थिर है तथा 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः' अर्थात् इस जीवलोक में परमात्मा का एक अंश ही जीव है। अतः मा. बैरिस्टर साहब मानव मात्र ही नहीं, वरन् प्राणि मात्र में परमात्मा के स्वरूप का दर्शन करते थे, और उनके साथ आत्मीयता की भावना से व्यवहार करते थे। उनकी यह प्रेम-भावना पेड़ पौधों तक में व्याप्त थी। व्यक्तित्व की यह विलक्षणता विरले ही दिखाई पड़ती है।

मा. बैरिस्टर साहब ने निष्काम कर्म को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और अन्त तक कर्मयोगी का जीवन व्यतीत किया। उन्होंने अपने प्रत्येक कार्यक्षेत्र में एक अनुकरणीय छाप छोड़ी है। उनका पार्थिव

शरीर तो पंचतत्त्व में विलीन हो गया है, परन्तु उनकी विशुद्ध आत्मा उनकी ही भाँति अपने राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित भावना से कार्य करने के लिए सदा शुभ आशीर्वाद एवं सत्प्रेरणा प्रदान करती रहेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

प्राणि मात्र के हित में निरन्तर रत संयमी पुरुष, भगवान कृष्ण द्वारा गीता में दिये गये आश्वासन के अनुसार, देह त्याग के पश्चात् परमात्मा को, अव्यय पद को, प्राप्त होते हैं-

'संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहितेरताः॥'

(गीता, द्वादश अध्याय, 4)

यह भगवान् श्रीकृष्ण की निश्चयात्मक एवं आशावादी घोषणा है। अतः हमें उस महामानव के प्रयाण पर शोक करना उचित नहीं।

अन्त में उस कर्मयोगी महापुरुष की पावन स्मृति में मैं अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

(नीराजन : रजत जयंती अंक)

❋❋❋

सद्विचार

मंत्री गुरु अरु वैद, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धरम तन तीनिकर, होइ बेगि ही नास।

सौजन्य और श्रेष्ठता के शिखर

रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

बैरिस्टर साहब अर्थात् श्री नरेन्द्रजीत सिंह से मेरी प्रथम भेंट सन् 1950 में हुई थी। मैं डी.ए.वी. कॉलेज में बी.ए. (प्रथम वर्ष) का छात्र था। रोज ही उनके आवास के सामने से निकलता। उनके बंगले का रूप-रंग आकर्षित करता। धीरे-धीरे पता चला कि इस बँगले के स्वामी बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह हैं जो एक प्रतिष्ठित नागरिक तथा शीर्षस्थ एडवोकेट हैं। मेरी प्रथम काव्यकृति 'अन्तर्ज्वाला' छप चुकी थी और दूसरी कृति 'अग्निशिखा' के प्रकाशन की योजना थी। मैंने सोचा क्यों न बैरिस्टर साहब से मिलकर सहयोग माँगा जाय। सो एक दिन जा धमका-सीधे, बिना किसी को मध्यस्थ बनाये। बैरिस्टर साहब अपनी बैठक में शालीनता से मिले। पूछा, कैसे आना हुआ? मैंने मंतव्य बताया, पाण्डुलिपि दिखाई। कुछ अंश सुनाये। बैरिस्टर साहब सभी कुछ ध्यान से सुनते रहे। मैंने 'अन्तर्ज्वाला' की एक प्रति भी भेंट की। उसके भी उन्होंने पन्ने पलटे। उसमें छपे आचार्य सद्गुरुशरण अवस्थी, आचार्य सोम तथा आचार्य अयोध्यानाथ शर्मा और कवि नीरज आदि के अभिमत पढ़े। तदुपरान्त बोले- 'बड़े आक्रोश में आपने 'अग्निशिखा' जलाई है और सारी बुराई को जला डालने की कल्पना की है। यह है तो अच्छी बात, पर सिर्फ जला डालने की बात कुछ जँचती नहीं,कुछ बनाने की बात भी होनी चाहिए। कुछ रुक कर फिर कहा- आप की 'अन्तर्ज्वाला' में भी ज्वाला ही है। भले ही दु:ख की ज्वाला है। केवल अग्नि की आराधना क्या अधूरी साधना नहीं है? क्या इससे समाज का या खुद कवि भला होगा'?

बैरिस्टर साहब का कथन प्रशंसात्मक नहीं था, तटस्थ विश्लेषणात्मक मात्र था, पर बात इतने कोमल, मृदुल ढंग से कही जा रही थी कि तनिक भी बुरी नहीं लग रही थी। वक्ता का लक्ष्य यदि शुभ हो तो आलोचना बुरी नहीं लगती, सीख देती है। बैरिस्टर साहब का लक्ष्य शुभ था।

1953 जुलाई में मैं बी.एन.एस.डी. कॉलेज में शिक्षक बना। 1956 में प्रवक्ता पद पर नियुक्ति का प्रसंग आया। बैरिस्टर साहब चयन-समिति के अध्यक्ष थे। प्राचार्य श्री अवस्थी जी ने मेरी प्रशंसा की तो बैरिस्टर साहब बोल उठे, 'मैं इन्हें जानता हूँ। मिल चुका हूँ, फिर मेरी ओर उन्मुख हो बोले, 'कहिये, आप के काव्य की प्रगति क्या है? अग्निशिखा छपी या नहीं?' मैंने अपनी प्रगति बताई पर भयभीत हो उठा कि अब मेरा चुनाव शायद ही हो। पर वाह रे सन्तमना बैरिस्टर साहब! मुझे चुना ही नहीं, यह भी कहा- 'ये बड़े प्रतिभाशाली हैं। विषमताओं ने इन्हें उग्र कर दिया था, पर सच्चाई और ईमानदारी इनमें बहुत है। एक दिन साहित्य और शिक्षा को इनकी देन मूल्यवान होगी'। मैं भूल नहीं सकता कि विनाश से सृजन की ओर मोड़ने के उपक्रम में बैरिस्टर साहब का योगदान एक सन्त के समान था। अन्यथा वे मुझे क्यों

चुनते? क्यों न किसी समान विचारधारा के अभ्यर्थी को उपकृत करते?

सन् 1957। छात्र हड़ताल पर थे। बैरिस्टर साहब आये। समझाया। छात्र बोले, 'ये माँगे तो गलत हो ही नहीं सकतीं। इन्हें द्विवेदी जी ने ठीक बताया है'। 'बैरिस्टर साहब को संदेह हुआ कि हो न हो हड़ताल की प्रेरणा में मैं हूँ। प्राचार्य जी ने उन्हें बताया- नहीं, हड़ताल इन्होंने नहीं कराई। उल्टे कल छात्रों की उग्र भीड़ को खतरा उठाकर भी शान्त किया। बेशक जब छात्रों ने इनको अपनी माँगें बताई तो इन्होंने जिन-जिन को ठीक बताया, छात्र उन्हीं पर अड़े थे, शेष छोड़ दी'। बैरिस्टर साहब ने मुझ से बात की और छात्रों की वह माँग भी मान ली जिसमें हजारों रुपयों की वापसी का सवाल था।

बैरिस्टर साहब लघुतम व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत सत्य का भी आदर करते थे। तर्कहीन अनौचित्य उन्हें सहन नहीं था। मेरी अनुभूति यही बनी। अन्यथा वे मुझे हड़ताल का प्रेरक मानते और कभी न कभी किसी बहाने पीड़ा पहुँचाते। पर नहीं, उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। उन्होंने तो मुझे मान दिया और इस बात के लिए गौरव दिया कि मैंने जो सत्य समझा, उसे निर्भय होकर कहा और जिसे असत्य समझा, उसका खण्डन भी किया। मेरी दृष्टि में वे निर्मल, निस्वार्थ सत्य के समर्थक थे।

सन् 1977 मैं कानपुर के बाहर एक महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष था। पूर्व एम.एल.सी. श्री चन्द्रभूषण त्रिपाठी बी.एन.एस.डी. कॉलेज छात्रावास के अधीक्षक थे। उन्होंने छात्रावास के वार्षिकोत्सव में मुझे मुख्य अतिथि बनाया। मैंने अध्यक्ष के आसन पर मान्यवर बैरिस्टर साहब को देखा तो बड़ा सकुचाया। मेरा 'बौनापन' मुझे खला। कहाँ शिक्षा संसार का जाज्वल्यमान सूर्य और कहाँ एक खद्योत। यद्यपि अपनी ओर से बैरिस्टर साहब ने मुझे पूरा मान दिया और मुझे ऐसे सराहा मानों मैं कोई बड़ा शिक्षाविद होऊँ, पर मैं निरन्तर असंतुलित बना रहा। भाषण भी ठीक नहीं कर पाया।

बैरिस्टर साहब मर्यादावादी थे। मर्यादा का सदैव ध्यान रखते थे। पद की मर्यादा थी कि मुख्य अतिथि को मान दिया जाय तो उन्होंने पूरा मान मुझे दिया, भले ही मैं उनकी तुलना में नितान्त बौना था। उनकी महानता थी कि एक अति सामान्य व्यक्ति को समादृत किया। (इस अवसर पर उनके साथ खिंची तस्वीर मेरे पास मूल्यवान सम्पत्ति के रूप में सुरक्षित है।

सन् 1975 मैं पुखरायाँ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचार्य था। माननीय बैरिस्टर साहब पुखरायाँ पधारे थे। महाविद्यालय में उन्हें बुलाकर सम्मानित किया। अपने सम्मान के उत्तर में उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और शिक्षक के आदर्श स्पष्ट किये। उनके शब्दों में उनका आचरण बोलता था। उनकी उपस्थिति स्वयं एक प्रेरक भाषण थी। उनकी अभ्यर्थना में जब मैंने कहा - आप मेरे निर्माताओं में एक हैं, तो वे बोले नहीं रामेश्वर जी, निर्माता तो एकमात्र ईश्वर है। आप में क्षमता थी। आप बढ़े और

बढ़ते गये। आप के बढ़ने में मैंने इतना भर किया कि बाधा नहीं डाली। 'नहीं, मेरा प्राप्य भी मुझे दिया और सबसे महत्वपूर्ण यह कि मेरे नकार को सृजन के आयाम दिये', मैंने कहा, तो बैरिस्टर साहब मन्द-मन्द हँस दिये।

मैं उनकी विचारधारा का नहीं था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी सदस्य नहीं था। कभी मिलने भी नहीं जाता था। केवल स्वकर्म निष्ठा से करता था और सत्य को वेग से पकड़ता था। बस इतने से ही बैरिस्टर साहब ने मुझे स्नेहादर दिया। कोई कुछ भी कहे, मैं भला कैसे कह सकता हूँ कि वे सीमित सिद्धान्तवादी थे, केवल एक विचार को अर्पित थे। मेरी दृष्टि में वे अनुशासन में बंधे होकर भी मुक्तात्मा थे। मर्यादावादी थे, जड़ रूढ़िवादी नहीं थे। सामयिक सत्य को मूल्य देते थे, पर शाश्वत सत्य की उपेक्षा करके नहीं। उन्होंने जिन जिन को अपनी श्रद्धा दी वे निर्विवाद महापुरुष थे- चाहे श्री गुरु जी हों, चाहे श्री दीनदयाल उपाध्याय जी। जिनको अपना स्नेह दिया, वे सभी दृढ़चेता कर्तव्यनिष्ठ रहे हैं- चाहे जे.पी. श्रीवास्तव जी हों, चाहे ओमशङ्कर त्रिपाठी जी और चाहे कोई और। जब जब सनातन धर्म और शिक्षा की बात चलेगी, कानपुर ही नहीं, प्रदेश ही नहीं, सारे देश में उनके प्रदेय की चर्चा होगी।

उनकी स्मृति को विनम्र प्रणाम अर्पित हैं।

(नीराजन : रजत जयंती अंक)

देखते ही देखते

अंशुमन

शहर के एक चौराहे पर
एक कौआ
मरकर गिर पड़ा
देखते ही देखते
आसमान कौओं से भर गया
बाजार काँव-काँव से गूँज उठा
उसी शहर के दूसरे चौराहे पर
एक आदमी
दिन-दहाड़े मारा गया
देखते ही देखते
सड़कें खाली हो गई
बाजार वीरान हो गया।
न जाने क्यों मुझे यह लगा
कि देखते ही देखते
इंसान कौओं से भी नीचे गिर गया।

बैरिस्टर साहब

डॉ. विश्वेश्वर दयाल शुक्ल
(पूर्व अध्यक्ष, इतिहास, वी.एस.एस.डी. कॉलेज)

भारतीय संस्कृति के पोषक सनातन धर्म के उन्नायक एवं आराधक, शिक्षा के मर्मज्ञ एवं विधायक श्री नरेन्द्रजीत सिंह जी को हम लोग बैरिस्टर साहब कहकर अभिहित करते हैं। यह शब्द-युग्म उनके पद अथवा उपाधि का द्योतक नहीं, अपितु उनके प्रति आत्मीयता का अभिव्यंजक है। इसमें उस सरसता की व्यंजना है जिसकी अनुमति स्वजनों को बुलाने में होती है।

बैरिस्टर साहब से हम इतने घुले-मिले हैं कि उनसे अलग होकर उनका परखना-निरखना, उनको देखना-दिखाना सम्भव नहीं। उनके विषय में लिखना-पढ़ना ऐसा प्रतीत होता है मानो हम अपने विषय में ही कुछ कह रहे हों- आत्मश्लाघा वांछनीय नहीं समझी जाती।

बैरिस्टर साहब का जन्म कानपुर में 18 मई, 1911 को एक सुसम्पन्न और प्रख्यात परिवार में हुआ था। इनके पूज्य पिता स्व. राय बहादुर श्री विक्रमाजीत सिंह जी उन देशरत्नों में थे जिन्होंने अपने अमूल्य योगदान से समाज और राष्ट्र को समुन्नत किया था। वकालत के क्षेत्र में तो वे अग्रणी थे ही, साथ ही वे कानपुर की नगरपालिका के चेयरमैन, तत्कालीन संयुक्त-प्रदेश की कौंसिल के सदस्य, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रेसीडेंट रहे, और इन सभी क्षेत्रों में उनकी सेवायें सतत् स्पृहणीय रहेंगी। वे 'योगः कर्मसु कौशलम्' के ज्वलंत उदाहरण थे। एस.डी. कालेज की स्थापना का श्रेय इनके पुरुषार्थ और कार्य कौशल को था। इसकी स्थापना में इन्होंने न केवल अपनी प्रभूत सम्पत्ति वरन् लाखों रुपये चंदे में संग्रह कर लगा दिए। श्री नरेन्द्रजीत सिंह को जहाँ विपुल वैभव विरासत में मिला, वहीं उन्हें अनेक उदात्त गुण भी पैतृक सम्पत्ति में प्राप्त हुए। जिस 'आचरण की सभ्यता' के कारण नरेन्द्र बाबू आज समग्र समाज के कंठहार बने हुए हैं वह इनको घुट्टी में पिला दी गई थी।

जीवन की पृष्ठभूमि में जो सुख-सुविधायें, अध्ययन के साधन, कार्य-क्षेत्र, पुस्तकालय, साज-सज्जा आदि पं. जवाहर लाल नेहरू को पैतृक सम्पत्ति में मिली थी, उसी प्रकार की सुख-सामग्री और साधन सम्पन्नता नरेन्द्र बाबू को भी सुलभ थी। राय बहादुर साहब ने इनकी शिक्षा - दीक्षा का समुचित उपबंध किया। स्वदेश और विदेश में इनको सुशिक्षित बनाने के लिए कोई कसर बाकी न रखी गई। नरेन्द्र बाबू ने भी उन समस्त साधनों का सदुपयोग किया। इनका छात्र जीवन उदात्त सफलताओं से संकुलित था। ये प्रारम्भ से ही मेधावी और कुशाग्र-बुद्धि थे। स्थानीय बी.एन.एस.डी. स्कूल में (उस समय यह कॉलेज नहीं था) इन्होंने 1920 से 1926 तक शिक्षा प्राप्त की और 1926 में प्रथम श्रेणी में गणित में विशेष योग्यता के साथ हाई स्कूल उत्तीर्ण किया।

यू.पी. बोर्ड की योग्यता की सूची में इनका बारहवाँ स्थान था। इसी प्रकार क्राइस्ट चर्च कालेज से

1928 में इन्होंने इण्टरमीडिएट रसायन और गणित में विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया और बोर्ड की योग्यता की सूची में इनको छठा स्थान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1930 में इन्होंने प्रथम श्रेणी में बी.एस.सी. की उपाधि और विश्वविद्यालय में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। विलायत जाने के पूर्व ये दो महीने तक अपने एस.डी. कॉलेज की एल.एल.बी. कक्षा में पढ़ते रहे। इंग्लैंड में इनका छात्र-जीवन सफल रहा। 1932 में इन्होंने मैथेमेटिक्स में बी.एस.सी. स्पेशल पास किया और 1932 में इनर टेम्पल, लंदन से बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। जिस प्रकार कक्षा में इनका स्थान वैभवपूर्ण था, उसी प्रकार क्रीड़ा क्षेत्र में भी ये अग्रणी थे। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दू छात्रावास में टेनिस के कैप्टन रहे। लन्दन यूनिवर्सिटी कालेज में भी ये टेनिस में फर्स्ट नेट के सदस्य रहे।

विलायती वातावरण में रहकर भी इनका जीवन भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आदर्शों से उद्भासित रहा, अथवा यों कहिए कि पश्चिमी सभ्यता की प्रतिक्रिया ने इनकी भारतीय संस्कृति के प्रति भावना को और अधिक प्रदीप्त कर दिया। कभी भी आहार-विहार, आचार-विचार में इन पर विलायत का रंग नहीं चढ़ा। एक बार एक अंग्रेज मित्र ने इन्हें और इनके एक भारतीय साथी को भोजन के लिए आमंत्रित किया। पूछे जाने पर कि आप लोगों को बीफ खाने में कोई आपित्त तो नहीं, इनके भारतीय साथी ने मौन स्वीकृति प्रदान की, परन्तु इन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि ये निपट शाकाहारी हैं, और इनको सुरापान आदि से भी परहेज है। इनकी इच्छानुसार ही भोजन का प्रबन्ध किया गया। उस अंग्रेज मित्र ने इनके संयम, निर्भीकता और विवेक की बड़ी सराहना की। आज इस देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जिनका शरीर और मस्तिष्क दोनों स्वस्थ हों, चारित्रिक संघटन में स्वस्थ शरीर और कुशाग्र बुद्धि दोनों का सम्यक् समन्वय हो। बैरिस्टर साहब के छात्र-जीवन में इन दोनों पक्षों का मणि-काञ्चन संयोग संघटित हुआ था। पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अध्ययन के साथ इण्टरमीडिएट में ही इन्होंने टॉमस हार्डी और डिकेन्स के सभी उपन्यास पढ़ डाले। उसी प्रकार विलायत में भी विज्ञान और विधि के वाङ्. मय के गम्भीर अध्ययन के साथ इन्होंने अंग्रेजी साहित्य सरोवर से भी छक कर पान किया था। वहीं से इनको राजनीति एवं दर्शन के प्रति श्रद्धा बढ़ी और उन सबका इन्होंने गहन अध्ययन किया। उन पर अंग्रेजियत तो नहीं चढ़ी परन्तु अंग्रेजी जीवन की पाबन्दी, अनुशासन, कार्य-दक्षता, उद्देश्य की पवित्रता आदि का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसकी छाया अभी तक नहीं मिटी, वरन् समय पाकर वह और सघन हो गई।

बैरिस्टर साहब भाग्यशाली भी बहुत हैं। जहाँ पिता का वैभव-विलास और शीतल छाया इनको फूलने-फलने के लिए मिली, उसी प्रकार इनका विवाह भी कश्मीर राज्य के धन कुबेर स्व. दीवान बद्रीनाथ जी की कन्या से हुआ। काश्मीर के महाराज के बाद उनके राज्य में धन, वैभव, अधिकार आदि में यदि समाज में किसी का दूसरा स्थान था, तो वह दीवान साहब का। इनका सुविशाल महल, जो 'शाश्वत भवन' के नाम से श्रीनगर में प्रख्यात है, शंकराचार्य पर्वत के अंचल में काश्मीर महाराज के

महलों की शृंखला में स्थित है। जम्मू और कश्मीर के सुविस्तृत राज्य में दीवान साहब की बहुत बड़ी जागरी थी। जम्मू और श्रीनगर की कोठियाँ, मंदिर, ठाकुरद्वारे, अतिथि भवन, पुस्तकालय, उपवन, फलों के बगीचे हैं। जिन दीवानिनी महोदया के एक लाख रूपये के दान के फलस्वरूप हमारे विज्ञान-संकाय का आरम्भ संभव हो सका, वे इन्हीं दीवान साहब की पत्नी थी। आज ये दम्पति अपनी ऐहिक लीला संवरण कर दिवंगत हो चुके हैं।

इन्हीं की सुपुत्री, श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह जी ने बैरिस्टर साहब के सामाजिक जीवन को और अधिक समुन्नत, धर्मपरायण एवं हिन्दू भावापन्न बनाने में बड़ा सहयोग दिया है। इनके दो गुणवान पुत्र और दो गुणवती पुत्रियाँ हैं।

बैरिस्टर साहब के व्यक्तित्व के विविध पक्ष थे, वे कहा करते थे कि इनको पाठ्यक्रम कार्यकलाप (Extra Curricular activities) से अवकाश नहीं मिलता। वकालत के उद्यम के अतिरिक्त इन्होंने समाज के अनेक दायित्वपूर्ण कार्यों को अपने ऊपर ले रखा था। ये श्री सनातन धर्म महामण्डल के 1955 से सभापति रहे थे। इस 'महामंडल' के अन्तर्गत अनेक संस्थाएँ हैं, वी.एस.एस.डी. कॉलेज, बी.एन.एस.डी. कॉलेज, दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय, औषधालय, पुस्तकालय आदि। इसके अतिरिक्त ये छोटेलाल गयाप्रसाद ट्रस्ट, रावतपुर ट्रस्ट, नारायणी देवी धर्मार्थ औषधालय ट्रस्ट आदि के सभापति तथा जे.के. सिन्थेटिक्स लिमिटेड, कानपुर तथा नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता के डाइरेक्टर थे और साथ ही बी.आई.सी. आदि के निगमों के विधि मंत्रणाकार थे। इसके अतिरिक्त न जाने कितनी संस्थाओं के सदस्य, सचिव तथा कार्यकर्ता थे। ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्तीय संघचालक थे। जिस संस्था से इनका संबंध हो जाता था उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती थी और उस पर जनता का विश्वास टिक जाता था। कानपुर उद्योगपतियों तथा लक्ष्मी के लालों का नगर है। यह पूँजीपतियों का गढ़ है। यहाँ नागरिकों की देश-विदेश सभी जगह ख्याति फैली हुई है। इनमें जो मान-प्रतिष्ठा, विश्वासपात्रता, तथा लोक श्रद्धेयता इनके बाँट पड़ी है, ऐसी गौरव-गरिमा की भाग्यरेखा विरले के ही हाथ में पड़ी होगी। इनकी निष्पक्षता, समग्रता, सत्यसन्धता, वैधी-ज्ञान की गहराई के कारण उच्च न्यायालय पेचीदा मामले इनके पास विवाचन (arbitration) के लिए भेज देते थे। इनके विवाचकीय निर्णय बहुत लोक-प्रिय थे। दोनों पक्ष स्वयमेव अपने वाद पंचनिर्णय के लिए इनको सौंप देते थे और आजकल के लाल फीते के झंझटों तथा अपव्ययता के भार से बच जाते थे। मेरे दो-एक पूर्व छात्रों ने जो यहाँ न्यायाधिकारी होकर आए, बैरिस्टर साहब की युक्तियुक्त संतुलित तर्कशैली की प्रशंसा करते हुए कहा कि "इनके Court etiquette को देखकर सर तेज काटजू, पं. मोती लाल नेहरू आदि का स्मरण हो आता है। इनके व्यक्तित्व में गजब का आकर्षण है।" एक मेरे पूर्व छात्र मजिस्ट्रेट ने मुझसे यहाँ तक कहा, "जिस समय वह बहस करते हैं तो मेरा ध्यान इतना अधिक इस पर नहीं जाता है कि वह क्या कह रहे हैं। मैं तो यह देखा करता हूँ कि यह कैसे कहते हैं। What a contrast between him and many others!

जैसा ऊपर संकेत किया जा चुका है कि श्री नरेन्द्र जीत सिंह जी वी.एस.एस.डी. कॉलेज की प्रबंध समिति के मंत्री थे। मंत्री शब्द के द्वारा कालेज के प्रति इनकी घनीभूत श्रद्धा का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वे कहा करते थे कि 'मेरे लिए तो यह कालेज नहीं मंदिर है जिसकी स्थापना पूज्य बाबू जी ने की थी। मैं अपना यह पुनीत कर्तव्य समझता हूँ कि इसकी अखण्ड ज्योति जगाता रहूँ।" सचमुच जिस बिरवा को स्वर्गीय राय बहादुर साहब ने लगाया था, बैरिस्टर साहब के सतत् उद्यान कौशल के द्वारा आज वह प्रौढ़ वृक्ष के रूप में प्रतिष्ठित है, और फल-फूलों के भार से अवनत उसकी विविध शाखायें चतुर्दिक फैल रही हैं। उसके पुष्पों के स्निग्ध सौरभ से सारी दिशायें सुरभित हो रही हैं। रोजी के बाजार में उसके फलों की काफी कदर है। परन्तु कोई चीज स्वतः नहीं बन जाती। कहा जाता है रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। इस कालेज के निर्माण में कई व्यक्तियों के त्याग, तपस्या एवं तितिक्षा का योगदान है।

स्वर्गीय स्वामी दयानन्द जी की वरद छत्रछाया में इस संस्था का सूत्रपात हुआ। स्व. रायबहादुर साहब ने अपने सुपुत्र श्री महेन्द्रजीत सिंह को न तो प्रयाग विश्वविद्यालय भेजा और न समीपस्थ क्राइस्टचर्च कालेज में प्रवेश दिलवाया वरन् उनको एस.डी. कॉलेज में पढ़ने के लिए भेजा, यद्यपि इसके लिए उन्हें अलग से एक कार का प्रबंध करना पड़ा। बैरिस्टर साहब का तो सारा परिवार दोनों लड़के और लड़कियाँ, वे स्वयं थोड़े दिन के लिए ही सही - अपने कालेज के वरिष्ठ विद्यार्थी रहे। इनके कनिष्ठ पुत्र श्री वीरेन्द्र पराक्रमादित्य ने उसी वर्ष इस कालेज में प्रवेश लिया जिस वर्ष यहाँ विज्ञान की कक्षाओं का श्रीगणेश हुआ। इनके भाइयों के बच्चों ने काल्विन तालुकदार कॉलेज तथा कान्वेंट में शिक्षा प्राप्त की। परन्तु बैरिस्टर साहब का विश्वास तो उस अंग्रेज देशभक्त की भाँति है जो प्रत्येक वस्तु के लिए कहा करता था - If it is British it is the best ये भी सगर्व कहते हैं - If you want to educate your child V.S.S.D. College is the best ! इस कॉलेज की प्रतिष्ठा वृद्धि और सर्वतोमुखी विकास के लिए इनकी अनेक योजनाएँ हैं जिनके कार्यान्वयन के लिए ये सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। इनकी योजना प्रक्रिया विवेकपूर्ण और क्रमसंगत होती है। इन्हें ऊल-जलूल कोई काम पसन्द नहीं। दोनों छात्रावासों के सामने एक विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, स्कॉलर्स लॉज, योगाश्रम, जलाशय, भोजनालय, छोटे-छोटे गुरु गृह, प्राचार्य कुटीर आदि यों ही अन्धाधुन्ध नहीं बना दिए गए। यदि ध्यानपूर्वक इनका सामूहिक निरीक्षण किया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें स्थापित निजी प्रज्ञा, परिकल्पना, क्रिया कौशल, शील, दूरदर्शिता और बौद्धिक एवं शास्त्रीय योग्यता कितनी उच्चकोटि की है। स्थापित को शास्त्र, प्रज्ञा, शील सम्पन्न एवं वास्तु विषय के लक्षण और लक्ष्य में कुशल और निष्णात होना चाहिए। इस महाविद्यालय निवेश (College planning) के अधियोजक में स्थापित के सभी गुणों का सन्निवेश है-

'स्थापकान् स्थपतींश्चापि पूजयामि स्वशक्तितः'

बैरिस्टर साहब को कालेज के आधिविद्य जीवन (Academic Life) के स्तर को ऊँचा करने का भी ध्यान रहता है। इनके पास प्रथम श्रेणी के छात्रों की सूची रहती है और ये प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से सम्पर्क रखते हैं। और उनकी उत्तरोत्तर प्रगति को देखते रहते हैं। यदि किसी के मार्ग में कोई बाधा पड़ती है, तो अविलंब उसका निवारण करते हैं। उनका कालेज के विशिष्ट छात्रों और सभी अध्यापकों से निजी सम्बन्ध है। वे उनके नाम जानते हैं। गांधी जी की लोकप्रियता का एक कारण यह भी बतलाया जाता है कि उनका सभी दलों के नेताओं, साथियों तथा दूरस्थ व्यक्तियों से व्यक्तिगत सम्बन्ध रहता था। जो व्यक्ति जिस बात में बद्धहित होता गांधी जी पहले उससे उसी की चर्चा करते थे। वे टैगोर से शान्ति निकेतन और सरोजनी नायडू से अंग्रेजी कविता की चर्चा करते थे। राजेन्द्र बाबू से दमा और मौलाना आजाद से जुकाम की बाबत पूछा करते थे। एक सज्जन की केवल एक लड़की थी, जो प्रायः बीमार रहती थी। प्रत्येक पत्र में वे उस लड़की के सम्बन्ध में लिखा करते थे। उनकी इस आत्मीयता को देखकर प्रत्येक व्यक्ति यही समझता था कि वह बापू के सबसे निकट है। यह गुण बैरिस्टर साहब में भी प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। उनके और प्राध्यापकों के बीच समता का भाव रहता है। वे किसी के मार्ग में बाधा नहीं डालते। वे योग्यता वृद्धि के प्रयास में सबकी सहायता करते हैं। यहाँ से चले जाने के बाद भी अनेक छात्रों और प्राध्यापकों का इनसे पत्र व्यवहार और आना-जाना बना रहता है। वे पत्र कई बातों में महत्वपूर्ण हैं। उनमें घरेलू बातों का उल्लेख तो रहता ही है अन्य विषयों का प्रतिपादन भी उनमें मिलता है। अमेरिका और विलायत से आने वाले पत्रों में विज्ञान, शिक्षा, समाज तथा अनेक आधुनिक विषयों का विश्लेषण किया जाता है। इन सारे पत्रों का प्रत्युत्तर उसी स्तर पर भेजा जाता है। इस सामाजिक व्यवहार साधना में कितना समय और शक्ति लगती है, परन्तु इससे शील की महत्ता अनुमान भी लगाया जा सकता है। उनको निर्धन छात्रों की सहायता करने में बड़ी दिलचस्पी रहती है। कालेज के छात्र तो उन पर ऐसी श्रद्धा और प्रेम करते हैं, मानो ये उनके माता-पिता हों। जब कभी किसी छात्र से पिछली फीस माँगी जाती, तो वह चट यही उत्तर देता कि वह बैरिस्टर साहब के पास जायेगा। उसके उत्तर में उस विश्वास और दृढ़ता की झलक मिलती जैसी उस व्यक्ति के कथन में होती है जिसका किसी बैंक में पैसा जमा हो। बैरिस्टर साहब निर्धन छात्रों के बैंक हैं जहाँ बिना पैसा जमा किए पैसा मिल जाता है। आपद ग्रस्तों एवं संत्रस्तों के त्राता हैं, गुमराहों के रहनुमा और होनहार बिरवानों के सर्वस्व। जिस किसी को कालेज के अनुशासन में कुछ कशमकश होती वह सारे बन्धत तोड़कर इनके पास पहुँचता। वे उसकी बात सुनते और कालेज के अनुशासन और उस व्यक्ति की निजी कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए ऐसा हल निकालते कि वह व्यक्ति गर्व स्फीत होकर लौटता।

एक बात निपट व्यक्तिगत होते हुए भी यहाँ उसके उल्लेख का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता। मुझे एक बार कालेज से ऋण लेने की आवश्यकता हुई। परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि उतना धन प्रोनोट पर मुझे अकेले नहीं मिल सकता था। बैरिस्टर साहब ने प्रोनोट पर मेरे नाम के साथ अपने एक लड़के को

सही ऋणी (Co debtor) बनाया। जिस पर इनकी कृपा की गई हो वह व्यक्ति तो इनके हाथ बिक गया। ऐसे अनेक ज्वलन्त उदाहरण हैं जो उनकी अध्यापकों के प्रति आत्मीयता के परिचायक हैं। छात्रों और अध्यापकों के साथ तो इनकी घनिष्टता है ही, अल्प वेतन भोगी कर्मचारी भी अपने को निरालंब नहीं पाता। कई चपरासियों का उनसे सीधा सम्बन्ध है। शासन की ओर से जीविका की इतनी प्रतिभूति (Security) नहीं मिल सकती जैसी इन लोगों को सुलभ है। अवकाश प्राप्ति के समय इनकी सजल विदा भी कम महत्त्व की नहीं। यह जानकर कि इनका कोई सहारा है, इनकी बाँह पकड़ने वाला कोई मौजूद है, ये यूनियन आदि के चक्कर के नहीं पड़ते।

बैरिस्टर साहब का विश्वविद्यालय में, शिक्षा विभाग में, समग्र शिक्षा क्षेत्र में एक विशिष्ट सम्मानपूर्ण स्थान है। इनकी ख्याति सुनकर भारतीय गणतन्त्र के राष्ट्रपति ने इन्हें अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कोर्ट का सदस्य मनोनीत किया है।

श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के अन्तर्गत दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय की स्थापना की गयी, जहाँ पर छठवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है। यह संस्था अंग्रेजी पब्लिक स्कूल का भारतीयकरण है। इसमें पढ़ने वाले छात्र यहीं रहेंगे। इनका अध्यापन, क्रीड़न, अवकाश यापन क्रमबद्ध और सुशृंखल होगा। इनके संस्कारों पर भारतीयता की छाप होगी। जैसे काशी विद्यापीठ के स्नातक आज राजनीतिक नीलगगन में जगमगा रहे हैं, उसी प्रकार एक दिन समाज के प्रांगण में इनकी प्रभा का भी प्रसार होगा।

श्री नरेन्द्रजीत सिंह भारतीय संस्कृति के भक्त थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघचालक थे। इस संस्था के संगठन, संचालन, इसकी गतिविधि के नियमन, प्रस्फुटन आदि में इनका मनसा, वाचा, कर्मणा सहयोग है। इसकी प्रतिष्ठावृद्धि के हेतु उनको कुछ अदेय नहीं है। समय, धन सम्पत्ति, श्रम, परामर्श, मेधा विवेक, बुद्धि, कार्यकौशल सभी कुछ संघ की वेदी पर समर्पित है। आज 'धर्म निरपेक्ष' भारत के सामाजिक वातावरण में अपने को हिन्दू कहना - कहलाना माने साम्प्रदायिकता का विज्ञापन देना है, संकीर्णता एवं अप्रगतिशीलता का बिल्ला लगाना है। हिन्दुस्तान में रहकर हिन्दू कहलाने में संकोच। कैसी विडम्बना है। पर बैरिस्टर साहब को अपने आपको हिन्दू कहने में गौरव और हिन्दुत्व में गर्व की अनुभूति होती थी। हिन्दू कभी संकीर्ण हो नहीं सकता। जिसने व्यष्टि और समष्टि सारे चराचर जगत को एक चैतन्य शक्ति आत्मा अथवा ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना है, जिसने प्राणि-मात्र को अपना स्वरूप समझा है भला फिर वह किससे बैर की बात सोचे। इनका हिन्दुत्व महामना मालवीय का हिन्दुत्व है सहिष्णुता, उदार राष्ट्रीयता जिसके लक्षण हैं। इनका हिन्दुत्व तिलक का हिन्दुत्व है जिनकी सामाजिक विचार अवधारणा में सृष्टि व्यापिनी करूणा है। इनके हिन्दुत्व में स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त गर्जन की प्रतिध्वनि है, जिस गर्जन ने सारे अमेरिका की आँखे खोल दी, जो गूँज सारे ईसाई जगत पर छा गई, जो

समझ गए कि वेदान्त ही धर्म का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है और जिसने 19 वीं शती के उत्तरार्द्ध में नवोत्थान के प्रभात में भारतीयों को राष्ट्रीयता का 'ॐ नमः सिद्धम' आरम्भ कराया।

उनके विचार से हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता की भावनाओं में कोई विरोध नहीं। दोनों में अन्योन्याश्रय भाव है। वीर सावरकर ने एक जगह पर कहा है, "A Hindu patriot worth the name can't but be an Indian patriot as well." इसका कारण भी स्पष्ट है। हिन्दुओं के लिए हिन्दुस्तान ही पितृ देश, मातृ देश तथा पुण्य देश है। यही उनका मक्का, यही येरूशलम। अस्तु इस देश के प्रति उनकी संख्या बेशुमार थी। मुठ्ठी भर लोगों को छोड़कर बाकी और लोगों को तो बालू बांध कर सती किया गया था। वे तो खून लगाकर शहीद बने थे। हिन्दुत्व की यह अवधारणा संकीर्ण नहीं कही जा सकती। फिर सावरकर के ही शब्दों में "आमुचा स्वदेश। भवनत्रया मध्ये वास।" हिन्दू शब्द की ध्वनि निम्नांकित श्लोक में भरी है-

आसिन्धु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिंदुरिति स्मृतः।

बैरिस्टर साहब की राष्ट्र की परिकल्पना में सबको स्थान है। उनके परिकल्पित समाज में 'आचरण की सभ्यता' होगी, परस्पर भ्रातृ-भाव की स्निग्धता होगी, राष्ट्र की ममता होगी, परन्तु साथ ही विश्व-व्यापिनी सहानुभूति एवं सम्वेदना होगी। उसमें प्रत्येक युवक के लिए स्वास्थ्य का एक राष्ट्रीय स्टैंडर्ड होगा। (National Standard of Physique for every youth) सभी नागरिकों की मिल-जुल कर रहने की, और मिल-बाँट कर खाने की प्रवृत्ति होगी। वह समाज और राष्ट्र उद्भावना मात्र न होंगे। उनका गोचर साक्षीकरण करने के लिए पुरातन के प्रति प्रत्यावर्तन करना होगा। प्राचीन समाज और संस्कृति को आधुनिक विज्ञान और टेक्नॉलाजी के साँचे में ढालकर संजोना पड़ेगा। उस समाज में शरणागत वत्सलता होगी जिससे प्रेरित होकर प्रथम शती में ईसाइयों का दक्षिण प्रदेश में स्वागत किया गया। उसमें चालुक्य नरेशों की उदारता होगी जिससे प्रभावित होकर मुसलमानों के लिए मस्जिदों का निर्माण किया गया। परन्तु उसमें ईसाइयों और मुसलमानों को अपने-अपने धर्म पर आरूढ़ रहते हुए भारतीय राष्ट्र का घटक बनना पड़ेगा। उसके दुःख में रोना और सुख में हँसना होगा। हिन्दु राष्ट्र योजना में समाविष्ट होने के लिए धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नहीं वरन् भाव परिवर्तन की आवश्यकता होगी। सिन्धु तक फैले हुए देश की संस्कृति के प्रति उसकी सफलता और विफलता, उसकी राजनीतिक और आर्थिक उन्नति-अवनति, उसके कला और साहित्य में समभाव और समवेदना की अनुभूति और अभिव्यक्ति अपेक्षित होगी। हिन्दुत्व की इस परिकल्पना में साम्प्रदायिकता की गंध ढूंढने वालों की घ्राण शक्ति भले ही तीव्र हो, उनकी बुद्धि की दुर्बलता छिपाना कठिन है।

बैरिस्टर साहब के स्वजन-परिजनों को यह आश्चर्य होता था कि आज के लोकतांत्रिक वातावरण में जब मंत्रिपद शाक-भाजी से सस्ता हो गया है, जो तुलसीदास के शब्दों में 'अनइच्छित आवइ बरियाई', उनका उधर ध्यान भी नहीं जाता था। ये सपने में भी उधर आँख उठाकर नहीं देखते। क्या इसका कारण है कि इनमें क्षमता नहीं, इनको समय और सुविधा नहीं, समाज का समर्थन नहीं, इनके व्यक्तित्व में आकर्षण नहीं, नागरिकों का इन पर विश्वास नहीं? तो फिर इस उदासीनता का क्या रहस्य है? यद्यपि आज विधान मण्डल के सदस्य या मंत्रिपद के लिए उपर्युक्त किसी गुण की अपेक्षा नहीं, पर इनमें ये सारी विशिष्टताएँ उपलब्ध हैं। इनमें क्षमता है क्योंकि ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे सुविशाल संस्थान के प्रान्तीय संघचालक हैं। इनको समय और सुविधा है क्योंकि ये वकालत के अतिरिक्त विविध भाँति की समाज सेवा करते हैं। इनमें आकर्षण है और जनता की श्रद्धा भी है क्योंकि इन्होंने स्वामी विवेकानन्द स्मारक निधि के लिए प्रभूत धनराशि एकत्रित की, और वे अनेक ट्रस्टों के अध्यक्ष हैं। यह भी नहीं ये वीतराग हों, समाज की भीड़-भाड़ इनको पसन्द न हो। ये अपनी और कालेज की अचल सम्पत्ति के प्रबन्धकों से कहा करते थे कि अदालत को निर्णय के लिये जाने से पहले उस अनधिकारी को अर्धचन्द्र देकर निकाल जो तुम्हारे मकान को बलात् अधिकृत करना चाहता हो। वे ये राष्ट्र के उच्चतम पद पर आसीन होने के योग्य थे और इनकी पद स्वीकृति से इनकी इतनी शोभा नहीं बढ़ेगी जितनी उस पद की। यह पद अस्वीकृति ही इनके त्याग और सिद्धांत पर अटल रहने की परिचायिका है। इनका यह विचार है कि आजकल की राज्य व्यवस्था में पदाधिकार राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर नहीं होगा।

बैरिस्टर साहब का लघु-शब्द-चित्र तब तक पूर्ण न होगा, जब तक उनकी कार्य-प्रणाली के विषय में दो चार शब्द अंकित न किए जाएँ। उनकी रीति-नीति व्यावहारिक थी। वे यथार्थवादी थे। वे किसी बात को दूसरे दिन के लिए नहीं छोड़ते थे और न उसके दायित्व को दूसरे के सिर पर मढ़ते थे। उनमें कार्य कौशल के साथ कार्य-प्रवर्तन की अपार क्षिप्रता थी। वे किसी काम को अर्से तक टाँगे रखने के पक्ष में नहीं थे। उनका कहना था कि हमें प्रत्येक कार्य के मूल में गहराई तक जाना चाहिए, फिर अविलम्ब निर्णय ले लेना चाहिए। वे 'नेति, नेति' के समर्थक नहीं थे। दीर्घ-सूत्रता उनको खलती थी। उन्हें यह पसन्द नहीं कि साधारण बात को अकारण तूल दिया जाय। उनकी बुद्धि सारग्राही है।

वे लम्बे-चौड़े बयान या लेख से अपने मतलब की बात चट से निकाल लेते थे। उनका कहना था कि यह सम्भव नहीं कि हमारे निर्णय सर्वांशतः ठीक ही बैठें। परिस्थितियों को देखकर सर्वोत्तम निर्णय कर लेना चाहिए। प्रायः बिल्कुल निर्णय न लेने से सदोष निर्णय ले लेना अच्छा है क्योंकि दोष का तो कालांतर में निवारण सम्भव है, परन्तु विलम्ब से निर्णय लेने से अथवा निर्णय के अभाव में अधिक हानि की आशंका रहती है। वे चाहते थे कि उनसे नपी-तुली बात की जाय और वे स्वयं भी अनर्गलता में विश्वास नहीं करते थे। कुछ लोगों का स्वभाव होता है कि उनसे कोई मिलकर बात करे। ये इसको उचित

समझते थे कि उनके पास उद्देश्य लिखकर भेज दिया जाए। उसे पढ़कर वे उसका समुचित उत्तर दे देते थे और कहते थे, इससे श्रोता-वक्ता दोनों का समय बच जाता है।

इस छोटे शब्द चित्र में उनके प्रतिभा सम्पन्न जीवन के विविध पक्षों की व्याख्या न सम्भव ही है और न अभीष्ट ही। उनके व्यक्तित्व में वह आकर्षण है कि उनसे वाद-विवाद में पराजित होने में भी विजय की अनुभूति होती है। एक अंग्रेज विद्वान ने महापुरुष के लक्षणों की व्याख्या की है। उन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवत: ऐसी महानता का प्रत्यक्षीकरण नहीं हो सकता, परन्तु जिनका बैरिस्टर साहब से सम्पर्क हुआ है, वे निर्विवाद कह सकते हैं कि उनमें महापुरुष के सभी लक्षण विद्यमान थे। एक सज्जन का कालेज से सुप्रीमकोर्ट में मुकदमा चल रहा था। हम लोग स्वर्ण जयन्ती का चन्दा माँगने के लिए उनके पास पहुँचे और अपनी माँग को प्रभावी बनाने के लिए उनसे कहा कि अबकी बार हम लोग बैरिस्टर साहब को भी साथ लायेंगे। उनका नाम सुनते ही वह स्नेह विभोर होकर अंग्रेजी में कहने लगे, "Please don't bring him. He is a noble soul. I will myself go to him." मुझे बाबा तुलसीदास की निम्नांकित अर्धाली का स्मरण हो आया जो बैरिस्टर साहब पर सम्यक् रीति से चरितार्थ होती है।

वैरिउ राम बड़ाई करहीं,

बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं।

उनकी 'बोलनि', 'मिलनि' सुनकर और देखकर किसी विरोध अथवा वैर का भाव ही तिरोहित हो जाता है। मैंने अथवा वैर का भाव ही तिरोहित हो जाता है। मैंने उनको हर्षोल्लास में भी देखा है, विचारशील मुद्रा में भी, आक्रोश की छाया में भी उनके दर्शन हुए हैं, परन्तु हर हालत में उन्होंने संयम के बाँध को नहीं तोड़ा। आक्रोश में भी उनके मुख से एक भी अपशब्द नहीं निकलता। परन्तु उनकी विनम्रता का अनुचित लाभ लेकर कोई उनको अपने संकल्प और धारणा से च्युत् नहीं कर सकता। ऐसा नहीं होता कि कोई बात कहकर चला जाए, और ये उसका उत्तर न दें। परन्तु इनके उत्तर में शालीनता की मिठास होगी। वे सत्य भी बोलते हैं और प्रिय भी। उनमें विनोदप्रियता और वाग्विदग्धता भी असामान्य है। एक बार वे मेरे यहाँ भोज में पधारे। मैंने पूछा, "बैरिस्टर साहब आपका ड्राइवर है?" उत्तर मिला, "है"। मैंने कहा, 'कहाँ', 'कहाँ?' अपनी ओर संकेत करके कहने लगे, 'यह कैसा बैठा है।' इसी प्रकार एक बार कॉलज में अखिल भारतीय बॉलीबॉल टूर्नामेंट हुआ। समापन करते हुए आपने अपने व्याख्यान में कहा, 'प्रिंसिपल शर्मा ने जिस स्वयंवर की रचना की थी उसमें पंजाब विश्वविद्यालय आज देश-विदेश के उम्मीदवारों को पराजित कर विजय श्री जीत कर लिए जा रहा है।' ऐसा विनयशील, दृढ़ संकल्पवान, सच्चरित्र, लोकसंग्रही व्यक्ति जिस वंश में जन्म ले, जिस समाज में उसका प्रादुर्भाव हो, जिस राष्ट्र को उसका साहाय्य सुलभ हो, वह वंश धन्य है, वह समाज धन्य है, और वह राष्ट्र धन्य है।

('ऋतम्भरा' से साभार)

एक बहुमुखी व्यक्तित्व

गुलाब दत्त त्रिपाठी

संघमय अस्तित्व : म्युनिसिपल कमिश्नर का चुनाव लड़ रहे बैरिस्टर साहब सम्पर्क हेतु डी.ए.वी. छात्रावास आये हुए थे। उनका व्यवहार देखकर मैंने अन्य विद्यार्थियों से उनके पक्ष में वोट डालने का आग्रह किया। नब्बे प्रतिशत ने उनके पक्ष में मतदान किया और वे विजयी हुए। तत्पश्चात् मैं उन्हें दयानंद सायं शाखा के मकर संक्रांति कार्यक्रम (14 जनवरी 1944) के मुख्य अतिथि पद हेतु आमंत्रित करने गया। चुनाव में स्वयंसेवकों ने निस्वार्थ भाव एवं पूर्ण निष्ठा से उनके लिए जो कार्य किया था उससे वे प्रभावित तो थे ही। उन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया और कार्यक्रम में क्या बोलना होगा, इसकी जानकारी चाही। संघ-संस्थापक डॉ. हेडगेवार के जीवन से संबंधित एक पुस्तक मैंने उन्हें दी जिसमें मकर संक्रांति उत्सव के विषय में भी कुछ सामग्री थी। कुछ और बातें भी संघ के बारे में मैंने उनको बतायीं। संघ कार्य में पूज्य बैरिस्टर साहब का वह प्रथम आगमन था। फिर तो नियमित रूप से स्वयंसेवकों के साथ मैं उनसे मिलने जाने लगा। माननीय अनंत राव गोखले उस समय कानपुर महानगर के प्रचारक थे। गोखले जी प्रायः उनसे मिलते रहते थे। फिर बैरिस्टर साहब स्वर्गीय भाऊराव देवरस के सम्पर्क में भी आये, संघ से उत्तरोत्तर प्रभावित होते गये और विभिन्न शाखाओं के कार्यक्रमों में आने लगे। 1945 में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संघचालक बने। 1947 में स्वर्गीय गुरु जी ने उन्हें प्रांत संघचालक घोषित किया जो कि वे जीवनपर्यन्त रहे।

उस समय सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश संघ की दृष्टि से एक प्रान्त माना जाता था। बाद में यह स्थिति बदल गई। बैरिस्टर साहब ने एक बार विनोद भाव से कहा था 'कभी मैं पूरे उत्तर प्रदेश का संघचालक था, फिर पूर्वी उत्तर प्रदेश का रह गया और अब तो केवल अवध प्रान्त का ही संघचालक हूँ।'जब एक कार्यकर्ता ने पूछा कि आप कब तक संघचालक बने रहेंगे तो उनका उत्तर था, 'संघ में आजीवन कार्य किया जाता है। जब तक ईश्वर उठा न ले तब तक यही कार्य करना है।' इस बात को उन्होंने चरितार्थ करके भी दिखाया। वे केवल शोभा के लिए संघचालक नहीं थे, वरन् अपने कर्तव्य का पूर्ण निष्ठा से निर्वाह करते रहे।

उनके संघचालक बनने के थोड़े दिनों बाद ही प्रान्त भर में नैपुण्य वर्ग लगाये गये। उनकी इच्छानुसार दो जिलों - सीतापुर तथा गोण्डा में उनका कार्यक्रम रखा गया। माननीय गोखले जी ने बैरिस्टर साहब के साथ मुझे भी भेजा ताकि उनको कोई असुविधा न हो। प्रवास में भी उनका यही प्रयास था कि वे सारा कार्य अपने हाथों से करें। मैंने जब सहायता करनी चाही तो उनका यही कहना था, 'गुलाबदत्त जी, हम लोग स्वयंसेवक हैं न। अतः अपनी सेवा हम लोगों को अपने आप करनी चाहिए।' मैं निरुत्तर हो गया।

इतने सम्पन्न, संभ्रांत परिवार में जन्म लेने का तथा ऐश्वर्य, शानो-शौकत के वातावरण का कोई कुप्रभाव बैरिस्टर साहब पर नहीं पड़ा। घमण्ड तो उनको छू तक नहीं गया था। बाल्यकाल से ही प्रातः जागरण और स्नानादि नित्यकर्म तथा संध्योपासन के बाद ही जलपान करने के संस्कार उनको अपनी माता से प्राप्त हुए थे। समय पर कार्य करने तथा किसी भी समस्या को पूर्णरूपेण समझ कर उसका समाधान करने की प्रवृत्ति उनको अपने पिता से विरासत में मिली थी। सहधर्मिणी पूजनीया सुशीला जी, स्नेह से जिन्हें हम 'बूजी' कहते थे, का सहयोग सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक कार्यों में उन्हें सदैव मिलता था। कालान्तर में बूजी के स्वर्गवास के उपरान्त और भी विरक्त होकर बैरिस्टर साहब पूर्णतया समाज कार्य में तल्लीन हो गये थे।

राष्ट्रप्रेम व राष्ट्रभक्ति की सच्ची भावना बैरिस्टर साहब में कूट-कूट कर भरी थी। उनके आचरण एवं कर्तव्य से पूरा परिवार ही संघमय हो गया था। उनके दोनों पुत्र धीरेन्द्र जी एवं वीरेन्द्र जी बचपन से ही शाखा जाते थे। वीरेन्द्र जी वी.एस.एस.डी. कॉलेज में बी.एस.सी. के प्रथम बैच के छात्र थे। 1959 में बी. एस.सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट की ट्रेनिंग उन्होंने दो वर्ष में ही पूर्ण कर ली व उसकी परीक्षा में उत्तम स्थान प्राप्त किया। फिर संघ के पूर्णकालिक प्रचारक का कार्य किया। तीन वर्ष तक प्रचारक रहने के बाद ही उन्होंने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। ऐसा उदाहरण और कहाँ मिलेगा जहाँ पिता-पुत्र-पत्नी सबका जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित हो। यह सब सम्भव हुआ बैरिस्टर साहब के सद्व्यवहार एवं प्रेरणादायक आचरण से।

गुरु जी का विशेष स्नेह बैरिस्टर साहब को प्राप्त था। पूर्व संघचालक माननीय बाला साहब देवरस के भी वे स्नेहपात्र रहे। संघ की राष्ट्रीय परिषद के मनोनीत सदस्यों में उनका स्थान हमेशा बना रहा। स्व. भाऊराव देवरस, मा. रज्जू भैया और नाना जी देशमुख को वे सच्चे मित्रों की भाँति मानते थे और उनसे मार्गदर्शन भी प्राप्त करते थे।

जेल प्रवास: 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की हत्या के बाद 4 फरवरी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लग गया। गुरु जी सहित संघ के बड़े-बड़े प्रचारक एवं अधिकारी कारागार में डाल दिये गये। बैरिस्टर साहब भी कानपुर जिला कारागार में बन्द कर दिये गये। उनके निवास पर अराजक तत्वों द्वारा हमला कराया गया। कांग्रेस सरकार एवं अन्य प्रभावी व्यक्तियों द्वारा उन पर बारम्बार दबाव डाला गया कि वे संघकार्य से अलग हो जायें परन्तु बैरिस्टर साहब ने दृढ़तापूर्वक कहा कि संघ कार्य एक राष्ट्रीय कार्य है। इस पर प्रतिबन्ध अकारण तथा असंवैधानिक है। मैं इस कार्य को कदापि नहीं छोड़ूँगा चाहे जैसी परिस्थिति हो। इसी कार्य की सफलता में देश का वास्तविक भला होगा।

गुरु जी द्वारा प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से कई बार पत्र व्यवहार एवं व्यक्तिगत मुलाकात के

बाद भी जब संघ से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया तो उन्होंने सत्याग्रह का आदेश दिया। देश भर में लाखों स्वयंसेवक सत्याग्रह में कूद पड़े। 25 स्वयंसेवकों के साथ कानपुर के सूटरगंज संघस्थान पर सत्याग्रह करके मैं भी कानपुर जिला कारागार पहुँच गया। जेल में बैरिस्टर साहब ने मुझसे पूछा, 'गुलाबदत्त जी, आप केन्द्रीय सेवा में केमिस्ट के पद पर हैं। बाहर रह कर ही संघकार्य करते रहते। यहाँ क्यों आये' मैंने उत्तर दिया, 'इस समय संघ पर आपत्ति आई है। आप जैसे लोग भी जेल में हैं। प्रथम कर्तव्य यही है कि सत्याग्रह को सफल बनाया जाये। नौकरी से मैंने त्यागपत्र दे दिया है। नौकरी का क्या मोह है? यहाँ आप जैसे महानुभावों का मार्गदर्शन मिलता रहेगा और अन्य स्वयंसेवकों के साथ रहकर उत्साह भी बढ़ता रहेगा।' मेरे उत्तर से बैरिस्टर साहब संतुष्ट हुए।

भोजन आदि बनाने के लिए हम लोगों को 'पक्के' (आजन्म कारावासी) दे दिये गये थे। नियमानुकूल राशन मिलता था। पहले ही दिन मुझे लगा कि बैरिस्टर साहब से मोटी रोटी नहीं खाई जायेगी। उनके लिए पतली रोटी बनवानी चाहिए। ऐसा ही किया गया। परन्तु वितरण में पतली रोटी मिलने पर बैरिस्टर साहब ने आसपास के स्वंयसेवकों में बाँट दी। राशन में मिलने वाली मक्खन की टिकिया भी औरों को दे दी। पूछने पर कहा, 'घर पर तो महीन रोटी और मक्खन खाता ही रहता हूँ, यहाँ साधारण भोजन की आदत डालना ही उचित है'। कैसी महानता थी।

1975 में श्रीमती इंदिरा गांधी आपात्काल घोषित करके संघ पर पुनः प्रतिबन्ध लगा दिया और बैरिस्टर साहब पुनः कारागार में बंद कर दिये गये। विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, रामलला विद्यालय सभी उस समय तक उनके मार्गदर्शन में चलते थे। इन सभी संस्थाओं के दायित्व से उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था ताकि किसी प्रकार का मोह उन्हें न सताए। कारावास में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और उपचार हेतु वे उर्सला अस्पताल लाए गये। ऐसी अवस्था में भी वे विचलित नहीं हुए। उन्हें केवल संघकार्य की ही चिन्ता रहती थी। अस्पताल में मिलने वालों से वे सत्यसाग्रह में लगे कार्यकर्ताओं के बारे में पूछताछ करते रहते थे।

शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यः 1921 में बैरिस्टर साहब के पिता रायबहादुर विक्रमाजीत सिंह ने सनातन धर्म वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना की थी। उन्हीं के समय में कला एवं विधि विभाग भी प्रारम्भ हो गये थे। 1940 में उनके निधन के बाद संस्था का नाम विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय कर दिया गया। यों तो बैरिस्टर साहब विधि एवं शैक्षणिक कार्यों में पिता का सहयोग करते ही थे पर पिता की मृत्यु के बाद सारा भार उन्हीं के कंधों पर आ गया। जीवन पर्यन्त इस भार को उन्होंने केवल निभाया ही नहीं, वरन् संस्थाओं का प्रसार भी किया। वी.एस.एस.डी. कॉलेज में बैरिस्टर साहब ने 1957 में विज्ञान कक्षायें प्रारम्भ करवाई। 1963 में रसायन विज्ञान तथा 1964 में भौतिक विज्ञान में एम.

एस.सी. भी उनके प्रयत्नों से ही प्रारम्भ हुए। उस समय की एक घटना याद आती है। भौतिक विज्ञान में एम.एस.सी. प्रारम्भ होने में कुछ सरकारी अड़चनें थीं। बैरिस्टर साहब के ज्येष्ठ भ्राता स्व. रणजीत सिंह संयुक्त मंत्री थे। उन्होंने बैरिस्टर साहब को लखनऊ भेजा यह विश्वास प्रकट करते हुए कि नरेन्द्र बहुत अच्छी हिन्दी बोल लेते हैं। अपनी माधुर्य युक्त हिन्दी से ये अधिकारियों को संतुष्ट कर देंगे। उनका विश्वास फलित हुआ और वांछित मान्यता मिल गई।

बी.एस.सी. विज्ञान की कक्षायें प्रारम्भ करने के लिए 1957 में मुझे बी.एन.एस.डी. इण्टर कॉलेज से वी.एस.एस.डी. कॉलेज भेजा गया। तब से जून 1986 तक बैरिस्टर साहब के मार्गदर्शन में मैं कॉलेज में कार्यरत रहा। उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर ही मैंने अवकाश प्राप्ति तक कॉलेज की सेवा का संकल्प ले रखा था। इसीलिए और कहीं जाने का प्रयास नहीं किया।

बैरिस्टर साहब का कहना था कि अपने जीवन में हमें पूर्ण भारतीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। साथ ही हमारी दृष्टि वैज्ञानिक भी होनी चाहिए। प्रत्येक कार्य नियमानुसार ही करना चाहिए। उनका दृढ़ मत था कि शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही होनी चाहिए। कॉन्वेट शिक्षा के वे प्रबल विरोधी थे। शिशु मंदिरों, विद्या मंदिरों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इसके लिए वे सतत् प्रयत्नशील रहे।

दीनदयाल विद्यालयः बैरिस्टर साहब व बूजी की आकांक्षा थी कि संघ के आदर्शों के अनुरूप एक विद्यालय की स्थापना की जाये। 11 फरवरी, 1968 को मुगलसराय में पं. दीनदयाल उपाध्याय की निर्मम हत्या कर दी गई। कानपुर में भी एक शोक यात्रा निकाली गयी जिसमें बूजी भी सम्मिलित थीं। मार्ग में ही बूजी ने सबके समक्ष संकल्प लिया कि पंडित जी के नाम से एक विद्यालय की स्थापना की जायेगी। उनके संकल्प एवं गुरु जी की प्रेरणा से पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना हुई। बूजी ने अपना तन-मन-धन सर्वस्व इस विद्यालय के निर्माण में लगा दिया। विद्यालय का शिलान्यास व उद्घाटन गुरु जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। बैरिस्टर साहब के मार्गदर्शन में इस विद्यालय ने न केवल प्रान्त वरन् पूरे देश में उच्च स्थान प्राप्त किया। इस विद्यालय में विद्यार्थियों का निर्माण संघ की विचारधारा एवं भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप होता है। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर व चिकित्सा, अभियांत्रिकी आदि प्रतियोगिताओं को पार कर इस विद्यालय के अनेक पूर्व छात्र देश ही नहीं, विदेशों में भी उच्च पदों पर आसीन हैं।

बैरिस्टर साहब के ही मार्गदर्शन में बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन की स्थापना हुई जो कि पं. दीनदयाल विद्यालय के ही मार्ग का अनुसरण कर रहा है। कानपुर शिक्षा समिति, जिसके अन्तर्गत हीरालाल खन्ना इण्टर कॉलेज, हीरालाल खन्ना बाल निकेतन, पूर्णा देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज, पूर्णा देवी बाल निकेतन, नंदलाल खन्ना एजूकेशन सेण्टर, नंदलाल खन्ना विद्या मंदिर आदि चलते हैं, के बैरिस्टर

साहब अध्यक्ष थे तथा सभी शिक्षण संस्थाओं की प्रगति के बारे में चिंतित रहते थे। सनातन धर्म महामण्डल के अन्तर्गत श्री मोतीलाल खेड़िया विद्या मंदिर का निर्माण किया गया। उसके भी संरक्षक बैरिस्टर साहब ही थे। इस प्रकार एक योग्य शिक्षाविद् होने के नाते शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान बैरिस्टर साहब ने मृत्युपयन्त किया।

शिक्षण संस्थानों के प्रबन्धन में अनुचित सरकारी हस्तक्षेप को लेकर बैरिस्टर साहब के मन में बड़ी पीड़ा रहती थी। डिग्री एवं इण्टर कॉलेजों में नियुक्ति के लिए जिम्मेदार शिक्षा आयोगों में प्रबन्ध तंत्र के प्रतिनिधि भी होने चाहिए, ताकि आवश्यकतानुसार योग्य शिक्षकों की नियुक्ति की जा सके, ऐसा बैरिस्टर साहब का मत था।

विधिवेत्ता: प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद बैरिस्टर साहब ने इंग्लैंड से बी.एस.सी., एल.एल.बी. तथा बार-एट-लॉ की उपाधियाँ प्राप्त कीं। विज्ञान के विद्यार्थी होने के बावजूद उन्होंने उत्कृष्टतापूर्वक विधिवेत्ता का कार्य किया। जब मैं एल.एल.बी. में पढ़ता था (1945-47) तो अपने सहपाठियों के साथ स्व. पं. बाबूलाल मिश्र व बैरिस्टर साहब की बहस सुनने जाया करता था। उनकी बहस सुनना अत्यंत आनन्द का अनुभव था। वे कम्पनी लॉ के विशेषज्ञ थे। कई वर्षों तक ब्रिटिश इण्डिया कॉरपोरेशन (बी.आई.सी.) के निदेशक तथा विधि सलाहकार के रूप में उन्होंने काम किया। उस समय के कई नये-नये वकील उनके मार्गदर्शन में काम करके आज अच्छे वकीलों में गिने जाते हैं।

इस प्रकार समाज व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बैरिस्टर साहब का योगदान था। अपनी सतत् साधना, ध्येय-निष्ठा, समाज के प्रति पूर्ण समर्पण तथा अपनी कार्यशैली से वे पूर्ण मानव महान संत बन गये थे।

(नीराजन : रजत जयंती अंक से)

दैवी सम्पदा के धनी

डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल
(अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति, दीनदयाल विद्यालय)

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी का ध्यान आते ही, उनके जीवन से जुड़े अनेक संस्मरण एक के बाद एक मस्तिष्क में आने लगते हैं। जिस किसी भी व्यक्ति को बैरिस्टर साहब से मिलने का अवसर मिला, वह उनके आकर्षक व्यक्तित्व,सरल जीवन, आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। मुझे तो उनसे मिलने का ही नहीं, उनके साथ रहने का सौभाग्य 1975 के आपात्काल में मिला, जब हम कानपुर जिला जेल में लगभग 8 महीने बन्द रहे। जेल में तो 24 घण्टे का साथ रहता है प्रतिदिन, अतः बहुत ही निकटता से एक दूसरे को समझने और जानने का अवसर मिल जाता है। वहाँ रहकर मुझे अनुभव हुआ कि बैरिस्टर साहब तो दैवी गुणों के पुंज थे। कुछ संस्मरण लेखबद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ।

बैरिस्टर साहब के घर से उनके बाग के फल अक्सर मिलाई के दिन उनके पुत्र दे जाते थे। बैरिस्टर साहब उन सभी फलों को प्रसाद की भाँति सभी में वितरित करके अपने लिये थोड़े से ही ग्रहण करते थे, कभी भी उन्होंने उनका संग्रह नहीं किया। अपने को सदैव जेल में रह रहे बन्धुओं के बड़े परिवार का एक सदस्य मान कर ही चलते थे। प्रथम दिन से ही उच्च श्रेणी की सुविधायें उनको उपलब्ध हो गई थीं, परन्तु उन्होंने एक भी दिन उन सुविधाओं का उपभोग अपने लिए नहीं किया। जो भी उच्च श्रेणी के कैदी को प्राप्य सामग्री प्राप्त होती थी, वह सामान्य श्रेणी के कैदियों के लिए चलाये जा रहे मेस में दे देते थे और स्वयं सबके साथ बैठकर सामान्य श्रेणी वाला भोजन ही ग्रहण करते थे। यदि हम थोड़ा भी विचार करें तो अनुभव होगा कि व्यवहार में सभी के साथ एकरस होने, पारिवारिक भावना को जीवन में अपनाने का इससे बढ़कर कोई अन्य उदाहरण नहीं हो सकता। यह एक दिन के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण दीर्घकालीन जेल जीवन में उनका स्वाभाविक व्यवहार रहा।

जेल में सभी संगठनों व पार्टियों के लोगों को आपात्काल के समय बन्द कर दिया गया था। कम्युनिस्ट, समाजवादी, लोकदल, मुस्लिम लीग, जमायते इस्लामी, संगठन कांग्रेस आदि सभी दलों के सदस्य थे। आयु की दृष्टि से भी 15 वर्ष से लेकर 80 वर्ष तक के साथी थे। बैरिस्टर साहब सभी का समान ध्यान रखते। मुझे याद है रोजे के दिनों में (सहरी के समय) सूर्यास्त के बाद मुस्लिम बंधुओं के खाद्य पदार्थ उपलब्ध हो जाये, इसकी चिन्ता उनको रहती थी। यदि कोई जेल में बीमार हो जाता तो उसे ठीक औषधि तथा फल आदि उपलब्ध कराने की चिन्ता उनको हो जाती थी। जब जेल में काफी लोगों को बुखार हो गया और औषधि की व्यवस्था जेल अस्पताल में नहीं हो सकी तो बैरिस्टर साहब ने उबले हुए पानी को दिन में कई बार पीने की सलाह देकर उपचार प्रारम्भ कर दिया और यह इलाज बहुत ही

कारगर साबित हुआ। क्या इसको हम बैरिस्टर साहब की सभी को स्वस्थ एवं सुखी देखने की प्रबल भावना का परिणाम नहीं मान सकते? वे तो सदैव यही भाव रखते थे-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

जेल जीवन को उपयोगी एवं आनन्दमय बनाने के लिए उनके मार्गदर्शन में बड़ी ही व्यस्त दिनचर्या बनाई गई थी जिसमें विद्यार्थियों को कक्षानुसार नियमित अध्ययन तथा अध्यापन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामूहिक रूप से गीता, रामायण, महाभारत का वाचन, खेल-कूद आदि प्रातः काल से लेकर रात्रि तक शामिल कर लिया गया था। इन कार्यक्रमों का प्रभाव एक उदाहरण से समझ में आ जायेगा। एक दिन कुछ विद्यार्थियों के अभिभावक जब मिलने आये तो वे उनसे कहने लगे कि हम तुम्हें शीघ्र ही जेल से छुड़ाने का प्रयास कर रहे हैं क्योंकि जेल में रह कर तुम्हारी पढ़ाई नहीं हो पाती होगी और पूरे वर्ष की पढ़ाई का नुकसान हो जायेगा। उन विद्यार्थियों ने उत्तर दिया, "पिता जी हमको जेल में रहकर जो पढ़ाई करने को मिल रही है, वह बाहर हजार रूपये महीने खर्च करने के बाद भी उपलब्ध नहीं हो सकती। यहाँ तो हमारे साथ सभी विषयों के अध्यापक भी बन्द हैं और वे बड़े स्नेह और परिश्रम से हमें पढ़ाते हैं।" हमारे पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि जेल में बन्द सभी विद्यार्थी जब छूट कर बाहर गये और परीक्षा में बैठे तो सभी ने उच्च श्रेणी के अंक प्राप्त किये। बैरिस्टर साहब की ही योजना का था यह परिणाम।

जेल के तो इस प्रकार के इतने संस्मरण हैं कि एक अच्छी खासी पुस्तक बन जाये।

जेल के बाहर के जीवन से संबंधित संस्मरणों का भी उल्लेख करना हम सबको लाभप्रद व उपयोगी रहेगा।

बैरिस्टर साहब गीता के चौदहवें अध्याय में वर्णित दैवी गुणों से भरपूर थे। निर्भयता, अन्तःकरण की निर्मलता, दिव्य ज्ञान, दान, आत्म-संयम, स्वाध्याय, तप, सरलता, सत्य, अहिंसा, अक्रोध, त्याग, दया, दृढ़ निश्चय, क्षमा, धैर्य, जैसे गुणों के वे मूर्तरूप थे।

एक बार हमारे मित्र ने एक पुस्तक लिखी और उसकी प्रतिलिपि भेंट स्वरूप बैरिस्टर साहब को दे गये। एक सप्ताह बाद उनका बैरिस्टर साहब से मिलना हुआ तो वे आश्चर्य चकित रह गये यह देखकर कि बैरिस्टर साहब ने उस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके बारे में अपनी टिप्पणी दी थी तथा छपाई की त्रुटियों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार का स्वाध्याय उनके दैनिक जीवन का अंग था। धार्मिक ग्रन्थों का भी उनको बड़ा गहन अध्ययन था। गीता तो उन्हें पूरी स्मरण थी और समय-समय पर उसके श्लोकों का वे बातचीत में व्यावहारिक महत्त्व बताते रहते थे।

दानशीलता भी उनके स्वभाव का भाग था। बड़े सात्विक ढंग से दान देते थे तथा ध्यान रखते थे कि सुपात्र को इस प्रकार से मिले कि उसके स्वाभिमान को ठेस न लगे। अच्छे विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता पुरस्कार के रूप में, शुल्क मुक्ति के रूप में, उनके निशुल्क रहने की सहायता इत्यादि वे अक्सर देते ही रहते थे। इतना ही नहीं, उनका अध्ययन पूरा होने पर ठीक से कहीं नौकरी या व्यवसाय कराने में भी सहायता करते थे।

उनका शान्त एवं क्रोधरहित स्वभाव तो एक उदाहरण है सबके लिए। एक बार छात्र अपनी माँगों को लेकर उनके घर धरना देने पहुँचे और बड़े ही अभद्र नारे लगाने लगे। बैरिस्टर साहब उनके पास आये और बड़ी शान्ति उनसे बातचीत करने लगे तथा उनको अपने ड्रांइग रूप में ले जाकर पानी आदि की व्यवस्था कर समझाया तो वे उग्र छात्र बड़े ही शान्त और सन्तुष्ट होकर अपने घर वापस लौट गये। ऐसा मृदु और आत्मीयता पूर्ण था उनका व्यवहार।

बैरिस्टर साहब को पेड़-पौधों से बड़ा प्यार था और उन्होंने घर के लॉन में भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधे लगा रखे थे। न जाने कितनी तो गुलाब की किस्में थीं। उनकी देखभाल बच्चों की तरह करते थे और बड़ी जानकारी थी इस विषय में। मैंने उन्हें एक माली का साक्षात्कार करते देखा था। वह नौकरी के लिए आया था और बीस वर्ष का अनुभव बता रहा था। बैरिस्टर साहब अपने बगीचे में उसे ले गये और वहाँ लगे पौधों के नाम पूछने लगें। माली कुछ तो ठीक बता पाया। परन्तु कई गलत नाम बताए और अनभिज्ञता प्रकट की तो बैरिस्टर साहब ने उनके ठीक नाम बताकर उसको समझाया। माली अपनी गलती समझकर उनकी ओर देखता ही रह गया। मुझे याद है, एक बार मैं उनके साथ लखनऊ जाने के लिए जब उनके घर कार में बैठने लगा तो कार में बैठते-बैठते भी उन्होंने माली को पेड़-पौधों के बारे में कई निर्देश दे दिये कि अमुक-अमुक पौधे के पत्ते छोटे करना, खान देना, सफाई करना आदि आदि। उनको अपने बगीचे में लगे सैकड़ों पेड़-पौधों में प्रत्येक का ध्यान रहता था। ऐसा था उनका पेड़-पौधों या कहें प्रकृति से प्यार।

अन्त में उनके शुद्ध और निर्मल जीवन की एक घटना का स्मरण और आता है। जब वे जेल में थे, तो सरकार ने उनकी आर्थिक कर अपवंचन के आरोप में बदनाम करने का प्रयास एक आर्थिक अनुसंधान शाखा के अधिकारी को सौंप कर किया। वह अधिकारी मेरे छात्र जीवन का मित्र था। उसने बाद में बताया कि हमने पूरी छान-बीन की और कहीं भी कोई अनियमितता नहीं। ऐसा था उनका शुद्ध और पवित्र जीवन।

हम उनको शत-शत नमन करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके जीवन से सीखने तथा आचरण में उनके आदर्शों को अपनाने की संकल्प शक्ति हमको प्रदान करे।

(नीराजन : रजत जयंती वर्ष)

हिम शिखर सा वह उज्ज्वल व्यक्तित्व

डॉ. उपेन्द्र

बैरिस्टर साहब की याद आते ही मेरी दृष्टि के सामने एक उज्ज्वल हिम-शिखर मूर्तिमान हो उठता है जिसकी पृष्ठभूमि में सीमाहीन आकाश की नीलिमा और चरण-प्रांत में हरिताभ वनश्री, पक्षियों का श्रुति मधुर संगीत, कलहासिनी नदियाँ और निर्झर विद्यमान हैं। बैरिस्टर साहब के सामाजिक यानी जन-जीवन से आभ्यान्तरिक रूप से जुड़े हुए व्यक्तित्व की तुलना शून्य में सिर उठाये एकान्त समर्पित हिम शिखर से करना तार्किक दृष्टि से अवश्य संगत नहीं लगता और इस तुलना का औचित्य सिद्ध करने के लिए मेरे पास कोई पुष्ट आधार भी नहीं है, पर न जाने क्यों बार-बार मन समाधिस्थ शिव जैसे उसी हिम-शिखर पर अटक जाता है जो सात्त्विक श्रद्धा, पवित्रता और शान्ति का समन्वित रूप लिए है, जो निर्मल और निर्विकार है और जो सबके साथ होकर भी सबसे अलग, अस्पृश्य, तटस्थ और एक सीमा तक अकेला दिखायी पड़ता है। अकेलेपन को 'बूजी' (बैरिस्टर साहब की धर्मपत्नी स्व. सुशीला) की मृत्यु के बाद मैंने उनकी आँखों में अधिक तीव्रता से उभरते देखा था और निधन से कुछ पूर्व, विशेष रूप से धीरेन्द्र जी (ज्येष्ठ पुत्र) की असमय मृत्यु का आघात सहने के बाद, यह अकेलापन निस्संदेह चिंताजनक रूप में दिखायी पड़ने लगा था।

बैरिस्टर साहब जैसे आकर्षक रूप-रंग वाले दर्शनप्रिय व्यक्ति मैंने अपने जीवन में गिनती के दस-पाँच ही देखे हैं। यह जरूरी नहीं कि व्यक्तित्व का बाह्य रूप उसके आन्तरिक रूप से मिलता-जुलता यानी समरस हो। विषरस भरा कनक-घट जैसे लोग भी इस धरती पर कम नहीं हैं, पर बैरिस्टर साहब को निकट से देखने और जानने वाले लोगों में मुझे आज तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जिसने उनकी चारित्रिक दृढ़ता, धर्मशीलता, पवित्रता और शील-सौजन्य पर संदेह की उँगली उठाई हो। उनसे वैचारिक मतभेद रखने वाले कितने ही लोगों को पीठ पीछे उनकी कार्यशैली की आलोचना करते हुए देखा, पर जहाँ तक मुझे मालूम है, मानवीय सद्वृत्तियों के धरातल पर उनकी ऊँचाई से वे सदैव अभिभूत रहे। उनके दैदीप्यमान मुखमण्डल, उनकी सौम्य आभा और स्नेह बिखेरती हुई दृष्टि के सम्मुख होते ही सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति का मस्तक स्वतः झुक जाता था। अनेक अवसरों पर उनसे बात करते समय 'टेम्पेस्ट' (शेक्सपियर) की यह उक्ति मेरी स्मृति में कौंध गयी- There's nothing ill can dwell in such a temple; If the ill spirit have so fair a house good things will strive to dwell with it. (नहीं पाप छिप कर रह सकता ऐसे भव्य देह मंदिर और अगर रह जाये कहीं वह, सद्गुण फिर भी साथ न छोड़ेंगे इस तन का')।

सितम्बर, 1969 में मैं विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता के पद पर

नियुक्त हुआ था। उस समय से गत वर्ष तक यानी लगभग चौबीस वर्षों की कालावधि में घटित उनके शील, सौजन्य और शिष्ट व्यवहार के अनेक प्रसंग स्मृति में हैं। 1 दिसम्बर, 1980 में मेरी बेटी के विवाह में वह शहर से बाहर होने के कारण सम्मिलित नहीं हो सके, पर अपनी विवशता जताते हुए क्षमा याचना का पत्र उन्होंने जिस आत्मीयता भरे सम्बोधन के साथ निश्छल भाषा में भेजा। उसे पढ़कर सारा क्षोभ उड़ गया। एक अति साधारण पर मेरे लिए महत्त्वपूर्ण प्रसंग और याद आ रहा है। होली के अवसर पर गंगा मेले (सरसैया घाट) में अथवा वहाँ न मिले तो समीप ही बंगले पर उनसे होली मिलने को मैं चला जाया करता था। इधर चार-पाँच वर्षों में वृद्धावस्था के कारण उन्हें उठने-बैठने में भी कष्ट होने लगा था। इसका आभास मुझे एक होली मेले के दिन ही हुआ। एक सोफे पर वह स्वयं बैठे थे और उनके सामने सोफे पर दो अन्य सज्जन थे। कुछ कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं। मैं पहुँचा तब वह उन सज्जनों से वार्तालाप में व्यस्त थे। मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, उन्होंने मेरी ओर देखा, उत्तर में हाथ जोड़े, पर पूर्व अवसरों की भाँति वह उठकर गले मिलने को खड़े नहीं हुए। मैं कुछ क्षणों के लिए ठिठका और फिर एक कुर्सी की तरफ (बैठने को) बढ़ा। तभी उन्होंने हाथ से मुझे अपने सोफे पर बैठने के लिए इशारा किया। मैं कुर्सी पर लगभग बैठ चुका था, पर उनके संकेत का आशय समझकर वहाँ से उठकर उनके बगल में जा बैठा। बैरिस्टर साहब का शील इतने से ही संतुष्ट नहीं हुआ, उन्होंने स्नेह से अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया। यह आगत व्यक्ति के लिए उठकर खड़े होने और गले से लगकर होली मिलने का कर्तव्य पूरा न कर पाने की लाचारी की यत्किंचित् 'क्षति-पूर्ति' का एक प्रयास था और बैरिस्टर साहब जैसे सुसंस्कृत व्यक्ति ही इस तरफ इतना ध्यान रख सकते थे।

विनोद के क्षणों में उनके मुख पर बालकों जैसी सरल निश्छल हँसी फूट पड़ती थी और वह ऐसे अवसरों पर मनोरंजन का उत्स प्रकट करने वाले व्यक्ति को पूरा प्रोत्साहन देते थे। विनोद के इन अवसरों पर ही मानवीय और सामान्य जनोचित धरातल पर उनके स्थित होने का एहसास होता था वर्ना उनका गांभीर्य कम से कम हम छोटों के लिए तो इतना भारी पड़ जाता कि हम उनके सामने मुँह खोलने की स्थिति में भी नहीं होते। एक अवसर की याद आ रही है। अपने विभाग में एक नयी नियुक्ति के सिलसिले में हम (डॉ. प्रकाश अवस्थी और मैं) उन्हें अपनी 'इच्छा' और 'आवश्यकता' बताने गये थे। बैरिस्टर साहब उस दिन फुर्सत में थे, लम्बी बातचीत हो गयी। शिक्षा के गिरे हुए स्तर का प्रसंग चल पड़ा और मैंने उन्हें साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों और अभ्यर्थियों (प्रवक्ता पद के) द्वारा दिए गए कुछ मनोरंजक उत्तरों के 'किस्से' चुटकुलों की शैली में सुनाये। बैरिस्टर साहब खूब हँसे। उन्हें खुश देखकर मेरा हौसला बढ़ा और फिर हिन्दी अंग्रेजी साहित्य के लेखकों-कवियों से संबंधित अनेक विनोदपूर्ण प्रसंगों का 'चटखारा' पेश करने का मौका भी मैंने ले लिया। बैरिस्टर साहब ने उसका भी पूरा रस लिया और उन्हें इस तरह खुश देख कर हमें भी प्रसन्नता हुई। हास्य विनोद से सम्बन्धित एक बात और कह दूँ। बैरिस्टर साहब की हँसी स्मित हास्य से कुछ ही आगे जाती थी। पंडित जी (स्व. पंडित बाबूलाल मिश्र

एडवोकेट) की तरह ठहाका लगाते हुए मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। दूसरी बात यह कि वह समय और परिस्थिति देखकर अपने को नियंत्रित भी तुरंत कर लेते थे। एक बार राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' का जन्मदिवस उनके गाँव 'भदरस' में मनाया गया था। नगर से अनेक विशिष्ट जन अपनी-अपनी मोटर गाड़ी से वहाँ गये थे। मुझे याद है, इस अवसर के योग्य मैंने भी एक कविता 'पूर्ण' जी पर लिखी थी। हम लोग नीचे दरी पर बैठे वार्तालाप में मग्न थे और मंच पर श्री गंगाधर तैलंग अपनी शिष्याओं को भजन-संगीत के लिए तैयार कर रहे थे। पंडित जी ने उसी समय किसी के 'रिमार्क' पर जोरदार ठहाका लगाया। स्वभावतः हम सब भी हँस पड़े। हमारी हँसी का प्रवाह रुक नहीं रहा था और मंच पर 'श्रीराम चन्द्र कृपालु भज मन' के बोल गूँजने लगे थे। बैरिस्टर साहब ने ही अपने को सबसे पहले संयत किया। उन्होंने पंडित जी की तरफ देखा, अन्य लोगों को देखा, सभी हँस रहे थे। बैरिस्टर साहब थोड़ा मुस्कराये, फिर उसी स्मित मुद्रा में मेरा ध्यान मंच की तरफ खींचते हुए बोले, 'इधर देखिए कितना अच्छा पद सुनाया जा रहा है।' उन विशिष्ट जनों की मंडली में मैं ही कनिष्ठ था और उनसे वह 'निर्देश' पाने का हकदार भी मैं ही था। शील और मर्यादा के निर्वाह में आचरण की बहुत छोटी और नगण्य सी दिखने वाली घटनाएँ भी महत्त्वपूर्ण होती हैं और उनसे ही सोने की असलियत अथवा खरेपन का पता चलता है।

जिस बड़ी संस्था (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के साथ वह पिछले अनेक दशकों से जुड़े रहे, उससे मेरा कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा और उससे सम्बन्धित कार्यों की विवेचना व मूल्यांकन का शायद अधिकारी भी मैं नहीं हूँ। पर एक बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि सांप्रदायिक संकीर्णता, असहिष्णुता और बौद्धिक पिछड़ेपन के जो आरोप उस संस्था के लोगों पर लगाये जाते रहे हैं उनकी विश्वसनीयता बैरिस्टर साहब के व्यक्तित्व और आचरण को देखर स्वतः खंडित हो जाती है क्योंकि उन जैसे सहिष्णु, शांत, उदार और मनस्वी व्यक्ति तथाकथित प्रगतिशील संस्थाओं में भी मुझे बहुत थोड़े ही दिखाई दिए हैं।

कॉलेज के कार्यों में उनकी भूमिका सदैव परिवार के मुखिया जैसी रही। परिवार के प्रत्येक अंग पर उस मुखिया की सतर्क दृष्टि सदैव रही। उनकी मितव्ययता से कभी-कभी लोग चिढ़ते से दिखायी देते थे और स्वयं उन्हें भी इस बात का अहसास था, पर उसके औचित्य को सिद्ध करने के लिए उनके पास ठोस कारण भी थे। बैरिस्टर साहब सुनते सबकी थे पर करते प्रायः वही जिसे करने को उनका अपना विवेक कहता था। मनुष्य पूर्ण नहीं होता, अवतारी पुरुष के भी दोष लोग गिना देते हैं। बैरिस्टर साहब की भी सीमाएँ थीं, पर इस बात से कौन इन्कार करेगा कि उन जैसे उत्तम कोटि के कृती पुरुष किसी भी जाति, किसी भी राष्ट्र का गौरव बढ़ाते हैं और उनकी स्मृति सदैव प्रेरणादायिनी व कृतित्व सदैव अनुकरणीय होता है।

(नीराजनः रजत जयन्ती अंक)

समुद्र इव गाम्भीर्ये, धैर्येण हिमालिव

अशोक सिंहल

जीवन में जिन लोगों से मैंने प्रेरणा प्राप्त की, उन सबमें बैरिस्टर साहब का नाम सर्वोच्च है। सम्पूर्ण देश में उन जैसे आदर्श पुरुष मुझे बहुत कम दिखाई पड़े हैं। उनकी स्नेहिल पीयूष वाणी का शुभाषीश जिसे भी मिला वह धन्य हो गया। आपात्काल समाप्त होने पर जेल से लौटने के पश्चात् एक बार श्री शिवशरण जी शर्मा से मेरी भेंट हुई। तत्कालीन स्थितियों पर चर्चा होते-होते जैसे ही श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का नाम आया, उनके नेत्र सजल हो उठे। उन्होंने रुँधे हुए कण्ठ से उनकी महनीयता का वर्णन करते हुए बताया कि मैं तो पहले बैरिस्टर साहब को बड़ा समझता था, किन्तु उनके सान्निध्य में रहने पर मुझे ज्ञात हुआ कि 'बड़ा' शब्द उनके वैशिष्ट्य के मूल्यांकन के लिए नितांत बौना अर्थात् संकीर्ण सिद्ध हुआ। वह तो हिमालय की ऊँचाइयों से भी ऊँचे, हिन्द महासागर की गहराइयों से भी अधिक गम्भीर, श्री राम सदृश मर्यादा पालक, कर्तव्य एवं न्याय के परिपालन में वज्र सम कठोर तथा दीन दुखियों की सेवा एवं समाजहित चिन्तन में पुष्पसम कोमल हृदय से युक्त नर रूप में नारायण थे। उस महान् विभूति का यही वास्तविक परिचय हो सकता है।

श्री राम को हम भगवान् की श्रेणी में मानते हैं; किन्तु प्रत्येक वह व्यक्ति जिसने उनकी मर्यादाओं को व्रत मानकर अपने जीवन में ज्यों का त्यों उतार लिया हो, उसमें मुझे साक्षात् श्रीराम के ही दर्शन होते हैं। श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के चरित्र में भगवान् राम के समस्त गुण सन्निहित थे। वह वास्तव में नर नहीं नारायण थे।

(नीराजनः रजत जयंती अंक)

जड़ का चेतन आनन्द

प्रकृति के यौवन का शृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र, आह उत्सुक है उनको धूल।
एक तुम यह विस्तृत भू-खंड, प्रकृति वैभव से भरा अमन्द
कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन आनन्द॥

प्रसाद

एक युग का पटाक्षेप

जे. पी. श्रीवास्तव

आधी शताब्दी के लम्बे कालखण्ड तक जिनके सान्निध्य का सुख प्राप्त किया, जिनको अनेकशः सुना और सराहा, जिनके चरणों में बैठकर बहुत कुछ सीखा, जिनसे निरन्तर प्रेरणा पाई, जिनसे अनेक प्रकार के भौतिक-अभौतिक लाभ प्राप्त किए, जिनकी गुण सम्पदा को देख अनुभव किया कि संसार की विद्रूपता के बीच ऐसे नर-रत्न भी होते रहते हैं, उन्हीं बैरिस्टर साहब पर आज जब श्रद्धांजलि लेख लिखने बैठा हूँ तो लगता ही नहीं कि वे हमसे दूर चले गये हैं।

पूज्य बैरिस्टर साहब को सर्वप्रथम जब देखा, तब मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बाल स्वयंसेवक था। राजकुमार सी काया, सुन्दर वस्त्र-विन्यास, शुभ दर्शन व्यक्तित्व, मुधरिमा भरी सुस्पष्ट वाणी- इन सब ने मुझ पर मोहिनी सी डाल दी। अभी तक किसी बैरिस्टर को देखा तो था नहीं, सो बाल मन पर यही छाप पड़ी कि बैरिस्टर कोई देवतुल्य व्यक्तित्व होता है। बाद में कई बार बैरिस्टर साहब के पूरे परिवार के साथ एक ही मेज पर भोजन करने का अवसर मिला। भोजन रजत पात्रों में होता था। पर भोजन समय बैरिस्टर साहब के व्यवहार की चमक उन रजत पात्रों से कहीं अधिक चर्चा योग्य है। वे उत्कृष्ट कोटि के 'टेबल-टॉकर' थे। ढेर सारी बातें वे खाते-खाते बता डालते थे। हँसने-मुस्कराने-गुदगुदाने के प्रसंग भी चलते थे और ज्ञानवर्धन की बातें भी। लगता था भोजन के बजाय अमृत पान हो रहा है।

उदात्तता के सोपान दर सोपान ऊँची उठती उदारता उपकृत को कभी लज्जित या कृतज्ञता के भार से दबा नहीं देखना चाहती। बैरिस्टर साहब के अन्दर ऐसी ही उदात्त भावना की पुनीत मन्दाकिनी बहती थी। शब्द शिल्प की दृष्टि से अकिंचन मैं केवल उन्हें श्रद्धापूर्वक मस्तक झुका सकता हूँ। शब्दों में उनका वर्णन मेरे वश में नहीं। तुलसीदास जी के शब्द अवश्य दोहराये देता हूँ, 'कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।'

अपने देश और समाज के वर्तमान परिवेश से कौन परिचित नहीं है। पदक और पारितोषिक खरीदे जा रहे हैं। एक दूसरे को सुविधा पहुँचाने वाले संगठित वर्ग बन गये हैं। तिकड़म लगाकर अलंकरण प्राप्त किये जा रहे हैं। पद और प्रतिष्ठा पाने की होड़ में नैतिक मानदण्डों पर भी पदाघात किया जा रहा है। केवल दो घटनाएँ कह रहा हूँ, जिनका साक्षी रहा हूँ।

कई मित्र पूज्य बैरिस्टर साहब का अभिनन्दन करना चाहते थे। दो लोग, जिनमें एक मैं था, प्रतिनिधि बनकर गये। बैरिस्टर साहब के सामने प्रस्ताव रखा। उन्होंने एक ही वाक्य कहा, 'स्वयंसेवक अपना अभिनन्दन नहीं चाहते'। हम तो निर्वचनीकृत पाषाणवत् खड़े रह गये। ऐसी ही एक घटना याद आती है-1962 के चीनी आक्रमण का समय था। कानपुर में एक कवि सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता महीयसी महादेवी वर्मा कर रही थीं। जब अन्य सब कवि कविता सुना चुके तो श्रोताओं ने महादेवी जी से भी कविता सुनाने का आग्रह किया। इसके बहुत पहले महादेवी मंच से कभी कविता न सुनाने की प्रतिज्ञा कर चुकी थीं। श्रोताओं के पुनः पुनः आग्रह करने पर उन्होंने एक वाक्य में सारे अध्याय को समाप्त कर दिया, 'आज प्रतिज्ञा जोड़ने का दिन है, प्रतिज्ञा तोड़ने का नहीं'। चीनी आक्रमण के परिप्रेक्ष्य में कितना

सटीक वाक्य था। बैरिस्टर साहब का वाक्य भी कितना सटीक था। कभी-कभी एक वाक्य एक समूची पुस्तक जैसा प्रभाव छोड़ जाता है।

दूसरी घटना 12 जनवरी, 1991 का दिन प्रातर्वन्दनीय स्वामी विवेकानन्द की जन्म तिथि। कुछ सेवाभावी सज्जनों ने त्याग और सेवा का आदर्श लेकर स्थानीय रामश्याम पुरम् में समाज के विभिन्न लोगों की सेवा और विवेकानन्द सेवा केन्द्र की स्थापना की। इसके उद्घाटन के लिए बैरिस्टर साहब से अधिक योग्य और कौन हो सकता था? लोगों ने मुझे संस्था का मंत्री बना दिया था। मैं प्रार्थना लेकर बैरिस्टर साहब के पास गया। उनकी स्वीकृति मिल गयी। संस्था से जुड़े सभी लोग बाग-बाग हो रहे थे। लोगों ने ढेर सारी मालाओं का स्वेच्छया प्रबन्ध किया था। मेरे बहुत अधिक अनुनय विनय पर उन्होंने केवल एक छोटी माला स्वीकार की। शेष सभी मालायें उन्होंने लाने वालों द्वारा एक-एक करके विवेकानन्द जी के चित्र पर समर्पित करवा दीं। लोगों ने देखा और बिना कोई भाषा सुने सीखा भी कि सच्चे सेवक अपने लिए मालाओं की अभिलाषा नहीं रखते।

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय जहाँ स्वनामधन्य पं. दीनदयाल जी के आदर्शों का जाज्वल्यमान कीर्तिस्तम्भ है, वहीं माननीय बूजी और माननीय बैरिस्टर साहब के शिक्षा-प्रेम का चिरस्थायी स्मारक भी। विद्यालय के विषय में वे अहर्निश विचार करते थे। मुहावरे की भाषा में कहूँ तो उनकी साँस-साँस में विद्यालय बसता था। इधर के वर्षों में मैं जब कभी उनके यहाँ जाता तो वे विद्यालय के विषय में वार्ता अवश्य करते। द्वादश कक्षा को मैं अंग्रेजी पढ़ाया करता था। पर जितने विद्यार्थियों के नाम मुझे याद रह पाते थे उससे कहीं अधिक बैरिस्टर साहब को याद रहते थे। वे नाम ले-लेकर छात्रों को प्रगति के विषय में पूछते, बोर्ड परीक्षा में पोजीशन की बात करते और विद्यालय के सर्वतोमुखी विकास की चर्चा करते। 31 अक्टूबर, 1993 को उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ा। यों मैं 30 को भी गया था, पर वे पूर्णतया अचेतन थे। इसके पहले मैं 25 को गया था तब वे काफी अशक्त थे। उन्होंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया था और अस्पष्ट वाणी में मुझसे यही पूछा था कि मैं विद्यालय जा रहा हूँ या नहीं। तभी तो मैंने कहा कि विद्यालय उनके हृदय की धड़कन था।

श्रद्धाञ्जलि लेखन वेला में एक प्रश्न मन में कौंध रहा है- क्या ऐसा कोई अन्य महापुरुष इतनी निकटता से मैंने देखा है? नहीं! कभी नहीं देखा और न अब देख सकूँगा। जीना ही कितने दिन है और जीना भी हो तो अब तो मनुष्यता की निधि क्षीणप्राय है। न भूतो न भविष्यति जैसी बात है। वे लक्ष्मीवान् थे पर जल भरे बादल जैसे विनत, वे सरस्वती के वरदान प्राप्त पुत्र थे पर अपनी ज्ञान गुरुता का दम्भी बोध उनमें नहीं था, वे सद्गुण सम्पन्न थे पर अपने गुणों को सेवा के लिए समर्पित करने वाले वन्दनीय सत्पुरुष। वे सबके अपने थे और सब उनके थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रार्थना में ईश्वर से अपराजेय शक्ति के साथ शील की याचना की गयी है 'सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्'। बैरिस्टर साहब के पास इस शील की अकूत सम्पदा थी। ऐसी कि मानो सोने ने नवनीत का गुण भी धारण कर लिया हो।

आपके चरणों में अपनी वन्दना प्रस्तुत करते हुए मैं पुनः पुनः भावविभोर हो रहा हूँ। आप चले गये पर आप अमर है।

(नीराजन : रजत जयंती अंक)

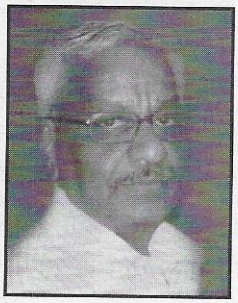

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह : स्मृति के वातायन से

डॉ. कमल किशोर गुप्त
पूर्व उप-प्राचार्य
वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर

कानपुर नगर पतित पावनी माँ गंगा के पावन तट पर बसा हुआ है। लगभग पाँच दशाब्दियों पूर्व तक गंगा माता कानपुर शहर के नितान्त निकट बहती थी। नाव में बैठ कर यहाँ के अत्यन्त प्रचलित सरसैया घाट से गंगा माँ के दूसरे तट की ओर जाते वक्त पीछे मुड़ कर अपने शहर को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि माँ गंगा अपने दाहिने बाजू से कानपुर को समेटे गोद में लिए हैं। माँ गंगा हमारे पापों को धोती है और इस मृत्यु लोक से हमारी नैया भी पार लगाती है। वह जीवकोपार्जन हेतु जल यातायात का सुगम मार्ग भी मुहैया कराती हैं। कलकत्ता (आज का कोलकाता) से कानपुर का व्यापार, आवागमन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका को निभाते हुए इसने हमारे शहर को उत्तर भारत का मानचेस्टर कहे जाने का हक दिलाया। इसी निर्मल अविरल सलिला के दाहिने तट पर ही नवाबगंज के निकट 1921 में 'सनातन धर्म कालेज' की स्थापना श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा हुई। 'महामण्डल' की स्थापना का बीजांकुरण करने वाले पूज्य स्वामी दयानन्द जी के आवास हेतु 'योगाश्रम' माँ गंगा के पावन तट पर ही बनवाया गया। इसी योगाश्रम में पढ़ने में तेज पर आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को विशेष रूप से नि:शुल्क आवास सुविधा महाविद्यालय की ओर से उपलब्ध रहती है परन्तु स्थान सीमित होने के कारण वहाँ कम छात्रों को ही इस सुविधा का लाभ मिल पाता है। दूर-दराज से उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अनेक मेधावी व आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े छात्र अन्यत्र आवास लेने को मजबूर होते हैं। ऐसे ही दो-तीन छात्रों की आप बीती बात को आप तक पहुँचाना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

कानपुर में शंकर भगवान् के चार प्रमुख मन्दिरों- सोमेश्वर, जागेश्वर, आनन्देश्वर, और सिद्धेश्वर मन्दिरों की मान्यता बहुत है। जागेश्वर मन्दिर सनातन धर्म कालेज, जिसे अब विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज के नाम से जाना जाता है, लगभग एक मील दूर स्थित है। 1953 की बात है जागेश्वर मन्दिर के सामने अखण्डाश्रम के एक छोटे से कमरे में एक छात्र अंगीठी पर खिचड़ी बना रहा था और हाथ में पुस्तक लिये पढ़ता जा रहा था। तभी एक कार वहाँ आकर रुकती है। गोरे

चिट्टे यशस्वी आभा मण्डल से युक्त सम्भ्रान्त महानुभाव उस कार से उतर कर उस छात्र के पास पहुँच कर पूँछते हैं- क्या कर रहे हो? कोई सेठ होंगे, ऐसा समझ कर अन्यमनस्क भाव से वह उत्तर देता है "खिचड़ी बना रहा हूँ और पढ़ भी रहा हूँ।" उन्होंने उस छात्र से पढ़ाई सम्बन्धी दिक्कतों के बारे में प्रश्न किया तो वह झुँझलाकर बोला "आप कौन हैं?" उन्होंने कहा "मैं नरेन्द्रजीत सिंह हूँ।" न पहचान पाने हेतु छात्र ने क्षमा माँगी। उन्होंने कहा "ओम प्रकाश! तुमने बी. ए. प्रथम वर्ष में (तब आगरा विश्वविद्यालय) अच्छे अंक प्राप्त किये हैं। भोजन बनाने एवं कमरा का किराया (तब पाँच रुपये प्रतिमाह) देने में दिक्कत होती है। "तुमको योगाश्रम में (निःशुल्क) रहने एवं मेस में भोजन करने से उन दिक्कतों से छुटकारा मिल जायेगा और तुम्हें पढ़ाई के लिए अधिक समय भी मिल जायेगा। तुम्हें और अच्छे अंक लाने हैं।" ओम प्रकाश को उक्त सुविधायें प्राप्त हो जाती हैं। परिणामतः वह तब आगरा विश्वविद्यालय में ग्यारहवीं पोजीशन के साथ बी.ए. उत्तीर्ण करने में सफल होता है। यही नहीं अगले दो वर्षों में एम.ए. (अर्थशास्त्र) में उसी विश्वविद्यालय में चौथी पोजीशन पा कर अपने महाविद्यालय का और अपने माता-पिता का नाम रोशन करता है। इस तरह अच्छे मेधावी जरूरतमंद छात्रों को स्वयं ढूँढ-ढूँढ कर मदद करते थे श्रद्धेय बैरिस्टर साहब।

अपने पिता की सामर्थ्य व इच्छा के विपरीत ग्रामीणांचल से एक छात्र रमा नाथ त्रिपाठी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज में प्रवेश लेता है। मात्र रू. 10-15 लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की उत्कण्ठा से उसे वंचित कैसे किया जा सकता था। तत्कालीन प्राचार्य जी ने कुल 70 रुपये फीस में से मात्र 2 रूपये के साथ फार्म पर प्रवेश स्वीकृति दे दी थी। परन्तु उसके रहने, खाने, पुस्तकों आदि की व्यवस्था कैसे और कहाँ से हो? यह एक बड़ा प्रश्न था, रमा नाथ के सामने रूपये 16 प्रतिमाह की छात्रवृत्ति हेतु उसका चयन न हो पाना उक्त प्रश्न को बड़ा के साथ अत्यन्त गम्भीर भी बना गया। कुछ दिनों तक वह चना चबा कर गुजर करता हुआ पढ़ाई करता रहा। आखिर एक दिन उसका धैर्य टूट गया और वह श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के पास गया। उन्हें वस्तुस्थिति बताई कि उसे रूपये 16 प्रतिमाह की छात्रवृत्ति हेतु नहीं चुना गया है। वह आगे पढ़ना चाहता है, क्या करे? बैरिस्टर साहब ने उसे आपाद मस्तक तक देखा और कहा कि तुम रू. 20 प्रतिमाह यहाँ से ले जाया करो। रमा नाथ ने फिर इसी कालेज से बी.ए. एम.ए. ही नहीं किया अपितु 14 वर्षों तक अध्यापन भी किया। उदारमना श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का उस रमा नाथ से ऐसा अदृश्य किन्तु अटूट नाता जुड़ गया जैसा पिता-पुत्र में होता है। महाविद्यालय में पढ़ने और पढ़ाने के बाद जब रमा नाथ जी का राम जस कालेज, दिल्ली में प्राध्यापक पद हेतु चयन हो गया तब वह वहाँ

कार्यभार सम्भालने (Join करने) के पूर्व बैरिस्टर साहब से आशीर्वाद लेने गये। बैरिस्टर साहब अपने लॉन में टहल रहे थे और रमा नाथ से बात-चीत भी करते जा रहे थे। थोड़ी देर बाद रमा नाथ ने उनसे आशीर्वाद लेकर चलने की अनुमति चाही तो बैरिस्टर साहब का मुखमण्डल एक विशेष प्रकार के मनोमालिन्य से आच्छादित हो गया और अपना मुख पीछे की ओर घुमा लिया। शायद ! रमा नाथ जी का कालेज से जाना उन्हें विछोह की अनुभूति करा रहा था। पिता-पुत्र विछोह सदृश यह मार्मिक दृश्य रमा नाथ जी के हृदयस्थल पर सदा-सदा के लिए अंकित हो गया था। ऐसे थे श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी।

मैंने 1971 में विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय से एम एस-सी. (अकार्बनिक रसायन शास्त्र) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद Ph. D Programm हेतु I.I.T. Kanpur तथा प्रवक्ता पद हेतु अपने महाविद्यालय में साक्षात्कार दिए। मेरे जीवन के पहले व आखिरी यही दोनों साक्षात्कार हैं। I.I.T. Kanpur में अखिल भारतीय स्तर पर हुए साक्षात्कार के बाद कुल चयनित 14 अभ्यर्थियों में उत्तर भारत से सिर्फ मेरा नाम था। इधर महाविद्यालय के साक्षात्कार का परिणाम घोषित नहीं हुआ था। इस बीच मुझे 20 जुलाई 1971 तक I.I.T. में Join करने के लिए Telegram प्राप्त हुआ। अतः उक्त Telegram लेकर मैं श्रद्धेय बैरिस्टर साहब से मिलने कचहरी स्थित उनके चैम्बर में गया और मैंने अपनी बात बताई। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से बात की और उसी Telegram पर प्राचार्य श्री शिव शरण शर्मा जी को लिखा, "मेरा ख्याल है कि इस विद्यार्थी को Inorganic Chemistry में प्रथम स्थान दिया गया था, निश्चित बात इन्हें बता दें ताकि यह आगे का निर्णय ले सकें।"

प्राचार्य शर्मा जी ने उसे पढ़ा और कहा, "दस मिनट बाद मिलिए।" जब मैं पुनः प्राचार्य जी से थोड़ी देर बाद मिला तो प्राचार्य जी का कथन है, "साक्षात्कार का परिणाम अभी गोपनीय है। मैं बताऊँगा नहीं। पर इस Telegram पर जो लिखा है वह सच लिखा है।" यह सुनकर मैं श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के पास फिर गया और उनसे पूछा कि अब मुझे कहाँ Join करना चाहिए? उन्होंने पहले पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त की फिर कहा, "बचपन में आपके पिता जी का स्वर्गवास हो गया, भाइयों ने पढ़ाया है। अतः मेरी दृष्टि से तुम्हें कालेज में Join करना चाहिए, स्थाई नौकरी है। Ph.D तो बाद में भी कर सकते हो।" उनके आत्मीयता भरे उक्त शब्दों से मुझे ऐसा लगा जैसे कि मेरे पिता जी मुझे समझा रहे हों। ऐसी पितृ-तुल्य उनकी स्नेहिल अनुकम्पा से मैं आज तक अभिभूत हूँ।

1953, 1964 एवं 1971 के मात्र ये तीन उदाहरण नहीं है बल्कि इनकी एक लम्बी सतत

शृंखला है। उनके व्यक्तित्व एवं उनकी समाज के प्रति दृष्टि पर दृष्टिपात करने मात्र से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, कि समाज के प्रति उनकी संवेदना विशेष कर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े ग्रामीणांचलों से उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु आने वाले मेधावी, जरूरतमंद विद्यार्थियों की भरपूर मदद करना और उनकी यथेष्ट चिन्ता करने के साथ ही समाज व राष्ट्र के प्रति सजग व संवेदनशील व्यक्तित्व निर्माण हेतु उनका दिशानिर्देशन कुछ सीमित विद्यार्थियों, सीमित कालखण्ड या सीमित क्षेत्र के लिए ही सीमित नहीं था। अपितु वह अनुकम्पा, वह आत्मीय व्यवहार, वह अहंकार शून्य स्वभाव उनमें अथाह, असीमित थे। वस्तुतः ये तीनों सद्गुण एक त्रिवेणी की भाँति श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के व्यक्तित्व में जीवनपर्यन्त सदा विद्यमान रहे। परोपकारार्थ उनके हृदयस्थल से सदा-सर्वदा निकलने वाली यह त्रिवेणी 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' को चरितार्थ करती हुई माँ गंगा की भाँति निश्छल, निर्मल एवं अविरल बहती रही। इस त्रिवेणी ने सैकड़ों नहीं हजारों लोगों के लिए पाथेय का कार्य किया है। वे सब श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के जीवन भर कृतज्ञ रहेंगे।

ऐसे श्रेष्ठ, देवतुल्य श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह की 101 वीं जयन्ती पर उन्हें हम श्रद्धा से स्मरण करते हैं और अत्यन्त विनीत भाव से उनके श्री चरणों में श्रद्धावनत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

परम सुख का मार्ग

मनुष्य की सभी क्रियाओं का उद्देश्य एक ही है- आनन्द अथवा सुख की प्राप्ति। वैसे तो सम्पूर्ण सृष्टि ही आनन्दमय है। प्रत्येक प्राणी वही कार्य करता है जो उसके लिए सुखकारक है। प्राणी ही क्यों जड़ पदार्थों में भी जितना कुछ होता है वह सभी आनन्द प्राप्ति के लिए है। सम्पूर्ण चराचर सृष्टि में एक ही आनन्द का नाद गुंजित हो रहा है। साधारण जीवधारी अन्य प्राणी भी सुख के लिए ही क्रियायें करते हैं। कुत्ते को डंडा दिखाया तो वह भागता है और रोटी दिखाई तो वह समीप आता है। एक समय भागने और दूसरे समय समीप आने की यह क्रिया उसकी सुख-कामना ही है। तब मनुष्य तो विकसित प्राणी है। इसलिए इस सम्बन्ध में कोई विशेष तर्क देने की आवश्यकता नहीं है कि मनुष्य की समस्त क्रियाओं का उद्देश्य सुख प्राप्ति ही है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वम्

ओम शंकर

श्रद्धेय बैरिस्टर साहब आज इस असार संसार से परे हो गए हैं, किन्तु उनका यशः शरीर हम सबकी श्रद्धाभिव्यक्ति के लिए हमारी कल्पना भूमि में चिरकाल तक प्रतिष्ठा पाता रहेगा। उनकी कर्मानुरागी प्रकृति और विरक्त प्रवृत्ति उन्हें जीवन पर्यन्त जंगम तीर्थराज के रूप में प्रतिष्ठित किये रही। कतिपय अध्यात्म चिन्तकों का मानना है कि योगच्युत तपस्वी एक अन्तिम जन्म और लेते हैं वह जन्म किसी सांसारिक ऐश्वर्य-मण्डित किन्तु सात्त्विक पितृ-गृह में होता है। उपर्युक्त बात बैरिस्टर साहब के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देती थी।

वे बहुश्रुत थे, किन्तु अपने उस ज्ञान को अनुभव की कसौटी पर कसकर परखते भी थे। इसी कारण उनके विचार और कर्म प्रायः वैज्ञानिक रीति से व्यवस्थित और बुद्धि-तोषी होते थे।

अपने जीवन का लगभग सम्पूर्ण चैतन्य-काल उन्होंने शिक्षा जगत् में व्यतीत किया। निष्ठा-सिद्ध होने के कारण उन्होंने जितने भी काम किए, उनमें उनकी परिशोधित निष्ठा सदैव ही झलकती रहती थी। उनकी इस अहैतुकी निष्ठा का अनुभव उनसे सम्पर्कित पूरा शिक्षा जगत् करता था। शिशु मंदिर से लेकर महाविद्यालयों तक, सामान्य चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति तक उनके आत्मीय परिक्षेत्र के अंग थे और उनसे सम्यक् रूप से प्रभावित भी।

उनके सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा रहा है, आगे भी लिखा जायेगा, मुझे तो सदैव ऐसा ही लगा कि उनकी जीवन शैली उनके सुस्पष्ट विचारों की अभिव्यक्ति थी और उनका चिन्तन उनकी भावनाओं का प्रकाश।

आत्मद्रष्टा ऋषियों की भाँति जहाँ उन्हें कभी सांसारिक विक्षोभ उद्विग्न नहीं करता था, वहीं जीवन मुक्त प्राणी के समान जल-कमलवत् जीवन जीते हुए कभी 'विशेष' दिखने की इच्छा भी उनके स्वभाव का अंग नहीं बनी। कभी-कभी वह सहज भाव से कहा करते थे, 'मैंने जेल-जीवन में गीता का अध्ययन किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि गीता एक ऐसा महासागर है, जिसके तल तक पहुँचना तो मेरे जैसे प्राणियों के वश की बात नहीं, किन्तु उसके सहज आकर्षक स्वरूप से आकर्षित हो, थोड़े से श्रम से प्राप्य शंख और सीपी एकत्र कर लेना भी अच्छी ही है। इसलिए मैंने गीता के तीन श्लोकों को अपनी क्षमता के अनुकूल पाया, जिन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता आ रहा हूँ।

श्लोक निम्नांकित हैं-

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा व शारीरं तप उच्यते।।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भाव संशुद्धिरित्तेतत्तपोमानसमुच्यते।।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।

शरीर, मन और वाणी का तप वास्तव में उन्हें सिद्ध हो गया था। देव, द्विज और गुरु ही क्या, एक सामान्य शिक्षक के प्रति भी उनके द्वारा जो विनम्रता प्रकट होती थी, इस युग में उनके स्तर के व्यक्ति के लिए अपवाद ही कही जायेगी। शुचिता और साख्य तो उनकी निधियाँ थी। ब्रह्मचर्य के परिपोषक वे कैसे थे, यह उनके दैनंदिन जीवन एवं चिन्तन में सहज ही देखा जा सकता था। अहिंसा वृत्ति यहाँ तक उनमें थी कि किसी से बहुत अधिक रुष्ट होने पर भी 'अरे भाई' ये ठीक नहीं' के अतिरिक्त न ऊँचा स्वर और न ही कोई कठोर शब्दावली उनके मुँह से निकलती थी।

मन की 'प्रसाद' अवस्था के उदाहरण उनके जीवन में अनेक बार देखनेको मिलते थे। श्री नगर में उनका काफी बड़ा बंगला, खेती तथा बगीचे आदि थे। पहली बार जब उत्पातियों ने उन पर कब्जा करना प्रारम्भ किया और उसकी सूचना उनको मिली, उस समय परिवार के सभी सदस्य उद्विग्न थे, किन्तु हमारे बैरिस्टर साहब सहज बने रहे। श्री वीरेन्द्र जी (उनके कनिष्ठ पुत्र) आज भी उनकी उस स्थिति का शाश्चर्य वर्णन करते हैं। 'सौम्यता' तो लगता है, उनके अन्तस् से निकलकर उनके मुखमण्डल पर छा गयी थी। मौनी भाव तथा मनोनिग्रह उनको इतने सिद्ध थे कि अनेक बार इस अवस्था में वह बड़े भोले प्रतीत होते थे।

उद्वेग रहित, सत्य संवलित, मृदुल और हितकारी वाणी उनके आचरण और व्यवहार के साथ एकरूप हो गयी थी। आशय यह कि वह शरीर, मन तथा वाणी की तपाग्नि से परिशुद्ध करके जीवन पर्यन्त आत्मानन्द में लीन रहते हुए लोक कल्याण के लिए प्रयत्न करते रहे।

मैंने इसके पहले कहा था कि उनका सम्पूर्ण चैतन्य शिक्षा जगत् में ही विचरण करता रहा। इस परिप्रेक्ष्य में कहना न होगा कि उनका चिन्तन शिक्षार्थी के परितः घूमते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि छात्र को अपने जीवन में इन गुणों का समाहार करना ही चाहिए- श्रमनिष्ठा, देशप्रेम और परमात्मा पर विश्वास। उनका सहज विश्वास था कि इन सद्गुणों के रहते व्यक्ति दीन और निन्दनीय नहीं हो सकता। ये सद्गुण कैसे आएँ इसका प्रथम सोपान वह मानते थे व्यस्त और व्यवस्थित दिनचर्या। उनका कहना था कि छात्र को कम सिखाकर अधिक करने का अवसर देना चाहिए, किन्तु सिखाते समय दण्ड का भय किंचित् मात्र नहीं होना चाहिए, क्योंकि भय से कुण्ठा और कुण्ठा से अविवेक बढ़ता है। छात्र को

शारीरिक दण्ड बिल्कुल ही नहीं देना चाहिए, यह कहकर वह प्रकारान्तर से शिक्षक को एक सफल मनोविज्ञानवेत्ता तथा गम्भीर दार्शनिक के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इसीलिए वह शिक्षक को 'अभाव' तथा 'प्रभाव' दोनों दूर रहने का परामर्श भी दिया करते थे।

शिक्षा संस्कार है और संस्कार प्रकृति को परिष्कृत करने का प्रक्रिया। इस बात को वह बड़ी गहराई से अनुभव करते थे। उनकी यही भावना उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे सांस्कृतिक संगठन की ओर खींच ले गयी। वह सन् 1944 में संघ के सम्पर्क में आए। 1947 में उत्तर प्रदेश के संघचालक के रूप में कार्यरत हुए और इसी पद पर वह जीवन पर्यन्त प्रतिष्ठित रहे। यों तो इसी प्रकार की और भी अनेक सामाजिक संस्थाओं के वह संरक्षक, अध्यक्ष आदि रहे, किन्तु उनकी पहचान संघ के प्रान्त संघचालक के रूप में ही अधिक रही। अहं शून्यता का परिचय उनके अनेक व्यवहारों से झलकता था। उदाहरण स्वरूप किसी ने उनसे किसी संस्था का पद स्वीकार करने का आग्रह किया तो सहज ही कह उठते 'माटी की भवानी टीका ही टीका'। उनका अभिप्राय होता था कि मेरा रूप तो जन भावना द्वारा मान्य मिट्टी की मूर्ति जैसा ही, उसके विग्रह के अंश से टीका करने वालों की संख्या यदि बढ़ी, तो वह मृण्मय मूर्ति अपना अस्तित्व खो बैठेगी। वास्तव में उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा को परमात्मा की इच्छा और लोक भावना ही माना। अपने में कोई विशेषता है, इसका उन्हें कभी आभास ही नहीं हुआ।

बैरिस्टर साहब के एक प्रशंसक ने उन्हें एक दिन प्रसंगवश 'परम भागवत' कहा। पहले तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह उन सज्जन की मात्र भावुकता है, किन्तु कालान्तर में उनका वह सम्बोधन मुझे भी सटीक लगने लगा। भागवत उपासना पद्धति के सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि के निर्माता एकमात्र भगवान् हैं। भगवान् के अनेक नाम हैं। इन नामों में विष्णु, नारायण, जनार्दन, वासुदेव आदि मुख्य हैं। वे अपनी योगमाया प्रकृति से समस्त जगत् की उत्पत्ति करते हैं। उन्हीं से ब्रह्मा, शिव आदि अन्य देवता प्रादुर्भूत होते हैं। उन्हीं परमात्मा का संसार जब संकटग्रस्त होता है वह स्वयं अवतरित होकर उसके संकटों को अपने सांसारिक प्रयासों से दूर करता है। भागवत धर्म की मान्यता ही दशावतारों की पृष्ठभूमि है। निष्काम कर्म से चित्त-शुद्धि से ही भावशुद्धि होती है। इस प्रकार भक्ति ही मोक्ष का एकमात्र साधन है। भगवान् के सम्मुख पूर्ण प्रपत्ति ही मोक्ष है। ये विचार और विश्वास भी भागवत धर्म के अंग हैं।

भागवत धर्म की उपासना पद्धति में अभिगमन, उपादान, इज्या, स्वाध्याय और योग का विशेष महत्त्व है। इसी को आगे सरल करके स्मरण, कीर्तन, वन्दन, पादसेवन, अर्चन तथा आत्मनिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया गया। नवधा भक्ति का वर्णन भी भागवत धर्म के अन्तर्गत चार खण्डों में विभक्त है। ये हैं ज्ञान पाद (दर्शन और धर्म विज्ञान), योग पाद (योग सिद्धान्त और अभ्यास) क्रिया पाद (मंदिर निर्माण और मूर्ति स्थापना) तथा चर्या पाद (धार्मिक क्रियायें)।

इस परिप्रेक्ष्य में जब हम बैरिस्टर साहब के भागवत स्वरूप को कसौटी पर कसते हैं तो पाते हैं कि इन विधियों को वे अपनी मान्यता और निष्ठा के साथ समायोजित करके शिक्षा क्षेत्र में संस्कारक्षम वातावरण उत्पन्न करने के लिए प्रयोग में लाते रहे। ज्ञान पाद के अंतर्गत उन्होंने अपने राष्ट्र का भ्रमण और दर्शन किया। योग पाद में उन्होंने गीता का अभ्यास किया। क्रिया पाद में विद्यालयों के निर्माण और उनके पवित्र संचालन में ही उनको संतोष मिला और चर्यापाद के अन्तर्गत उन्होंने उन विद्या मंदिरों में ही विविध संस्कारदायी धर्मानुष्ठानों की व्यवस्था की।

'ईशावास्यमिदं सर्वम् सिद्धान्त के परम विश्वासी होने के साथ ही साथ कर्म के प्रति निष्ठा और प्रारब्ध के प्रति आस्था उनके चैतन्य में सदा-सर्वदा समन्वित रूप में विद्यमान रही। जीवन की सनातनता के साथ ही विचारों की अमरता का विश्वास भी उनमें सहज ही देखा जा सकता था। जीवन मुक्त अवस्था का अभ्यास करते-करते वह इस संसार से विदा हो गये। कदाचित् उन्हें उस कैवल्य की प्राप्ति में बाधा न हुई होगी जिसके वह अधिकारी थे। उनकी जीवन शैली के प्रति सहज स्पृहा होना किसी भी सात्त्विक पुरुष के लिए स्वाभाविक है। उनको समर्पित स्मरणाञ्जलि हमारे जैसे संसारी जीवन के पथिकों का पाथेय बने, इसके अतिरिक्त परमात्मा से और कोई याचना करना उचित नहीं लगता। उस शिक्षाविद् शिक्षक और संस्कारी भक्त को मेरा विनम्र प्रणाम।

घमण्ड का फल

एक विद्यालय में एक लड़का पढ़ता था। उसका नाम सौरभ था। वह पढ़ने में बहुत होशियार था। वह सभी कार्य अच्छी प्रकार करता था। विद्यालय के सभी अध्यापक उससे प्रसन्न रहते थे। वह सभी अध्यापकों का सम्मान करता था। वह सभी विषय समय पर याद कर लेता था। इस तरह वह सभी परीक्षाओं में प्रथम आता था। एक बार जब परीक्षा आने वाली थी वह सोचने लगा कि कौन सा विषय याद करें उसे सभी विषय याद थे। अतः उसने किसी भी विषय को पुनः याद नहीं किया। जब परीक्षा आरम्भ हुई, वह परीक्षा देने गया। उस विषय में उसे कुछ भी नहीं आया और वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया।

"अतः हमें अपने सभी विषयों को नियमित रूप से बार-बार दोहराते रहना चाहिए।"

(नीराजन : रजत जयंती अंक)

ईशावास्यमिदं सर्वम्

ओमशङ्कर त्रिपाठी
पूर्व प्रधानाचार्य, पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय

प्रथम दर्शनः सन् 59-60 की बात होगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कानपुर विभाग के कार्यकर्ताओं की कानपुर की बैठक थी। जनवरी की बारिश में भीगकर उन्नाव के कई कार्यकर्ताओं के साथ मैं भी पहुँचा। बैरिस्टर साहब उन दिनों उत्तर प्रदेश (सम्पूर्ण) के संघचालक थे। बैठक उन्हीं के आवास पर थी। बैठक गुरु जी ने ली। बैठक में बैरिस्टर साहब ने कोई बातचीत नहीं की, लेकिन उनके बैठने-उठने, चलने के तरीकों से लगता था, उनमें शील-सौजन्य के साथ-साथ बड़ी गम्भीरता है। व्यक्तित्व तो उनको भगवान् ने दिया ही ऐसा था कि आँखें उनकी ओर बरबस उठ जाती थीं।

उनसे मेरी प्रत्यक्ष मुलाकात हुई विद्यालय की स्थापना के बाद जब मैं प्रथम प्रधानाचार्य श्री चन्द्रपाल सिंह के साथ आचार्य प्रतिनिधि के रूप में पहली बैठक में गया। बैठक के बाद उन्होंने मुझसे बातचीत की तो सहज ही मेरा उत्साह बढ़ा। फिर तो जैसे-जैसे विद्यालय बढ़ता गया, मेरी जिम्मेदारियों के साथ-साथ बैरिस्टर साहब से मुलाकातें भी बढ़ती गयी।

परिवार : बैरिस्टर साहब के पूर्वज पंजाब से ही सनातन धर्म की संस्थाओं से जुड़े रहे थे। उनके पिता रायबहादुर विक्रमाजीत सिंह अपने समय के अग्रगण्य एडवोकेट थे और कानपुर में एक प्रकार से सनातन धर्म के कर्णधार थे। सनातन धर्म उनके जीवन में रचा-बसा था। आचार-व्यवहार सधा-बँधा था-हर काम निश्चित समय से करना, कपड़े उतार कर पाटे पर बैठकर भोजन करना, बाहर फलों के अतिरिक्त कुछ न खाना इत्यादि। बैरिस्टर साहब को व्यवस्थित जीवन विरासत में ही मिला था।

पत्नी बैरिस्टर साहब को मिलीं 'बूजी' जैसी, उन्होंने अपनी भावुकता, संवेदनशीलता, सादगी और त्याग से उनके सद्गुणों को परिपुष्ट ही किया। बूजी का जन्म कश्मीर में हुआ था, जहाँ उन्होंने पहले आक्रमण के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के योगदान को देखा था। गोखले जी से सम्पर्क के साथ-साथ निश्चय ही पिता के संस्कारों तथा बूजी के अनुभवों ने भी उन्हें संघ से जुड़ने को प्रेरित किया होगा। बूजी की आदर्श जीवन शैली का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गांधी जी की हत्या के उपरान्त संघ पर प्रतिबन्ध लगने के कारण जितने दिन बैरिस्टर साहब जेल में रहे, घर पर बूजी ने भी उसी प्रकार का जीवन बिताया-भूमि पर सोना, रूखा-सूखा खाना इत्यादि। दीनदयाल जी को वे अपने छोटे भाई या पुत्र के समान देखती थीं। दीनदयाल जी की मृत्यु पर मैंने उनको ऐसे व्यथित देखा जैसे परिवार का जवान भाई या बेटा चला गया हो। तभी उन्होंने संकल्प लिया कि ऐसा विद्यालय बनाना है, जहाँ दीनदयाल जी के

विचारों का पल्लवन हो। इस काम के लिए उनके पास पर्याप्त धन भी नहीं था। यह ठीक है कि वह सम्पन्न थीं, लेकिन ऐसे तो कानपुर महानगर में इतने सम्पन्न लोग हैं, जिनके पास पैसा रखने का स्थान नहीं है। इतना पैसा अगर बूजी के पास होता तो जेवर बेचने की उनको आवश्यकता न पड़ती। गहना बेचा तो उन्होंने कहा, 'विद्यालय बनना चाहिए और यथाशीघ्र बनना चाहिए'। नियमित रूप से देखने आती थीं जब विद्यालय बन रहा था। प्रभु की इच्छा कि विद्यालय का पहला बैच भी उनके सामने नहीं निकल पाया। इस प्रकार बूजी की भावना के आधार पर विद्यालय का मूर्त रूप बना जिसमें प्राण और रंग भरने का काम बैरिस्टर साहब ने किया, जो शिक्षाविद् थे और शिक्षा जगत् से जुड़े हुए थे।

परिश्रम से पाई सफलता : बैरिस्टर साहब का जीवन सदैव नियमित रहा–नींद के घंटे कम न करना, प्रातः जागरण और स्नान, प्रतिदिन खेलना। फिर भी वे पोजीशन होल्डर विद्यार्थी थे। दसवीं कक्षा तक सांइस नहीं पढ़ी थी। इण्टरमीडिएट में जब साइंस ली और पहली बार पिपेट उपयोग किया तो रसायन मुँह में चला गया। बंगाली अध्यापक बोले, 'अरे, मरेगा!' सांइस नहीं पढ़ी? जा, इकोनॉमिक्स ले ले। नम्बर कैसे थे?'

फर्स्ट क्लास उन दिनों बहुत कम आते थे। फिर अध्यापक ने पानी से पिपेट का अभ्यास कराया। कहने का आशय यह कि बड़ी कक्षा में नया विषय लेकर भी उन्होंने प्रतिष्ठापूर्ण ढंग से उत्तीर्ण किया।

बाद में जब वे बैरिस्टर बनकर विलायत से लौटे तो निश्चय किया कि बहस हिंदी में करूँगा। इसके लिए प्रयासपूर्वक हिन्दी का अभ्यास किया। प्रेमचन्द, वृन्दावनलाल वर्मा इत्यादि के उपन्यास पढ़े। अपने सिद्धान्तों पर चलकर सफलता पाने हेतु उन्होंने संघर्ष करने में कभी संकोच नहीं किया।

सिद्धान्तों का दृढ़ता: छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी किसी भी बात में अपने सिद्धान्तों से उन्होंने समझौता नहीं किया। एक बार चीनी की किल्लत आ गयी। उन्होंने ये पूछकर कि विद्यालय में अतिरिक्त चीनी है, कुछ चीनी मँगाई। इधर से चीनी गयी, उधर से उन्होंने पैसा भेजा। यहाँ तक कि विद्यालय से एक गमला मँगाया तो वहाँ से दो गमले भिजवाये। ये बातें छोटी नहीं है, बहुत बड़ी हैं। उनके इस आचरण और चरित्र का प्रभाव ही संचरित होकर विद्यालय के वातावरण और विद्यार्थियों की सोच को संस्कारित करता था।

उनकी पुत्रियाँ किसी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती थीं। उस समय तक लड़कों के लिए तो बी.एन.एस.डी. और जी.एन.के. जैसे हिन्दी माध्यम के अच्छे विद्यालय खुल गये थे, पर लड़कियों के लिए अंग्रेजी स्कूल ही थे। जब स्कूल से शिकायत आई कि आपके घर में अंग्रेजी नहीं बोली जाती तो बैरिस्टर साहब का कहना था कि स्कूल में आप अंग्रेजी पढ़ायें, बुलवायें पर हमारे घर की संस्कृति को बदलने का प्रयास न

करें। घर में तो हिन्दी ही बोली जायेगी। लड़कियाँ जब बड़ी कक्षा में पहुँची तो बैरिस्टर साहब ने उन्हें स्कर्ट पहनाना उचित न समझकर वेश के ही रंग का सलवार-कुर्ता बनवा दिया। स्कूल में डाँट पड़ी जब स्कूल वालों ने स्कर्ट पर ही जोर दिया तो लड़कियों को उन्होंने स्कूल से हटा लिया और घर पर ही योग्य अध्यापकों से पढ़वाया।

राष्ट्रीय सोच: जब गांधी जी की हत्या हुई और अनुचित रूप से संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो संघ ने सत्याग्रह किया। बैरिस्टर साहब के जेल जाने की बात आई बड़े भाई साहब ने लिखा, 'देखो, अब पिता जी नहीं है और उनके स्थान पर मैं हूँ। मैं आदेश देता हूँ कि तुम जेल मत जाओ। परिवार बर्बाद हो जायेगा।' दो मिनट विचार किया कि पितृतुल्य भाई के आदेश का पालन करके परिवार चलाना है या देश के हित में अन्याय अत्याचार का विरोध करना है, भारत माता की सेवा में लगी, निष्ठापूर्वक सर्वस्व समर्पण कर देने वाले कार्यकर्ताओं की देशभक्त संस्था पर लगे गलत आरोपों का प्रतिकार करना है? थोड़ी देर ऊहापोह में पड़े रहे फिर निर्णय लिया, 'नहीं, हमको तो जेल जाना चाहिए। इस अन्याय के विरोध में यदि अपना परिवार भी समर्पित करना पड़े तो करना चाहिए' और जेल चले गये।

वे हमेशा कहते थे कि जीवन में अपनी जितनी भी उन्नति कर सकें करनी चाहिये लेकिन वह उन्नति व्यक्तिगत न होनी चाहिये। जैसे हमारे देश के प्रतिभाशाली छात्र विदेशों में जाते हैं। ठीक है, विदेशों में जाना है पढ़ने के लिए, समझने के लिए, कमाने के लिए, लेकिन अन्ततः उन्हें यह समझना चाहिये कि हमारा देश और घर यहीं है।

कहते थे, अगर धरती से हमारा मोह छूट गया तो वह धरती हमें कष्ट देगी। धरती हमको कष्ट देगी तो व्यथा में हम कितने दिन तक रह सकेंगे? अमेरिका से लौटने वालों को यहाँ की धूल और गर्मी बहुत सताती है। इसलिए धरती से उनका मोह छूट जाता है। उनका कहना था कि विद्यार्थियों को यह सोचना चाहिये कि देश ने हमारे ऊपर बहुत खर्च किया है। हमारे देश को हमसे उम्मीदें भी बहुत हैं। हमारा उसका सम्पर्क केवल धन के खर्चे तक सीमित नहीं है। यह तो ऐसा ही हुआ कि हम जिस घर में पैदा हुए उसमें गरीबी है। फिर भी हमारे माता-पिता ने अपना पेट काटकर, अपने को कष्टों में डालकर, सब कुछ हमारे ऊपर वार दिया हमको इस लायक बना दिया कि हम कुछ हो सकें और संसार में स्वाभिमान से जी सकें। और हमने सुविधाओं की दौड़ शुरु कर दी। हमने यह सोचना छोड़ दिया कि यह माँ हमारी है, ये पिता हमारा है। और तरह-तरह के ताने देने लगे-लो हम घर आते हैं तो हमें ठीक से बैठने की भी जगह नहीं मिलती। हम उस जगह को ठीक करें यह प्रयास नहीं करते। हम ताना देते हैं। और माता-पिता यही कहते हैं, अच्छा बेटा, हम कोशिश करेंगे। यह नहीं कि तुम भी कुछ करो। और लड़का ऐसा निकला कि साहब सुविधा की जगह तो वहाँ पर है, हम वहीं रहेंगे। आयेंगे भी नहीं, तो माता-पिता लड़के को बुरा तो

न कहेंगे। लेकिन भीतर-भीतर घुटेंगे कितना? भारत माता की यही स्थिति है।

आज हमारे समाज की यही दशा है। जब किसी नौजवान से मिलते हैं तो शुरु में विदेश जाने का अवसर मिलता है तो बहुत दीवाना हो जाता है। वहाँ जाने के बाद सुविधायें तो हैं ही। भौतिक सुख हैं। तो यह नहीं कहता कि हम सुख से वहाँ ललचा गये हैं। वह तर्क क्या देता है? अरे साहब, वहाँ तो हमारे अनुसंधान की सुविधायें हैं, हमारे विकास की सुविधायें हैं यह देश तो बिल्कुल हमारी बकत ही नहीं करता, काम करने का अवसर नहीं देता। वहाँ काम का सुख है। काम के दो अर्थ है- काम माने यह वो काम है उसका सुख तो है लेकिन इसका अर्थ 'Work' से लगाते हैं। यह सुविधाओं की अंधी दौड़ जो नौजवान की थी, उनको बुरी तो लगती थी लेकिन इसको वे प्रकारान्तर से कहा करते थे। कभी आवेश में नहीं बोलते थे- 'हम किसके लिये पढ़ रहे हैं? हमारा समाज, हमारी संस्कृति, हमारा देश और अगर ऐसा न होता तो जिस जमाने में वे विदेश गये थे, उस समय विदेशों में रहने की सुविधा बहुत थी। फिर भी वे लौटकर आये और यहीं अपना जीवन लगाया।

राजनीति के बारे में कहते थे कि राजनीति में चमक-दमक बहुत है। और जितनी चमक-दमक होगी, आदमी अपने उद्देश्य से उतना ही दूर हो जायेगा। राजनीति से जितनी समाज सेवा हो सकती है उससे ज्यादा अन्य संगठनों से हो सकती है। राजनीति शासन कर सकती है, सेवा नहीं कर सकती। और समाज विशेषकर ऐसा दुर्बल और इतने दिन का सताया हुआ समाज बिना सेवा के स्वस्थ नहीं होगा। शासन से स्वस्थ नहीं होगा, मर जायेगा।

इस सबके बावजूद उनका मत था कि चूँकि संगठन देश सेवा कर रहा है और हम उसके अंग हैं इसलिए संगठन यदि आदेश करता है कि राजनीति में जाना है तो जाना चाहिए। हमको सत्ता की इच्छा नहीं है, पर संगठन यदि सोचता है कि राजनीति में हमारी आवश्यकता है तो यही करना उचित है। यह था उनका संगठन के प्रति समर्पण का भाव।

त्याग के प्रतिदान की अपेक्षा नहीं: मैं उनके बहुत पीछे पड़ा रहता था कि इण्टरमीडिएट होना चाहिए। दसवें तक बच्चों से इतना लगाव हो जाता था कि उनकी आगे की पढ़ाई की चिंता होती थी। तो उन्होंने कुछ अपने आप, कुछ मेरा मन रखने के लिए कहा कि जब तक इण्टर नहीं होता तब तक आप इन बच्चों को छात्रावास में रखकर बाहर पढ़ाइये। दो तीन साल तक यह क्रम चलाया इण्टरमीडिएट की मान्यता के लिए प्रयास करने पर शासन की ओर से आपत्ति आई कि आपके यहाँ एक कमरा कम है। उस समय एक कमरे की लागत थी 30000 रूपये। संयोग कि विद्यालय की कुल बचत उस समय करीब इतनी ही थी। बैरिस्टर साहब ने कहा कि एक कमरा बनवा लीजिए। मैंने कहा कि इतना व्यवस्थित भवन,

इसमें एक कमरा कहाँ बनवाया जाये। इसमें तो पूरी एक विंग बनानी चाहिए। उन्होंने कहा, विंग बनाने में तो बहुत पैसा लगेगा। मैंने कहा, धीरे-धीरे हो जायेगा। बोले, अरे, कानपुर में कोई देता-वेता नहीं है।

तब तक मैं कुछ लोगों से सम्पर्क कर चुका था। उन्होंने उत्साह बढ़ाया था कि कानपुर में दीनदयाल विद्यालय के लिये पैसे की कमी नहीं पड़ेगी। आप योजना बनाइये, काम शुरु करिये। बैठक में कई लोगों के पूर्ण सहयोग की बात लिखित रूप में प्रस्तुत की गई। बैरिस्टर साहब को कानपुर की एक-एक नब्ज पता थी। फिर भी उन्होंने कहा कि ठीक है, आप शुरू कराइये। अनेक बार वे यह कहते थे कि यदि कोई अच्छे उद्देश्य के लिए बहुत व्यग्र है तो उसे दो-चार बार दिशा देकर काम करने दिया जाय। जैसे तैरना सिखाते समय पानी में डाल दिया गया तो देखा जाएगा, बचाया जाएगा। अब मुहूर्त निकल गया, नक्शा बनवाया गया। नक्शा बनवाने के लिए एक सज्जन ने बहुत कम पैसे में काम किया। फिर उनका बनाया नक्शा स्वीकार भी कर लिया गया। इसके बाद सचान साहब सम्पर्क में आये। HBTI में Maintenance के Incharge थे। भवन निर्माण का भी काफी ज्ञान था। ये आये, काम शुरु हुआ। विद्यालय के 30000 रु. और इकट्ठा किया हुआ रुपया नींव में ही खप गया। एक स्थिति ऐसी आई कि कमरा ऊपर तक बन गया और स्लैब बनाने के लिए पैसा नहीं रहा। तो मैं बैरिस्टर साहब के पास (क्योंकि मैं ही भवन निर्माण संयोजक बनाया गया था) रास्ते में मैंने देखा कि ये जो एस.डी. कॉलेज है, यहाँ चुनाव चल रहे थे। यूनियन के चुनाव में जैसी कि प्रवृत्ति हो गई है, लोग बिल्कुल सस्ते स्तर पर उतर कर काम करते हैं। बड़े गन्दे किस्म के पोस्टर लगे थे। ऐसे में माहौल मैनेजमेंट बनाम विद्यार्थी का हो जाता है। वह तस्वीर मेरे दिमाग पर थी। पता ही नहीं चलता था कि वे अस्वस्थ हैं। लेटे होने पर ही अस्वस्थता प्रकट होती थी। उन्हें स्थिति बताई कि छत के लिए पैसा नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छा देखिये कुछ व्यवस्था करते हैं। उन्होंने कहा कि बूजी की कुछ ज्वेलरी बची हुई है। उसे बेच देंगे। हमारे कुछ शेयर जे.के. सिन्थेटिक्स के हैं, उनको बेच देंगे। मैं थोड़ा भावुक हो गया। उन्होंने पूछा, क्या बात है। मैंने कहा, एक तरफ मैं आपका यह स्वरूप देख रहा हूँ। प्रत्यक्ष। और दूसरी तरफ इस तरह के गंदे पोस्टर देखकर आया हूँ। तो आखिर इस समाज सेवा से आपको क्या मिल रहा है?

मैंने तो अपने छोटे मन से बात कह दी। एक क्षण शान्त रहने के बाद वे बोले -'समाज सेवा के बाद उसका प्रतिदान नहीं चाहा जाता।' इससे बड़ी और कौन सी उदात्त अवस्था होगी मनुष्य की? और फिर लोगों के लाख मना करने पर उन्होंने कोटा के शेयर बेचे। बहुत बड़ा भाग हमको दिया और बाकी होमियोपैथिक चिकित्सालय के लिए दिया। अपने ऊपर खर्च नहीं किया। अब आप यह सोचिये कि हम क्या समाज सेवा कर रहे हैं?

विद्यालय में स्नेह और अपेक्षाएँ: विद्यालय वे अक्सर जाते थे। आते थे तो रुकते थे। काफी समय

तक रहते थे। एक-एक चीज पर ध्यान देते थे - यहाँ जाला लगा है, कोने में गंदगी है, बच्चों को इस तरह रहना चाहिये। पहले वो ऊपर चढ़कर कमरों में भी जाते थे। यह पोंछा लगाने का सिस्टम उन्हीं का शुरु किया हुआ है। इसकी वजह से फर्श जो चमकता दिखता है, यह उन्हीं की देन है। अपने साथ पोंछा लाये थे। कर्मचारियों को पोंछा लगाना भी सिखाया। यह पोंछे का सिस्टम बाद में कर्मचारियों ने और विकसित किया जो और कहीं देखने को नहीं मिलता।

उनकी दृष्टि कहाँ-कहाँ तक जाती थी। ओमशंकर जी, लगता है हनुमान जी की मूर्ति आज साफ नहीं की गई। अमृतसर स्वर्ण मंदिर का उदाहरण देते थे, 'वहाँ सिक्ख बन्धु अपने केशों से सफाई करते हैं। इतनी श्रद्धा होनी चाहिये। तब स्वच्छता होगी। हनुमान जी का यह मंदिर हमारा साधना स्थल तो है ही, हमारा शो पीस भी है। कोई आये तो वह प्रभावित हो। ऐसी छोटी-छोटी चीजें हमारे ऊपर असर करती थीं। छात्रों, अध्यापकों के नाम कोशिश करके याद करते थे। कभी हमें ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि ये हमारे अध्यक्ष हैं। लगता था हमारे परिवार के मुखिया हैं। इनसे हम अपना सारा दु:ख दर्द कह सकते हैं। जब वे किसी भी समस्या का निराकरण देते थे तो किसी को खीझ नहीं लगती थी। अगर अच्छा नहीं भी लगा तो सोचते थे- 'चलो बैरिस्टर साहब ने कहा है तो ठीक ही होगा'।

बैरिस्टर साहब चाहते थे, छात्रों में ईश्वर के प्रति विश्वास हो, देशभक्ति हो। उसके पश्चात् हमारा व्यक्तित्व भौतिक दृष्टि से विकसित होकर आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हो। विकास भौतिकता में हो किन्तु उसका उद्देश्य आध्यात्मिक हो। क्योंकि वे कहते थे कि हम हिन्दू धर्म के चिन्तन के व्यक्ति हैं। हिन्दू संस्कृति यह बताती है कि हम शरीर नहीं हैं। यह सोच वे विद्यार्थी को देना चाहते थे। उनका कहना था कि अगर कार्यक्रमों की रचना इस प्रकार की बनाई जायेगी जिससे संकुचितता और स्वार्थपरता विद्यार्थी में कम से कम आये तो समझिये उद्देश्य में सफल हुए। इसीलिए बच्चों का चयन करवाते थे, कौन बच्चे अच्छे हैं। फिर आकर वे स्वयं उनसे बात करते थे। फिर अपने जीवन का उदाहरण बड़े आनन्द से बताते थे। छोटी-छोटी बात पूछते थे। गुस्सा उन्हें कभी आता ही नहीं था। कभी निराशा होती थी तो यही कहते थे ' बड़ी चिंता की बात है बड़ी आवश्यकता है- देखिये यह विषय तो इन्हें आता ही नहीं' इत्यादि। दूसरों के सामने बड़ी प्रशंसा करते थे, लेकिन जब हम लोग बैठते थे तो फिर कहते थे - 'ये जीच और करनी है...'। जब वे बीमार हुए तो बैठक में नहीं आ पा रहे थे। वीरेन्द्र जी ने उनसे पूछा कि आपको क्या निर्देश देना है। इतनी घोर बीमारी के बाद भी उन्होंने कहा, 'बस एक ही चीज कठोर परिश्रम, कठोर परिश्रम'।

'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधाः कस्यस्विद्धनम्॥'

उनका कहा था कि उपनिषद् का यह श्लोक अपने जीवन में उतारना चाहिए। एक-एक बात के बारे में स्वयं चिंतन भी करते थे। गीता का उनको अध्ययन था और गीता को अपने जीवन में उन्होंने ढाला भी था। उनका कहना था, विद्यालय देश को, समाज को दिशा देने वाले भावी नागरिकों का संस्कार केन्द्र है। देश को दिशा देने के लिए कैसे लोग चाहिये। न तो ऐसे जो पूरी तरह से अपरिग्रही, सर्वत्यागी, संन्यासी हों। रिजल्ट भी बताना है। पोजीशन भी लानी है। अर्थात् समाज के मापदण्डों पर सफल होकर समाज की विकृत परम्पराओं से हटकर चलना। उनका कहना था कि पूर्ण मानवीय सफलता के लिए भौतिक सफलता भी जरूरी है लेकिन भौतिक सफलता का उपयोग साधन के रूप में अपने उदात्त उद्देश्यों की प्राप्ति में होना चाहिए।

'वह बात' एक बार बड़ी मजेदार बात हुई। हमारी प्रबन्ध समिति के सदस्य हैं- श्रीमान् इन्द्रजीत जी जैन (अब स्वर्गस्थ हैं)। उनसे जे.के. वालों ने सम्पर्क किया जे.के. का विद्यालय तब तक नहीं बना था। उन्होंने कहा, 'जैन साहब, हम दीनदयाल विद्यालय जैसा एक विद्यालय बनाना चाहते हैं'। 'कुछ हमारी मदद कीजिये'। जैन साहब बोले 'अरे आप भवन बनवा दोगे, ज्यादा तनख्वाहें देकर अध्यापक पढ़े-लिखे ले आओगे, लेकिन वह बात कहाँ से लाओगे?' तो वे बोले कि यह 'वह बात' क्या है? जैन साहब ने कहा, कि यह तो मैं भी नहीं जानता लेकिन बात कोई जरूर है। अब बात तो हँसी की हो गई लेकिन मैं गहराई से सोचता रहा कि बात कोई जरूर है। यह इन्हीं लोगों के तप की बात है। इनके चिन्तन की बात है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्तित्व का नाम, बूजी का त्याग, और इतने उच्चकोटि के दार्शनिक और समाजसेवी पूज्य गुरु जी के द्वारा शिलान्यास, हनुमान् जी की मूर्ति की प्रतिष्थापना, और बैरिस्टर साहब के सतत् चिन्तन का समर्पण। इन सारी बातों से जो परिणाम और निष्कर्ष निकल रहा है, वही 'वह बात' है जो लोगों की समझ में नहीं आती। इसका सूक्ष्मतर प्रभाव ही है जो विद्यार्थियों का चिन्तन बदलता है। यह रिजल्ट में समाहित नहीं होता। नौकरियों में समाहित नहीं होता। दीनदयाल विद्यालय इससे नहीं पहचाना जाता। दीनदयाल विद्यालय पहचाना जाता है विद्यार्थी के चिन्तन के प्रभाव से। उसके काम करने के तरीके के प्रभाव से। 'वह बात' जो दीनदयाल विद्यालय को दीनदयाल विद्यालय बनाती है।

(नीराजन : रजत जयंती अंक)

एक दिव्य ज्योति का अवसान

गया प्रसाद वर्मा

माननीय बैरिस्टर साहब स्मृति हम सब के मानस पटल में जो स्थान बना गयी है, वह अमिट है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पार्थिव शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी कोई कैसे अमर रहता है। वास्तव में मनुष्य कोई शरीर नहीं, वह तो भावनाओं, विचारों, गुणों और कर्त्तव्य का एक समुच्चय होता है, यह बात चरितार्थ होती है बैरिस्टर साहब के जीवन से। उनका जीवन त्याग व साधना का पर्याय था। वह दया की मूर्ति थे सादगी व शालीनता के प्रतिबिम्ब थे। उनका जीवन एक जीता-जागता खुला ग्रन्थ था। जो लोग उनके सम्पर्क में आये, इस ग्रन्थ के पृष्ठों को देखे बिना नहीं रहे। उनके जीवन ग्रन्थ से कुछ न कुछ सीखकर ही गये। जो उनके जितना निकट गया, उसने उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त किया। उनका हृदय सागर की भाँति विशाल व उदार था। वह एक कर्मचारी से लेकर बड़े अधिकारी तक, बच्चे से लेकर वृद्ध तक सभी के साथ समान रूप से आदर का व्यवहार करते थे। जब किसी आदर्श पर वह स्वयं आचरण कर लेते थे, तभी दूसरों से करने के लिए कहते थे। यही कारण है कि उनकी बात का बहुत प्रभाव पड़ता था।

सम्पूर्ण गीता उनके जीवन में रच-बस गयी थी। गीता के आदर्शों को वे विद्यालय के छात्रों के जीवन में भी चरितार्थ होते देखना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कुछ चुने हुए श्लोक याद करने के लिए छात्रों को प्रेरणा दी थी। विद्यालय में यत्र-तत्र लिखित गीता के श्लोक उनके ही दिए मंत्र हैं। विद्यालय वे बहुधा आया करते थे। विद्यालय उनके लिए एक बगीचे की तरह था और यहाँ के बच्चे उन्हें फूलों की भाँति प्रिय थे। एक कुशल माली की तरह वे पुष्प-रूप बच्चों की देख-रेख किया करते थे। बच्चों से बातचीत कर उनका मार्गदर्शन करते थे। छात्रों से वह अपना शरीर स्वस्थ रखने और अध्ययन व खेल में बराबर ध्यान देने पर बल देते थे। वह चाहते थे कि अपने व्यक्तित्व का विकास तथा ज्ञानार्जन करने के साथ-साथ छात्र समाज व राष्ट्र से भी जुड़ें। उनका मानना था कि केवल डॉक्टरों या इंजीनियरों के निर्माण से राष्ट्र का उत्थान नहीं होगा। अच्छे डॉक्टरों, इंजीनियरों के साथ ही राष्ट्रोत्थान हेतु आवश्यकता है अच्छे वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, प्रशासकों, शिक्षकों, पत्रकारों की। अतः छात्र अपनी रुचियों के अनुरूप इन क्षेत्रों में भी जायें, यह उनकी सलाह हुआ करती थी। अपनी भाषा, अपने साहित्य, अपनी संस्कृति पर उन्हें गर्व था और वह हर भारतीय में अंकुरित होता हुआ देखना चाहते थे।

भौतिक रूप से आज वे हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी अमर वाणी, उनके संस्मरण आगामी पीढ़ियों को राह दिखाने में सक्षम हैं, ऐसा हम सभी का विश्वास है। वह ऐसे जादुई व्यक्तित्व थे कि उनके सम्पर्क में आया हुआ व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। उनका ज्ञान-क्षेत्र अतिशय व्यापक था। वह दार्शनिक, मनीषी, शिक्षाविद् और देशसेवी थे। वह ऐसे महापुरुष थे, जिन्हें छात्रों ने पुस्तकों में पढ़कर नहीं, प्रत्यक्ष देखकर श्रवण और अनुभव किया। विद्यालय के एक पूर्व छात्र ने उनके बारे में कहा कि महापुरुष कैसे होते हैं, कैसे जीते हैं और कैसे संसार से विदा लेते हैं, यह उसने बैरिस्टर साहब के सान्निध्य में रहकर प्रत्यक्ष अनुभव किया। उस परम पुरुष के जाने से जो शून्य उत्पन्न हुआ है, हम सब उनके अनुयायी अपने कर्तृत्व व आचरण से उसका शतांश भी यदि कर सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आशीर्वचन

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह

श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के द्वारा नीराजन के संपादक आचार्यों को लिखे गये पत्र

प्रिय बन्धु डॉ. अवस्थी,

सप्रेम नमस्कार,

आपका पत्र मिला। 'नीराजन' का यह अंक 'नयी शिक्षा-नीति विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हो रहा है, यह जानकर अतीव आह्लाद की अनुभूति हुई। लगता है कि नयी शिक्षा-नीति भारतीय जीवन-मूल्यों की एक बार पुनः उपेक्षा कर रही है। आज की शिक्षा के स्वरूप में भारतीयता का अनुप्रवेशन एक नितान्त अनिवार्य आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में आयातित पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता हुआ प्रभुत्व अहितकर सिद्ध होगा। अब तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भावी पीढ़ियाँ गीता और तुलसी तो क्या, प्रेमचन्द को भी भूल जायेंगी। वस्तुतः यह चिन्त्य है।

नयी शिक्षा-नीति के निर्धारकों को इस ओर अपेक्षित ध्यान देना चाहिए कि हिन्दी भाषा को शिक्षा के माध्यम अच्छा ज्ञान कराया जाये, यह अच्छी बात है। पर अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करना किसी भी दृष्टि से युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता है। मैं समझता हूँ कि नीराजन का यह अंक नयी शिक्षा-नीति के संदर्भ में एक सही दिशा प्रदान करने में सहायक हो सकेगा। इसी आशा और शुभकामनाओं के साथ।

परम प्रिय डॉ. प्रेमनारायण जी,

सादर नमस्कार!

आपने विद्यालय की पत्रिका नीराजन के लिए संदेश माँगा है। हमारे यहाँ बालकों के लिए उपयुक्त साहित्य, जिससे वह अपने श्रेष्ठ पुरुषों का जीवन तथा उनके द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों को समझ सकें, की बहुत कमी है। आपका प्रयास इस दिशा में महत्त्वपूर्ण रहता ही है। यदि आप पौराणिक तथा ऐतिहासिक प्रसङ्गों को विशेष रूप से लेकर प्रेरणाप्रद कहानियाँ प्रस्तुत करें तो मेरी समझ में अपनी संस्कृति को समझने में सुगमता होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं सहित।

परम प्रिय दुबे जी

सप्रेम नमस्कार!

आपका पत्र दिनांक 11 अप्रैल को प्राप्त हुआ। विद्यालय की वार्षिक पत्रिका निकलने वाली है ऐसा आपने सूचित किया। जानकर प्रसन्नता हुई।

शिक्षा की दिशा पर कुछ वर्षों से सुनने को तो बहुत मिल रहा है किन्तु सफल प्रयोग बहुत कम होते दिखाई दे रहे हैं। मैकाले की शिक्षा पद्धति का स्थान नई शिक्षा नीति लेगी, अब दोहरी शिक्षा नीति नहीं चलेगी, ऐसा हम सुन रहे हैं। यह सब नारों का ही स्वरूप ले रहे हैं, ऐसा लगता है।

शिक्षा स्वाभिमान, आत्म विश्वास, नैतिकता, साहस, स्वानुशासन जैसे गुणों के साथ शारीरिक और बौद्धिक क्षमता का विकास कर व्यक्ति को समाजोन्मुख बनाये इसका अभाव दिखता है। मुझे विश्वास है कि आपकी पत्रिका शिक्षा की सही दिशा पर प्रकाश डालेगी। आज देश में नैतिकता और चारित्र्य का जो ह्रास दिखाई दे रहा है उसे उपयुक्त शिक्षा पद्धति ही दूर कर सकती है। ऐसी पद्धति कैसे विकसित हो, यह विचारणीय है।

समस्त शुभकामनाओं सहित।

प्रिय दुबे जी,

सादर नमस्कार।

आप विद्यालय की पत्रिका को इस बार बलिदानी रामभक्तों के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जानकर प्रसन्नता हुई।

राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। उन्होंने शौर्य और धैर्य, सत्य और शील, त्याग और तपस्या के जो आदर्श हमारे सम्मुख रहे हैं, उन्हीं से आज एक हजार वर्ष के आक्रमणों के बाद भी हिन्दू समाज जीवित है। हमारी संस्कृति में ही वह बात है, जिससे हमारी हस्ती नहीं मिटी।

आक्रमणकारियों ने हमारे मनोबल को तोड़ने के लिए हमारे श्रद्धा केन्द्रों को ध्वस्त किया। राम के नाम पर सारा हिन्दू समाज आज एकात्मकता का अनुभव कर रामराज्य की स्थापना हेतु जाग्रत हो गया है। इसी कड़ी में अनेकों कष्टों और बाधाओं को पार करते हुए रामभक्त अयोध्या पहुँचे। वह रामराज्य की शिलायें स्वयं ही बन गये। अपना बलिदान दे दिया किन्तु उन्होंने जो नींव डाल दी है, उस पर जाग्रत समाज भव्य मंदिर बना कर रहेगा। यहीं से रामराज्य की भी नींव पड़ेगी।

ऐसे बलिदानियों के लिए श्रद्धा व्यक्त करने के लिए शब्द ढूँढ़ पाना अत्यन्त कठिन है। उन्हें हृदय से प्रणाम करता हूँ

परम प्रिय श्री सुमन,

सप्रेम नमस्कार।

विद्यालय की पत्रिका 'नीराजन' शीघ्र प्रकाशित होने वाली है, जान कर प्रसन्नता हुई। आज देश की एकता और अखण्डता का प्रश्न गम्भीर रूप से हमारे सामने है। अंग्रेजों ने तरह-तरह के भ्रम उत्पन्न करने वाले तथ्य हमारे शिक्षित वर्ग के दिमाग में डालकर विघटन के बीज बोये थे। आर्य बाहर से आये और उन्होंने यहाँ के आदिवासियों को दक्षिण में और जंगलों में खदेड़ दिया, बतलाकर आर्य और द्रविड़ का विभाजन किया; गिरिवासियों, वनवासियों को समाज से अलग किया। अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक हिन्दू समाज से सुरक्षा की आवश्यकता है, बतलाकर, अल्पसंख्यकों को विशेष दर्जा देकर अलग किया। दुर्भाग्य यह है कि अंग्रेजियत में पला हुआ हमारा समाज इन भ्रामक धारणाओं को छोड़ नहीं सका है। वास्तविकता तो यह है कि भारत अत्यंत प्राचीन काल से एक राष्ट्र है। इसकी एक प्राकृतिक भौगोलिक इकाई है। हिमालय और समुद्र से घिरा हुआ अपनी विशेषता रखने वाला यह प्रदेश है जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक ही संस्कृति पनपी और रग-रग में समाई हुई है। सर्वात्मैक्य, सहिष्णुता, त्याग तपस्या, कर्म के आधार पर पुनर्जन्म-इस संस्कृति की यह मान्यता देश के किसी भी कोने में जाने पर जीवन का आधार दिखेगी। हमारा एक इतिहास, एक ही जीवन आदर्श तथा एक ही प्रेरणा देने वाले महापुरुष हैं। यह एकात्मता अनुभव न करके आज का विदेशी मानसिकता में पला शिक्षित व्यक्ति भी ऊपरी बातों को महत्त्व देकर, हमारा देश बहुराष्ट्रीय, बहुभाषा-भाषी, मिश्रित संस्कृति वाला, विभिन्न क्षेत्रों का एक गणराज्य है, ऐसा मानने लगता है। ऐसा समझने पर एकात्मता व अखण्डता सम्भव नहीं होती।

भ्रामक धारणाओं का निराकरण कर देश की मौलिक एकात्मता को उजागर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य डॉ. मुरली मनोहर जोशी की एकता यात्रा ने किया है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक इस देश की आत्मा एक है। यह हमारी मातृभूमि हिमालय से समुद्र पर्यन्त भारत माता के रूप में हमारी पूज्या है। यहाँ के सारे पर्वत-नदियाँ हमारी श्रद्धा के पात्र हैं, यही संदेश इस यात्रा ने देश के कोने-कोने में पहुँचाया है तथा सुप्त राष्ट्रीयता को जाग्रत किया है।

हमारा भी यही कर्तव्य है कि हम भारत की मूलभूत एकात्मता का अनुभव करें। सारा भारत एक है। हम कोई भी भाषा बोलें, हमारा रहन सहन कैसा भी हो हमारी आत्मा, जीवन मूल्य, आदर्श महापुरुष एक हैं। हम एक प्राचीन राष्ट्र हैं। यह आत्म विश्वास, आत्मानुभूति प्रत्यक्ष रूप से व्यवहार में आने पर हम एक शक्तिशाली, संगठित, अखण्ड, अनुशासित राष्ट्र के रूप में संसार में अपना सम्मानपूर्वक स्थान बना सकते हैं।

आपकी पत्रिका विद्यालय के छात्रों को जीवन की सही दिशा देने का प्रयास करती रहती है, यह आनन्द का विषय है। समस्त शुभकामनाओं सहित।

पढ़ाई में सफलता कैसे प्राप्त करें

'उद्धरेत् आत्मात्मानम्, न अवसादेत् आत्मनम्'
'अपना मन कभी दुखी मत करो और सफलता के पीछे पड़ जाओ।'

किसी भी सफलता के लिए पाँच बिन्दु अनिवार्य हैं-

कर्ता, करण, अधिष्ठान, चेष्टा और प्रारब्ध।

किसी चीज को Observe करके ही हम उसके बारे में गहन ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः We must increase our grasping power.

इसके लिए जरूरी है कि First listen then grasp, then repeat and put it in your memory.

किसी वाक्य अथवा किसी Question की गहराई तक जाना चाहिए। हम अपनी बौद्धिक शक्ति का जितना प्रयोग उस प्रश्न के विषय में करेंगे, उतनी ही विषय में हमारी समझ विकसित होगी।

"Speak so that I may know you' जब कालिदास शास्त्र पारंगत होकर घर लौटे तो विद्योत्तमा ने पूछा 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'? उत्तर में कालिदास ने इन तीन शब्दों से प्रारम्भ कर क्रमशः तीन महान कृतियाँ मेघदूत, रघुवंश और कुमार सम्भव के रूप में साहित्य जगत् को प्रदान कीं। यानी इतनी प्रतिभा कि ज्ञान की निर्झरणी फूट पड़ी।

छात्र को अपने विकास के लिए अपनी नियमित दिनचर्या बनानी चाहिए, जिसमें मुख्यतः अध्ययन, व्यायाम, मनोरंजन, विश्राम व संतुलित भोजन पर बल दिया जाये। भली-भाँति अध्ययन के लिए 'युक्त आहार-विहार' तथा '7 घण्टे अवश्य सोना' इनका विशेष महत्त्व है। सदैव स्वस्थ व प्रसन्न रहने का प्रयास करना अपने व्यक्तित्व के विकास में अत्यन्त लाभकारी है। समय का सदुपयोग कैसे हो?

Time of work is not important. More important is how much work we have done in a given time.

किसी भी कार्य के तीन पक्ष हैं-

Quantity, Quality, Direction अर्थात् कार्य कितना, कैसा (स्तर) एवं सही दिशा में हो रहा है अथवा नहीं। अतः निश्चित समय में एकाग्रचित होकर जमकर व जुटकर परिश्रम करना ही सार्थक होगा। यह नहीं सोचना चाहिए कि 'घण्टी बजने में अब केवल पन्द्रह मिनट बचे हैं। इतने समय में भला मैं क्या कर सकता हूँ'? वरन् हमको अपने उस समय का छोटे-छोटे कामों में सदुपयोग करना चाहिए।

पढ़ाई का तरीका क्या हो - In first reading main topics, in second some minor things, and

in third very minor, then whole. If we make notes, in only a short time we can get total knowledge. We must have a systematic reading and a fine writing.

स्वच्छ लेख का एक अलग प्रभाव होता है। एक ही विषय को सुन्दर व स्पष्ट एवं गन्दा व अस्पष्ट लिखने पर अंकों में जमीन-आसमान का अन्तर हो जाता है। जब हम अपनी कापी आचार्य जी को दें, तो उनसे कॉपी (उत्तर) की अच्छाई पर नहीं, कमी पर Remark देने को कहें, वह भी Pointwise ताकि हमें अपने लेखन के कमजोर पक्ष का पता लग सके। तत्पश्चात् उसके Notes बनाकर उसे दोहराने के लिए रखें। चलताऊ काम से संतुष्ट न होकर अच्छे से अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।

ऐसी Will Power या इच्छा शक्ति अपने भीतर उत्पन्न करना चाहिए कि जो विचार किया है उसे कर के ही छोड़ेगे। ध्यान रहे कि संकल्प कभी टूटने न पाये। हतोत्साहित तो होना ही नहीं चाहिये, व संघर्ष से कभी हार नहीं माननी चाहिए। कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने लिखा है-

'जिस दिन सपनों के मोल भाव पर उतरूँगा,

जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जायेगी,

जिन दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखायेगी,

उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जायेगी।'

बोर्ड परीक्षा व प्रत्येक गृह परीक्षा में हमारी पकड़ एक-एक अंक पर होनी चाहिए। कोशिश यह करनी चाहिए कि एक अंक भी न कटे।

वास्तव में Genius व्यक्ति के अन्दर जितनी बुद्धिमता होती है, उतना ही वह परिश्रम भी करता है। अतः योग्यता बढ़ाना, सही ज्ञान पाना, तत्पश्चात् बुद्धि कुशाग्र करना। इस प्रकार यदि हम शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़ें तो विकास अधिक होगा।

नीराजन, 1987-88

जो रहीम गति दीप की, सुत सपूत की सोय।

बड़ो उजेरो तेहि रहे, गये अँधेरो होय॥

अपना जीवन भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाएँ

(1991 में 21 वें वार्षिकोत्सव पर अटल जी के साथ पूर्व छात्रों के प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का बैरिस्टर साहब द्वारा समापन)

अभी एक प्रश्न आया है कि क्या दीनदयाल विद्यालय जैसी और संस्थायें खोली जायें? यह तो आप पर निर्भर करता है। ऐसा होता है न कि एक दिया जला दिया और उस दिये से और दीपक जलाये जाते हैं। जलते रहते हैं। जितनी हम लोगों की सामर्थ्य है उतना तो हम करना ही चाहते हैं। कुछ किया है, कुछ करना चाहते हैं। पता नहीं कितनी सफलता मिलेगी? समाज की बड़ी भारी शक्ति है। आज समाज यह निश्चय कर ले, हमारे पूर्व छात्र ही यह निश्चय कर लें कि ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है, ऐसी संस्थायें जिले-जिले में हो, कानपुर नगर में भी ऐसी और संस्थायें हों तो मैं समझता हूँ कि ऐसा हो जाना कोई कठिन बात नहीं है। देखा जाये तो हम लोगों ने यह विद्यालय इसी दृष्टि से प्रारम्भ किया था कि आज एक होड़ मच गयी है अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की जिनमें भारतीय संस्कृति का नाम कोई महत्त्व नहीं रखता। नैतिकता का भी वहाँ कोई स्थान नहीं है। तो इस विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य था कि किस प्रकार से अपने नवयुवकों द्वारा अपनी संस्कृति का कुछ महत्त्व समझा जा सके, उसके अनुरूप अपना जीवन बनाया जा सके, किस प्रकार समाज और राष्ट्र के प्रति व्यक्ति अपनी सारी शक्ति को लगाने के लिए इच्छुक हो सके।

अपने यहाँ कहा गया है कि यज्ञ, दान और तप – ये तीन काम करणीय हैं। यज्ञ का मतलब यही रखा गया है कि जो कुछ काम करते हो, लोक कल्याणार्थ करो। समाज के हित में क्या होगा, यह समझ कर ही काम करो।

अभी एक और प्रश्न आया कि हम काम करते हैं, हम चाहते हैं कि हम संघ कार्य में अधिक लग सकें, राष्ट्र कार्य में अधिक लग सकें, लेकिन हमारी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी रहती हैं। तो पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ भी आदमी बहुत कुछ कर सकता है। अपने समाज में तमाम लोग ऐसे हैं जो अपना कार्य भी करते हैं, राष्ट्र का कार्य भी करते हैं। सभी ऐसे नहीं हैं कि जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन दे रखा हो। जिन्होंने अपना कार्य आवश्यक समझा है, वे अपना कार्य भी करते हैं और साथ-साथ जितना हो सकता है, उतना समाज का कार्य भी करने का प्रयास करते हैं।

यदि मन में यह इच्छा है कि जो कुछ भी हम करें वो समाज कल्याणार्थ होना चाहिए, तो मैं यह समझता हूँ कि रास्ता अवश्य निकलेगा। भगवान् ने जब कहा कि यज्ञ, दान और तप ये काम करने के हैं- 'यज्ञो दानं तपश्चैव भावनानां मनीषिणाम्...' तो तप का आशय था मन, वाणी, शरीर से संयमः दान का

अर्थ था त्याग; और यज्ञ; की भावना थी कि हम अपनी सारी शक्ति को समाज के प्रति समर्पित करें। ये जो अपनी संस्कृति के मूल तत्त्व हैं, उनके अनुरूप ही हमें अपना जीवन बनाना चाहिए। यही हमारी संस्कृति का संदेश है।

आज देश में बड़ा संघर्ष है इस बात पर कि भारतीय संस्कृति क्या होती है? यहाँ भारतीय संस्कृति का क्या सवाल, यह तो मिश्रित संस्कृति है। यह मिश्रित संस्कृति क्या होती है।

हमारी संस्कृति सहिष्णुता की है। दूसरी संस्कृतियाँ असहिष्णुता की हैं। इस्लाम ने, जहाँ-जहाँ गया वहाँ, तलवार के बल पर धर्म-परिवर्तन किया। हमने धर्म-परिवर्तन किया ही नहीं, विचार-परिवर्तन किया। तो इन दो प्रवृत्तियों का कैसे आप मेल बैठायेंगे? मिश्रित संस्कृति कैसे बनायेंगे? इसी प्रकार की और अनेक बातें हैं जिनका मेल बैठ नहीं सकता। हिंसा, अहिंसा को ही लीजिए। हमारी संस्कृति अहिंसा प्रधान है और आज जो संस्कृतियाँ फैल रही हैं, वे हिंसा प्रधान हैं। दोनों का मेल कैसे बैठाइयेगा।

अत: भारत में भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीवन चलेगा, तभी हमारा जीवन भी सुख एवं शान्ति का हो सकता है और तभी हम संसार को सही दिशा दिखा सकते हैं।

सत्य की जीत

एक कसाई था जिसकी एक बूढ़ी गाय उसके घर से जंगल में चली गयी थी। उसको ढूँढ़ने के लिए कसाई भी जंगल की ओर निकल पड़ा। बहुत दूर निकल जाने के बाद भी गाय नहीं मिली तब जंगल में ही झोपड़ी डाले एक महात्मा दिखाई पड़े। महात्मा जी से उस कमाई ने पूछा, कि क्या कोई बूढ़ी गाय इधर से जाती हुई दिखाई पड़ी? महात्मा जी सत्यवादी व्यक्ति थे, परन्तु उन्होंने सोचा अगर हम झूठ बोलते हैं तो हमारी सत्यनिष्ठा चली जायेगी। यही विचार करके महात्मा जी ने कहा कि भाई जिसने देखा है वह बोलता नहीं, जो बोलता है उसने देखा नहीं। क्योंकि आँखें देखती हैं बोलती नहीं है। मुँह बोलता है, देखता नहीं। इतना सुनकर कसाई चला गया। महात्मा जी को झूठ भी नहीं बोलना पड़ा था गाय की जान भी बच गयी।

रिपोर्ताज

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

श्रुति गुप्ता
अष्टम 'क'

"सादा जीवन उच्च विचार, नहीं स्वयं का कभी प्रचार।

दीनबन्धु थे दीनदयाल, हृदय सिन्धु सा बड़ा विशाल॥"

युग दृष्टा पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर सन् 1916 को हुआ था। वे बचपन से ही बहुत मेधावी थे। माँ-पिता के प्रेम से वंचित होकर भी उच्च आदर्शों पर चले। कानपुर विश्वविद्यालय के अंतर्गत सनातन धर्म कालेज से स्नाकोत्तर हुए और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संपर्क में आए। अपनी मेधा से आप शीघ्र ही संघ के कुशल कार्यकर्ता, व्याख्याता और प्रचारक बने। आप बनावट से परे थे तथा प्राकृतिक विषमताओं को सहते हुए, सही नेता के रूप में सहज छवि बनाने में सफल हुए। आपने कुछ पुस्तकें भी लिखीं तथा एकात्म मानववाद का नया दर्शन प्रदान किया। आप एक कुशल वक्ता थे। आपने कृषक और आर्थिक प्रगति में साम्यावस्था की जरूरत बताई। उन्होंने एक ऐसे धर्म निरपेक्ष राज्य की कल्पना की जो पूजा-रुढ़ियों से रहित हो और जगत के शाश्वत नियमों पर आधारित हो। देश में हुए भाषा विवाद को उन्होंने सहजता से लिया। सत्ता लोलुप नेताओं की षडयन्त्रकारी योजना के परिणाम स्वरूप यह 'अज्ञातशत्रु' किसी की शत्रुता का शिकार हो गया। दीनदयाल जी वास्तव में उच्च आदर्शों के एक मानदंड थे। वे एक परमयोगी थे, जो सहज ही थर्ड क्लास के डिब्बे में चलते थे। छोटे-छोटे काम करने में भी उन्हें कुंठा नहीं होती थी। ऐसे ही "चरैवेति! चरैवेति।" के साधक युगदृष्टा पं. दीनदयाल जी का जन्मोत्सव हमारा विद्यालय परिवार प्रति वर्ष मनाता है। विद्यालय जिनके आदर्शों पर चल रहा है, उनके जन्मोत्सव को हम लोग वार्षिकोत्सव के रूप में मनाते हैं।' सितम्बर 2011 को विद्यालय प्रांगण में जन्मोत्सव का उल्लास देखने को मिला। प्रस्तुत है इसी उत्सव की रिपोर्ट-

प्रथम दिवस : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में वार्षिकोत्सव का शुभारंभ विज्ञान प्रदर्शनी से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. अशोक कुमार सिंह जी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती देवी व पं. दीनदयाल जी के चित्रों पर पुष्पार्पण व प्रार्थना के साथ हुआ। मुख्य अतिथि का स्वागत व परिचय प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी ने प्रस्तुत किया तथा धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द्र अग्रवाल जी ने किया। विज्ञान प्रदर्शनी का संयोजन श्री हेमन्त शुक्ल, श्री सुनील दीक्षित, श्री दुर्गा प्रसाद सिंह, श्री ओझा जी, श्री आलोक द्विवेदी, श्रीमती दीप्ति तथा कम्प्यूटर प्रदर्शनी का संयोजन श्रीमती अर्चना विद्यार्थी, तथा श्री कौशलेन्द्र जी ने किया।

छात्रों ने अपने प्रदर्श बनाकर रखे। अष्टम कक्षा के गौरव बाजपेयी तथा शौर्य प्रताप ने हाइड्रोलिक मशीन बनाई जो द्रव दाब के सिद्धांत पर कार्य करती है। 11 ख कक्षा के विनय केसरवानी, हर्षित तथा अयन ने कार्बन के अपरूप (एलोट्राफिक) की रचना, क्रेजीबॉल व साइकिल की तीलियों से बनाई। 10 'क' के अंकित शुक्ल ने हृदय की आन्तरिक संरचना व 8 'ख'के सूरज प्रताप ने हीटर बनाया। कक्षा 10 ने नीतेश राजपूत, नीतीश व पार्थेश्वर ने आयोडीन का इलेक्ट्रॉनिक विन्यास बनाया। कक्षा 9 'क' के अभिषेक राज , अवनी कटियार व विकल्प उपमराव ने ए टू जेड कंपनी के स्वच्छता अभियान को प्रदर्शित करने वाला मॉडल बनाया। कक्षा 10 के अनुभव मिश्र, पंकज वर्मा ने जल द्वारा तथा कक्षा 10 के ही गौरव शुक्ल, सौरभ सिंह ने पवन द्वारा विद्युत उत्पादन का मॉडल बनाया गया। रोहित ने ट्रैफिक लाइट, अभिषेक ने इनवर्टर तथा कक्षा 10 के यश द्विवेदी ने ओसने वेव एनर्जी कन्जम्प्शन का मॉडल बनाया। कार्यक्रम का संचालन बाल भारतीय के अध्यक्ष निहाल अहमद ने किया। कम्प्यूटर प्रदर्शनी के प्रजेण्टेशन अन्ना हजारे, ग्लोबल वार्मिंग तथा रोबोटिक्स पर आधारित थे। इस प्रकार पहले दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

द्वितीय दिवस : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में वार्षिकोत्सव के कार्यक्रमों की शृंखला में अंतर विद्यालयीय राष्ट्रीय गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में नगर के अनेक हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने सुन्दर स्वरों में ऐसे राष्ट्रीय गीत गाए कि पूरा वातावरण देशभक्ति के भावों से गुंजायमान हो उठा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिशंकर त्रिवेदी जी निवर्तमान प्रवक्ता डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, कानपुर थे। निर्णायक मंडल में श्रीमती माधुरी केन्दुलकर (संगीत शिक्षिका, ज्वाला देवी इण्टर कालेज)श्रीमती वीरबाला श्रीवास्तव (प्रवक्ता, दोसर वैश्य इण्टर कालेज) तथा श्री लव कुमार सक्सेना, शीलिंग हाउस पब्लिक स्कूल के संगीत विभाग के प्रमुख थे। श्री लव कुमार सक्सेना जी उत्तर प्रदेश नाट्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं।

डी.पी.एस. आजाद नगर के छात्र चि. राहुल श्रीवास्तव ने 'मंदिर मस्जिद, गुरुद्वारे की दीवार ये बोली मत बन शैतान अरे मत खेल खून की होली' गीत गाकर साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया। दीनदयाल विद्यालय के छात्र चि. शिखर पाण्डेय (सप्तम् 'ग')ने जिसकी माटी मेरे मस्तक का मंगलमय चन्दन है...' गीत गाकर जन्मभूमि की वन्दना की। सरस्वती ज्ञान मंदिर आजाद नगर के छात्र अमन ने 'भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं...'गीत का गान करके देश के भावी कर्णधारों की आशाओं का सन्देश दिया। चंद्रावती इण्टर कालेज के छात्र अभिषेक श्रीवास्तव ने 'उठो जवानों देश के... ' गीत गाकर सभी उपस्थित महानुभावों को देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत करने का प्रयास किया।

छात्रा वर्ग में सर्वप्रथम सरस्वती ज्ञान मन्दिर आजाद नगर की छात्र सृष्टि मेहरोत्रा (अष्टम) ने स्वर्ग से बढ़कर अपना यही वतन' गीत गा कर जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी की भावना को जागृत किया। तत्पश्चात् चन्द्रावती सरस्वती विद्या निकेतन की छात्रा नेहा सेंगर (दशम) ने 'लक्ष्य न ओझल होने पाए' को गा कर सभी छात्रों को जीवन में अपना अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त करने का पथ प्रशस्त करने का संदेश दिया। शिवाजी इण्टर कॉलेज की छात्रा स्वाति (दशम) ने, 'झूम-झूम लहराए तिरंगा' गीत को गा कर कार्यक्रम में उपस्थित महानुभावों को आह्लादित किया। तत्पश्चात् नरेन्द्र सरस्वती विद्या निकेतन की छात्रा सौरभ अग्नि (षष्ठ) ने 'नमन करूँ मन नमन करूँ' पुण्य तीर्थ भारत को' के गाकर भारत भूमि की महिमा का गान किया। इसके बाद डी.पी.एस. की छात्रा श्रेया अवस्थी (षष्ठ) ने 'कौम के खादिम जागीर वन्देमातरम्' का गान कर राष्ट्र प्रेम की भावना को जाग्रत किया। कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति के रूप सरदार पटेल इण्टर कालेज की छात्रा शिवांशी मिश्रा (नवम) में 'मातृभूमि की चुनौतियाँ सुनो ऐ नौ जवान' गीत का गान कर युवा वर्ग को मातृभूमि के विषय में चिन्तन करने के लिए प्रेरित करने का सफल प्रयास किया।

अन्त में राष्ट्रीय गीत-गायन प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया। छात्रा वर्ग में दीनदयाल विद्यालय की छात्रा अनुकृति शुक्ला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर दिल्ली पब्लिक स्कूल आजाद नगर की छात्रा श्रेया अवस्थी रही और तृतीय स्थान बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन की छात्रा आयुषी पाल ने प्राप्त किया।

छात्र वर्ग में दीनदयाल विद्यालय के छात्र शिखर पाण्डेय ने प्रथम, ओंकारेश्वर सरस्वती शिक्षा निकेतन इण्टर कालेज के छात्र सुतीर्थ शुक्ल ने द्वितीय तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल आजाद नगर के छात्र राहुल श्रीवास्तव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम का सञ्चालन आयुष त्रिपाठी (मंत्री-किशोर भारती) ने किया। श्री हरिशंकर त्रिवेदी जी ने पुरस्कार वितरण किया। प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तृतीय दिवस : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में वार्षिकोत्सव की शृंखला में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का विषय था "जन लोकपाल बिल से भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है"। विभिन्न विद्यालयों से आए हुए छात्र एवं छात्राओं ने इस विषय के पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. कमल किशोर गुप्त जी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता का आरम्भ मुख्य अतिथि महोदय ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पार्पण करके किया।

छात्र प्रस्तुतियों का आरम्भ श्री नन्द लाल खन्ना इण्टर कॉलेज की छात्रा रूपल त्रिपाठी ने विषय के

पक्ष में अपने विचारों को प्रस्तुत कर किया। श्रेया यादव ने विपक्ष में कहा कि भ्रष्टाचार के मुद्दे को विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए प्रयोग करती हैं। ज्ञान भारती बालिका इण्टर कॉलेज की छात्रा हर्षिता ओमर ने जहाँ अन्ना हजारे को देश का दूसरा गांधी बताया वहीं इसी विद्यालय की छात्रा अंकिता यादव ने भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन की आलोचना की और इसे लोकतंत्र के लिए खतरा करार दिया। बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन की छात्रा सुजला अवस्थी ने समाज के प्रत्येक वर्ग को जागरूक होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। सरस्वती ज्ञान मंदिर के छात्र वरुण त्रिपाठी ने देश के प्रधानमंत्री डा.मनमोहन सिंह को रिमोट कन्ट्रोल से चलने वाला खिलौना बताते हुए उन्हें देश की सबसे कमजोर कड़ी करार दिया। दिल्ली पब्लिक स्कूल आजाद नगर के छात्र देवांग सिंह चौहान ने भ्रष्टाचार को भारत के विकास की राह में रोड़ा बताते हुए सिविल सोसाइटी के जन लोकपाल बिल का समर्थन किया। इसी विद्यालय के छात्र अभिषेक सिंह चौहान ने कहा कि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए जनलोकपाल बिल के लिए बनाई गई समिति में नियुक्त प्रतिनिधि क्या स्वयं भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं हो सकते हैं? दीनदयाल विद्यालय के नवम कक्षा के छात्र आयुष त्रिपाठी ने विषय के पक्ष में कहा कि आप कड़ा कानून लाकर तो देखिए कि कैसे भ्रष्टाचार अपने देश को मुक्त करता है। विषय के विपक्ष में दीनदयाल विद्यालय छात्र शुभम श्रीवास्तव ने कहा कि कानून तो पहले से ही बहुत है तो क्या समाज में अपराध नहीं होते? सिर्फ कानून बनाकर भ्रष्टाचार को नहीं रोका जा सकता। इस बिल की सबसे बड़ी खामी "असंवैधानिकता" है। जन लोकपाल बिल से भ्रष्टाचार रूपी रावण के सिर कटेंगे न कि नाभि।" साथ ही कहा कि ताले लगाकर चोरियाँ नहीं रोकी जा सकती, उसी प्रकार कानून बनाकर भ्रष्टाचार नहीं रोका जा सकता। जबकि दूसरी ओर चि. आयुष त्रिपाठी (नवम, दीनदयाल विद्यालय) ने पक्ष में कहा कि ताले इसलिए लगाए जाते हैं ताकि नियत खराब न हो, जब कानून ही कड़ा न होगा तब तो खूब भ्रष्टाचार होगा।

मुख्य अतिथि व निर्णायकों का स्वागत प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी ने किया। परिचय डॉ. मनोज शुक्ल जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री गणेश जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन किशोर भारती के सहमंत्री एकाग्र पाण्डेय ने तथा किशोर भारती के अध्यक्ष शान्तनु राज ने अध्यक्षीय भाषण दिया। निर्णायकों में श्री सुधीर चतुर्वेदी, डॉ. आर.के. पाण्डेय व श्री रामतीर्थ मिश्र थे।

प्रतियोगिता में छात्र वर्ग में व्यक्तिगत रूप से प्रथम स्थान डी.पी.एस. आजाद नगर के छात्र अभिषेक सिंह ने प्राप्त किया। विद्यालय में प्रथम स्थान डी.पी.एस. आजाद नगर ने प्राप्त किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय द्वितीय स्थान पर रहा।

छात्रा वर्ग में व्यक्तिगत रूप से प्रथम स्थान बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन की छात्रा शिवांगी

त्रिपाठी ने प्राप्त किया। विद्यालयों में बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन ही प्रथम स्थान पर रहा। इस प्रकार पुरस्कार वितरण के साथ ही तीसरे दिन का कार्यक्रम समाप्त हो गया।

चतुर्थ दिवस : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में वार्षिकोत्सव की शृंखला में भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्र महामंत्री, प्रख्यात विचारक व समाज सेवी श्री गोविन्दाचार्य जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ पं. दीनदयाल के विचित्र पर पुष्पार्पण तथा सरस्वती वन्दना के साथ हुआ।

तरुण भारती के अध्यक्ष भैया प्रियम सचान ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय उसी रास्ते से गए जिस रास्ते से स्वामी श्रद्धानन्द तथा गाँधी गए। प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी ने मुख्य अतिथि श्री गोविन्दाचार्य जी तथा मंचस्थ महानुभावों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

गोविन्दाचार्य जी ने हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया। एन.सी.सी. के श्रेष्ठ कैडेट्स तथा घोष के छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। भैया शुभम श्रीवास्तव को हिन्दी में उत्कृष्ट लेखन के लिए पुरस्कृत किया गया। प्रधानाचार्य जी ने विद्यालय की वार्षिक आख्या प्रस्तुत की। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल ने माननीय गोविन्दाचार्य जी का परिचय प्रस्तुत किया। द्वादश कक्षा के छात्र चि. नीरज कुशवाहा ने गीत प्रस्तुत किया। गोविन्दाचार्य जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पं. दीनदयाल जी राजनीति में रहने के बावजूद भी कोई बैंक बैलेंस या प्रापर्टी बनाकर नहीं गए। हमारे भारत में कौन कितना जीवित रहा इसका महत्व बहुत कम है कैसे जिया, किस बात के लिए जिया इसका महत्व ज्यादा है। जो अपने समाज के लिए जीवन धारण करे, वही श्रेष्ठ है। दीन बन्धु दीनदयाल जी का जीवन परहित के लिए था वह महात्मा थे क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं था इसी सन्दर्भ में गोविन्दाचार्य जी ने बताया कि वह विपन्न वर्ग के लिए कितने संवेदनशील थे? दीनदयाल जी जनसंघ में रहते हुए भी पूरे देश के बारे में सोचते थे। उन्होंने राजस्थान में जनसंघ के नौ विधायकों में से सात को पार्टी से निकाल दिया जो कि जमीदारी प्रथा के समर्थक थे। दो जो शेष बचे थे उन्हीं में से एक भैरो सिंह शेखावत थे जिन्होंने बाद में जनसंघ का कार्य खूब बढ़ा लिया था। विद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पं. राम बालक, श्री हरिकृष्ण सेठ, श्री ओम प्रकाश भार्गव मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन शुभम श्रीवास्तव ने किया।

पञ्चम दिवस : सुख का सपन दिखाकर तूने कंटक राह दिखाई पं. दीनदयाल सनातन धर्म विद्यालय में होने वाले वार्षिकोत्सव की शृंखला में रंगमंचीय कार्यक्रम भी हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट के श्री कृष्ण बिहारी पाण्डेय उपस्थित

थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ पं. दीनदयाल के चित्र पर माल्यार्पण एवं सरस्वती वन्दना के साथ हुआ। प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करके परिचय कराया। तरुण भारती के मंत्री भैया शुभम श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इसी अवसर पर श्री राधेश्याम दीक्षित द्वारा रचित नाटक 'कालचक्र' का मञ्चन किया गया जिसमें कैकेयी द्वारा वरदान माँगने से लेकर श्री राम वन गमन की जो कथा वस्तु है, उसका मञ्चन किया गया। सप्तम कक्षा की छात्रा अन्नू के द्वारा किया गया मंथरा का अभिनय सराहनीय रहा मन्थरा ने कहा कि "राम यदि राजा हो गए तो मेरे भरत का क्या होगा? दशम के छात्र शान्तनु राज ने राजा दशरथ का जीवन्त अभिनय किया और दशरथ मरण का दृश्य देखकर दर्शकों की आँखें नम हो गयीं। अदिति तिवारी कौशल्या, अनुकृति शुक्ला कैकेयी तथा अपूर्वा मिश्रा ने सुमित्रा का अभिनय किया। लक्ष्मण के रूप में भैया आदित्य तथा सुमन्त के रूप में सिद्धार्थ पोरवाल दृष्टिगत हुए। आंग्ल भाषा की व्याख्याता श्रीमती रेखा निगम ने नाटक का निर्देशन किया। विद्यालय के प्रथम कक्षा एवं पञ्चम कक्षा के छात्रों द्वारा 'बाल गणेश' नृत्य-गीत प्रस्तुत किया गया। प्रथम कक्षा के अभय गणेश, पार्वती आद्रिका त्रिपाठी, ऋद्धि सिद्धि के रूप में वाणी बाजपेयी एवं मानसी शुक्ला दृष्टिगत हुई। श्रीमती तृप्ति, पल्लवी जी तथा स्मिता जी ने निर्देशन किया। संगीताचार्य श्री अंकुर दुबे ने सभी कार्यक्रमों में पार्श्वगायन किया। द्वितीय कक्षा के छात्रों द्वारा सरगम गीत नृत्य प्रस्तुत किया गया। अष्टम कक्षा के छात्रों द्वारा मछुवारा नृत्य "माँझी रे माँझी.. हैया रे हैया" प्रस्तुत किया गया। इसी शृंखला में विद्यालय की छात्राओं द्वारा राधा कृष्ण नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। रंगमंचीय कार्यक्रमों से पूर्व कुशल अभिनय के लिए चि. ब्रह्मांश भारद्वाज को 'गुरुवर शरण अवस्थी' पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के.बी. पाण्डेय ने कहा कि नाना जी पं. दीनदयाल जी के बताए रास्ते पर चले, वे कहते थे कि "मैं अपने लिए नहीं बल्कि अपनों के लिए जीता हूँ।" उन्होंने ग्रामोदय विश्वविद्यालय का कुल गीत "अशक्त हैं जो बेसहारे, जिन्हें न कोई कभी निहारे" सुनाया। विद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

षष्ठ दिवस : विद्यालय में वार्षिकोत्सव का अन्तिम दिवस योग व्यायाम प्रदर्शन के साथ मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर-कार्यवाह, प्रखर चिन्तक श्री सुरेश जोशी जी, उपाख्य भैया जी जोशी मुख्य अतिथि श्री सुरेश जी ने हनुमान जी तथा पं. दीनदयाल जी के चित्र पर पुष्पार्पण किया। तत्पश्चात वे माधव-स्मृति प्रांगण की ओर गए। विद्यालय प्रार्थना के पश्चात् प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी ने मंचस्थ महानुभावों का स्वागत किया। प्रास्ताविक भाषण तरुण भारती के अध्यक्ष ने दिया। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया।

एन.सी.सी. व घोष के छात्रों ने स्वागत् प्रदक्षिणा की। छात्रों ने सामूहिक व्यायाम योग उसके बाद संगीत बद्ध तिष्ठ योग से उपस्थित जनसमूह को आकर्षित किया। षष्ठ एवं सप्तम कक्षा के छात्रों ने पिरामिड बनाकर शारीरिक संतुलन का सुन्दर प्रदर्शन किया। प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री ओमप्रकाश भार्गव जी ने आई.जे.एस. ट्रस्ट की ओर से विद्यालय के निर्धन छात्रों की शिक्षा के लिए पचास हजार का चेक विद्यालय को प्रदान किया। द्वादश कक्षा के छात्र नीरज कुशवाहा ने "आँधी चाहे तूफान मिलें चाहे जितना व्यवधान मिले बढ़ना ही अपना काम है" गीत गाकर अपने मनोभाव प्रकट किए।

मुख्य अतिथि श्री सुरेश जी जोशी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि - राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं होती है, यह दीनदयाल जी के जीवन दिखाई देता है। व्यक्ति सम्पन्न होता है तो सम्पन्नता का अहंकार होता है, बुद्धि होती है तो उसका अहंकार होता है परन्तु विद्यालय के संस्थापक बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह के व्यक्तित्व में सब कुछ था परन्तु अहंकार का लेश मात्र भी दृष्टिगत नहीं होता था। यह बैरिस्टर साहब का जन्म शताब्दी वर्ष हैं विद्यालय त्रिकोणात्मक विकास का केन्द्र है। उच्च शिक्षा से ही व्यक्तित्व की पूर्णता नहीं हो जाती है। तमाम बड़े अधिकारी देश की सूचनाएँ बेंचने वाले गद्‌दार भी होते हैं। शिक्षा प्राप्त करने और ज्ञान प्राप्त करने में अन्तर होता है। क्या तुलसी, कबीर किसी विश्वविद्यालय से पढ़े हुए थे? शिक्षा के साथ ज्ञान और आचरण की शुद्धता चाहिए। आजकल लोग सम्मान उसका करते हैं जो साधन सम्पन्न है यह ठीक नहीं है। साधनों से यदि सुखी माना जाए तो अंग्रेजों का राज उत्तम माना जाएगा। माता-पिता को बच्चों को अच्छे संस्कार देने चाहिए। झूठ बोलना नहीं सिखाना चाहिए बच्चे का आचरण शुद्ध हो इसके लिये माता-पिता को जागरूक रहना होगा। विवेकानन्द जी ने कहा था कि "शिक्षा का उद्‌देश्य मनुष्य के देवत्व को जाग्रत करना होता है।

विद्यालय प्रबंध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मंच पर पं. राम बालक मिश्र जी, प्रेम श्री चन्द्र गुप्त जी, श्री ईश्वर चंद्र गुप्त जी, श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी जी तथा प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी जी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तरुण भारती के मंत्री शुभम श्रीवास्तव ने किया।

इस प्रकार योग व्यायाम के साथ ही वार्षिकोत्सव का प्रेरक व रोचक समापन हो गया और वह अपने समापन की अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ गया।

नेतृत्व की अपरिमित क्षमता के धनी, ऐसा कर्मशील एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्व जो साधना में ही उत्पन्न हुआ, साधना में ही गतिमान रहा और साधना में ही तिरोहित हो गया। समानता, समरसता, कर्मठता, ज्ञानवत्ता, सहिष्णुता आदि गुणों से ही युक्त होने पर भी जिसमें कभी अहं का भाव उत्पन्न नहीं हुआ। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा और पर-सुश्रूषा में ही व्यतीत कर दिया। ऐसे सेवाव्रती, त्यागी, मनीषी महामानव पं. दीनदयाल को प्रतिवर्ष हम वार्षिकोत्सव के माध्यम से स्मरण करते हैं।

सत्संगति :

श्रुति गुप्ता
अष्टम 'क'

हीयते हि मतिस्तात। हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥

नीच पुरुषों के संग से श्रेष्ठ पुरुष भी नीच काम करने वाला हो जाता है। समाज गुणीजन के संग अपनी यथास्थिति में ही रहता है व श्रेष्ठ पुरुष के संग में नीच भी श्रेष्ठ हो जाता है इसलिए महापुरुषों का संग करना चाहिए।

यथ–

कीटोऽपि सुमनः सङ्गादारोहति सतां शिरः।
अश्माऽपि देवत्व महद्भिः सुप्रतिष्ठितम्॥

जैसे कीड़ा पुष्पों के संसर्ग से महापुरुषों के शिर पर जा बैठता है, पत्थर भी प्रतिष्ठित होने पर देवरूप में पूजा जाता है।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मन्नोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

कहो! सत्संगति मनुष्यों का क्या हित नहीं करती। सत्य का संचार करती है, मान को बढ़ाती है, बुराइयों को दूर करती है, मन को प्रसन्न करती है और सभी दिशाओं में यश फैलाती है।

अतएव–

सद्भिखे सहासीत् सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीञ्च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्॥

सज्जनों के साथ ही रहना चाहिए, उन्हीं का साथ करना चाहिए और सज्जनों से ही विवाद व मित्रता भी करनी चाहिए। दुर्जनों से कैसा भी व्यवहार नहीं करना चाहिए।

"खुद को बदलो दुनिया तुम्हारे लिये स्वतः बदल जायेगी"

आयुष त्रिपाठी
नवम 'ग'

प्रस्तावना : परिस्थितियों में परिवर्तन के लिए मनुष्य के विचारों एवं कार्यों में परिवर्तन होना आवश्यक है। मनुष्यों का समूह ही समाज है। विभिन्न परिवर्तन होना आवश्यक है। विभिन्न व्यक्तियों की दुष्प्रवृत्तियाँ मिलकर सामाजिक विपन्नताओं का रूप धारण करती हैं और उसी से सर्वत्र अशान्ति, क्लेश एवं पतन के नारकीय दृश्य उपस्थित होते हैं। देश समाज और संसार में जो कुछ भी अशुभ हमें दृष्टिगोचर होता है, उसका कारण व्यक्ति के व्यक्तिगत दोष ही होते हैं। उन दोषों का उद्‌भव दूषित दृष्टिकोण के कारण होता है। दोषों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

असुरता से देवत्व की ओर चलेः आज असुरता का साम्राज्य चारो ओर फैला है सोचने का आम तरीका यह बनता जाता है कि अपना लाभ बढ़ाने में दूसरों का कितना ही बड़ा अहित क्यों न होता हो उसकी परवाह न करनी चाहिए और जैसे भी बने वैसे अपना स्वार्थ साध लेना चाहिए असुर होने का यही लक्षण है। देव वे हैं जो अपने अधिकारों को भूलकर कर्तव्यपालन का ही स्मरण रखते हैं। असुरों के दृष्टिकोण में दुष्टता मनुष्यों में मर्यादा एवं देवताओं में उदारता भरी रहती है। हमें अपनी स्वार्थ सिद्धि त्याग कर उदारवादी प्रवृत्ति अपनानी चाहिए।

सामाजिक कुरीतियों से बचें: समाज में एक बड़ा सिरदर्द सामाजिक कुरीतियों के कारण उत्पन्न हो गया है। कितनी ही ऐसी प्रथाएं चल पड़ी हैं, जो बहुत धन खर्च करने की मांग प्रस्तुत करती हैं। विवाह शादी का ही उदाहरण लीजिए। जिनके पास फालतू पैसा है वे जो चाहें वही कर सकते हैं। गरीब लोग जिनके पास गुजारे का साधन ही ठीक से नहीं है, अमीरों की नकल करके उन्हीं का स्वांग बनायें तो यह उनका दिखावा ही कहा जाएगा। इस दिखावे से छुटकारा पाये बिना सामाजिक कुरीतियों से पीछा छूटना कठिन है और जब तक ये कुरीतियाँ नष्ट न होंगी हमारी जीवन व्यवस्था अशान्ति में ही डूबी पड़ी रहेंगी। दहेज की असमर्थता के कारण आत्महत्या या दहेज हत्या जैसे अपराध होते हैं। जीवन विद्या की आरम्भिक शिक्षा यह है कि हम चोट पालने और गृहस्थ जीवन के साथ-साथ कुछ समय और धन बचाकर बौद्धिक विकास के कार्यों में लगाएँ।

चरित्रवान बनें : चरित्र की महत्ता पैसे से कहीं बढ़कर है जिसने धन के लोभ में चरित्र को खो दिया है अथवा चरित्र को खोकर धन कमाया है उसने पाप ही कमाया है। चरित्रवान व्यक्ति निर्धनता की

दशा में भी सब जगह सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसके विपरीत चरित्रहीन व्यक्ति का कहीं सम्मान नहीं। यह चरित्र एवं सदाचार का ही प्रभाव था कि पूर्वकाल में ऋषियों मुनियों के समक्ष बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट सिंहासन छोड़कर नत मस्तक हो जाते थे। पूर्वकाल ही क्यों आज भी जब कोई महात्मा या आचरणवान व्यक्ति आ जाता है तो लोग उसके प्रति आदर व्यक्त करते हैं। कहाँ दयनीय वेश भूषा में धन वैभव से रहित महात्मा गाँधी और कहाँ संसार का सबसे शक्तिशाली सम्राट जार्ज पंचम, किन्तु महात्मा गांधी के उज्ज्वल चरित्र एवं सत्याचरण का ही कमाल था कि जार्ज पंचम को अपनी राज परम्परा की उपेक्षा करके गांधी जी से खड़े होकर हाथ मिलाना पड़ा। वर्तमान समय में सत्याचरण एवं चरित्र के बल पर अन्ना हजारे ने पूरे देश को अन्नामय कर दिया है। क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति को अखंड विश्वास रहता है कि उसके सदाचरण से जनमत उसके पक्ष में ही रहेगा।

सकारात्मक सोचें : मनुष्य स्वतः अच्छा या बुरा नहीं है। यह अन्तर तो विचारों से होता है। जैसी गीली मिट्टी के सांचो के द्वारा विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाये जाते हैं उसी प्रकार विचारों के साँचे में व्यक्ति का निर्माण होता है। बुरे विचारों के कीचड़ में फंसा व्यक्ति अपना प्रभाव खो देता है। दूसरों के प्रति उपकार करना ही पुण्य है और पीड़ा देना पाप यही समस्त धर्म का सार है। इसके अतिरिक्त दूसरे कर्मों का आधार केवल स्वार्थ है। अपने में जो थोड़ी बहुत गुणों की पूंजी है इसी पर प्रसन्नता अनुभव करें उसे विकसित करें तो मनुष्य एक दिन महानता की मंजिल तक पहुंच जाता है। मनुष्य निरंतर मंगलमय कामनाएँ करे और सदाचारी बने, यह तभी संभव है जब सद्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिले।

अनुशासन का पालन : सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा एवं अन्य सभी ग्रह, उपग्रह एक नियम के अनुसार गति करते हैं। संसार की सभी छोटी-बड़ी घटनाओं के पीछे एक नियामक विधान ही काम करता है। समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाला विधान पिण्ड अणु-अणु में भी काम करते देखा गया। नियति चक्र के अनुकूल चलकर ही व्यक्ति एवं समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके विपरीत चलना विश्व नियम का उल्लंघन करना अपनी अवनति व पतन को निमन्त्रण देना है। विद्युत का उपयोग करके उससे बड़े महत्वपूर्ण काम किये जाते हैं, परन्तु गलत ढंग से छूने पर यह प्राण घातक बन जाती है। इसी प्रकार अग्नि का भी गलत ढंग से उपयोग करने पर यह प्राणलेवा बन जाती है। मनुष्य अपनी चालाकी, चतुराई, कूटनीति के द्वारा भौतिक जगत के सामाजिक दण्ड से बच सकता है किन्तु नियति चक्र की निगाह से नहीं बच सकता। संसार का सबसे विकसित व उत्कृष्ट प्राणी होने के नाते मनुष्य को कार्य करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। वह कुछ भी कर सकता है। किन्तु नैतिक तथ्य, नियति चक्र और विश्व नियम के विरुद्ध आचरण करने की छूट नहीं है। इस पर दण्ड अवश्य मिलेगा। मनुष्य जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल उसे मिलेगा।

उपसंहार: इस समय संसार में बहुत बुरी घटनाएँ हो रही हैं और मैं कहना चाहता हूँ कि अभी इससे भी बुरी परिस्थितियाँ आ सकती हैं। पर इससे घबराने की कोई बात नहीं है, वरन् हमें यह समझना चाहिए कि इस प्रकार की घटनाओं का होना अनिवार्य है क्योंकि हमारे भीतर छिपे हुए अनेक दोषों का निराकरण तभी हो सकेगा जब वे बाहर होकर नष्ट हो जायें। तभी एक नवीन और श्रेष्ठ संसार की रचना संभव है। इस दृष्टि से इन घटनाओं को अब अधिक समय तक रोका नहीं जा सकता। हम बदलेंगे तो हमारी दुनिया भी बदलेगी अपने घर से आरम्भ होते हैं समाज और संसार को बदलने के लिए हमें अपना व्यक्तिगत जीवन सुधारने के लिए अग्रसर होना होगा।

महान वैज्ञानिक –आइजक न्यूटन

मयंक शुक्ल
अष्टम 'ख'

आइजक न्यूटन का जन्म 25 दिसंबर 1642 को आधी रात के बाद हुआ। उनका जन्म समय से पहले हो गया। प्रसव के समय मौजूद चिकित्सक को उनके बचने की कोई आशा न थी। उनके पिता एक अच्छे खाते-पीते किसान थे, जिनकी अपने बेटे के जन्म से तीन महीने पहले मृत्यु हो गई थी। आइजक का पालन पोषण उनकी माँ हाना ने किया। जब आइजक दस वर्ष के थे, उनके सौतेले पिता बैरनैबस की मृत्यु हो गई और उनकी माँ हाना वूल्सथोर्प स्थित मकान में लौट आईं। दो वर्ष बाद आइजक के निकटवर्ती ग्रैंथम ग्रामर स्कूल में दाखिला लिया, जहाँ वे अपने चाचा के पास रहे। 1665 में उन्हें स्नातक की उपाधि मिल गई। और तब उन्होंने एक ऐसी समस्या का समाधान खोज निकाला, जो वर्षों से गणितज्ञों की समझ से बाहर थी- यह समाधार आगे चलकर द्विपद-प्रमेय (बाइनोमिअल थ्योरम) के नाम से जाना गया। उसके बाद उन्होंने कैलकुलस (कलन) की खोज की। जिसका प्रयोग आज के वैज्ञानिक कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाने में करते हैं। लेखकों ने उस वर्ष को "चमत्कारिक वर्ष" बताया। कैंब्रिज में उनको एक दिन ध्यान आया कि जब उनकी माँ के बगीचे में पेड़ से सेब टूटकर उनके सिर से आ टकराया था, तो आइजक फौरन समझ गए थे कि उसी अदृश्य बल-गुरुत्व ने ही सेब को पृथ्वी की ओर खींचा था। पृथ्वी उसी प्रकार सेब पर अभिकर्षण बल डालती है। उसके बाद आइजक ने "गुरुत्वाकर्षण" के बारे में दुनिया को बताया। आइजक न्यूटन इतने प्रसिद्ध हो गये थे कि उनके जीवनकाल में ही ब्रिटिश कवि अलेक्जैंडर पोप ने एक लोकप्रिय सूक्ति की रचना कर डाली।

Nature, and Nature's Laws lay hid in night God said 'Let Newton be! And all was light.

थॉमस एल्वा एडीसन

मयंक शुक्ल
अष्टम 'ख'

इनका जन्म एरी झील के निकट, ओहिये के बर्फ से ढके मिलान नगर में हुआ था। इनके माता-पिता कनाडा के रहने वाले थे और पिता लकड़ी का व्यवसाय करते थे। उनकी माता उस समय लगभग चालीस वर्ष की थीं, जो पहले ही छह बच्चों को जन्म दे चुकीं थीं और तीन बच्चों की मृत्यु को भी देख चुकीं थीं। जब 11 फरवरी 1847 को पौ फटने से पहले नैन्सी एडीसन के सातवें शिशु ने जन्म लिया, तो उसे आशंका हुई कि कहीं उसकी भी मृत्यु न हो जाए। पर नैन्सी की समस्त आशंकाओं के बावजूद नवजात एडीसन बच गया। उनके माता-पिता ने उनको पारिवारिक नाम थॉमस दिया और बचपन का नाम 'एल' रखा।

किसी को भी आश्चर्य नहीं हुआ जब सोलह वर्ष की आयु में एल स्वयं तार प्रचालक का कार्य करने लगे। उन्हें पहला काम अपने नगर के तार कार्यालय में मिला। पोर्ट ह्यरोन में अधिक संदेश नहीं आते थे। अतः उनके पास प्रयोग करने के लिये बहुत अधिक समय बच जाता था। एक दिन प्रयोग के दौरान उन्होंने लगभग तार कार्यालय को उड़ा दिया था, अतः उन्हें वहाँ से काम से निकाल दिया गया। अभी तक सब कुछ संतोषजनक था उनके पास रहने के लिये एक छत एवं गुजारे के लिये एक डॉलर था। एक दिन वह प्रमुख मशीन जिस पर न्यूयार्क के सैकड़ों व्यापारी स्वर्ण मूल्यों से संबंधित सूचनाओं के लिये निर्भर रहते थे, एकाएक वह मशीन रुक गई। कुछ ही मिनटों में दूसरे कार्यालयों के संदेशवाहकों की भीड़ लग गई, प्रमुख इंजीनियर मि. पोप समझ नहीं पा रहे थे, कि उसमें क्या हो गया तभी किसी व्यक्ति ने कहा कि वह मशीन को ठीक कर देगा। वह एडीसन था, शोरगुल के बीच उन्होंने ऊपर ट्रांसमीटर को देखा, उसका स्प्रिंग टूटा हुआ था। उन्होंने दो घण्टे में मशीन को सही कर दिया। इसके बाद से वे मि. पोप के सहायक बन गये। 9 नवंबर 1877 को एडीसन तकरीबन तीस वर्ष के हो गये थे, इन सप्ताहों के दौरान, जबकि टेलीफोन ट्रांसमीटर का काम अपनी चरमावस्था पर पहुँच चुका था, एडीसन ने ग्रामोफोन भी बना लिया। 7 दिसम्बर 1877 को वे अपनी मशीन को उठाकर सांइटिफिक अमेरिकन नामक पत्रिका के कार्यालय में ले गये और पत्रिका के संपादक तथा अन्य लोगों के समक्ष उसे बजाकर दिखाया। अखबारों में यह समाचार सुनने के बाद फ्रांसीसियों ने विस्मयकारी एडीसन कहकर अपनी खुशी जाहिर की।

एक दिन प्रयोगशाला की एक मेज पर बिखरे वैज्ञानिक सामान के बीच एक रील पड़ी थी। एडीसन ने उसे उठाकर धागे का एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ लिया। और धागे का प्रत्येक सिरा प्लैटिनम के तार के

एक टुकड़े के साथ आसानी से बाँध दिया। फिर उसे धातु के खाँचे में रखकर धीरे से एक भट्टी में सरका दिया। उन्हें अब लंबी प्रतीक्षा करनी थी। आखिरकार दोपहर समाप्त होने तक धातु के साँचे में रखकर सूत तैयार हो गया। और अलग से तैयार किये गये कांच के गोलक में सावधानी से रख दिया। और हवा की सूक्ष्मतम मात्रा भी गोलक से निकाल दी। 4 सितंबर 1882 की दोपहर, पौने तीन बजे पर्ल स्ट्रीट की 255 नंबर के पूरे भवन में तनाव छाया था। सभी दीवार घड़ियों और कलाई घड़ियों में घंटे की सुई धीरे से खिसककर तीन पर आ गई। सबकी निगाहें ठहर गईं और फिर काँच के गोलकों में प्रकाश का एक छोटा चमकता कुंडल प्रतीत हुआ, नाल के आकार का कुंडल। धीरे से चमकते कुंडल ने जैसे ही शक्ति बटोरी तो वह तेजी से चमक उठा। दर्जनों समर्पित वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लाई थी। एडीसन ने एक बड़ी चुनौती पर विजय प्राप्त कर ली थी। ठीक तीन बजे विद्युत शक्ति के युग का सूत्रपात हो गया था।

1931 के अक्टूबर की एक खूबसूरत रात में एडीसन चौरासी वर्ष की अवस्था में गुर्दे के रोग के कारण परलोक सिधार गये।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

अभिजीत त्रिपाठी
षष्ठ 'ग'

राजेन्द्र प्रसाद का जन्म जिला सिवान के जीरादेई गाँव में विक्रमी संवत् 1941 की अगहन की पूर्णिमा, तदनुसार 3 दिसम्बर 1884 में हुआ। उस समय कौन कह सकता था कि ऐसे गाँव का लड़का बड़ा होकर राष्ट्रपति बनेगा और अपने परिवार का नाम रोशन करेगा उन्होंने अपनी पढ़ाई उर्दू-फारसी में प्रारम्भ की। घर में उन्हें पढ़ाने के लिए मौलवी साहब रखे गये। राजेन्द्र प्रसाद अपने बड़े भाई के साथ छपरा में किराए का एक छोटा सा मकान लेकर रहने लगे। भाई ऐंट्रेंस की परीक्षा पास कर पटना चला गया उन्हें भी पटना जाना पड़ा। छपरा से पटना शहर बड़ा था उनका नाम टी.के. घोष एकेडेमी में लिखवाया गया। वह स्वयं ही विद्यालय में पढ़ाये गये पाठों को कण्ठस्थ कर लेते थे। वह कक्षा में पढ़ने में बहुत तेज थे। उनके जीवन से हमें दो प्रमुख उदाहरण मिलते हैं कि वह कभी झूठ नहीं बोलते थे तथा बड़ों की बात का उल्लंघन नहीं करते थे। राजेन्द्र प्रसाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वप्रथम रहे। उन्होंने विद्यार्थी जीवन से देश सेवा का काम आरम्भ किया। सन् 1905 में उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन चलाया। उन्होंने बड़े होकर वकालत की। वह एम.एल. की परीक्षा में प्रथम आये थे। कांग्रेस स्वर्ण जयंती के अवसर पर उन्होंने महत्वपूर्ण घोषणाएँ की थीं। पांडुलिपि का सम्पादन राजेन्द्र प्रसाद ने किया। मूल रूप से इतिहास अंग्रेजी में लिखा गया था, राजेन्द्र बाबू ने उस इतिहास को कई भाषाओं में अनुवाद कराया। स्वतंत्रता के बाद भी हम अभी पूरी तरह आजाद नहीं हैं। ऐसे नेता समय-समय पर जन्म लेते हैं हमें उनके आदर्शों पर चलना चाहिए।

हिन्दुस्तान का बेटा

मो. निहाल अहमद
अष्टम 'ख'

सन् 1928 ई. की बात है। लाला लाजपत राय के बलिदान से हिन्दुस्तान का प्रत्येक व्यक्ति आजादी के लिए तड़प उठा था।

अंग्रेज सरकार हिंसा पर उतर आयी थी। जहाँ कहीं भी शक होता, वहाँ गोलियाँ बरसायी जाती गाँव के गाँव जला दिए जाते। एक दिन तीसरे पहर में गोरी सेना को खबर मिली कि पास गाँव में भगत सिंह का भाषण होने वाला है। अंग्रेजी सेना उस गाँव की तरफ बढ़ने लगी। गाँ व वाले भयभीत हो गये। गाँव के लोग भगत सिंह को दूसरी जगह भेज देना चाहते थे किन्तु गाँव वालों को यह पता नहीं था कि अंग्रेजी सेना किस तरफ आ रही है। लेकिन इसका पता कैसे चले? अचानक मुखिया को एक विचार सूझा। वह बोला यदि कोई व्यक्ति इस नीम के पेड़ पर चढ़कर देखे तो पता चल सकता है कि अंग्रेज सेना किधर से आ रही है और कितनी दूर है।

नीम का पेड़ बहुत फैला हुआ था तथा उस पर मधुमक्खियों का कई छत्ते लगे हुए थे। अत: उस पेड़ पर चढ़ने की किसी की हिम्मत न हुई। तभी एक 12 साल का बच्चा आगे बढ़ा और बोला मैं चढूंगा इस पेड़ पर।

"तुम! कई लोग चिल्लाये.. तुमको मधुमक्खियाँ काट लेंगी लेकिन गोपाल डरा नहीं और बोला "मुझे डराओ मत, मैं हिन्दुस्तान का बेटा हूँ।" वह पेड़ पर चढ़ गया और चिल्लाकर बोला – काका! काका! पूरब से कई सिपाही आ रहे हैं और गोलियाँ भी छोड़ रहे हैं। फिर वे उत्तर की ओर मुड़ा एक गोली उसकी कनपटी को छीलते हुए निकल गयी। नीचे से कई लोग चिल्लायें "नीचे उतर आओ, गोपाल बेटे! तुझे दुश्मनों ने देख लिया है" लेकिन उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया और बोला उत्तर की तरफ से बहुत से घोड़े आ रहे हैं। वह पश्चिम की तरफ मुड़ा, अचानक एक गोली उसके कंधे में लगी लेकिन वह नीचे नहीं गिरा और बोला "पश्चिम की तरफ से बहुत से सिपाही आ रहे हैं। तुरन्त गोपाल दक्षिण की ओर मुड़ा व बोला "काका इधर से कोई नहीं आ रहा है।" वह इतना कह पाया था कि एक गोली उसके कलेजेको चीरती हुई निकल गयी और वह नीचे आ गिरा। मरकर भी वह मुस्कुरा रहा था, जैसे कह रहा हो "मैं हिन्दुस्तान के बेटा हूँ।"

भगत सिंह को जब इस बात का पता चला तो वे उसे देखने के लिए उतावले हो उठे लेकिन समय बहुत कम था। अत: गाँव वालों ने उन्हें दक्षिण के मार्ग से निकल जाने को कहा इसलिए वे अपने साथियों के साथ निकल गए।

गोपाल के बलिदान ने लोगों के दिल में जल रही आजादी की ज्वाला को और भी भड़का दिया।

सुभाष चन्द्र बोस

प्रांजुल ओमर
अष्टम 'ख'

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 में शनिवार के दिन डेढ़ बजे हुआ। ये अपने परिवार के छठे पुत्र थे। सुभाष चन्द्र बोस के पिता जी का नाम जानकी नाथ बोस था। वे अपने समय के माने हुए वकील थे और बाद में सरकारी वकील भी बन गए थे। सुभाष चन्द्र बोस की माता जी का नाम प्रभावती देवी था। वह सन्त रामकृष्ण परमहंस की भक्त थी। उनके चरित्र की छाप बालक सुभाष पर ऐसी पड़ी कि उसका सारा जीवन उसी साँचे में ढल गया। पाँच वर्ष की आयु में बालक सुभाष मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजे गए। ग्यारह वर्ष की आयु में वे स्कूल में भर्ती हुए। यहाँ के अध्यापक बेनी प्रसाद माधव जी थे। बेनी प्रसाद जी धार्मिक विचारों में रंगे हुए थे। उनकी संगति का बालक सुभाष पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे जब भी सुनते कि कोई सन्त महात्मा पधारे हैं, तो दौड़े-दौड़े जाते और उनके चरणों में सिर रखकर अपने कल्याण की बात पूछते। इस बीच एक बार स्वामी विवेकानन्द जब कटक में पधारे, तो बालक सुभाष उनके उपदेशों में भी सबसे पहले पहुँचा करता था। जुलाई मास में सुभाषचन्द्र जी प्रयाग गए। वे वहाँ दस दिन तक रहे। वहाँ उनका स्वागत हुआ तथा वहाँ उनकी भेंट विदेश मंत्री डाक्टर वेन्स से हुई। फरवरी सन् 1936 में आयरलैण्ड गए और वहाँ के विख्यात नेता डी वैलेरी से मिले। सुभाषचन्द्र बोस अप्रैल, 1936 में भारत लौट आए। परन्तु सुभाष चन्द्र बोस के भारत भूमि पर पैर रखते ही सरकार ने उन्हें गिरफ्त कर लिया। मार्च, 1937 में सरकार ने उन्हें जेल से मुक्त कर दिया। 24 अप्रैल 1945 में सुभाष चन्द्र बोस जी रंगून से बैंकांक चले गए। बैंकाक से सिंगापुर गए। 16 अगस्त के दिन सुभाष चन्द्र जी वायुयान द्वारा सिंगापुर से टोकियो के लिए चले। 18 अगस्त के दिन दो बचे यह वायुयान ताइहोक हवाई अड्डे के पास गिर पड़ा। नेता जी का शरीर आग से झुलस गया। उन्हें पास के अस्पताल में पहुँचाया गया जहाँ उनका देहान्त हो गया।

राष्ट्रध्वज के सामने जो सिर नहीं झुकायेगा, देशवासियों के स्वर में स्वर नहीं मिलाएगा।
ऐसे आदमी को देशद्रोही माना जाएगा। रह कर देश में जो वन्दे मातरम् न गायेगा॥

सुमन दुबे

डॉ. विश्वेश्वरैया

अश्विनी अग्निहोत्री
अष्टम 'क'

डा. विश्वेश्वरैया को आधुनिक भारत का भागीरथ कहा जाता है। प्राचीन काल में महाराज भगीरथ ने अपने तपोबल से गंगा को धरती पर उतारकर अपने पुरखों के उद्धार के साथ जन सामान्य का कल्याण किया था। आधुनिक युग में डॉ. विश्वेश्वरैया ने अपनी योग्यता और कर्मठता से मानव जीवन को जल का अपरिमित वरदान प्रदान किया। उन्होंने करोड़ों एकड़ बंजर धरती को उर्वर बनाया तथा उन्होंने उच्छृंखल नदियों को अपनी मर्यादा में बहने के लिए विवश कर दिया।

डा. विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर प्रदेश के मुद्देनल्ली गाँव में 15 सितम्बर, सन् 1861 में हुआ था। उनका पूरानाम मोक्षगुडम् विश्वेश्वरैया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात 1962 में उनका स्वर्गवास हुआ। इनका जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। वे पढ़ने में बहुत ही तेज व परिश्रमी थे। 1893 में विश्वेश्वरैया ने अग्नि परीक्षा दी। 28 सितम्बर 1908 में हैदराबाद में बाढ़ आ गई। डॉ. विश्वेश्वरैया ने शहर को बचाया। वे देशभक्ति स्वाभिमानी व्यक्ति थे। डा. विश्वेश्वरैया ने अपने दीर्घ जीवन में जो दो काम किये यहाँ उनका विवरण देना संभव नहीं हैं। वे सरल, सज्जन उदार और मेधावी पुरुष थे। उनका जीवन सादगी और सद्व्यवहार का प्रतीक था। डा. मोक्षगुड्म् विश्वेश्वरैया "भारत माता के अमर" पुत्र हैं।

अब्राहम लिंकन

प्रणव त्रिपाठी
अष्टम 'ख'

अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी 1809 को केंटकी में हुआ था। उनके पिता निर्धन थे। ये जंगल में रहते थे। पिता की निर्धनता के कारण वे शिक्षा प्राप्त न कर सके। वे घर पर रहकर खेतों में मजदूरों की तरह काम किया करते थे। एक वर्ष की अवस्था में इनकी माता की मृत्यु हो गई। एक वर्ष बाद पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। इनकी सौतेली माँ पढ़ी लिखी थी स्वभाव की बहुत अच्छी थी। उनमें अपने पराये का भाव नहीं था। इनकी माँ इन्हें अंगीठी के मंद प्रकाश में पढ़ना लिखना सिखाती थी। सौतेली माँ की प्रेरणा से उनके पढ़ने लिखने में रुचि बढ़ने लगी। एक दिन स्कूल से आते समय तेज वर्षा होने के कारण उनकी पुस्तक भीग गई। ये पुस्तक लेकर किसान के पास गए, किसान यह देखकर अप्रसन्न हुआ क्योंकि पुस्तक किसान के लड़के की थी। किसान ने उनसे पुस्तक का मूल्य माँगा। पैसा न होने के कारण इन्हें किसान के खेत में तीन दिन तक काम करना पड़ा और भीगी पुसतक को अपनी लाइब्रेरी में प्रथम पुस्तक के रूप में रखा। आगे चलकर ये 1865 ई. में अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। इनके राष्ट्रपति बनने से कई लोग अप्रसन्न थे। इन्होंने दास प्रथा का अन्त किया, दक्षिण के लोग दास प्रथा जारी रखना चाहते थे। इसीलिए उनसे अधिकतर लोग अप्रसन्न रहते थे। यही अप्रसन्नता उन्हें संसार से ले गयी। अन्ततः 14 अप्रैल, 1865 में एक दुष्ट ने इन पर गोली चला कर इनकी हत्या कर दी।

स्वामी विवेकानन्द

अश्विनी कौशल
अष्टम 'ख'

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कोलकाता में हुआ था। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। ये बचपन में बड़े ऊधमी स्वभाव के बालक थे। इनकी माँ इन्हें शियाव के नाम लेकर डराती रहती थी। शिव में इनकी अगाध श्रद्धा थी। बालक नरेन्द्रनाथ की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्हें कुश्ती तैराकी, बॉक्सिंग, दौड़, घुड़ दौड़ और व्यायाम आदि का अधिक शौक था। उन्होंने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

नरेन्द्रनाथ स्वामी रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य थे। अतः गुरु जी की महा समाधि के बाद इन्होंने स्वामी परमहंस के महान संदेशों के प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया। स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और लोगों की दीन दशा को अपनी आँखों से देखा। दयनीय और वन्दनीय भारत माता की इस तस्वीर ने इनके हृदय को झकझोर दिया। अतः उन्होंने दीन दुखियों की सेवा करने का बीड़ा उठाया। इन्होंने एक परिवाज्रक का वेश धारण कर लिया और इस प्रकार नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द का जीवन प्रारम्भ हुआ। स्वामी जी ने जीवन के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये। इनमें धर्म पुनर्स्थापना, हिन्दू धर्म और संस्कृति पर हिन्दूओं की आस्था बनाये रखना तथा भारतीय संस्कृति इतिहास और आध्यात्मिक परम्पराओं को जीवित रखने के लिए योग्य उत्तराधिकारी बनाना प्रमुख उद्देश्य थे।

स्वामी जी ने 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो नगर में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया और वहाँ अपने व्याख्यान से लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। 1897 ई. में उन्होंने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशनकी स्थापना की सन् 1902 ई. में स्वामी जी का निधन हो गया।

रहिमन को कोउ का करै, ज्वारी, चोर, लबार।
जो पति-राखनहार हैं, माखन-चाखनहार॥
रहिमन खोजे ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तँह रस नहीं, यही प्रीति में हानि॥

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

उत्कर्ष तिवारी
अष्टम 'क'

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के विषय में बंगाल के प्रसिद्ध कवि माइकल मधुसूदन दत्त ने लिखा है "उनमें प्राचीन भारतीय मनीषी का ज्ञान था, एक अंग्रेज की सी फुर्ती थी और एक बंगाली माँ का हृदय था।" एक अन्य विद्वान ने लिखा है- "वे विद्या के सागर तो थे ही, करुणा के भी सागर थे।"

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जीवन मानवता सेवा और कर्मठता का संगम था। इनके इन्हीं गुणों के कारण लोग आज भी इन्हें श्रद्धा से याद करते हैं।

ईश्वरचन्द्र का जन्म 26 सितम्बर सन् 1820 को बंगाल में हुआ था। इनकी माता का नाम भगवती देवी और पिता का नाम ठाकुर दास बंदोपाध्याय था। इनकी माता उदार विचारों की महिला थीं। वे संसार के सब मनुष्यों को समान समझती थीं। बालक ईश्वरचन्द्र पर अपनी माता का गहरा प्रभाव पड़ा।

"सादा जीवन और उच्च विचार" के विद्यासागर जीते-जागते उदाहरण थे। बंगाल में उस समय लड़कियों के कोई स्कूल नहीं थे। और देश की उन्नति के लिये वे उसे आवश्यक मानते थे। उन्होंने 1857-58 में 35 बालिका विद्यालय खुलवाए जिनमें औसत उपस्थिति 1300 थी। पुराने विचारों के लोगों ने इसका विरोध किया।

विद्यासागर के प्रयत्नों से 19 जुलाई 1856 ई. में विधवा-विवाह कानून पास हुआ। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा किए गए कार्यों को हम तीन श्रेणियों में बाँट सकते हैं।

शैक्षिक सुधार।

सामाजिक सुधार।

महिलाओं की दशा में सुधार।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बंगाली में "संप्रकाश" तथा अंग्रेजी में "हिन्दू पैट्रियेट" पत्र निकाले और उनके माध्यम से अपने सुधारवादी विचारों का जनता के बीच प्रचार किया।

इस महान आत्मा ने 72 वर्ष की आयु में देह त्याग दिया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था, विद्यासागर एक महान सन्यांसी थे। वे अपने लिए नहीं दूसरों के लिये जिये और समाज की सेवा करते हुए जिए।

कहानी

इच्छा पूरण-रवीन्द्र नाथ टैगोर

सचिन अग्निहोत्री
नवम 'ख'

सुबल चन्द्र के बेटे का नाम सुशील चन्द्र पर आदमी हमेशा अपने नाम के अनुरूप ही नहीं होता है। सुबलचन्द्र कुछ दुर्बल थे और सुशील चन्द्र कोई खास शान्त नहीं थे।

लड़का मुहल्ले भर को परेशान किये फिरता था। इसलिए पिता कभी-कभी उसे दण्ड देने के लिए उसे पकड़ने दौड़ते थे। और लड़का हिरन की तरह चौकड़ी भर भागता था। सो मुक्के-घूँसे थप्पड़-तमाचे सदा ठीक जगह पर नहीं पड़ते जाते तो उनकी शामत ही आ जाती थी। उस दिन शनिवार था। दो बजे ही स्कूल से छुट्टी होने वाली थी। पर फिर भी स्कूल जाने को जी नहीं हो रहा था सुशील का। इसके कई कारण थे। एक तो उस दिन भूगोल की परीक्षा थी और दूसरे उस टोले के बोस-घराने में साँझ पहर आतिशबाजी थी। वहाँ सवेरे से ही धूम-धाम थी। सुशील का मन था, कि दिन वहीं काटा जाय।

बहुत सोच-सोचकर वह स्कूल जाने के समय बिस्तर पर जाकर सो रहा। सुबलचन्द्र ने पास आकर पूदा, "क्यों रे, बिस्तर, पर क्यों पड़ा है? आज स्कूल नहीं जाना?"

सुशील बोला, "पेट में बड़ी मरोड़ हो रही है, आज स्कूल नहीं जा सकूँगा"।

सुबल ने उसकी सारी बहानेबाजी समझ ली। मन-ही-मन बोले, ठहरो, आज तुम्हें सबक सिखाता हूँ। पर प्रकट रूप में यह कहा, "पेट में मरोड़ है? तब तो आज कहीं जाने की जरूरत नहीं। बोस के घर आतिशबाजी देखने के लिए हरि को अकेला ही भेज दूँगा।

सुबल चन्द्र ने सुशील को घर में बन्द करके सॉकल लगा दी और खूब कड़वा पाचक बनाने चले गये सुशील बड़े ही घपले में पड़ गया। लेमनजूस उसे जितना ही पसन्द था, पाचक से उसके देवता उतना ही कूच करते थे। उधर बोस के घर जाने के लिए उसकी जी पिछली रात से छटपटा रहा था। लगा कि वह सुयोग भी हाथ से गया।

सुबल बाबू बड़े से कटोरे में पाचक लिये घर में घुसे थे कि सुशील बड़बड़ाकर बिस्तर से उतर पड़ा और बोला, "पेट दर्द अब बिल्कुल रफा हो गया है, अब मैं स्कूल जा रहा हूँ।

पिता बोले, "ना ना, स्कूल जाने की कोई जरूरत नहीं तू पाचक पीले और चुपचाप पड़ा रह।" और उन्होंने जबरदस्ती पाचक पिला दिया और बाहर से घर में ताला लगा दिया।

सुशील बिस्तर पर पड़ा-पड़ा दिन भर रोता रहा और सोचता रहा कि अगर कल से ही मेरी उम्र बापू जैसी हो जाय तो मैं अपने मन को किया करूँगा और कोई मुझे बन्द नहीं रख सकेगा। उधर सुबल बाबू बाहर अकेले-बैठे बैठे सोचते रहे कि मेरे माँ बाप मुझे बहुत लाड़ प्यार करते थे, इसी से मेरी अच्छी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पायी। हाय, फिर अगर बचपन के वे दिन लौट आते तो जरा भी समय बरबाद न करूँ

और एक-एक पल पढ़ाई-लिखाई में ही लगा दूँ। ठीक उसी समय इच्छा-ठकुरानी उस घर के बाहर वाले रास्ते से गुजर रहीं थी। पिता-पुत्र के मन की इच्छा पूरी करके ही देखा जाय।" यह सोचकर वह पिता के पास गयी और बोली "तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। कल से तुम अपने बेटे की उम्र के होगे।" और लड़के के पास जाकर बोली, "कल से तुम अपने पिता की उम्र के होगे।" सुन-कर दोनो पिता-पुत्र फूले नहीं समाये। बड़े सुबल चन्द्र रातों को ठीक से सो नहीं पाते थे। भोर के कुछ पहले नींद आती थी। पर उस दिन न जाने क्या हुआ कि अचानक बड़े भोर ही उठकर बिल्कुल उछलते हुए बिछौने से कूद पड़े। देखा बिल्कुल छोटे से हो गये, गिरे हुए दाँत फिर से निकल आये हैं, दाढ़ी-मूँछ के बाल न जाने कहाँ गये, कोई निशानी एक उनकी नहीं बची है। रात को जो धोती कुरता पहनकर सोये थे। वह भी ढीला हो गया।

हमारे सुशील चन्द्र का सदा का नित्य-नियम यह था कि वह नूर के तड़के के उठकर चारों तरफ धूम मचाते थे। लेकिन आज तो उनकी नींद खुलने का समय ही नहीं ले रही थी। अपने पिता सुबल चन्द्र की धमाचौकड़ी के मारे नींद हराम हो गयी तो उठे और उठते ही देखा कि कपड़े लत्ते बदन पर इस तरह सुस्त हो उठे हैं उनके फटकर चिथड़े-चिथड़े हो जाने की नौबत आ गयी। सारा शरीर बढ़ गया है पकी-अधपकी दाढ़ी मूँछ के मारे आधा मुँह तो दिखाई भी नहीं पड़ता। सिर में भरपूर जुल्फें थी, पर हाथ फेरकर देखा तो सामने से पूरी खोपड़ी सफाचट बिल्कुल चिकनी-सी गंजी चाँद निकल आयी है।

दोनों के मन इच्छा तो खैर पूरी हो गयी पर दोनों बड़ी मुश्किल से पड़ गये। यह तो पहले ही बता चुका हूँ कि सुशील चन्द्र की इच्छा यह थी कि बापू यानी सुबलचन्द्र जैसा और स्वाधीन हो जाऊँ तो जब जैसा जी चाहेगा करूँगा, पेड़ों पर चढ़ता फिरूँगा पानी में कूदा करूँगा, कच्चे आम खाया करूँगा, चिड़ियों के बच्चे उतारा करूँगा, सारे देश में घूमा करूँगा, मना करने वाला कोई न होगा।

लेकिन अचम्भे की बात है कि उस दिन सुबह-सवेरे उठकर पेड़ पर चढ़ने की उसे इच्छा ही नहीं हुई। जलकुम्भी वाले पोखरे को देखकर उसे लगा कि अगर इसमें कूदूँगा तो जूड़ी-ताप धर दबायेगा। वह पास के जिस पेड़ पर गिलहरी की तरह अटपट चढ़ लेता था, आज बूढ़े शरीर ने उस पर चढ़ने के लिए बिल्कुल इन्कार ही कर दिया। नौकर से बोला "अरे ओ, बाजार से एक रूपये का लेमन जूस ले आ।"

जब नौकर ने एक रूपये का ढेर-सा लेमनजूस लाकर रख दिया और सुशील चन्द्र ने उसमें से एक उठा कर अपने दन्तहीन मुँह में डालकर चूसना शुरु किया तो बूढ़े मुँह को बच्चों का लेमनजूस तनिक भी नहीं भाया। एक बार सोचा कि सारे लेमनजूस अपने बालक पिता को दे डालूँ, मगर तभी ध्यान आया कि न, कोई जरूरत नहीं, इतने लेमनजूस खाकर वह फिर बीमार हो जायेंगे।

मैं कह चुका हूँ कि बापू यानी सुबलचन्द्र रोज ओसारे में चटाई डालकर बैठे-बैठे यही सोचा करते थे कि बचपन में सारा समय नट-खटपन में बरबाद कर दिया था, पर अब अगर फिर से बचपन हाथ लगा तो सारे दिन शान्त शिष्ट होकर, दरवाजा बन्द करके घर के भीतर बैठकर, बस किताब लिये रहूँ और पाठ

कण्ठस्थ करता रहूँगा इतना हीं नहीं साँझ पहर दादी से कहानी सुनना भी बन्द कर दूँगा और दिया जलाकर रात के दस ग्यारह बजे तक पढ़ाई लिखाई करता रहूँ। सचमुच सुशील इतने बहानों से स्कूल नागा किया करता था कि उसे छल पाना उसके पिता के बस का रोग नहीं था। सुशील अपने छोटे-से पिता को जबरदस्ती स्कूल भेजने लगा। स्कूल की छुट्टी होने पर सुबल घर आकर जी-भर भाग दौड़ करके खेलने कूदने के बेचैन हो उठते। खान-पान के मामले में सुशील बड़ा कठोर था। कारण, उसके पिता सुबल जब बूढ़े थे तो उनका हाजमा ठीक नहीं था थोड़ा भी अधिक खा लेते तो धुएँ की डकार आने लगती थी। इसलिए सुशील अपने पिता सुबल को खाना कम देता था।

सुबल चन्द्र भी कभी-कभी अचानक भूल जाते कि मैं बालक हो गया हूँ। अपने को पहले जैसा ही बूढ़ा समझकर वह बूढ़ों के ताश-चौपड़ के खेल देखने लगता और पास बैठकर बूढ़ों जैसी बातें करने लगता उस पर बूढ़े व्यक्ति उसे भगा देते। अक्सर अनचेती घड़ियों में अचानक भूलकर मास्टर से कह बैठता कि "जरा तम्बाकू तो खिलाना।" इस पर मास्टर उसे बेंच के ऊपर एक टाँग पर खड़ा कर देते नाई से कहता, "अरे बेटा कई दिन हो गये, मेरी दाढ़ी बनाने क्यों नहीं आया तू?" नाई सोचता लड़के ने खूब ठिठोली करनी सीख ली है। कहता, "बस अभी आया, कोई दसेक बरस में। और कभी-कभी पहले अभ्यास-वश अपने बेटे सुशील को मार भी बैठता।

तंग आकर सुबल ने एकाग्र मन से प्रार्थना करनी शुरु की "हाय अगर अपने बेटे सुशील की तरह बढ़ा और स्वाधीन हो जाता तो इस सांसत से जान बचती।"

उधर सुशील भी रोज हाथ जोड़कर कहता कि "हे दवता, बापू की तरह मुझे छोटा बालक बना दो कि मनमाने खेल खेलता फिरूँ। बापू इतने नटखट हो उठे हैं कि उन्हें सँभालना मेरी बूते की बाहर हो गया है।"

तब इच्छा ठकुरानी आंयी और बोली, "क्यों तुम्हारी साधे मिट गयीं?"

दोनो पिता-पुत्र दण्डवत्-प्रणाम करके बोले, "दुहाई ठकुरानी की। मिट गयी साधें। अब तो हमें वही बना दो, जो हम पहले थे।"

इच्छा ठकुरानी बोलीं, "अच्छा कल सवेरे उठने पर तुम लोग फिर वही रहोगे।" दूसरे दिन सवेरे सुबल पहले जैसे बूढ़े होकर उठे और सुशील पहले जैसा बालक होकर उठा दोनों को ऐसा लगा मानो किसी सपने से जगे हों। सुबल ने गला भारी करके कहा, "सुशील व्याकरण कण्ठस्थ नहीं करोगे?"

सुशील ने सिर खुजलाते हुए कहा, "बापू मेरी किताब खो गयी है।"

लौहपुरुष – सरदार वल्लभभाई पटेल

अनुकृति शुक्ला
अष्टम 'क'

31 अक्टूबर सन् 1875 ई. को गुजरात के खेड़ा जिले में स्थित करमसद गाँव में एक कृषक परिवार में एक महान देशभक्त सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म हुआ। आपके पिता का नाम श्री झबेरभाई पटेल और माता का नाम श्रीमती लाडबाई पटेल था। आपके पिता 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के सहायक रह चुके थे। वे वीर, साहसी और पक्के देशभक्त थे। आप पर और आपके बड़े भाई (श्री विट्ठलभाई पटेल) पर पिता के देशप्रेम और वीरता की छाप पड़ी।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का बचपन हरे भरे खेतों के बीच बीता। उन्होंने बचपन से ही अनुभव कर लिया कि कृषकों को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे सुबह दो मुठ्ठी चना और दो मुट्ठी कच्चा चावल चबाकर जलपान करते थे। बचपन से ही उनमें लौह पुरुष के लक्षण दिखने लगे थे।

एक बार इनकी आँख में एक फोड़ा निकला। गाँव के लोगों ने कहा कि लोहे की सलाख गर्म करके फोड़े में भोंक दो, फोड़ा ठीक हो जायेगा। सलाख गर्म की गई पर भोंकने वाला हिचकिचा रहा था। तभी इन्होंने वह सलाख स्वयं अपने हाथों में लेकर भोंक ली और 'उफ' तक न की।

अपनी प्रारंभिक शिक्षा इन्होंने गाँव में ही पूरी की। उसके बाद मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1900 ई. में वे गोधरा में फौजदारी के मुकदमों की प्रैक्टिस करने लगे। शीघ्र ही उन्हें बहुत ख्याति मिली।

सन् 1908 में एक दिन जब वल्लभ भाई किसी मुकदमें पर बहस कर रहे थे तब उन्हें एक तार मिला। उन्होंने उसे पढ़कर जेब में रख लिया। और बहस जारी रखी। सब काम समाप्त हो जाने पर उन्होंने तार निकाला। उसमें उनकी 33 वर्षीया पत्नी के स्वर्गवास का दु:खद का समाचार था। आजीवन उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। धैर्य और साहस का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है।

वल्लभभाई उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते थे। कुछ धन अर्जित करके पहले अपने बड़े भाई को विलायत भेजकर बैरिस्ट्री की शिक्षा दिलाई। फिर बाद में स्वयं सन् 1910 में लन्दन गए और 1913 में बैरिस्टर बनकर लौटे। वे फौजदारी के प्रसिद्ध वकील थे, खूब आमदनी थी, चाहते तो आराम की जिन्दगी बिता सकते थे, लेकिन देश की सेवा उनके जीवन का चरम लक्ष्य था। उस समय तक भारत में स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बज चुका था। 1916 में गुजरात सभा के दौरान वे महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए। 1916-17 के खेड़ा सत्याग्रह में एक प्रमुख कार्यकर्ता रहे। असहयोग आन्दोलन में, वोरसदके 'ताजीरीकर विरोधी सत्याग्रह और 1923 में नागपुर के झण्डा सत्याग्रह में अद्‌भुत दृढ़ता और नेतृत्व शक्ति का परिचय दिया। "गुजरात विद्यापीठ" की स्थापना उन्हीं के परिश्रम का परिणाम है। 'वारदोली सत्याग्रह' तो बताता है कि किस प्रकार वारदोली की जनता उन पर अपन सर्वस्व न्योछावर करने को प्रस्तुत थी।

यही इन्हें "सरदार" की उपाधि से नवाजा गया। गान्धी -इर्विन सन्धि होने पर 1931 के कराची अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए। अपने राष्ट्र के लिए कई बार इन्होंने जेलयात्रा भी की। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इन्होंने भारत छोड़ो के साथ-साथ "एशिया छोड़ो" की ललकार की। 1946 में अन्तरिम सरकार के गृहमंत्री बने। अब राज्य विभाग भी उनके हाथ में आ गया।

15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ। परन्तु जाते-जाते अंग्रेजों ने देशी रियासतों को छूट दी कि वे चाहें तो भारत में मिले, चाहे तो पाकिस्तान में, या फिर अपनी अलग अलग स्वतन्त्र सत्ता बनाए रखें। ऐसी छूट से राष्ट्र टुकड़े-टुकड़े हो जाता। ऐसी नाजुक परिस्थितियों में अपनी योग्यता का परिचय देते हुए आपने 600 से भी अधिक देशी रियासतों का एकीकरण किया और इस महान कार्य के कारण "लौह पुरुष" कहलाए। इनकी प्रशंसा विदेशियों ने भी की है।

सरदार पटेल स्पष्टवादी थे, तुरन्त सही निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता से युक्त, इनके स्वभाव में असाधारण दृढ़ता थी। वे अत्यन्त सरल और कोमल हृदय के थे। स्वतन्त्रता के बाद उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में उन्होंने कई राजनैतिक गुत्थियाँ सुलझाई।

दिसम्बर 1950 इ. में पेट में अचानक दर्द होने से यह महान देशभक्त (75 वर्ष की आयु में) सदा के लिए स्वर्गवासी हो गया। आपका नाम भारत के इतिहास में सदा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल की शिक्षा

दृढ़ निश्चय हो दृढ़तर पद हो। किन्तु कदापि न सत्ता मद हो॥
डरना तो कीड़ों का काम। नर हो फिर भय का क्यों काम॥
तुमसे भय भी भागे डरकर। बढ़े चलो तुम निर्भय होकर॥
विघ्नों से घबराना कैसा। श्रम में लग थक जाना कैसा॥
टूटें पग के काँटे पग में। बढ़े चलें पर हम निज मग में॥
वीर वही जो बढ़ता जावे। बाधा-विघ्न देख हर्षावे॥
बढ़े वहाँ उसका उत्साह। करे नहीं दु:ख की परवाह॥
स्थिर-निश्चय पर्वत सा सुस्थिर। पीछे कभी न देखे जो फिर॥
रहे लक्ष्य पर दृष्टि निरन्तर। हो उत्साह और भी सुस्थिर॥
सदा सफलता पाता है वह। पहुँच लक्ष्य तक जाता है वह॥

महामना मदनमोहन मालवीय

शिखर सेंगर
अष्टम 'ख'

श्री मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को प्रयाग के एक सुशिक्षित मध्यवर्गीय सनातनी परिवार में हुआ। उनके पिता पं. ब्रजनाथ जी संस्कृत और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान थे। सन् 1876 में उन्होंने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके पश्चात् बी.ए. तथा एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर सन् 1884 में गवर्नमेन्ट हाईस्कूल में अध्यापन कार्य किया। अध्यापन काल में ही आपने सन् 1886 के कांग्रेस के अधिवेशन में जो भाषण दिया था, उससे सभी उपस्थित व्यक्ति प्रभावित हो गए थे। अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी ने कहा था, "इनकी वाणी भारत माता की वाणी है।" अध्यापन कार्य छोड़कर उन्होंने 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन कार्य आरम्भ कर दिया। हिन्दुस्तान के बाद उन्होंने 'अभ्युदय' और मर्यादा का सम्पादन किया। सन् 1880 में आपने हिन्दू समाज की स्थापना की तथा भारतीय भवन पुस्तकालय की स्थापना की। सन् 1909, 1918, 1932, 1933 में आप कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए अच्छे कार्यकर्ता होने के कारण ये अनेक बार जेल गए। सन् 1910 से 1912 तक ये 'कौशिक' के सदस्य रहे। 1916 में औद्योगिक सदस्य नियुक्त हुए। आपने रौलट एक्ट जलियाँवाला बाग और साइमन कमीशन का विरोध किया। अतः उन्होंने डॉ. एनीबेसेन्ट और दरभंगा नरेश श्री रामेश्वर सिंह बहादुर के सहयोग से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह विश्व विद्यालय भारत का मुख्य विश्वविद्यालय था। सम्पादन, समाज-सुधार, समाज-सेवा देश-सेवा, सच्ची राजनीति तथा विद्या प्रचार करते हुए इनका निधन 11 नवम्बर 1946 को हो गया।

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस॥
माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैर बसुधा धरी, तऊ बावनै नाम॥
मूढ़ मंडली में सुजन, ठहरत नहीं बिसेषि।
स्याम कचन में सेत ज्यों, दूर कीजिअत देखि॥

प्रेरक कहानी

सच्चा व्यापार

गीतांशु सिंह
अष्टम 'क'

गुरु नानक देव जब बड़े हुए तो उनके पिता को चिन्ता हुई यदि पुत्र कोई व्यापार न सीखेगा तो क्या करेगा। उन्होंने नानक को बुलाकर बीस रूपये दिए और कहा, 'पुत्र! भाई बाला के साथ तुम लाहौर जाओ और सच्चा व्यापार करो।' गुरु नानक पिता की आज्ञा पाकर भाई बाला को साथ लेकर चल पड़े। जब चलते-चलते बारह कोस मार्ग तय कर लिया और चूड़हकाने के पास पहुँचे तो नानक जी ने देखा कि कई साधु भूखे-प्यासे तपस्या कर रहे हैं। नानक ने अपने साथी से कहा, 'भाई बाला! पिता जी ने सच्चा व्यापार करने को कहा है, देखो इससे सच्चा व्यापार और क्या होगा कि इन भगवान का भजन करने वाले महात्माओं को भोजन कराया जाए।' भाई बाला क्या कहता। नानक जी ने पास वाले गाँव से बीस रूपये का आटा, दाल और दूसरी खाने-पीने के सामान मँगाकर महात्माओं को भेंट कर दी। महात्माओं ने नानक को बहुत आशीष दिया। रूपये तो समाप्त हो गए थे, अब आगे जाकर क्या करते, इसलिए नानक जी वापस तलवंडी लौट आए। पिता ने नानक को खूब मारा-पीटा। बहिन नानकी ने बीच में पड़कर भाई को बचाया।

गुरु नानक देव

ब्रह्मांश भारद्वाज
अष्टम 'ख'

गुरु नानक देव का जन्म पंजाब में तलवंडी नामक स्थान में कार्तिक पूर्णिमा संवत् 1526 (15 अप्रैल 1469 ई.) को आधी रात के समय हुआ था। इनके पिता का नाम कालूचन्द्र पटवारी तथा माता का नाम तृप्ता था। पण्डित हरदयाल जी ने बालक की जन्मपत्री बनाई और कहा, 'तुम्हारा पुत्र संसार में धर्म का नाद गुँजाएगा। हिन्दू और मुसलमान सभी उसकी पूजा करेंगे। वह भगवान का सच्चा भक्त होगा।'

सात वर्ष की आयु में पिता कालू ने पुत्र को मौलवी के पास पढ़ने भेजा। यहाँ नानक ने मौलवी से कहा, 'मुझे वही पढ़ाइए जिससे भगवान का भजन बने। मृत्यु से छुटकारा नहीं होगा। उस समय कोई सम्बन्धी या मित्र सहायता न कर सकेगा। उस समय भगवान का भजन ही साथ देगा। मैं चाहता हूँ कि संसार के भले के लिए अपना जीवन बिताऊँ। यह सुनकर मौलवी की आँखें खुल गई। वह उनके चरणों में गिर पड़ा। पढ़ाई समाप्त करने के बाद नानक ने भूले-भटकों लोगों को धर्म का मार्ग बताते हुए, अंधकार में डूबे लोगों को प्रकाश का मार्ग दिखाया। दशमी के दिन 22 सितम्बर 1539 को प्रातः काल गुरु नानक जी स्नान कर शुद्ध भूमि पर बैठ गए और भगवान के ध्यान में अपनी सुध-बुध भूल गए। अपना शरीर छोड़ दिया। उनकी मृत्यु पर हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हो गया। पर बाद में दोनों धर्मों में बँटवारा हो गया। इस महान पुरुष की पवित्र वाणी 'गुरु ग्रन्थ साहब' में लिखी है।

प्रेरक प्रसंग

स्वामी विवेकानन्द

'नरेन्द्र पुस्तकें समाप्त करके ही उठा'

श्रुति गुप्ता
अष्टम 'क'

देखते-देखते नरेन्द्र का बचपन बीत गया। किशोरावस्था की वह कगार पर ही खड़ा था जब 16 वर्ष की अवस्था में वह एन्ट्रेंस की कक्षा में आ गया। उसके स्वभाव व गतिविधियों में कुछ परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता था। चतुराई से भरी शैतानियों के स्थान पर उसकी बौद्धिक भूख जाग गई थी। अब वह अखबार पढ़ने, भाषण सुनने, वाद-विवाद करने में आनन्द आने लगा था। उसकी चर्चा, वार्ता वाद-विवाद में विचारों की गहराई व अनोखी सूझबूझ देखकर पिता श्री विश्वनाथ दत्त ने उसके लिए अनेक प्रकार की पुस्तकें लाकर संग्रहित कर दीं। उन्हें लगा कि उनका पुत्र शुष्क बौद्धिक वितंडावाद में नहीं फँसता, अपितु वह तो मूल भावों को ग्रहण करने का पक्षपाती है। अपने से व्यक्ति चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, पुस्तक में लेखन ने कोई भी बात क्यों न लिखी हो वह दोनों की बातों को बिना समझे हुए, बिना परखे हुए कभी मानने को तैयार न होता था।

अपनी इसी बौद्धिक भूख अध्ययनशीलता के कारण उसका मन पाठ्येत्तर पुस्तकों में अधिक लगता था। कैसा आश्चर्य दिखाई पड़ता है कि इण्ट्रेंस की कक्षा में ही उसने बंगला व अंग्रेजी साहित्य की अनेक कठिन प्रसिद्ध पुस्तकें पढ़कर समाप्त कर ली थीं। इतिहास उसकी रुचि का विषय था। इन्हीं सब कारणों से उसकी कक्षा की पढ़ाई उपेक्षित हो गई थी। परीक्षा सिर पर आ गई। केवल तीन दिन शेष थे। ज्यामिति शास्त्र का एक भी अक्षर उसने पढ़ा न था। यही स्थिति उसकी एक दो अन्य विषयों में थी। कोई अन्य क्षेत्र होता तो उसके हौसले पस्त हो गए होते। नरेन्द्र ने आत्म विश्वास खोना न सीखा था।

बस एक रात्रि में नरेन्द्र ने निश्चय कर डाला कि जब तक ज्यामिति शास्त्र का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम समाप्त नहीं होगा वह उठेगा नहीं। घण्टों बीत गए, सारी रात बीत गई वह अपने स्थान से न हिला। देखते-देखते 24 घण्टों में ही उसने उस विषय की चार पुस्तकें समाप्त कर डालीं। प्रत्येक प्रश्न हल हो गया। आज के छात्र को यह बात असम्भव दिखाई पड़ेगी। परीक्षा समाप्त हो गई। पिता को यह जानकर अपूर्व प्रसन्नता हुई कि उनका नरेन्द्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है। उन्होंने उसे भरपूर स्नेह प्रदान किया। (इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम एकाग्रता द्वारा सफलता की ऊँचाइयों को छू सकते हैं।)

महापुरुष

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रशान्त सिंह चौहान
नवम 'क'

डा. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म जिला सिवान के जीरादेई गाँव में विक्रमी संवत् 1941 की अगहन की पूर्णिमा, तद्नुसार 3 दिसम्बर 1884 को हुआ। उस समय कौन कह सकता था कि ऐसे पिछड़े गाँव में जन्म लिए बालक में ऐसी असामान्य प्रतिभा होगी और बड़ा होकर वह बालक 'देशरत्न' के नाम से विख्यात होगा। भारत को गुलामी से मुक्त कराने में प्रमुख रूप से भाग लेगा और भारत जैसे विशाल गणतंत्र का प्रथम राष्ट्रपति बनेगा।

राजेन्द्र प्रसाद के पिता का नाम महादेव सहाय था। राजेन्द्र प्रसाद की तीन बहनें तथा एक भाई था। सबसे बड़ी बहन भगवती देवी, दूसरी बहन अनारकली तथा तीसरी बहन तो बचपन में ही स्वर्ग सिधार चुकी थी। इनका भाई महेन्द्र प्रसाद था जो राजेन्द्र प्रसाद से 8 साल बड़ा था। दोनों भाई एक दूसरे के प्रति समर्पित थे।

राजेन्द्र प्रसाद आठ साल की उम्र तक गाँव में रहे तथा मौलवी साहब से पढ़ते रहे। राजेन्द्र प्रसाद सरल, सुबोध और संकोची स्वभाव के थे। पहली बार आठ साल की उम्र में जीरादेई छोड़कर पढ़ने के लिए छपरा गए। उनकी बचपन से पढ़ने की एक अच्छी आदत पड़ी थी। प्रतिदिन क्लास की पढ़ाई को घर पर पूरा दोहराते थे दूसरे दिन होने वाली पढ़ाई को घर से पढ़कर जाते इसलिए वह परीक्षा में सबसे आगे रहते थे।

पढ़ाई के पश्चात् जब वे वकील बने तो उनकी अच्छी ख्याति हुई। फिर वे वकालत छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम के युद्ध में कूद पड़े। राजेन्द्र प्रसाद बीमारी की अवस्था में 1 अगस्त को सबेरे सदाकत आश्रम (पटना) में गिरफ्तार हुए तथा 9 अगस्त 1942 से 15 जून 1945 तक जेल में रहे। ब्रिटिश सरकार ने 16 मई 1946 को अपनी घोषणा में संविधान सभा की रूपरेखा प्रस्तुत की। भारत को स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् राजेन्द्र प्रसाद सर्वसम्मति से 24 जनवरी 1950 को भारत के राष्ट्रपति चुन लिए गए। उनकी मुद्रा आँखे भुलाई नहीं जा सकती क्योंकि उनसे सच्चाई झलकती थी। उनकी काबिलियत, उनके दिल की सफाई और अपने मुल्क के लिए उनकी मोहब्बत ने उनके लिए हर भारतवासी के दिल में गहरी जगह पैदा कर दी। राजेन्द्र प्रसाद 13 मई 1962 को राष्ट्रपति पद से निवृत्त हुए। इस बीच उन्होंने भारत को एक महान राष्ट्र बनाया। राजेन्द्र प्रसाद 79 वर्ष के थे। देहावसान के दिन उन्हें पटना विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण बिहार विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण सुधांशु ने पढ़कर सुनाया। 28 फरवरी 1963 को वे परलोकवासी हो गए। उनका अंतिम संस्कार पटना के श्मशान घाट पर हुआ। जहाँ अब उनकी समाधि है। जहाँ लोग आज भी उनके निर्वाण दिवस पर फूल चढ़ाने जाते हैं तथा प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रेरक संस्मरण

स्वामिभक्त सरदार – सूरजमल

प्रशान्त सिंह चौहान
नवम 'क'

सन् 1576 की 21 जून। प्रातः आठ बजे का समय है। हल्दी घाटी के मैदान में अकबर की विशाल सेना के सामने अपनी छोटी सी सेना के बीच में चेतक पर सवार महाराणा प्रताप युद्ध के लिए तैयार हैं।

अचानक 'हर-हर महादेव' का गगनभेदी घोष हुआ और राजपूतों ने मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण इतना जोरदार था कि मुगल सेना डेढ़-दो मील पीछे हटने को बाध्य हो गई।

महाराणा की आँखें मुगल सेना के बीच मानसिंह को खोज रहीं थीं, जिससे उसको जाति-द्रोह का दंड दिया जा सके। तभी उन्हें एक हाथी पर हरा झण्डा फहराता दिखाई दिया। मानसिंह भी उसी हाथी पर सवार दिखाई पड़ा।

अपनी सुरक्षा की बिल्कुल चिन्ता न करते हुए प्रताप मुगल सेना को चीरते हुए मानसिंह के हाथी के सामने जा पहुँचे। चेतक ने अपनी अगली टापें हाथी मस्तक पर टिका दीं। प्रताप ने अपने भाले का भरपूर वार मानसिंह पर किया। मान सिंह ने प्रताप के रूप में अपना साक्षात् काल देखा। वह डर कर हौदे में गिर गया। भाला हौदे से टकराया और मानसिंह बाल-बाल बच गया।

इधर मुगल सैनिकों ने अपने सेनानायक को संकट में देखा तो बचाने को दौड़ पड़े। प्रताप चारों ओर से मुगलों से घिर गए। उन पर एक साथ अनेकों वार होने लगे।

इस दृश्य को दूर से प्रताप के वीर सरदार झाला के सूरजमल ने देखा। वह तुरन्त इने-गिने घुड़सवारों को लेकर स्वामी की प्राणरक्षा के लिए वहाँ जा पहुँचा। फुर्ती से उसने प्रताप के सिर से मुकुट लेकर अपने सिर पर रख लिया और उनका क्षेत्र भी ले लिया। फिर प्रताप से निवेदन किया आप तुरंत यहाँ से निकल जाइए। यह अंतिम युद्ध नहीं है। अभी तो संघर्ष का आरम्भ ही है। आगे अनेक युद्ध होंगे जिनमें हिन्दू जाति को आपकी जरूरत होगी।

विवश होकर प्रताप वहाँ से हट गए। मुगलों ने झाला के सरदार के सिर पर मुकुट और छत्र देखा तो उसको ही प्रताप समझ कर टूट पड़े। सरदार ने अनेक मुगलों को यमलोक पहुँचाया, लेकिन बाद में स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुआ।

जिस समय झाला का सरदार गम्भीर रूप से घायल होकर अपने घोड़े से नीचे गिरा, उस समय उसके मुख पर अद्‌भुत मुस्कराहट थी, मानों कह रहा हो – मुझे मरने का दुख नहीं, संतोष इस बात का है कि मैंने जिस काम को स्वयं अपने ऊपर लिया था, उसको पूरा कर सका।

सुभद्र की कथा

रोहन वर्मा
अष्टम 'क'

भगवान बुद्ध जीवन भर अज्ञानी और भूले-भटकों को सद्मार्ग दिखाकर जब वृद्धावस्था और निर्बलता के कारण मृत्यु शैय्या पर पड़ गए तो सुभद्र नामक परिव्राजक ने यह समाचार सुना। उसने सोचा कि बुद्ध जैसे महापुरुष रोज-रोज पैदा नहीं हुआ करते। मेरी धर्म संबंधी शंकाओं के निवृत्त होने का अवसर फिर कभी न मिल सकेगा। इसलिए वह शालवन में, जहाँ भगवान बुद्ध उस समय विश्राम कर रहे थें, जा पहुँचा और आनंद से कहा "मेरे हृदय में धर्म संबंधी कुछ शंकाएँ हैं। यदि उन्हें इस समय न मिटा सका तो वे फिर कभी न मिट सकेंगी। कृपया मुझे भगवान के दर्शन कराइए।" उस समय आनंद ने कहा-

"सुभद्र! यह भगवान से शंका समाधान करने का समय नहीं है। भगवान निर्वाण शैय्या पर हैं। अब उन्हें कष्ट मत दो।"

"आनंद! मुझे भगवान के दर्शन कर लेने दो।" सुभद्र ने कहा

"सुभद्र! अब उन्हें कष्ट मत दो।" पुनः आनंद ने कहा।

आनंद और सुभद्र के कथोपकथन की अस्पष्ट ध्वनि बुद्ध के कानों में पहुँची। जिन्होंने आजीवन सब प्रकार के लोगों पर सद्विचारों की वर्षा की हो, वह अंतिम समय में उसके विपरीत कैसे चल सकते थे? उन्होंने कहा - "आनन्द! सुभद्र को मत रोको। आने दो। वह ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा से आया है, मुझे कष्ट देने के विचार से नहीं।"

सुभद्र ने पास जाकर करुणा की उस शांत मूर्ति को देखा। तथागत के उपदेश उसके हृदय से तुरंत प्रविष्ट हो गए। उसने कहा - "भंते? मैं बुद्ध धर्म और संध की शरण में जाता हूँ। मुझे आप भिक्षु बना लें।"

बुद्ध ने कहा- "सुभद्र! संघ का नियम है कि किसी दूसरे संप्रदाय का प्रव्रजित व्यक्ति यदि बौद्ध संघ में सम्मिलित होना चाहे तो उसे चार मास तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।"

"भंते! चार मास तो क्या, मैं चार वर्ष तक प्रतीक्षा करने को तैयार हूँ"।

बुद्ध - "तो आनंद! सुभद्र को अभी प्रव्रजित करो।" सुभद्र ही बुद्ध भगवान का अंतिम शिष्य हुआ।

मृत्यु को निकट खड़ी देखकर भी जो परोपकार से मुख न मोड़े-वे ही सच्चे महापुरुष और आत्मज्ञानी हैं। नहीं तो अधिकांश व्यक्ति प्राण-संकट की अवस्था में सब कुछ भूलकर जान बचाने के

लिए हाथ पैर पीटने लगते हैं। सामान्य व्यक्ति सदा 'आप मरे तो जग डूबा' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले होते हैं, पर आत्म तत्त्व के वास्तविक ज्ञाता मृत्यु की नाममात्र को भी चिंता नहीं करते और उस समय भी जितने क्षण किसी की सेवा सहायता में लग सकें, उसे ही मरते-मरते जीवन का सार समझते हैं। बुद्ध भगवान का सुभद्र की शंका समाधान करना एक ऐसा ही कार्य था। उनके इस उदाहरण से हमको यह शिक्षा मिलती है। कि - मृत्यु का भय निरर्थक है और उसकी संभावना देखकर घबरा जाना, कर्तव्य-कर्म से विमुख हो जाना और भी हेय है। जब वह एक अनिवार्य बात है और उसको भय अथवा घबराहट द्वारा हटाया भी नहीं जा सकता तो हम क्यों न उसकी तरफ से निर्भय रहें। वह कब आएगी, इसकी परवाह न करके अंतिम क्षण तक कर्तव्य पालन की भावना को जीवित तथा जागृत रखना ही श्रेष्ठ व्यक्तियों का लक्षण है और वे जीवन का लाभ डरने और भागने वाले लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक प्राप्त कर लेते हैं।

ईमानदारी का फल

अंकित गुप्त
नवम 'ख'

एक बार की बात है कि राजू नाम का एक लड़का था। बहुत गरीब था। वह पढ़ना चाहता था। एक बार वह एक विद्यालय में प्रवेश लेने हेतु गया। जब राजू ने उस विद्यालय के प्रधानाचार्य से अपने प्रवेश के विषय में बात की तो प्रधानाचार्य ने राजू को विद्यालय के मासिक शुल्क के विषय में बताया। राजू ने प्रधानाचार्य जी से कहा कि मैं अत्यन्त गरीब हूँ जिससे मैं विद्यालय शुल्क जमा करने में असमर्थ हूँ। इतना सुनना ही था कि उस विद्यालय के प्रधानाचार्य ने राजू को अपने कक्ष से निकाल दिया। जब राजू निराश मन से लौट रहा था कि उसे विद्यालय प्रांगण में पचास रुपये पड़े मिले। राजू ने उन रुपयों को उठाया और फिर प्रधानाचार्य के कक्ष में गया। प्रधानाचार्य ने राजू को देखकर कहा कि अब क्या लेने आये हो? राजू ने उत्तर दिया, कि मैं लेने नहीं बल्कि देने आया हूँ। राजू ने कहा कि मुझे विद्यालय प्रांगण में पचास रुपये मिले हैं, जिसे मैं लौटाने आया हूँ। इतना सुनना ही था कि प्रधानाचार्य जी अत्यन्त विस्मित हुए और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद देते हुए राजू को विद्यालय में प्रवेश दे दिया। इस प्रकार राजू ने अपनी ईमानदारी के बल पर विद्यालय में प्रवेश पाया।

शिक्षा- इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि ईमानदारी की बदौलत हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

गौतम बुद्ध

गीतांशु सिंह
अष्टम 'क'

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में नेपाल की तराई में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक ग्राम में हुआ था। गौतम बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोदन तथा माता का नाम महामाया था। गौतम बुद्ध के पिता शाक्य गणराज्य के प्रमुख क्षत्रिय थे। सिद्धार्थ का पालन-पोषण इनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया। गौतम बुद्ध के के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। ज्ञान-प्राप्ति के बाद गौतम को 'बुद्ध' या 'तथागत' कहा जाने लगा। सिद्धार्थ ने गृह-त्याग 29 वर्ष की अवस्था में किया था। नगर-विहार के समय गौतम बुद्ध द्वारा देखे गए चार दृश्यों ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया। वे दृश्य हैं 1. एक वृद्ध, 2. एक रुग्ण, 3. एक शव तथा एक प्रसन्न सन्यासी। घर से निकलने के बाद गौतम बुद्ध पहले वैशाली के आचार्य आलार कलाम से तथा बाद में राजगृह के आचार्य रुद्रक अथवा रामपुत्र से मिले। गौतम बुद्ध ने उरुवेला (बोधगया) में पाँच ब्राह्मण साथियों के साथ तपस्या की। गौतम बुद्ध के प्रथम उपदेश देने की इस घटना को 'धर्मचक्र परिवर्तन' कहा जाता है। धर्म-प्रचार के सिलसिले में गौतम बुद्ध मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे जहाँ चन्द सुनार के द्वारा दिए गए भोजन करने से इन्हें रक्तातिसार हो गया। बुद्ध पावा से कुशीनगर आए, जहाँ 80 वर्ष की अवस्था में 483 ई. में उनका देहान्त हो गया। बौद्ध धर्म में उनकी मृत्यु को महापरिनिर्वाण कहा जाता है। गौतम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति के लिए नैतिक जीवन पर जोर दिया था। बुद्ध ने आत्मवाद का सिद्धान्त किया।

कहानी

राजा की दयालुता

आशीष यादव
सप्तम 'क'

महाराजा रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे। अचानक एक ढेला उन्हें आकर लगा। महाराजा को चोट लगी। वे चोट सहलाने लगे। सिपाही दौड़े और एक बुढ़िया को पकड़कर ले आये। बुढ़िया डर के मारे थर-थर काँप रही थी। बोली - "दुहाई है सरकार! मेरा कोई कसूर नहीं। मैंने आपको ढेला नहीं मारा। तीन दिन के भूखे बच्चे को खिलाने के लिए बेल तोड़ रही थी जब मैंने ढेला मारा तो तो बेल के ऊपर से लगकर आपके लग गया। बुढ़िया बोली "क्षमा कर दो राजन"। यह सुनकर महाराजा को बुढ़िया पर दया आ गयी। उन्होंने तुरन्त हुक्त दिया- "बुढ़िया को खाने-पीने का भरपूर सामान दो और साथ में एक हजार सोने की मोहरे नकद दो।"

संपन्न वही है, जिसमें गहरी मानवता हो।

कुण्डलिया

दुर्गेश वाजपेयी
आचार्य

धीरज कभी न छोड़िये, रहे प्रात की आस।
आज अगर पतझार है, होगा फिर मधुमास॥
होगा फिर मधुमास, यही है सम्बल अपना।
लिए स्वाति की आस, जिये चातक का सपना॥
भ्रमर हो गया बन्द, कोश में जैसे नीरज।
होगा कभी प्रभात, यही है अलि का धीरज॥

चोरी पर चोरी हुई, हुई लूट पर लूट।
मनमोहन की पर नहीं, पाई चुप्पी टूट॥
पाई चुप्पी टूट, हुए इतने घोटाले।
सरकारी सम्पत्ति के सभी तोड़कर ताले॥
कह कविवर दुर्गेश, कोयले की है चोरी।
राजा कलमाड़ी सभी, करते मिलजुल चोरी॥

शिवाजी

प्रांजुल ओमर
अष्टम 'ख'

मराठा राज्य के संस्थापक शिवाजी का जन्म 1627 ई. को पूना के निकट शिवनेर में हुआ था। शिवाजी के पिता शाह जी भोसले बीजापुर राज्य की सेना में नियुक्त थे। शिवाजी की माँ का नाम जीजाबाई था। शिवाजी के गुरु का नाम समर्थ गुरु स्वामी रामदास था। शिवाजी ने 19 वर्ष की आयु में 1646 ई. में कुछ लोगों का एक दल बनाकर पूना के निकट स्थित तोरण के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। शिवाजी ने 1646 ई.में ही बीजापुर के सुल्तान रायगढ़, चाकन तथा 1647 ई. में बारामती, इन्द्रपुर, सिंहगढ तथा पुरंदर का दुर्ग भी छीन लिया। 1656 ई. में शिवाजी ने अपनी राजधानी रायगढ़ बनाई। 1663 ई. में पूना में शिवा जी ने मुगल सेना को परास्त किया। ओमर का राजा जयसिंह एक चतुर कूटनीतिज्ञ था। उसने शिवाजी के शत्रुओं को अपनी ओर मिलाकर शिवा जी के किलों पर अधिकार कर लिया। शिवा जी को 1 जून 1665 ई. में अपने पुत्र शम्भा जी के साथ भाग गये। 1670 ई. में उन्होंने विद्रोह करके मुगलों की अधीनता में चले जाने वाले अपने सभी दुर्गों पर पुनः कब्जा कर लिया। 1674 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ के दुर्ग में महाराष्ट्र के स्वतन्त्र शाक के रूप में अपना राज्याभिषेक भी कराया और 'छत्रपति' की उपाधि धारण की। 12 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गई।

कहानी

झूठ का फल

आशीष यादव
सप्तम 'क'

किसी गाँव में एक लड़का रहता था। वह गाँव के बाहर खेत में लगी फसल की रखवाली करता था। एक रात उसने चिल्लाना शुरु किया- "भेड़िया आया। भेड़िया आया। बचाओ! बचाओ!!" गाँव के लोग उसकी पुकार सुनकर उसे बचाने के लिए दौड़ पड़े ज्योंही लोग जमा हुए, लड़का हँसने लगा। भेड़िये का पता न था। दूसरी रात वह लड़का फिर उसी तरह चिल्लाने लगा। इस बार गाँव के बहुत कम लोग आये। लड़के ने फिर पुरानी हरकत की थी। गाँव के लोग समझ गये कि लड़का हम लोगों को बेवकूफ बनाता है। तीसरी रात सचमुच भेड़िया आया। उसने जोर से हल्ला किया। किन्तु इस बार एक भी आदमी न आया भेड़िया लड़को को खा गया।

झूठ बोलने का परिणाम यह नहीं तो और क्या हो?

ईमानदारी का फल

राहुल रंजन
षष्ठ 'ख'

एक लड़का था। जिसका नाम टप्पू था। उसके पिता एक मामूली से किसान थे। टप्पू अपने वर्ग में हमेशा प्रथम आता था। वह पढ़ने में बहुत तेज था। वह गाँव के एक छोटे से विद्यालय में पढ़ने जाया करता था। जब वह वर्ग 10 में गया तो उसके पिता के पास टप्पू को पढ़ाने का पैसा न था। जिसके कारण टप्पू को पढ़ाई छोड़नी पड़ी। एक दिन उसके पिता ने उसे शहर से कुछ सामान लाने को कहा। तो टप्पू सामान लेने शहर चला गया। जिस दुकान में टप्पू सामान खरीद रहा था उसी दुकान के बगल की दुकान में एक सेठ भी सामान खरीद रहा था। जब सेठ ने अपने सामान का पैसा देकर अपना बटुआ पैकेट में रखा परंतु गलती से बाहर रख दिया और बटुआ नीचे गिर गया। तब टप्पू की नजर उस बटुए पर पड़ी और उसने तुरंत उस बटुए को उठा लिया और एक सुनसान जगह पर जाकर उसने उस बटुए को खोलकर देखा तो उसमें बहुत सारे पैसे थे। उस व्यक्ति की तस्वीर तथा उसका ड्राइविंग लाइसेंस था। टप्पू ने झट से लाइसेंस से उसका नंबर देखा और झट से एक फोन बूथ पर जाकर उस नंबर पर फोन किया और सेठ को उस स्थान पर बुलाया जहाँ पर सेठ का पर्स गिरा था। जब वह आदमी आया तो देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि उसका बटुआ एक लड़के के पास है। लड़के ने झट से सेठ को बटुआ दे दिया। तब सेठ ने उस लड़के से उसका नाम पूछा। लड़के ने उसे अपना नाम टप्पू बताया। फिर सेठ ने पूछा तुम्हारे पिता क्या करते हैं। टप्पू ने कहा मेरे पिताजी एक किसान है। सेठ ने पूछा कि तुम पढ़ने जाते हो। तब टप्पू रोने लगा और बोला मेरे पिता जी के पास मुझे पढ़ाने के लिए पैसे नहीं है। सेठ तुरंत टप्पू को अपनी कार में बैठाकर उसके घर गया वहाँ टप्पू के पिता डरे हुए थे। तभी उसके घर के आगे एक कार आकर रुकी उसमें से जब टप्पू बाहर निकला तो उसके पिता आश्चर्यचकित हो गये। तब सेठ टप्पू का हाथ पकड़कर उसके घर ले गया। सेठ ने टप्पू के पिता को सब बातें बताई और कहा कि टप्पू अब पढ़ने के लिए शहर जा रहा है। तब उसका पिता सेठ के पाँव पकड़कर रोने लगा। इसी पर तो कहा गया है कि ईमानदारी का फल मीठा होता है।

कहानी

घर आये भगवान

अनुज ओमर
अष्टम 'क'

कुछ समय पहले जापान के एक गाँव में एक गरीब बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों आसपास के जंगलों में काम करते थे और दो वक्त का खाना कमा लेते थे। उनके इलाके में बर्फ पड़ती रहती थी। नए साल के आने में कुछ ही दिन रह गए थे। उनके पास पैसे भी नहीं थे कि और सामान खरीद सकें।

बुढ़िया कुछ दिनों से चावल के लंबे तिनकों से सिर ढ़कने वाले सुंदर हैट बना रही थी। वह अब तक चार हैट बेंच चुकी थी। उसने अब तक चार हैट बना ली थी। उसने अपने पति से कहा - जाओ ये हैट शहर में बेंच आओ नया साल आने वाला है।

बूढ़े ने अपनी पत्नी को देखा और हँसते हुए बोला-सुबह जाकर शहर में बेच आऊँगा और दोनों सो गए। सुबह वह उठकर शहर की ओर जाने लगा तब उसकी पत्नी ने उसको अपना स्कार्फ दे दिया। वह चला गया। रास्ते में एक बौद्ध मंदिर पड़ा वह वहाँ विश्राम करने के लिए रुक गया। उसने वहाँ स्थापित बुद्ध की पाँच अष्ट धातु मूर्तियों को देखा जिन पर बर्फ जमा हुई थी। उसने बर्फ को साफ कर दिया और शहर की ओर चल दिया। वह वहाँ पहुँचकर दिन भर चिल्लाता रहा-हैट ले लो, हैट ले लो। परन्तु किसी ने भी हैट नहीं ली।

वह निराश होकर वापस लौटने लगा। रास्ते में उसे बौद्ध मंदिर मिला। वह वहाँ पर रुक गया। उसने देखा वहाँ पर बुद्ध प्रतिमाओं पर बर्फ जम गई थी। उसने सोचा कि भगवान को ठण्ड लग रही होगी।

इसलिए उसने चार हैटों को एक-एक करके भगवान के सिर पर रख दिया। उसने बुद्ध की पाँचवी मूर्ति पर स्कार्फ उतारकर बाँध दिया। और घर की ओर वापस चल दिया।

उधर उसकी पत्नी उसका इंतजार कर रही थी। अचानक उसके दरवाजे की कुण्डी खटकी। उसने दरवाजा खोला। 5 युवक हाथों में अन्न, सोना, चाँदी के बोरे लिए खड़े थे। उन्होंने कहा आपके पति ने यह सब भिजवाया है उन्होंने जो 4 हैट बेंची थी यह उसी का मूल्य है। उन पाँचों में चार युवक हैट और एक युवक स्कार्फ बाँधे हुये था। वह पाँचों वापस लौट गये। उसके थोड़े समय बाद ही उसका पति वापस आ गया। उसने कहा मैंने किसी को नहीं भेजा था। उसके थोड़े समय पश्चात् उन्हें आभास हुआ। वे युवक भगवान बुद्ध के स्वरूप थे।

नन्हे बच्चे का वह संदेश याद है

रोहित आजाद
अष्टम 'ख'

एक बार मैं परीक्षा देने नई दिल्ली जा रहा था। स्टेशन पहुँचकर मैं गाड़ी का इंतजार करने लगा। मुझे प्यास लगी, तो मैं तुरंत प्लेटफार्म पर बनी टंकी के पास पानी पीने चला गया। मैंने पानी पिया और टंकी का नल बंद करना भूल गया। जैसे ही मैं पलटकर जाने को हुआ, तभी पास बैठे एक दंपत्ति का बच्चा उठकर बोला, 'भैया, आपने नल बंद नहीं किया है।' मैं भौंचक्का रह गया और बच्चे की तरफ देखने लगा। बच्चे ने फिर वही बात दुहराई, तो मेरा ध्यान नल की तरफ गया। तब तक दूसरा यात्री नल के पास पहुँच चुका था और वह पानी पीने लगा। मैंने बच्चे से क्षमा माँगते हुए कहा, 'असल में मैं जल्दबाजी में था, इसलिए शायद नल खुला रह गया।' यह सुनकर बच्चा हँस पड़ा। आसपास के लोग भी बच्चे के मुख से जागरूकता भरी बातें सुनकर खुश हो रहे थे। तभी एक बुजुर्ग ने कहा, 'आज इस बच्चे ने जो बात कही है, वह वाकई ध्यान देने योग्य है। इसने अनजाने में ही हमें पानी की कीमत बता दी है।' तब तक दूसरे यात्री ने भी उसका समर्थन किया और वहाँ मौजूद सभी लोगों ने पानी की कीमत को महत्व देते हुए ऐसी सावधानी बरतने की बात कही। मैं वहाँ से चल पड़ा। रास्ते भर में अपनी गलती के बारे में सोंचता रहा और रह-रहकर मुझे बच्चे की बात याद आती रही। उस दिन से मैंने भी पानी की बरबादी नहीं करने की कसम खाई। आज भी मैं दोस्तों रिश्तेदारों को उस घटना के बारे में बताता हूँ, ताकि उन्हें भी जल संरक्षण के बारे में याद रहे।

ईमानदारी का फल

आकाश गुप्त
षष्ठ 'ग'

एक समय की बात है। दो व्यक्ति एक गाँव में रहते थे। एक आदमी का नाम राम था और दूसरे का नाम सुरेश था। राम एक ईमानदार व्यक्ति था और सुरेश बेईमान था। वे दोनों अपने-अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। एक बार राम लकड़ी काटने जा रहा था तो उसे एक बुढ़िया मिली, वो बहुत कमजोर थी अचानक वह गिर पड़ी। तो राम ने देखा कि वह उठ भी न पा रही थी। राम जल्दी से भागा और उसे उठाया और कहा - कि तुम्हारा इस दुनिया में क्या कोई नहीं? बुढ़िया ने कहा - कि मेरा बेटा एक बहुत बड़ा अफसर है। आओ मैं तुम्हें उससे मिलाती हूँ। उस बुढ़िया ने अपने बेटे से मिलाया। बेटा कहता तुम्हें ये चोट कैसे लगी और कौन है? बुढ़िया बोली - कि आज मैं रास्ते में गिर गई थी और मैं उठ भी नहीं पा रही थी तब इसने मुझे उठाया। बेटा बोला-राम आज से तुम्हारी खुद की फर्नीचर की फैक्ट्री है तुम उसके मालिक हो। जबकि राम ने देखा तो नौकरों की कतार में उसका पड़ोसी सुरेश भी था। तब सुरेश ने देखा कि मुझसे कम पैसे कमाता था अब तो मेरा मालिक है तब से उसने ठान लिया कि आज से क्या, मैं अभी से ईमानदारी के रास्ते पर चलूँगा और सबके प्रति समर्पण का भाव रखूँगा।

संस्मरण

एलेक्जैंडर ग्राहम बेल

आशुतोष गुप्त
अष्टम 'ख'

एलेक्जैंडर ग्राहम बेल का जन्म 3 मार्च 1847 ई. में स्कॉटलैण्ड में हुआ। उस नौजवान का उत्तेजित होना स्वाभाविक था। सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो उसकी किस्मत जागने में अब कोई देर न थी। लेकिन समय के साथ न देने पर उसके बर्बाद हो जाने में भी कोई संदेह न था। उस नौजवान का नाम था - एलेक्जैंडर ग्राहम बेल। वाशिंगटन में उसने उस उपकरण का ब्यौरा जमा करा दिया था, जिसका आविष्कार बेल ने मनुष्य की आवाज को तार से एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने के लिए किया था। उस उपकरण का नाम था - टेलीफोन लेकिन अभी तक इसका कोई व्यवहारिक मॉडल उपलब्ध न था। अभी तक बेल अपने टेलीफोन के जरिए केवल अस्पष्ट और अनिश्चित शोर भेज पाने में ही सफल रहा था। लेकिन उसे विश्वास था कि सफलता अधिक दूर न थी। दुनिया को हिलाकर रख देने वाला आविष्कार करना ही एजेक्जैंडर ग्राहम बेल के जीवन का सपना था। उन्होंने अपने लिए एक ऐसी चीज की खोज कर ली थी, जो उन दिनों करीब-करीब क्रान्तिकारी थी। वह यह कि कड़ी कार्यशैलियों की अपेक्षा, जिन्हें उन दिनों स्कूल में आमतौर पर अपनाया जाता था, सहानुभूति व धैर्य से काम लेने पर बच्चे कहीं अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे। उन्होंने कठिन परिश्रम किया ताकि उनके बधिर छात्र ध्वनि जगत को समझ सकें और इसका अनुभव कर सके। अपनी व्यस्तता के बावजूद बेल को वैज्ञानिक प्रयोग करने के अपने शौक से बेहद आनंद मिलता था। उन्हें लगा कि टेलीग्राफी सनसनीपूर्ण और पहुँच के भीतर थी। इसके लिए थोड़े उपकरणों की जरूरत थी तथा इन्हें आसानी से हासिल किया जा सकता था, या घर पर ही बनाया जा सकता था। विज्ञान में अपनी इस शौकिया दिलचस्पी की वजह से ही बेल को अपने समय की दिलचस्प नई प्रौद्योगिकी से परिचय हुआ। बेल की टेलीग्राफी में बहुत दिलचस्पी थी। अपनी किशोरावस्था में उन्होंने अपने एक दोस्त के साथ मिलकर अपने मकानों के बीच तार की एक लाइन बिछाई थी, जिसके जरिये वे कोड में संदेश भेजते थे। एक साधारण तार रिसीवर बिजली का करंट मिलते ही सक्रिय हो उठता था। एलेक्जैंडर के संनादी तार का सिद्धांत यह था कि ट्रांसमीटर और रिसीवर में उनके इस्पाती रीड थे जिनमें से प्रत्येक युग्म में एक भिन्न तारत्व से समस्वरित था। रीड के प्रत्येक जोड़े के बीच एक साथ संदेश भेजा जा सकते थे, लेकिन रिसीवर में लगा रीड करंट प्रवाहित करने के लिए समान तारत्व वाला ट्रान्समीटर रीड प्रयुक्त किए जाने पर ही सक्रिय हो सकता था। रीड के लिए चुने गए तारत्वों के बीच काफी दूरी रखनी पड़ती थी, जिससे ट्रांसमीटर के एक से अधिक रीड के प्रति सक्रिय होने की संभावना न रहे।

हमेशा की तरह, एलेक्जैंडर और मैं बेल गर्मियों में बैडेक बे पहुँचे, क्योंकि वाशिंगटन उन्हें काफी गर्म लगा। जुलाई के अन्त में अचानक बेल को कमजोरी महसूस होने लगी और उन्हें भूख लगनी भी बंद हो गई। 2 अगस्त 1922 को उनका निधन हो गया।

तुम बदलोगे तो दुनिया तुम्हारे लिए स्वतः बदल जाएगी

अलंकृत गुप्त

यह सत्य है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है किन्तु उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानव भी प्राणिजगत् में बुद्धि व बल के शीर्ष पर है। यदि मानव चाहे तो कुछ भी कर सकता है। उसे कार्य करने के लिए सच्ची लगन व पूर्ण आत्मविश्वास की आवश्यकता है। आज मानव ने हर क्षेत्र में उन्नति की है किन्तु किन्हीं कारणवश मानव में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं, जिससे वह आज अनुचित पथ में चला गया है। इस कारणवश उसे अच्छाई-बुराई व भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता और जाने या अनजाने वह प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। किन्तु जब तक उसे पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है और फिर वह न चाहते हुए भी धीरे-धीरे इस ही दलदल में घुसता चला जाता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह कभी भी सुधर नहीं सकता। ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो तथा ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसको मनुष्य कर नहीं सकता है। बस इसके लिए उसे दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। यदि मनुष्य आत्मज्ञान उत्पन्न कर ले तो वह अपने अन्दर की हर बुराई को समाप्त कर सकता है। इसके लिए उसे अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए तथा सज्जन पुरुषों का सानिध्य प्राप्त करना चाहिए। यदि मनुष्य बुरी संगति में रहेगा तो बुरा ही होता जाएगा क्योंकि कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, अपितु बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिराती जाएगी और उसको पता भी नहीं चलेगा तथा जब पता चलेगा तब वह स्वयं को ऐसे अंधकारमय गड्ढे में प्राप्त करेगा जहाँ से वह चाहकर भी नहीं निकल सकेगा। इसी के विपरीत यदि संगति अच्छी होगी तो सहारा देने वाली भुजाओं के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाएगी तथा कुसंग से बचाएगी। इस प्रकार यदि मनुष्य सत्संगी रहेगा तो वह तथा उसके साथ-साथ ही उसके चारों ओर का वातावरण भी अच्छा रहेगा। जिस प्रकार दीपक की ज्योति से प्रकाश चारों दिशाओं में प्रसारित हो जाता है, उसी प्रकार अब महापुरुषों के जीवन प्रसंग हमारे अज्ञान को नष्ट करके ज्ञान की ज्योति जला देते हैं।

एक बार की बात है एक डाकू नित्य लोगों से लूट-पाट करके उनसे धन एकत्रित करता था तथा उससे अपने परिवार को खुश रखता था। ऐसा करते-करते बहुत समय व्यतीत हो गया और एक बार उसने वहाँ से गुजर रहे साधु को भी लूटने का प्रयास किया। इस पर साधु ने अपने पास से उसे सब कुछ दे दिया तथा उससे पूछा, ''तुम यह किसके लिए करते हो?'' तब डाकू ने उत्तर दिया, ''मैं यह सब अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए करता हूँ।'' उस साधु ने फिर कहा, ''क्या वे सभी लोग

यह सत्य है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है किन्तु उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानव भी प्राणिजगत् में बुद्धि व बल के शीर्ष पर है। यदि मानव चाहे तो कुछ भी कर सकता है। उसे कार्य करने के लिए सच्ची लगन व पूर्ण आत्मविश्वास की आवश्यकता है। आज मानव ने हर क्षेत्र में उन्नति की है किन्तु किन्हीं कारणवश मानव में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं, जिससे वह आज अनुचित पथ में चला गया है। इस कारणवश उसे अच्छाई-बुराई व भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता और जाने या अनजाने वह प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। किन्तु जब तक उसे पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है और फिर वह न चाहते हुए भी धीरे-धीरे इस ही दलदल में घुसता चला जाता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह कभी भी सुधर नहीं सकता। ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो तथा ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसको मनुष्य कर नहीं सकता है। बस इसके लिए उसे दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। यदि मनुष्य आत्मज्ञान उत्पन्न कर ले तो वह अपने अन्दर की हर बुराई को समाप्त कर सकता है। इसके लिए उसे अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए तथा सज्जन पुरुषों का सानिध्य प्राप्त करना चाहिए। यदि मनुष्य बुरी संगति में रहेगा तो बुरा ही होता जाएगा क्योंकि कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, अपितु बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढ़े में गिराती जाएगी और उसको पता भी नहीं चलेगा तथा जब पता चलेगा तब वह स्वयं को ऐसे अंधकारमय गड्ढे में प्राप्त करेगा जहाँ से वह चाहकर भी नहीं निकल सकेगा। इसी के विपरीत यदि संगति अच्छी होगी तो सहारा देने वाली भुजाओं के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाएगी तथा कुसंग से बचाएगी। इस प्रकार यदि मनुष्य सत्संगी रहेगा तो वह तथा उसके साथ-साथ ही उसके चारों ओर का वातावरण भी अच्छा रहेगा। जिस प्रकार दीपक की ज्योति से प्रकाश चारों दिशाओं में प्रसारित हो जाता है, उसी प्रकार अब महापुरुषों के जीवन प्रसंग हमारे अज्ञान को नष्ट करके ज्ञान की ज्योति जला देते हैं।

एक बार की बात है एक डाकू नित्य लोगों से लूट-पाट करके उनसे धन एकत्रित करता था तथा उससे अपने परिवार को खुश रखता था। ऐसा करते-करते बहुत समय व्यतीत हो गया और एक बार उसने वहाँ से गुजर रहे साधु को भी लूटने का प्रयास किया। इस पर साधु ने अपने पास से उसे सब कुछ दे दिया तथा उससे पूछा, ''तुम यह किसके लिए करते हो?'' तब डाकू ने उत्तर दिया, ''मैं यह सब अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए करता हूँ।'' उस साधु ने फिर कहा, ''क्या वे सभी लोग

तुम्हारे इन पाप कर्मों के फल भोगने में तुम्हारा साथ देंगे? तब डाकू असमंजस में पड़ गया और उसने साधु को पेड़ से बाँध दिया व अपने घर की ओर चल दिया। उसने अपने परिवारी जनों से पूछा, ''मैं जो यह धन लूटकर तुम्हें देता हूँ तो तुम लोग मेरे दण्ड में भी क्या मेरा साथ दोगे?'' इस पर सभी का उत्तर 'न' ही था। यह सुनकर वह डाकू तुरन्त भागकर उन महात्मा के पैरों में गिर गया और उनसे

संस्मरण

गुलियेल्मो मार्कोनी

आशुतोष गुप्त
अष्टम 'ख'

गुलियेल्मो मार्कोनी का जन्म 25 अप्रैल 1874 को इटली के प्राचीन नगर बोलोन्या में हुआ था। उनकी माता आयरिश थीं और पिता इटालियन थे। पर उनका लालन-पालन बोलोन्या से सत्रह किलोमीटर दूर पहाड़ियों के बीच अपने पिता की पैतृक जागीर में हुआ। यहाँ पर विला ग्रिफोन नामक घर में ही उनके जीवन की उपलब्धियों का सूत्रपात हुआ। गुलियेल्मो के पिता ग्यूसेप को विला ग्रिफोन और इसकी जागीर अपने पिता से मिली थी। गुलियेल्मो का जन्म हुआ तो उनके पिता पचास वर्ष के हो चुके थे। अपने खेत-बागान में सक्रिय, कीटों के पालन में व्यस्त और अपने पुस्तकालय में डूबे उनके पिता सर्वाधिक खुशहाली का जीवन जी रहे थे। गुलियेल्मो की प्रारंभिक शिक्षा घर में ही विला ग्रिफोन, लेगहॉर्न और फ्लोरेंस में हुई थी। उनके माता-पिता ने एक शिक्षक का प्रबंध किया, ताकि वे दोनों भाई इटालियन भाषा भली-भाँति सीख लें और विला ग्रिफोन तथा जाड़ों में ऊष्ण स्थानों के बीच अनवरत आवाजाही के दौरान भी उनकी पढ़ाई में कोई रुकावट न आए। गुलियेल्मो को पढ़ाना कोई आसान काम नहीं था। वे इस शिक्षक से पढ़ना पसंद नहीं करते थे और अक्सर पढ़ाई से दूर भागते थे। वे ऐसे कामों में लगे रहते जो उन्हें अधिक महत्त्वपूर्ण जान पड़ते थे। स्कूल की पढ़ाई में तमाम पिछड़ेपन के बावजूद गेलियेल्मो ऐसे विषयों में पर्याप्त रुचि लेते थे जिन्हें वे स्वयं महत्त्वपूर्ण समझते थे। कम उम्र होने के बावजूद उन्हें अपने पिता के पुस्तकालय की पुस्तकों में तल्लीन होने का शौक था। प्राचीन ग्रीस के इतिहास और मिथकों में उनकी बड़ी दिलचस्पी थी। यह कई लोगों के प्रयासों का फल था। एक शोधकर्ता ने यह पाया कि जस्ते व चाँदी के रेशों के बीच विद्युत प्रवाहित करने पर वे आपस में चिपक जाते थे। गुलियेल्मो ने यही सब संबद्ध रूप से किया। उन्होंने प्रेरक-कुंडली और स्फुलिंग-अंतराल के बीच बैटरी को जोड़ा। कुछ मीटर के फासले पर ससंजक, फिर बैटरी तक घंटी।

एक दिन मार्कोनी अपनी अटारी पर किसी की प्रतीक्षा में बेचैन खड़े थे। उन्होंने सामने पहाड़ी की चोटी पर एक आखिरी नजर डाली। फिर एक पट्टे पर लगे धातु के उत्तोलक पर सावधानी से थपकी दी। एक बार दो बार तीन बार....

सहसा एक धमाका अंगूर के बागानों, खेतों और पहाड़ी के आरपार गूँजता हुआ उस नवयुवक तक आ पहुँचा। अटारी से उसकी मशीन द्वारा भेजा गया संकेत प्रकाश की गति से घाटी के उस पार

उसके भाई ने हवा के कंपनों को ग्रहण कर लिया था और अपनी राइफल से जोरदार आवाज से सफलता की घोषणा की थी। एक दिन अन्य लोगों के लिए बेतार का सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया। लंदन के जनरल पोस्ट आफिस की छत पर गुलियोल्मो ने अपने उपकरण को जोड़कर तैयार किया। यह 27 जुलाई 1896 का दिन था। ऐसा दिन जो इतिहास में बेतार के सार्वजनिक प्रदर्शन के रूप में अंकित हो चुका है।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो गेलियेल्मो ने अपना मोर्स लीवर दबाया। लगभग एक किलोमीटर दूर एक दूसरे मकान की छत पर स्थित मोर्स मुद्रण यंत्र पर संदेश सीधे-सीधे छत पर आए इसे सबने अपनी आँखों से देखा।

गेलियेल्मो मार्कोनी काफी बीमार हो गए थे और अंतत: 20 जुलाई 1937 की सुबह उनका देहान्त हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार बेतार से सारी दुनिया में फैल गया।

वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु

शिखर सेंगर
अष्टम 'ख'

जगदीश चन्द्र बसु का जन्म 30 नवम्बर 1858 को बंगाल के ढाका जिले के निकट राडीखाल नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री भगवान् दास डिप्टी कलेक्टर थे। भारत में शिक्षा प्राप्त कर ये उच्च शिक्षा के लिये विदेश गए। वहाँ इन्होंने सी.बी.एस.सी. की परीक्षा पास की। भारत लौटकर वे प्रेसीडेंट कालेज में विज्ञान के अध्यापक नियुक्त हो गए। उस समय भारतीय अध्यापकों को अंग्रेज अध्यापकों के समान वेतन नहीं मिलता था। उन्होंने आविष्कारों के लिए अपने घर पर विज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना की। इन्होंने बेतार के तार का आविष्कार किया। इसी के साथ इन्होंने विद्युत तरंगों का आविष्कार किया। इनके आविष्कारों और लेखों से देश विदेश में हलचल मच गयी। उनको सम्मान के साथ बुलाया जाने लगा। वे राजकीय अतिथि के रूप में बुलाये जाने लगे। इंग्लैण्ड की राजकीय प्रणाली ने इन्हें तीन बार बुलाया। सन् 1904 में इंग्लैण्ड में वैज्ञानिकों की बैठक में ''आप भारत के प्रतिनिधि के रूप में गए। कांग्रेस के अध्यक्ष ने उस समय कहा था – ''आपने भारत का नाम उज्ज्वल कर दिया। आज संसार के वैज्ञानिक अभिनंदन करते हैं। उनके लेखों तथा आविष्कारों से प्रभावित होकर लन्दन विश्व विद्यालय ने इनको डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि दी। सन् 1885 में आपने बंगाल के गवर्नर के सामने बिजली की तरंग उत्पन्न कर महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। कुशाग्र, परिश्रमशील और लगन के धनी श्री जगदीश चन्द्र बसु का नवम्बर 1937 को स्वर्गवास हो गया।

विद्यार्थी का प्राण गीत

अभिषेक मिश्र
षष्ठ 'ख'

खुशहाल यहाँ पर हर जन हो।
सुख शान्ति से पूरण जीवन हो॥
सब काम करें अपना-अपना।
खुद पूरा करें अपना सपना॥
कोई हाथ यहाँ न फैले अब।
जन स्वावलम्बी बन जावें सब॥
चोरी फ़रेब (फरेब) का नाम न हो।
कोई भी यहाँ बदनाम न हो॥
न कोई किसी को गुमराह करे।
सब सच्चे पथ के राही हों।
आतंक न हो अब जीवन में।
सब प्रेम भाव रखे मन में॥
हर कोई किसी के साथ चले।
हर संकट में सब हाथ मिले॥
न ऊँच-नीच की बात करें।
इक दूजे का सम्मान करें॥
न जात-पात की दूरी हो।
न सीमा की मजबूरी हो॥
हमें कोई जुदा न कर पावें।
सब भारतवासी कहलावें॥
मजबूर नहीं हम महान बनें।
भारत माँ की हम शान बनें॥
पूरण होगी सबकी आशा।
यह विद्यार्थी की अभिलाषा॥

वृक्ष

रोहित आनन्द
अष्टम 'ख'

मुझको क्यों जलाते हो
मुझे बेच क्यों खाते हो।
दो लाख का लाभ कराना,
फिर भी मानव बेच कर खाता।
फल-फूल तुमको देता हूँ,
भोजन खुद बना लेता हूँ।
कार्बन को खुद पी लेता हूँ,
ऑक्सीजन तुमको देता हूँ।
छाया वो पथिकों को देते,
उनसे वो कुछ भी न लेते।
ग्लोबल वार्मिंग को घटाना होगा,
वृक्ष को कटने से बचाना होगा।
घूसखोर इंस्पेक्टर को सस्पेंड कराना होगा,
वृक्ष की जान हमको बचाना होगा।
वृक्ष को यूँ कटने दोगे?
ऑक्सीजन को घटने दोगे
एक दिन ऐसा आयेगा-
अन्य ग्रहों के संग अपना ग्रह भी मिट जायेगा।

सब कुछ पा जाओगे

पुण्डरीक शुक्ल
अष्टम 'ख'

कर्मठता का दामन कसकर थामो,
जो चाहोगे सब कुछ पा जाओगे।
जो बीत गया उसकी चिंता छोड़ो
आलस से तुम अपना नाता तोड़ो
आशा का उजियाला लेकर मन में
मेहनत से तुम अपना रिश्ता जोड़ो॥
कायर बनकर खाली मत बैठो,
चलकर मंजिल तक आ ही जाओगे।
अँधियारे का छोटा सा जीवन है,
अँधियारी रात सवेरा ले आती।
पतझड़ की लम्बी उम्र नहीं होती,
खूबी डालें नव पल्लव पा जातीं॥
दुख का सागर पाकर मत घबराओ,
तैरोगे तो तट पा ही जाओगे।
अपने पर से विश्वास न खो देना,
मन में संशय का बीज न बो देना।
अवसर कब किसके लिए ठहर पाता,
कुछ करने का अवसर मत खो देना॥
देखो संकल्प नहीं डिगने पाये,
मेहनत करके सब कुछ पा जाओगे।

कानपुर

रोहित राठौर
अष्टम 'ख'

कानपुर-कानपुर, हर किसी के कंठ में सुर।
अवध की शान है, कानपुर महान है।
ऋषि मुनि थे जिसमें आये, गंगा जिससे बहकर जाये।
नाना का निवास था, बाल्मीकि का वास था।
परिवर्तन की भूमि है, हर तरफ से झूम है।
उद्योगों की कतार है, मंदिर बेमिसाल है।
कानपुर-कानपुर, कानपुर महान है।
वीरों की लाश पर, सजा है इतिहास पर।
लवकुश पले यहाँ, प्रेम ज्योति जले यहाँ।
एकता की धार है, वीरों की कतार है।
सभी तरह के धर्म हैं, दिल यहाँ के नर्म हैं।
हमारा एक नारा है, कानपुर हमारा है।
यहीं पर बिठूर है, तीर्थों का नूर है।
मनु यहाँ पर पढ़ती थी, दुश्मनों से लड़ती थी।

अमरबेल बिन मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि।

महान लोग

रोहित राठौर
अष्टम 'ख'

कितना भी मुश्किल काम
जो आसान बनाते हैं।
वे दुनिया के कोने-कोने में
अपना नाम कमाते हैं।
जो रुकते नहीं झुकते नहीं
कठिनाइयों की डगर पर
वे हमेशा राज करते हैं।
सब लोगों के जिगर पर
जो मेहनत कर अपने सपनो को
साकार बनाते हैं।
वही लोग दुनिया में
'महान कहलाते हैं।'

जिन्दगी में हो अगर करना करिश्मा

वैभव ओमर
दशम 'ख'

आदमी जब ठान लेता है स्वयं मन में,
उंगलियों से छेद कर देता है गगन में,
मुँह लगाकर सोख लेता है समन्दर-
उलट देता है हिमालय एक क्षण में।
जिन्दगी में हो अगर करना करिश्मा,
बदल डालो तुम पुरातन आज चश्मा,
पालकी से उतरकर किरणें हसेंगी
घाटियों में फिर भरेगी भव्य सुषमा।
आपके ऊपर कहें किसी दुआ है?
खिल उठा वो आपने जिसको छुआ है,
जिन्दगी में आपने जब भी जहाँ पर,
जो लिया संकल्प पूरा ही हुआ है।
बात मत करना यहाँ संवेदना की,
आदमी की भाव भीनी भावना की,
लोग कब तक तारीफ करते हैं किसी की
रात-दिन चलती हवा आलोचना की।

काज परे कुछ और है, काज सरे कुछ और।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर॥

'सत्यमेव जयते'

ऋषभ यादव
सप्तम 'क'

हंसो की बस्ती में गिद्धों का राज है।
आहत है लोकतंत्र पीड़ित समाज है।
दरबारी संस्कृति के पोषक करें काँव-काँव,
बन बैठे है प्रमुख शोषित है गाँव-गाँव
झूम रहा सर्वत्र लठ्ठतन्त्र आज है॥
छद्म देशहितकारी रूपधारी-व्याभिचारी,
धूर्त बाहुबली, छुद्र बगुलों से आचारी।
लूट रहे देश, इन्हें किञ्चित् न लाज है॥
होड़ मची सत्ता के नहलों व दहलों में,
इनके घर बादल रहे भव्य राजमहलों में।
दस्युराज के समक्ष दीन है मानवता,
सत्य हुआ वनवासी जैसे था प्रताप हुआ।
इसका समर्थन है आज महापाप हुआ,
सत्यवती दीन-हीन कँगलों-सा आज है।
फिर भी हमें। सत्यमेव जयते' पर नाज है।
हंसों की बस्ती में गिद्धों का राज है।
सत्य धर्म-शक्ति आज डरी डरी रहती है,
देखती जो आँखे हैं, वाणी नहीं कहती हैं।

मन का कुहासा

रितेश कुमार
षष्ठ 'क'

कुछ कागद कोर से,
मन आखर अधूरे से,
जिंदगी की अंजली में,
कुमुदनी के पुष्प थोड़े से।
कुछ रास्ते उलझे से,
प्रश्न अनसुलझे से,
विस्तृत नभ में फैले,
चाँदनी की चूनर ओढ़े से॥
चंचल सपनों की झोली में,
तारागण थोड़े से,
निर्लिप्त झंझावातों में,
अपने मुँह मोड़े से।
अंतर की प्यास से,
उमंगों की उछाह से,
वाणी की मिठास में,
सुर रस घोले से॥

विषय

सत्यम सचान
अष्टम 'क'

जिसे कहते हम हिन्दी,
परीक्षा में मिलती है बिन्दी।
जिसका नाम है विज्ञान,
पढ़ते-पढ़ते मर गया इन्सान।
जिसका नाम है इतिहास,
पेपर देखे लगे प्यास।
जिसे कहते हैं भूगोल,
चीटिंग करो खुले पोल।
जिसे कहते हैं संस्कृत,
पढ़नेके लिए रखना पड़े व्रत।
जिसका नाम है कला,
विद्यार्थी का करता है भला।

जीवन एक गणित है

निशान्त निगम
अष्टम 'ख'

जीवन एक गणित है
दोस्ती का जोड़ करो।
दुश्मनी को घटा दो,
खुशियों का गुणा करो
दु:खो का भाग दो,
पर कभी निराश मत हो।
ऐसा करने पर अपने आप ही,
जिंदगी का वर्गमूल निकल आएगा।

शिशु आता

निकुंज दीक्षित
षष्ठ 'क'

कर रजमय, दोनो पग रजमय,
किलकारी भर आह्लादित हो।
चल घुटनों के बल शिशु आता,
देख मातु को, मुख खोल तनिक।
कुछ क्रीड़ा कर, कर दृष्टिपात,
माटी खा, डर शिशु आता।
कर कमलों में रज सनी हुई,
पग में पायल झनकार हुई,
मन पुलकित कर, शिशु आता।
दो फूलों जैसे पैरों से
चल घुटनों के बल रुदन सुना।
मन प्रेम पूर्ण, कर शिशु आता,
देख स्वपुत्र को मात्र प्रसन्न,
भावातिरेक से अश्रु पूर्ण
कर मुदित मातु को शिशु आता।
कर नयन निशा में, दिखा निष्कपट भाव
निर्विकारमय वंदन का प्रभाव
प्रात: होते ही शिशु आता
चल घुटनों के बल शिशु आता।

वीरांगना लक्ष्मी बाई

सुकान्त द्विवेदी
अष्टम 'ख'

अंग्रेजों ने भारत पर, जब धोखे से कब्जा जमाया था।
मंगल पाण्डेय ने सबसे पहले विद्रोह जताया था।
पीछे-पीछे लाखों आये, अपनी जान गँवाई थी।
भारत की आजादी की एक, अलग कथा बनाई थी।
1857 का विद्रोह महासंग्राम बना।
धरती हिल उठी, भारत जंग का मैदान बना।
वीरों ने अपने पराक्रम से, अंग्रेजों के छक्के-छुड़वाये।
शहीदों ने अपने देश के खातिर प्राण गँवाये।
फिर फिरंगियों ने कूटनीति से अपना जाल बिछाया।
कुछ गद्दारों की मदद से देश पर कब्जा जमाया।
विफल हुआ स्वाधीन समर, अंग्रेजों का सैरगाह बना।
इस विफलता के कारण ही भारत पूर्ण गुलाम बना।

समय का चक्र

मोहित पाण्डेय
अष्टम 'ख'

समय बहुत अनमोल है,
इसका बड़ा मोल है,
कोई इसे मनहूस समझता।
कोई घास-फूस समझता,
जिसे समय का ज्ञान नहीं।
उसका इस दुनिया में सम्मान नहीं,
जो समय को नहीं समझ पाता।
वह जीवन भर है पछताता,
यह भाग्य बनाता है।
इसीलिए यह दाता है,
वह कह कर समझाता है।
यदि आज तुम मुझे गँवाओगे,
तो बाद में कटोरा थामे-गली-गली जाओगे।

बेटियाँ

अभिषेक कुमार
षष्ठ 'ख'

माँगते हैं बेटो को मगर हो जाती है बेटियाँ।
जो चाह है बेटों से, पूरी करती है बेटियाँ॥
पढ़ाते है बेटों को मगर, पढ़ जाती हैं बेटियाँ।
जो चाह है बेटों से, पूरी करती है बेटियाँ॥
ठुकराये बेसहारा जो, उन्हें अपनाती है बेटियाँ।
जो चाह है बेटों से, पूरी करती है बेटियाँ॥
कड़ी धूप में एक घनी छाँव की तरह हैं, बेटियाँ।
बेटों से खूब बलशाली, बनती हैं ये बेटियाँ॥
बसन्त के फूलों की एक डाली बनती है बेटियाँ।
जीवन में हर जगह साथ निभाती हैं बेटियाँ॥

'भाग्यशाली'

लोकेन्द्र प्रताप सिंह
अष्टम 'क'

उसने सारा दिन काम किया,
उसने सारी रात काम किया।
उसने खेलना छोड़ा
और मौज मस्ती छोड़ी।
उसने ज्ञान के ग्रंथ पढ़े,
और नयी बातें सीखी।
वह आगे बढ़ता गया।
पाने के लिये सफलता, जरा सी।
दिल में विश्वास और हिम्मत लिये।
वह आगे बढ़ा,
और जब वह सफल हुआ,
लोगों ने उसे भाग्यशाली कहा।

प्रत्येक व्यवस्था के दो रूप सदैव रहते हैं- एक आन्तरिक और दूसरा वाह्य। आन्तरिक भावना और वाह्य ढांचा प्रत्येक व्यवस्था में होते हैं। वाह्य ढांचा चाहे अच्छा हो और समयानुसार उसमें चाहे जितने परिवर्तन करने के यत्न हों, ढांचा ढांचा ही रहेगा। बाहरी स्वरूप पर कोई वस्तु टिक नहीं सकती। वस्तु की धारणा तो उसमें निहित अन्तःतत्त्व के कारण होती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आओ साथी मिलकर पढ़ लें दीन दयाल स्कूल में

दीपांशु तिवारी
सप्तम 'क'

आओ साथी मिलकर पढ़ लें दीन दयाल स्कूल में।
हीरे मोती पैदा करता यह विद्यालय धूल में॥
अध्यापक तारे से चमके शिक्षा के आकाश में।
शिक्षा श्रेष्ठ यहाँ की होती जनपद के इतिहास में।
बढ़ जाते हैं छात्र-छात्रा फूल समझकर शूल में॥
आओ साथी मिलकर पढ़ लें दीन दयाल स्कूल में॥
सब अध्यापक मिलकर रक्षा करते इसकी शान की।
कण-कण में व्यापक है वाणी सामवेद के ज्ञान की।
सत्य अहिंसा सार छिपा है सदा इसी के मूल में।
आओ साथी मिलकर पढ़ लें दीन दयाल स्कूल में॥
सभी विद्यार्थी अंकुर से पौधे बन जाते हैं।
शिक्षक मालाकार बने सुन्दर उद्यान सजाते हैं।
सुरभि यहाँ की बड़ी मनोहर हर उपवन के फूल में।
आओ साथी मिलकर पढ़ ले दीन दयाल स्कूल में॥

देशभक्ति गीत

संदीप कुमार
षष्ठ 'क'

दिन खून के हमारे, प्यारे न भूल जाना।
खुशियों में अपनी हम पर, आँसू बहा के जाना॥
सैयद ने हमारे, चुन-चुन के फूल तोड़े
वीरान इस चमन में, कोई गुल खिला के जाना
दिन खून के हमारे ...
गोली खा के सोये, जलिया बाग में हम।
सूनी पड़ी कब्र पर, दिया जला के जाना॥
दिन खून के हमारे ....
हिंदू और मुस्लिमों की, होती है आज होली।
बहते हैं एक रंग में, दामन भिगो के जाना
दिन खून के हमारे...
कुछ जेल में पड़े हैं, कुछ कब्र में गड़े हैं।
दो बूँद आँसू उनपर, प्यारे बहा के जाना॥
दिन खून के हमारे ...

मेला (हास्य गीत)

अक्षत
षष्ठ 'क'

चूहे राजा चले देखने दीवाली का मेला,
साथ चल दिया उनके परिवार का भी रेला।
खील-बताशे मिठाइयों की देख बड़ी दुकानें
अचरज भरकर लगे देखने, जीभ लगी ललचाने॥
तरह-तरह की सजी दुकाने, कपड़ों की बर्तन की,
चलते-चलते एक जगह पर ठहरी नजरें उनकी।
सजे हुये थे वहाँ खूब मिट्टी के बने खिलौने
हाथी घोड़े, शेर, हिरन भालू सब सुघड़ सलोने॥
ज्यों ही नजर पड़ी बिल्ली पर, चूहे जी चकराये,
भूले मेला फौरन घर को सरपट कदम बढ़ाये।
चुहिया बोली, बना रहे क्यों ऐसी रोनी सूरत,
जिससे डरकर भाग रहे, वह है मिट्टी की मूरत॥

सुभाषित

आयुष अग्निहोत्री
नवम 'ग'

1. जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया है उसने ईश्वर को मूर्तिमान कर लिया है। - **विनोबा भावे**
2. पात्र अपात्र में बड़ा भेद होता है- गाय घास खाकर दूध देती है, साँप दूध पीकर विष उगलता है।-

अज्ञात

3. बिना विश्वास के आदमी वैसा है जैसे बिना स्याही की कलम।- **एस.जी. मिल्स**
4. जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। - **विक्टर ह्यूगा**
5. महान व्यक्तियों के जीवन का कुछ उद्देश्य होता है, साधारण मनुष्य केवल इच्छाएँ रखते हैं।

वाशिंगटन

6. मनुष्य जब सोता रहता है तब कलियुग, जब जागता है तब द्वापर, जब कर्मोद्यत होता है तब त्रेता और जब कर्मशील होता है तब सतयुग होता है। - **मनुस्मृति**
7. मनुष्य जैसा जीवन व्यतीत करता है वैसे उसके विचार हो जाते हैं। - **मेक्सिम गोर्की**
8. अच्छे लोग वे नहीं है जो मौको की बाट जोहते हैं, बल्कि वे हैं जो मौकों को अपना दास बना लेते हैं।

ई.एच. चेपिन

यह कैसा बाल दिवस

अजीत विक्रम सिंह
नवम 'क'

चाचा नेहरू जिस दिन जन्में,
वह दिन बच्चों का त्योहार,
धनी घरों के बच्चे केवल,
पाते हैं उस दिन उपहार।
बाल दिवस लालू क्या जाने,
वह है निर्धन घर का बाल,
ऐसे लालू, कालू, श्यामू,
अगणित गुदड़ी के हैं लाल॥

सूर्योदय से सांझ समय तक,
कूड़ा बीन रहे हैं बाल।
वे क्या जाने कब जन्में थे,
भारत-रत्न जवाहर लाल॥
जब तक भारत का हर बालक,
मना न पाये ये त्योहार।
तब तक 'बाल दिवस' यह कैसा?
उत्तर दे भारत तत्काल॥

कर्मवीर

आज करना है जिसे, करते हैं उसे आज ही,
सोचते कहते जो कुछ, कर दिखाते हैं वहीं।
मानते जी की हैं, सुनते सदा सबकी कही,
जो मदद करते हैं अपनी, इस जगत में आप ही।
भूलकर वे दूसरों का, मुँह कभी तकते नहीं,
कौन ऐसा काम है, जिसे वे कर सकते नहीं।
चिलचिलाती धूप को, जो चांदनी देवें बना,
काम पड़ने पर जो, करे शेर का भी सामना॥
जो हँस-हँस कर चबा लेते हैं, लोहे का चना।
है कठिन कुछ भी नहीं, जिनके जी में ये ठना॥

वतन के खातिर

प्रखर द्विवेदी
सप्तम 'ग'

दे दी जान वतन के खातिर, साथी जरा बता देना।
मेरी मिट्टी को फूलों की, सीमा पर बिखरा देना।
दुश्मन ढेर लगाए मैंने, मार-मार कितनी गोली।
समरभूमि में सीना ताने, खेली फिर खूनी होली।
दे दी जान वतन के खातिर, साथी जरा बता देना।
माता-पिता न रोयें मेरे,
और न ही भाई-भगिनी।
सखा-मित्र अति शोक मनायें,
मेरे शहीद होने पर, न ही दिये जलाये॥
दे दी जान वतन के खातिर, साथी जरा बता देना।
मेरा यह सौभाग्य बड़ा था, काम देश के मैं आया॥
मातृभूमि का कर्ज चुकाया, खत्म हुई मेरी काया।
गंगा-यमुना के तट पर, तुम मेरी चिता बिछा देना॥
दे दी जान वतन के खातिर साथी जरा बता देना॥

हम भारत के वीर सिपाही

अभिषेक कुमार
षष्ठ 'ख'

सिद्धि को सन्नद्ध हम सैनिक, हम ज्योति हों ज्ञान की।
प्राण न्योछावर करके, रख लें इज्जत हिन्दुस्तान की।
हम भारत के वीर सिपाही हम भारत के वीर।
जलिया वाले बाग के प्रांगण में अपनी अमिट कहानी है।
कुरुक्षेत्र व थानेश्वर की अपनी अपनी एक निशानी है।
पानीपत की युद्ध भूमि पर अपनी जो कुर्बानी है।
छम्ब शकरगढ़ में गूँजी है तोपों कुंज महान की।
हम भारत के वीर सिपाही ...।
जब जब शत्रु ने भारत भूमि पर पैर पसारा हो।
जब जब विपदा के सागर में मिलता नहीं किनारा हो।
जब जब भारत-माता ने रक्षा को हमें पुकारा हो।
बढ़े चलेंगे लगा-लगा हम बाजी अपनी जान की।
हम भारत के वीर सिपाही ...।
सज-सज कर निकलेंगी जब-जब अपनी अपनी टोलियाँ।
थर-थर कांपेगा शत्रु सुन-सुन कर हमारी बोलियाँ।
सभी मोर्चो पर गूँजेंगी कानपुरियों की गोलियाँ
धाक जमाने पर जम जाये इस भारत की शान की।
हम भारत के वीर सिपाही ...।

प्यासा चातक

सौरभ गुप्त
एकादश 'क'

कितने दिन भये बारिश को,
अब कब बरसोगे मेघराज।
कहता है शायद यही
पीउ पीउ कर के आवाज॥
घूम के आया वन-उपवन,
सोचा बरसेगा असीम गगन।
प्यास बुझाने की रखता है आस,
जब वर्षा का महीना आता है पास।
पर इस बार नहीं बरसा गगन,
जो मार गया पक्षी का मन।
बोला ये होकर हैरान,
क्यों रुठे हो तुम भगवान॥
मर गया बेचारा प्यास से,
नहीं पिया धरती का जल।
पापी मनुष्यों की भूल का,
भुगतना पड़ा बेचारे को फल॥
मनुष्य ने काटे कितने तरुवर,
जिसने लिया बारिश की बूँदो को हर।
यह है हर प्यासे चातक की कहानी,
मनुष्य ने मार दी जिसकी जिन्दगानी॥

चाह लक्ष्य की

राजीव कुमार
षष्ठ 'क'

अगर चाह हो आगे बढ़ने की,
तो राह निकल आती है।
काँटे धूमिल हो जाते हैं,
जीवन में कलियाँ मुस्काती हैं।
जब याद लक्ष्य की आती है,
तो जान, जान में आती है।
पर पाने के लिये लक्ष्य,
चलना अभी बाकी है।
जब आगे बढ़ने की चाहत,
मेरे दिल को तड़पाती है।
हौसले बुलन्दी के लिये,
अभी आगे बढ़ना बाकी है।
जब धन अभाव टकराता है,
तो अन्धकार छा जाता है।
दुनिया में कुछ नहीं दिखाता है,
जब अश्रु आँख में आता है।
अगर चाह हो आगे जाने की,
तो राह स्वयं बन आती है॥

माँ

रामनरेश सारस्वत
नवम 'ख'

कब्र के आगोश में जब थककर सो जाती है माँ
तब कहीं जाकर थोड़ा सुकून पाती है माँ
फिक्र में बच्चों के कुछ ऐसे घुल जाती है माँ
नौजवाँ होते हुए भी बूढ़ी नजर आती है माँ
रूह के रिश्तों की गहराइयाँ तो देखिये
चोट हमें लगती है और चिल्लाती है माँ
कब जरूरत हो मेरे बच्चों को इतना सोचकर
सोती रहती हैं आँखें और जागती है माँ
घर से जब परदेश जाता है कोई नूर-ए-नजर
हाथ में गीता लेकर दर पर आ जाती है माँ
जब परेशानी में घिर जाते हैं हम परदेश में
आँसुओं को पोछने सपने में आ जाती है माँ
चाहे हम खुशियों में माँ को भूल जाए दोस्तों
जब मुसीबत सिर आये तो याद आती है माँ
लौटकर सफर से वापस जब कभी आते हैं हम
डालकर बाहें गले में सिर को सहलाती है माँ
हो नहीं सकता कभी एहसान उसका अदा
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।
प्यार कहते हैं किसे और ममता क्या चीज है
ये तो उन बच्चों से पूछो जिनकी मर जाती है माँ॥

शक्ति तुम्हारी

अभिषेक कुमार
षष्ठ 'ख'

माँ की ममता गुरुवर। हमने कर ली है तैयारी
महाक्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी
पुत्र तुम्हारे हैं इस नाते,
लेकिन मन अब तड़प रहा है,
दर्द आपका नहीं बँटाया,
तुम तो अपना काम कर गए, आई आज हमारी बारी।
महाक्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी।
वेद मूर्ति तुम बने महाप्रभु।
वेददूत हम बन जाएँगे,
शान की ज्योति जाग्रत की तुमने,
उसको घर-घर पहुँचायेंगे,
रामबाण यह औषधि पीकर, रोग मुक्त हो दुनियाँ सारी,
महाक्रांति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी।
तपोनिष्ठ तुम बने तपोनिधि,
तप कर हम सब भी पूत बनेंगे,
संस्कृति की सीता के खातिर।
पवन पुत्र से दूत बनेंगे,
माँ की ममता पीकर गुरुवर, हमने कर ली है तैयारी,
महाक्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी।

'लक्ष्मी'

अभिषेक शुक्ल
द्वादश 'क'

सर्वप्रथम उठकर करता हूँ,
प्यार भरा नमस्कार प्रिये।
इच्छा मेरी पूरी करना,
करना इसे स्वीकार प्रिये।
तू ही माता, तू ही पिता,
और तू ही करतार प्रिये।
तेरे बिना इस जग में रहना,
है बिल्कुल बेकार प्रिये।
जिस पर कृपा तेरी हो प्यारी,
बिन पावों के चलते देखा।
तेरे बिना उसी मानव को,
सड़कों पर सड़ते देखा।
निष्ठुर और कुकर्मी के,
तू रहती हर दम पास प्रिये।
सत्पुरुषों को तू भी देती,
नये अजूबे त्रास प्रिये।
झाँक देखना अपने अन्दर,
है कितनी तू मक्कार प्रिये।
तू ही झोपड़ी, तू ही बिल्डिंग,
तू ही है वह जेल प्रिये।
दुष्टों की संगिन तू है,
तू ही दुनिया की खेल प्रिये।
वरदहस्त रखती तू जिस पर,
वह हो जाता हैवान प्रिये।
साथ तेरा करके भी कोई,
हो कैसे इंसान प्रिये।

वृक्ष हमारी जीवन रेखा

विकास कुमार
सप्तम 'क'

वृक्ष हमारी जीवन रेखा
इन्हें हमें बचाना है
वृक्ष नष्ट करने वाले रावण को
दूर हमें भगाना है
यदि हम वृक्ष लगाये एक
होंगे फायदे इससे अनेक
हरे रहने पर फल, फूल देते
सूख जाने पर पुरीतन दे देतें
वृक्ष हमारी जीवन की पहचान
इन्हें काट न होगा कभी कल्याण
अगर न हम इन्हें बचा पायेंगे
पूरी पृथ्वी मरघट बन जायेंगी
ध्रुवीय बर्फ पिघल जायेगी
जीवित केवल जलीय जीव होंगे
संसार में मानव कहीं नहीं होंगे।

बूझो तो जाने

प्रखर पाण्डेय
द्वितीय

1. वह ऊपर से तो हरा,
अन्दर से है लाल।
उतना मीठा रस भरा,
जितनी मीठी खाल।

2. हर पल, हर क्षण चलती रहती,
नही कभी थकती, सुस्ताती।
बोलो बोलो, मैं हूँ कौन?
तुमको सही समय बताती।

3. वर्षा आने पर यह आता,
खुद भीगकर तुम्हे बचाता।
क्यों बैठे हो बिल्कुल मौन?
बोलो जल्दी मैं हूँ कौन?

4. सबके आगे-पीछे रहती,
कभी किसी से कुछ न कहती।
अँधियारे में लुक-छुप जाती,
और प्रकाश में फिर आ जाती।

उत्तर : 1. तरबूज, 2. घड़ी, 3. छाता, 4. परछाई

जंगल

सौरभ कुमार
सप्तम 'ग'

बादलों का प्यार जंगल
आदमी का यार जंगल
फूल-फल देता सभी कुछ
कर रहा उपकार जंगल
मूक है, सहता इसी से
दुश्मनों के वार जंगल
जब कभी टेसू खिले तो
दहकता अंगार जंगल
कारखानों के धुएँ से
पड़ गया बीमार जंगल
इस तरह कटता रहा तो
जाएगा बन थार जंगल
आदमी की पाशविकता
भोगने को तैयार जंगल।

एक बेटी की चाह

अभिषेक सोनी
षष्ठ 'ख'

विरासत में मिला यह घर
पापा को अपने पिता से
यही घर मिलेगा
मेरे भैया को मेरे पिता से
पर मैं और मेरी माँ,
हमारा क्या?
बता दिया गया है मुझे,
पिता के घर में हिस्से की बात
औरतें नहीं किया करतीं
लेकिन मुझे चाहिए एक घर अपना
बिलकुल मेरा अपना
नहीं चाहिए दहेज में रेशम और सोना।

बड़ा ही महत्त्व है

अविनाश कुमार
षष्ठ 'ग'

नेता में लालू का,
सब्जी में आलू का,
जानवर में भालू का,
बड़ा ही महत्व है।
क्रिकेट में बैट का,
बिछाने में मैट का,
शैतानी में रैट का,
बड़ा ही महत्व है।
रास्ते में मोड़ का,
गणित में जोड़ का,
प्रतियोगिता में होड़ का,
बड़ा ही महत्व है।
पक्षी में मोर का,
कक्षा में शोर का,
पतंग में डोर का,
बड़ा ही महत्व है।

किचेन में आटा का,
कम्पनी में बाटा का,
बिजनेस में घाटा का,
बड़ा ही महत्व है।
सूर्य में आग का,
गणित में भाग का,
साँप में नाग का,
बड़ा ही महत्व है।
गले में माला का,
कान में बाला का,
रंग में काला का,
बड़ा ही महत्व है।
नारी में मीरा का,
सलाद में खीरा का,
धातुओं में हीरा का,
बड़ा ही महत्व है।

ऐसा क्यों?

संकल्प सिंह सेंगर
षष्ठ 'ग'

थोड़ा-सा सम्मान मिला,
पागर हो गये।
थोड़ा-सा धन मिला,
बेकाबू हो गये।
थोड़ा-सा ज्ञान मिला,
उपदेश की भाषा सीख ली।
थोड़ा-सा यश मिला
दुनियाँ पर हँसने लगे।
थोड़ा-सा रूप मिला,
दर्पण ही तोड़ डाला
थोड़ा सा अधिकार मिला,
दूसरों को तबाह कर दिया।
थोड़ा-सा क्रोध मिला,
भविष्य बिगाड़ लिया।

किताबें

सौरभ कुमार
सप्तम 'ग'

किताबें
करती है बातें
बीते जमानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
खुशियों की गमों की,
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों की किस्से सुनाते हैं।
किताबों में साइंस की आवाज है।
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

साक्षरता का अभियान

अभिषेक कुमार
षष्ठ 'ग'

हमने मन में ठानी है।
अज्ञानता मिटानी है॥
ग्राम-ग्राम में एक ही धुन।
साक्षरता का ताना बुन॥
गाँव-गाँव शिक्षा का दीप जलेगा।
अज्ञानता का अंधकार मिटेगा।
पढ़ने की कोई उम्र नहीं।
पढ़ने में कोई शर्म नहीं॥
पिता पुत्र सब साथ पढ़ेंगे।
अनपढ़ कोई नहीं रहेगा॥
हर तरफ है एक नारा।
साक्षरता अभियान हमारा॥

बादल ये यायावर !

शुभम श्रीवास्तव
द्वादश 'ख'

कितने अद्‌भुत। कितने विचित्र।
मानो अम्बर की दीवारों पर
उस चित्रकार के भित्तिचित्र
बड़े रूई के फाहों से उड़ते रहते, बहते रहते
नभ-समीर के परम मित्र
और सभी का मन हर लेते
अपने रंगों की विविधा से
आसमान को रंग-रंगकर
बादल ये यायावर।
कभी सुधा भू पर बरसाते
कभी घनी अपनी छाया से
सूरज पर परदा कर जाते
और कभी मतवाले होकर
जन के मन में भय अतिवर्षा से भर जाते
पर कभी-कभी ये वर्षा करते
मानो वसुधा के वियोग में अश्रु बहाते
उसकी स्मृति में रो-रोकर
बादल ये यायावर।

पक्षी को उड़ना सिखलाते
शावक को गर्जन सिखलाते
बिना रूके और बिना थके, वे उपमा
निष्काम कर्म की दे जाते
बनकर मिटना, मिटकर बनना
संघर्षों से लड़कर बढ़ना
गीता का संदेश सुनाते
आतप से आकुल शरणागत पर
छाया स्नेहवश कर जाते
उन्हें किसी से स्वार्थ क्या और चाह क्या?
पर फैलाने धरती पर हास और उल्लास नया
भरते नव अलंकार, नवजीवन
कण-कण में, क्षण-क्षण में
गढ़ते और दोहराते परिभाषाएँ
तप, त्याग, कर्म और सच्चे प्रेम की,
अपने वजूद को खोकर, मिटाकर
बादल ये यायावर।

हमारा कानपुर

सहस्त्राब्दि सिंह साहू
सप्तम 'ख'

एक दिन पहुँचा मैं कानपुर पकड़ मेल आसाम,
स्टेशन पर मिल गया भाई मुझको सेवाराम।
मिल गये सेवा राम कानपुर नगर घुमाया,
पहुँचे नौघड़ा किन्तु वहाँ भी एक घड़ा न पाया।
घड़ा न मिला इसका मुझे मलाल न था,
लेकिन पहुँचे माल रोड पर मालरोड में माल नहीं था।
थोड़ा आगे बढ़ी तो गाड़ी रोड बिरहाना आई,
लेकिन एक भी बिरहा नहीं मुझको पड़े दिखाई।
मूड बदलने जहाँ हम भटक रहे थे,
वहाँ कलक्टर लोग सड़ा गुड़ बेच रहे थे।
थोड़ा आगे बढ़े तो आया नाका बादशाही,
जहाँ बादशाह मिले बेचते चूना और सुराही।
सुंदरता के नाम को करते लोग जलील,
हंस नहीं मोती नहीं, कहते मोतीझील।
चमनगंज में बहते देखे नाले और नाली,
परमट में मरघट को देखा धनकुट्टी में धन कटर।
फूलबाग में फूलों को चर गई गायें और भैंसे,
हुई नवाबी खत्म हाँकते इक्के-तांगे।
फिर भी नवाबगंज कह रहे अभागे,
इसलिये कानपुर स्मरण रहेगा यह कथन है पक्का।
मैं कहता हूँ यहाँ मिलेगा धुआँ धूल और धक्का।

श्री हनुमान

मिली श्रीवास्तव
सप्तम 'ख'

श्री राम के भक्त थे हनुमान,
हनुमान थे अत्यधिक शक्तिमान।
सब करते हनुमान को प्रणाम,
हनुमान करते श्री राम को प्रणाम।
श्री राम थे विष्णु के अवतार,
हनुमान थे शिव के अवतार।
वे रखते सुरक्षित राम दरबार,
राम राज्य था धनवान
हनुमान भी थे अत्यधिक महान,
जिससे चिन्तामुक्त रहते थे श्री राम।
राम के दूत अत्यधिक बलवान,
नाम था पवनसुत हनुमान।
थे अंजनी माता की संतान,
हर वेदों का था उनको ज्ञान।
थे पवन देव की प्रिय संतान,
हनुमान हमें दो राम भक्ति वरदान।

चिड़ियों का संदेश

यथार्थ मिश्र
षष्ठ 'क'

चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बताती।
मैं हूँ अपनी धुन में रहती,
अपने काम स्वयं हूँ करती॥
घास-फूस चुन-चुन कर लाती,
तृण का ताना बाना बुनती।
सघन छाँव तरूवर की चुनती,
तब सुन्दर घोंसला बनाती॥1॥
चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बतातीं।
सूर्योदय से पहले जग जातीं,
नींड़ छोड़ उपवन में जातीं।
उड़ती डाल-डाल और पाती,
सब को मीठे बोल सुनाती॥2॥
चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बतातीं।
खेत और खलिहान में उड़ती,
खोज बीन कर दानें लाती।
खुद खातीं चूजों को चुगातीं,
दिन भर व्यस्त मस्त है रहती॥3॥
चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बतातीं।
ज्यों ही साँझ होने को होती,
पंख पसार घर वापस आतीं।
चूजों के संग खुद सो जातीं,
कर विश्राम थकान मिटाती॥4॥
चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बतातीं।
जग को यह संदेश है सुनातीं,
कर्म योग का पाठ पढ़ातीं।
मीठी बोली का मोल बतातीं,
मिल-जुल कर रहना सिखलातीं॥5॥
चीं-चीं-चूँ-चूँ चिड़ियाँ करतीं,
सबको अपनी बात बतातीं।
मैं हूँ अपनी धुन में रहती,
अपने काम स्वयं हूँ करती।

चन्दा मामा

प्रद्युम्न सिंह
षष्ठ 'क'

रात घिरे तब आते हो,
साथ में तारे लाते हो।
रोशन रात बनाते हो
सबको राह दिखाते हो।
सबको राह दिखाते हो।
बच्चों के तुम मामा हो,
करते बहुत ड्रामा हो।
हर दिन रूप बदलते हो,
नहीं एक से दिखते हो।
और किसी दिन बिल्कुल ही,
गायब क्यों हो जाते हो।
हमको भी बतलाओ तो,
कहाँ-कहाँ तुम जाते हो।
क्या इस धरती जैसी ही,
कहीं और भी धरती है।
उस धरती की बातें भी,

माँ के संकल्प

अपूर्वा
षष्ठ 'क'

- दिलानी है उच्च शिक्षा
- सिखानी है दृढ़ता और विनम्रता
- सिखाना है धैर्य व संयम
- रखना है स्वस्थ व सुन्दर
- बनाना है साहसी व मेहनती
- जताना है अपना भरोसा
- बढ़ाना है आत्मविश्वास व स्वाभिमान
- देने है पारिवारिक व नैतिक संस्कार
- रखना है उन्हें अनुशासित

बेटी के संकल्प

- बताना है कि "हम आपके साथ हैं"
- बनना है सबसे बड़ा सहारा
- रखना है स्वस्थ व सम्पन्न
- समझनी है उनके जीवन में अपनी भूमिका
- सुननी है हर छोटी-बड़ी बात
- देखनी है उनकी आखों से उनकी दुनिया
- देना है उन्हें पूरा सम्मान
- करनी है उनकी हर इच्छाएँ पूरी
- देना है कुछ फुर्सत
- करनी है उनकी दुनिया और रंगीन
- रखना है दूर हर निराशा व परेशानी से
- रहना है अनुशासन में।

खुद को बदलो दुनिया तुम्हारे लिए स्वतः बदल जाएगी

शुभम् श्रीवास्तव
द्वादश 'ख'

एक बार एक पिता और पुत्र एक पर्वत पर चढ़ाई कर रहे थे। कुछ घण्टों बाद आखिरकार जब वे अपने गन्तव्य पर पहुँचे तो पुत्र ने सफलता से उत्साहित होकर वहाँ से आवाज लगाई, "मैं यहाँ सबसे पहले पहुँचा।" तभी उसे एक प्रतिध्वनि सुनाई दी।, "मैं यहाँ सबसे पहले पहुँचा।" उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और आवेश भी। इस बार उसने अधिक ऊँचे स्वर में कुछ अपमानजनक शब्द कहे। और क्या होना था सिवाय इसके कि उसके कहे शब्द उसकी ओर ही वापस आए और वायुमण्डल में गूँजते रहे। क्षोभ से भरकर अन्ततः वह अपने पिता के पास गया और उन्हें सारी बात बताई।

पिता को इसका भेद ज्ञात था। वह पुत्र के साथ उसी स्थान पर गया और ऊँची आवाज में कहा, "तुम एक बुद्धिमान व्यक्ति हो।" इस वाक्य का प्रत्युत्तर पिता और पुत्र दोनों के चेहरों पर मुस्कान बिखेर गया। तब पिता पुत्र की ओर मुड़ा और उसे समझाते हुए कहा कि हमारा वास्तविक जीवन भी इसी प्रतिध्वनि की तरह है। यदि हम दूसरों के विषय में अच्छा सोचते हैं, मधुर स्वर में बात करते हैं तथा उनकी सहायता करते हैं तो इसका अच्छा प्रतिफल हमें अवश्य ही मिलता है। अतः यदि हम चाहते हैं कि लोग हमसे अच्छा व्यवहार करें तो हमारे लिए श्रेयस्कर यही है कि हम व्यर्थ के संघर्षों में न पड़कर स्वयं में परिवर्तन लाने का प्रयत्न करें।

आजकल हम समाज में देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जो शिक्षित है और धनार्जन कर रहा है, चाहता है कि वह अपना जीवन सम्मानपूर्वक जिये परन्तु इसी अभिलाषा में वह प्रायः दूसरों द्वारा हास्य-विनोद में कही गई छोटी-छोटी उपेक्षणीय बातों से इस प्रकार आहत होता है जैसे किसी ने उन पर तीखा नश्तर चुभोया हो। और इनसे बने छोटे घाव समय और परिस्थितियों द्वारा प्रेरित होकर नासूर बन जाते हैं।

परन्तु यदि हम स्वयं को इतना विनम्र और सरल बना लें कि हमें दूसरों से सम्मान की कोई लालसा शेष न रहे तो हम देखते हैं कि शत्रुओं द्वारा कही आपत्तिजनक और अपमानपूर्ण बातें भी हमारे मन में अवसाद और संघर्षों के बीज बोने में असफल रहेंगी। इसका उदाहरण हैं भगवान बुद्ध जिन्हें एक व्यक्ति ने कई अपशब्द कहे परन्तु उनका मन तनिक भी विचलित नहीं हुआ। कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यदि कोई मुझे भोजन दे और मैं उसे स्वीकार न करूँ तो वह भोजन देने वाले की ओर ही लौट जाएगा। इन अपशब्दों के मामले में भी कुछ ऐसा ही है।

वास्तव में हम संसार को अपने संस्कारों एवं मनोवृत्तियों से प्राप्त दृष्टिकोण रूपी चश्में से देखते हैं। चश्में का काँच जिस रंग का होगा दुनिया भी हमें उसी रंग में रंगी नजर आएगी।

अतः आवश्यकता है, स्वयं में झाँककर देखने की, आत्मविश्लेषण करने की और जो परिवर्तन हम दूसरों के स्वभाव में चाहते हैं, उसे सर्वप्रथम अपने जीवन में उतारने की। संस्कृत की उक्ति है-

"आत्मवत् सर्वभूतेषु यो पश्यति स पण्डित" प्रायः लोग शिकायत करते पाए जाते हैं सरकार बड़ी निष्क्रिय और भ्रष्टाचारी है, नल है पर जल नहीं, वाहन है पर ईंधन नहीं, विद्यालय हैं पर अच्छी शिक्षा

नहीं, अस्पताल हैं परन्तु समुचित चिकित्सा नहीं। कुछ हद तक ये लोग सही होते हैं परन्तु ये प्रायः वही लोग होते हैं जो अपना आयकर छिपाते हैं रिश्वत और दलालों पर पूर्ण आस्था रखते हैं तथा नियमों और कानूनों को तोड़ने में अभ्यस्त होते हैं।

अपने दिल पर हाथ रखकर सोचिए कि क्या आपने कभी किसी रेलवे क्रासिंग पर बन्द फाटक को गैर-कानूनी ढंग से पार करते हुए सोचा कि आप नियमों का मखौल उड़ा रहे हैं।

अतः हमारे लिए हितकर यही है कि हम दूसरों पर दोष मढ़ने में अपने बहुमूल्य समय और शक्ति को व्यर्थ नष्ट न करते हुए उसे स्वयं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशामें संदोहित करें।

"बुरा जो देखने मैं चला, बुरा न मिलया कोय।

जो मन खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥"

अब हमारे सामने जो यक्ष-प्रश्न उपस्थित होता है वह यह कि क्या केवल मेरे बदल जाने से ये दुनिया बदल जाएगी?

व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाय तो एक अकेला व्यक्ति पूरे संसार को परिवर्तित नहीं कर सकता। अग्नि की ज्वाला कितनी ही प्रचण्ड हो परन्तु वायु के साथ के बिना क्षीण होकर वह भी बुझ जाती है। परन्तु एक प्रेरक गीत की पंक्तियाँ कहती हैं-

"कोई चलता पदचिन्हों पर, कोई पदचिन्ह बनाता है।

है वही सूरमा इस जग में, दुनिया में पूजा जाता है॥

महात्मा गाँधी और वर्तमान समय में अन्ना हजारे इस तथ्य के प्रबल जीवंत उदाहरण हैं। एक व्यक्ति जिसके पास नैतिकता और ईमानदारी के अलावा कुछ है तो बस एक चश्मा, एक टोपी और एक छोटे से गाँव के मन्दिर में एक छोटा सा कमरा, कद-काठी भी सामान्य और उस पर जरावस्था परन्तु उस व्यक्ति ने किस तरह परिवर्तन की आँधी चलाई इससे हम सभी रूबरू हैं। उसके दृढ़ संकल्प और क्रान्तिकारी परन्तु अहिंसात्मक विचारों ने लोगों की आत्माओं को झंकृत कर दिया, उन्हें जगाया और गति के लिए नई दिशा दी। किसी चरित्रवान व्यक्ति के शब्दों में ही इतना ओज और सिंह सी गर्जना हो सकती है कि संसार की बड़ी से बड़ी राजनीतिक शक्ति भी उसके समक्ष नतमस्तक हो जाय।

आज क्या युवा, क्या वृद्ध, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या हिन्दू और क्या मुस्लिम, अन्ना के समर्थन में सारा भारत एकरूप हो गया है। ऐसी एकता हमें भारत-पाकिस्तान के क्रिकेट मैच के अलावा शायद ही कभी देखने को मिलती हो।

"Always do right. This will gratify some people and astonish the rest."

Mark Twain

हमें स्वयं के चरित्र की सदैव यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए तथा उसे सदाचरण के मार्ग से भ्रष्ट नहीं होने देना चाहिए। यदि हम चरित्र के धनी हैं तो देर से ही सही परन्तु एक न एक दिन हमारे समाज का प्रत्येक व्यक्ति हमारे पक्ष में होगा और विश्व में परिवर्तन का सुखद पुनर्विहान मूर्तरूप ले सकेगा।

"मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।"

अब प्रश्न उठता है कि क्या स्वयं को बदले बिना संसार को बदला जा सकता है?

इस सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध कथानक मुझे याद आता है। एक बार कस्तूरबा किसी ऐसे रोग से ग्रसित हो गईं जिसमें नमक का परहेज करना था परन्तु वे स्वभाववश ऐसा नहीं कर सकीं। महात्मा गँधी ने उन्हें समझाना चाहा परन्तु वे जानते थे कि किसी आचरण को बिना अपने जीवन में उतारे दूसरे को उपदेश देना बेईमानी ही होगी। अतः उन्होंने पहले स्वयं नमक खाना छोड़ा और तब कस्तूरबा को भी नमक न खाने हेतु प्रेरित किया जिसका कस्तूरबा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा और वे शीघ्र स्वस्थ हो गईं।

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।"

दुनिया के इस शीशमहल में स्वयं को परिवर्तित किए बिना दुनिया के व्यवहार में परिवर्तन की अपेक्षा हमारी जड़ता ही कहलाएगी। हमारे विचार, कर्म और आचरण ही परावर्तित होकर हम तक आते हैं। कहा जाता है **'आप भले तो जग भला'**।

सम्पूर्ण विश्व के जन के विचारों को चमत्कार सा परिवर्तित कर देना हमारे बस का नहीं है परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर हम इतना तो कर ही सकते हैं कि लोग अपने रवैये में परिवर्तन करने को प्रेरित हों। **जब हमारे अपने घर काँच के बने हों तो हम दूसरों पर पत्थर फेंके तो कैसे?** जब तक स्वयं हमारा चरित्र पाक-साफ न होगा तब तक हम अपने पर्यावरण और समाज में सकारात्मक परिवर्तन करने में सक्षम नहीं हो पाएँगे।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि **"व्यक्ति ही सामाजिक परिवर्तन की इकाई है।"** आत्म परिवर्तन ही व्यवस्था परिवर्तन का सोपान है, स्वर्णिम द्वार है और कुंजी भी है। सामाजिक परिवर्तन की नींव अपनी वृत्तियों और चरित्र में सुधार द्वारा ही रखी जा सकती है। अतः यह कहना सार्थक ही है कि-

"खुद को बदलो, दुनिया तुम्हारे लिए स्वतः बदल जाएगी।"

"कितनी लम्बी रात हो, फिर भी दिन तो आएगा,
जल में कमल खिलेगा, फिर से वो मुस्काएगा।
देता है जो कष्ट वही, कष्टों को हरता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।"

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिये, तैसोई फल दीन॥

डी.पी.एस. आजाद नगर के वार्षिकोत्सव 'जोश 2011' में हुई प्रतियोगिताओं में दीनदयाल विद्यालय के विजेता छात्र

हिन्दी की प्रतियोगिताएँ

	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	स्थान
1.	शुभम श्रीवास्तव	12 ख	रचनात्मक लेखन	प्रथम
2.	शुभम श्रीवास्तव	12 ख	श्रुत वर्तनी	प्रथम
	नीरज कुशवाहा			
3.	शुभम अवस्थी	9 ख	नारा बनाओ	द्वितीय
	शुभम श्रीवास्तव	12 ख		
4.	आशुतोष तिवारी	12 ख	वाद-विवाद	सांत्वना
	आयुष त्रिपाठी	9 ग		
5.	शुभम श्रीवास्तव	12 ख	कहानी लेखन	प्रथम

हिन्दी की प्रतियोगिताओं में विद्यालय को समग्र रूप से लगभग 30 विद्यालयों में द्वितीय स्थान मिला जबकि विद्यालय ने 'नुक्कड़ नाटक' तथा 'क्षणिका' में प्रतिभाग नहीं किया।

गायन प्रतियोगिता

7.	समीर, आदित्य धनराज	द्वादश क	गैर फिल्मी	द्वितीय
	नीरज कुशवाहा, नयन बाजपेयी	दशम	समूह गायन	
8.	नीरज कुशवाहा	12 ख	अर्द्धशास्त्रीय गायन	सांत्वना

विद्यालय के छात्रों द्वारा गायी गयी कव्वाली की विशेष सराहना भी हुई।

प्रत्येक देशभक्त व्यक्ति की ऐसी इच्छा होना स्वाभाविक ही है कि अपना देश वैभवशाली बने। राष्ट्र सुखी, सम्पन्न हो। राष्ट्रीय उत्पादन बढ़े। बेकारी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशांति का अन्त हो। न्याय सुलभ हो। आपसी झगड़े समाप्त हों। साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय, भाषायी संकुचितताओं से ऊपर उठकर लोगों के सोचने, विचारने का तरीका हो। दलीय अभिनिवेशों से नेतागण मुक्त हों। भारत अपने राष्ट्रीय स्वरूप में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक सभी प्रकार के क्षेत्रों में लोककल्याणकारी सिद्ध हो।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

एक लोभी हिरन

धीरेन्द्र प्रताप
सप्तम 'क'

पुरानी बात है। वाराणसी में राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे। राजा का एक विशाल उद्यान था। उस उद्यान की शोभा की चर्चा दूर-2 तक फैली हुई थी उसमें फूलों के साथ ही हरी-हरी घास भी थी। कोमल रसभरी घास को देखते ही जानवरों के मुँह में पानी आ जाता था। एक हिरन आकर नित्य ही घास चरता था। जैसे ही माली आता तुरन्त वह हिरन भाग जाता था। वह हिरन भागता तो ऐसा लगता कि हवा से बातें कर रहा है।

एक दिन राजा ने माली से पूछा उद्यान का क्या हाल है। फूल पत्ते कैसे हैं? मौसम के सभी फूल तो लगे हैं ना? कोई नया समाचार?

सब ठीक है महाराज। आपकी कृपा से हम लोग भी अच्छे हैं। फूल पत्ते सब उगते हैं परन्तु एक विचित्र बात है महाराज ने पूछा क्या?

महाराज एक हिरन रोज आता है और घास चरकर भाग जाता है। क्या वह हिरन बहुत सुन्दर है? हाँ। बहुत सुन्दर है महाराज। उसका रंग सोने की तरह है। उसकी आँखे चमकीली हैं। उसे देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है।

तो उसे पकड़कर मेरें पास ले आइये। उसे पकड़ना तो बहुत मुश्किल है महाराज। कोशिश करो। प्रयत्न करने से सब सम्भव है। यदि थोड़ा शहद मिले तो महाराज मैं उसे पकड़ लूँगा।

राजा ने माली को शहद दे दिया। माली ने शहद को उद्यान की घास पर छिड़क दिया। वह उद्यान में देर तक रूकता। पहले माली हिरन के सामने नहीं आता था। पर हिरन के सामने धीरे-धीरे आने लगा धीरे-धीरे हिरन माली के हाथ की भी घास खाने लगा। माली यह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। हिरन बहुत तेज और चालाक प्राणी माना जाता है। उसे पकड़ना सम्भव नहीं हो पा रहा था। अत: माली ने उसे पकड़ने के लिए अन्य उपाय का सहारा लिया।

माली ने उद्यान से राजभवन तक चटाइयाँ बिछवाईं। जहाँ तहाँ उसने घास में शहद डालकर चटाई पर डाल दी। हाथ में कुछ घास लेकर व उसमें शहद मिलाकर हिरन को खिलाते -2 राजभवन की ओर बढ़ने लगा। हिरन कभी हाथ की घांस खाता और कभी चटाई की घास खाता हुआ शहद के लोभ में फंस गया, वह हिरन राजमहल में पहुँच गया।

राजमहल के फाटक के अन्दर जाते ही फाटक बन्द कर दिया गया। हिरन को अब अपनी गलती मालूम हुई। बहुत से लोगों को देखकर वह हिरन इधर-उधर भागने लगा। उसे अपनी मौत नजदीक मालूम पड़ी इसलिए वह भय से काँपने लगा।

राजा ने जब हिरन के राजमहल में आ जाने की खबर सुनी तब वह नीचे उतरे हिरन को काँपते देख राजा ने सोचा यह लोभ के चक्कर में पड़ गया और कैद में आ गया है। रस के लोभ से बढ़कर कोई लोभ नहीं। उस रसलोभी हिरन को बाँधकर चिड़िया घर में डाल दिया गया।

शिक्षा - इसलिए रस के लोभ से बचो रस का लोभ इन्सान को कहाँ से कहाँ तक ले जाता है जिसने जीभ को वश में कर लिया। उसने भारी विजय प्राप्त कर ली है।

एक ईमानदार लड़की

अभिषेक कुमार
षष्ठ 'ग'

अंजू एक गरीब लड़की थी। वह इतनी गरीब थी कि खाना और कपड़ा नहीं खरीद सकती थी। यद्यपि उसने जूनियर हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली थी, तो भी उसको कोई नौकरी नहीं मिली। एक दिन वह बगीचे में टहल रही थी। उसने बगीचे में एक थैला पड़ा हुआ देखा। उसने थैला उठाया और उसे खोला, उसमें कुछ सोने-चाँदी के सिक्के थे। उस थैले के ऊपर मालिक का नाम लिखा था। अंजू उस पते के अनुसार उस मालिक तक पहुँच गई। उस थैले तथा उस ईमानदार लड़की को देखकर वह व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ। वह आदमी एक कारखाने का मालिक था। उसने उस ईमानदार लड़की को अपने कारखाने का प्रबंधक बना दिया। अब वह खुशी से रहने लगी।

वो भारत हमें जान से प्यारा

मिली श्रीवास्तव
सप्तम 'ख'

है भारत की शान तिरंगा
इसको न झुकने देंगे हम।
वीरों की कुर्बानी को
व्यर्थ न जाने देंगे हम।
भारत माँ के सेवक हैं हम
माँ की रक्षा हम करेंगे
बुरी नियत से जो देखेगा
उसका खात्मा हम करेंगे।
दी शरण है हमने तब-तब
जब कोई है संकट आया।
खुद भूखे रह कर भी हमने
शरणार्थी को खाना खिलाया।
जहाँ है बहती ज्ञान की धारा
वो भारत हमें है जान से प्यारा
सीता राम की धरती है जो
ऐसा भारत देश हमारा
न जाति न भाषा देखी
सबको अपना मीत बनाया।
मिला जो भी हमें प्यार से
सबको 'द्वीप' गले लगाया।

ईमानदारी

आकाश कुशवाहा
षष्ठ 'ग'

दो आदमी थे। दोनों पुराने बर्तनों के बदले नए बर्तन देते थे। एक ईमानदार था दूसरा बेईमान। बेईमान व्यक्ति ने ईमानदार व्यक्ति से कहा तुम बाईं तरफ जाओ, मैं दाईं तरफ जाऊँगा। बेईमान व्यक्ति गली में घुसकर बोला पुराने बर्तन को बदलकर नए बर्तन ले लो। उसी गली में एक बुढ़िया अपनी बेटी के साथ रहती थी। उनके पास एक सोने का कटोरा था। लेकिन उनको यह पता नहीं था कि यह कटोरा सोने का है। उन्हें पता था हम बहुत गरीब है। उसकी बेटी बोली, माँ बाहर एक इंसान पुराने बर्तन के बदले नए बर्तन दे रहा है। उसकी माँ ने कहा, वो खराब पीले रंग का कटोरा दे दो। वो कटोरा लेकर उस बेईमान व्यक्ति को दिया। वो तुरंत पहचान गया कि ये सोने का है। उसके मन में लालच आ गया। वो कटोरे के बदले कुछ नहीं देना चाहता था। उसने कटोरे को खराब कहकर बाहर फेंक दिया। और चला गया। फिर ईमानदार व्यक्ति वहाँ से गुजरा और बोला पुराने बर्तन के बदले नए बर्तन ले लो। फिर उसकी बेटी अपनी माँ से पूछती है, कि माँ इसको बर्तन देकर देखते हैं। वो बर्तन लेकर बाहर गई और उसको बर्तन दिखाया। वो पहचान गया कि ये सोने का है। उसने कहा बेटी ये सोने का कटोरा है। वो यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। ईमानदार व्यक्ति ने कहा इस कटोरे के बदले मैं सिर्फ, सोने के पच्चीस सिक्के और कुछ बर्तन दे सकता हूँ। उन्होंने कहा दे दो। उसने सोने के कटोरे के बदले अपना सारा सामान दिया और नमस्कार करके चला गया। फिर बेईमान व्यक्ति आया और कहा मैं उस कटोरे के बदले एक कटोरी दे सकता हूँ उसकी माँ ने कहा अभी एक ईमानदार व्यक्ति आया और उसने हमें कटोरे के बदले पच्चीस सोने के सिक्के दिए हैं। यह सुनकर उसे वहीं दिल का दौरा पड़ा और मर गया। अगर वो बेईमान व्यक्ति नहीं होता तो वो ना मरता। और ईमानदार व्यक्ति को सोने का कटोरा मिल गया। ये है ईमानदारी का फल।

ईमानदारी

काजल
षष्ठ 'ग'

एक गाँव में एक बहुत ही गरीब बुढ़िया रहती थी। उसके एक पोता था वह बुढ़िया बहुत ही दयालु थी वह हमेशा गाँव के लोगों की मदद करती थी। उसका पोता भी अपनी दादी के काम में हाथ बटाता था। गाँव के लोग उनके इस व्यवहार से बहुत ही प्रसन्न थे। वे भी उनकी मदद कर दिया करते थे। लेकिन उस नगर का मुखिया उस बुढ़िया और उसके पोते से हमेशा जला करता था। वह उनको गाँव से निकालना चाहता था। इसलिए वह गाँव में लोगों के कान भरने लगा। अब रोज-रोज सेठ की बातें सुनकर गाँव के लोगों को लगने लगा कि बुढ़िया कंजूस चोर और कामचोर है। इसलिए सभी गाँववासियों ने मिलकर उस बुढ़िया और उसके पोते को निकाल दिया। बुढ़िया के जाते ही उस गाँव में कुछ दिनों बाद झगड़ा, मारपीट आदि शुरु हो गई। वह बुढ़िया हमेशा भगवान में विश्वास रखती, उसको कोई भी डर नहीं था। क्योंकि वह ईमानदार, दयावान थी। अब सेठ को बहुत पछतावा हुआ गाँव के इस व्यवहार को देखकर तब उसने फिर से बुढ़िया को गाँव बुला लिया, बुढ़िया के आते ही सब गाँववासी खुश हो गये। क्योंकि ईमानदारी का फल हमेशा मीठा होता है।

जैसा करोगे वैसा भरोगे

अभिषेक राजपूत
सप्तम 'क'

एक जंगल में दो भेड़िए दोस्त रहते थे। एक का नाम लालू था दूसरे का नाम कालू। दोनों लालची थे। उन्हें जंगल में हर कोई फटकारता था। एक दिन दोनों ने शहर जाने की सोची। एक दिन दोनों शहर की ओर चल पड़े। रास्ते में घना जंगल था। उसे पार करते-करते शाम हो गई। तभी बरसात भी होने लगी दोनों पास की गुफा में घुस गए। गुफा के अंदर रूपये पैसे, हीरे, जवाहरात भरे पड़े थे। यह देखकर दोनों दंग रह गए। दोनो ने सब कुछ अपने थैले में भर लिया। फिर शहर की ओर चल दिए। शहर में दोनों जंबो हाथी की धर्मशाला में रूके। दोंनो को भूख लग रही थी। लालू बोला, कालू, यह लो रूपये कुछ खाने के लिए ले आओ। कालू खाना लेने बाजार चला गया। लालू के मन में लालच आ गया। उसने सोचा अगर मैं कालू को मार दूँ, तो सारे रूपए पैसे, हीरे जवाहरात मेरे हो जायेंगे। इधर कालू के मन में भी लालच आ गया। उसने भी लालू को मार डालने की सोची। अगर मैं लालू को मार डालूँ तो सारा धन मेरा हो जाएगा। उसने एक दुकान से जहर खरीदा। उसे खाने में मिला दिया। खाना लेकर वह धर्मशाला पहुंचा। वह जैसे ही अपने कमरे में घुसा लालू ने उसके गले में रस्सी का फंदा डाल कर मार डाला। चलो, अब बला टली। अब आराम से खाना खा कर इस धन से बहुत बड़ा व्यापार करूँगा। लालू को भूख लगी और उसने जहर मिला खाना खा लिया। खाना खाते ही लालू वहीं ढेर हो गया।

ज्ञानः लालच ने दोनो की जान ले ली। लालच सभी को ले डूबता है। भलाई इसी में है कि हम कभी लालच न करें।

अब्राहम लिंकन

सुशील कुमार
षष्ठ 'क'

लिंकन का जन्म 1800 ई. में एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ था। छोटे-छोटे काम करते हुए उन्होंने किसी प्रकार अपनी शिक्षा पूरी की। 1836 ई. में उन्होंने वकालत शुरू की और तभी से राजनीति में भाग लेने लगे। भारत की भाँति संयुक्त राज्य अमेरिका में भी कई राज्य थे। वे कई वर्षों तक अपने राज्य में विधान सभा के सदस्य भी रहे, लिंकन ने संयुक्त राज्य अमेरिका की एकता एवं अखण्डता को कायम रखा दास प्रथा को भी समाप्त कर दिया।

लिंकन ने जनतंत्र की परिभाषा इस प्रकार दी- "जनतंत्र जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन है।

1 जनवरी 1863 ई. को इन्होंने संयुक्त राज्य की गुलामी प्रथा का अन्त कर दिया। अब्राहम लिंकन की मृत्यु 1865 ई. में हो गई।

कार्ल मार्क्स

विश्वजीत कुमार
षष्ठ 'क'

कार्ल मार्क्स का जन्म 1818 ई. में जर्मनी के यहूदी परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पूरी शिक्षा जर्मनी में ही पूरी की थी। उनके जीवन पर्यन्त मित्र बने रहने वाले एंगेल्स का जन्म भी जर्मनी में हुआ था। उन्होंने समय-समय पर कार्ल मार्क्स की सहायता की। कार्ल मार्क्स इंग्लैंड में 1849 से 1883 ई. तक रहे। उन्होंने मजदूरों के लिए पहला अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 1864 ई. में स्थापित किया। उनके विचारों पर चीन, क्यूबा, अलवानिया देशों में सरकार बनी। उनकी मृत्यु 1883 ई.में हुई थी। उन्होंने दुनियाँ के मजदूरों से यह अपील की कि यदि वे एक हो जायें तो अपने परिश्रम का पूरा फल उठा सकते हैं। इसके साथ यह भी भविष्यवाणी की गई थी कि कल की दुनियाँ मजदूरों की है और धीरे-धीरे संसार में समाजवाद फैल जाएगा। मार्क्स के क्रान्तिकारी विचार एक दिन सारी दुनिया में फैल जाएँगे। यह भविष्यवाणी सही निकली।

लियो टाल्सटाय

अमित कुमार
षष्ठ 'ग'

लियो टाल्सटाय का जन्म मास्को से कुछ दूर यास्ना पोलनाया नामक गाँव में एक बड़े रूसी जमींदार परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा राजकुमार की भाँति हुई थी। पर इनके विचार से दया, परोपकार आदि अधिक महत्वपूर्ण हैं। अधिकार, ख्याति आदि का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं था। बच्चों के लिये सहज, बोध हेतु इन्होंने ककटरा नामक पुस्तक चार भागों में लिखी। इनको वैश्विक साहित्यिक रचनाओं-आत्मकथा, युद्ध और शान्ति, पुनरुत्थान, अन्नाकरेटि से मिली। युद्ध और शान्ति, विश्व साहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इनका मुख्य विचार था कि युद्ध निरर्थक है। विजय और पराजय दोनो पराजित ही हैं।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी की भूमिका

वैभव बाजपेयी
षष्ठ 'क'

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इंग्लैण्ड में अपना अध्ययन पूरा करके वे वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए। जहाँ उन्होंने अत्याचारी गोरी सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह को हथियार के रूप में अपनाया। गाँधी जी 1915 ई. में भारत लौटे तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल नेतृत्व प्रदान किया। उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप ही परिवर्तित हो गया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जन-आन्दोलन का रूप प्रदान किया तथा भारतीयों में आत्मबल एवं निर्भीकता की भावना जागृत की। उन्होंने साम्राज्यवादियों के अत्याचार, अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया। उनका विश्वास था कि सत्याग्रह स्वयं कष्ट झेलकर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है। उन्होंने 1916 ई. में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की, जो सत्याग्रह के लिये विख्यात है। यह आश्रम गाँधीवादी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। 1917 ई. में चम्पारण के नीलहें यूरोपीय ठेकेदार के अत्याचार के विरुद्ध सत्याग्रह का प्रयोग कर आन्दोलन आरम्भ किया। गाँधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना जगाई। 1942 ई. में उन्होंने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' संचालित किया। गाँधी जी मानवतावादी थे और विश्व बंधुत्व में उनका विश्वास था। उन्हीं के प्रयासों से 1947 ई. में देश स्वतन्त्र हुआ। इसलिए भारतवासी उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। 30 जनवरी 1948 ई. को वे हिंसा के शिकार हो गये। इस प्रकार गाँधी जी हिन्दू मुस्लिम एकता की बलिवेदी पर शहीद हो गये।

जलियाँ वाला बाग हत्याकांड

वैभव बाजपेयी
षष्ठ 'क'

जलियाँ वाला बाग अमृतसर में एक छोटा पार्क है, जो तीनों ओर से ऊँची दीवार से घिरा है, एक छोटी गली से पार्क में जाने का रास्ता है। 13 अप्रैल 1919 ई. को वैशाखी के दिन जलिया वाला बाग में डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू की गिरफ्तारी पर विरोध प्रकट करने के लिए सभा की गई थी। इस सभा में भारी संख्या में लोग इकट्ठे हुए थे। सभा बिल्कुल शान्तिपूर्वक चल रही थी। उसी समय जनरल डायर 150 भारतीय तथा 50 अंग्रेज सैनिकों को लेकर जलिया वाला बाग पहुँचा और बिना चेतावनी दिए अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दी। गोलियों की बैछार से 10 मिनट में ही लगभग 1000 व्यक्ति मारे गये तथा 1000 व्यक्ति घायल हुए।

अब्दुर्रहीम खानखाना

अर्चित पाण्डेय
सप्तम 'ख'

हिन्दी काव्य जगत के प्रसिद्ध कवि 'रहीम' का पूरा नाम 'अब्दुर्रहीम खानखाना' था। यह तुर्क थे। इनके पिता का नाम बैरम खाँ और दादा का नाम सैफे खाँ था। इनका जन्म 17 दिसम्बर 1556 ई. में लाहौर में हुआ था। बैरम खाँ ने अपने इकलौते पुत्र का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया, किन्तु रहीम के भाग्य में पिता का सुख अधिक दिनों तक नहीं लिखा था। क्योंकि जब वह सपरिवार हज के लिए गये तो मुबारक लोहानी नामक एक पठान ने रहीम के पिता की हत्या कर दी। मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ उठाते हुए रहीम अपनी माँ के साथ आगरा पहुँचे जहाँ अकबर ने उन्हें बड़ा सम्मान दिया।

रहीम तलवार और कलम दोनों में निपुण थे। उन्होंने अपनी तलवार के बल पर कई युद्ध जीतकर मुगल साम्राज्य की सीमा बढ़ाई थी, किन्तु बाद में जहाँगीर के शासन में इन पर 'राजद्रोही' होने का आरोप लगाया गया और इन्हें बंदी बनाया गया। इनकी सारी सम्पत्ति छीन ली गयी। उनका अन्तिम समय कष्ट में व्यतीत हुआ। सन् 1627 ई. में लाहौर में इनका निधन हो गया।

हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि करने वाले 'अब्दुर्रहीम खान खाना' अकबर के प्रसिद्ध नौ रत्नों में से एक थे। इनके व्यक्तित्व में शौर्य एवं कला का अद्‌भुत संगम था। इन्होंने ब्रजभाषा एवं अवधी में रचनाएँ की। रहीम सतसई, मदनाष्टक, बरवै नायिका भेद आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ है। रहीम ने भारतीय समाज के सामने 'सर्व-धर्म समभाव' का जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उससे समाज को नई प्रेरणा मिली। इसके लिए वह सदैव स्मरणीय रहेंगे।

बाबर

अमित कुमार
षष्ठ 'ग'

बाबर भारत में मुगल वंश का संस्थापक था। उसका जन्म 14 फरवरी 1483 ई. में फरगाना में हुआ था। बाबर का वास्तविक नाम जहीरूद्दीन मुहम्मद था। अपनी वीरता के कारण यह बाबर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके पिता नाम उमर शेख तथा माता का नाम कुतुलुश निगार था। पिता तैमूर वंश का था और माता चंगेज वंश की थी। उसका पिता फरगना का शासक था। पिता की मृत्यु के बाद मात्र 12 वर्ष की आयु में बाबर वहाँ का शासक बना। राज्य विस्तार की गरज से उसने समरकन्द पर आक्रमण कर दिया किन्तु समरकन्द तो जीत नहीं सका। अनेक प्रयास के बाद भी जब समरकन्द उसके हाथ में नहीं आया तो 1504 ई. में उसने काबुल पर अधिकार जमा लिया। पानीपत की पहली लड़ाई में उसने इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली और आगरा पर अधिकार जमाया। खानवा के युद्ध में राणा सांगा को और घाघरा के युद्ध में अफगान सरदारों को हराकर पंजाब से दिल्ली, आगरा और बिहार तक को अपने अधीन कर लिया। 1530 ई. में बाबर की मृत्यु हो गई।

महान दार्शनिक रूसो

अमित कुमार
षष्ठ 'ग'

रूसो का जन्म 1708 ई. में जेनेवा शहर में हुआ था। उनकी माँ बचपन में ही मर गईं। उनका पालन पोषण उनके पिता ने ही किया। रूसो को उनके पिता नियमित विद्यालयी शिक्षा नही दे पाये। पहली बार रूसो को 1749 ई. में ख्याति मिली। उन्होंने अपनी पुस्तक में यह विचार व्यक्त किया है कि प्रकृति बच्चे के विकास का साधन और माध्यम दोनों है, समाज में उन्नति विकृति का कारण है। उनकी इस पुस्तक को बच्चों की स्वतंत्रता का बाइबिल कहा जाता है। बच्चों की आजादी के बारे में उन्होंने 'एमिल' पुस्तक लिखी है। उनकी क्रान्तिकारी विचारधारा के दर्शन उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल कॉट्रैक्ट' में होते हैं। इस रूप में रूसो मानव स्वतन्त्रता और श्रेष्ठता के महान मसीहा सिद्ध होते हैं।

अनुशासन

राहुल राज
षष्ठ 'ख'

'अनुशासन' शब्द 'शासन' के साथ 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से बना है। जिसका अर्थ होता है, शासन के पीछे चलना। अनुशासन मानव जाति के लिए बहुत जरूरी है। अनुशासन के कारण ही हमारा समाज शिष्ट बनता है। इसका पालन नहीं करने से हम अशिष्ट कहे जाते हैं। इसके अभाव में हमारा समाज छिन्न भिन्न हो जाएगा। कोई किसी की परवाह न करेंगे, और सभी मनमानी करने लगेंगे। न पुत्र पिता का आदर करेगा, न बहू सास की बात मानेगी। न विद्यार्थी शिक्षक की आज्ञा का पालन करेंगे और न सैनिक अपने कमाण्डर के शासन में रहेंगे। चारो ओर अराजकता फैल जाएगी।

सच कहा जाए तो समाज की गाड़ी बल के आधार पर नहीं चल रही है, इसका आधार है अनुशासन। स्कूल में यदि छात्र अनुशासनहीन हो जाए, तो स्कूल का कार्य नहीं हो सकेगा। कार्यालय एवं कारखानों में कर्मचारी अपने उच्च पदाधिकारी का आदेश न माने और मनमाना करने लगे तो उत्पादन का काम बंद हो जाएगा। अगर सेना में अनुशासनहीनता आ जाए, तो देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी। खेल के मैदान में खिलाड़ी खेल के नियमों एवं रेफरी की आज्ञा का पालन न करें, तो खेल की मर्यादा समाप्त हो जाएगी। इस प्रकार अनुशासन के अभाव में सामाजिक जीवन अस्त व्यस्त हो जाएगा। संक्षेप में यही कहा जाए, कि उन्नत जीवन के लिए हमें अनुशासन प्रिय होना आवश्यक है। कहा भी गया है, कि अनुशासन ही देश-को महान बनाता हैं। यह राजा से रंक, शासक से शासित तक, गुरु से शिष्य तक सबके लिए जरूरी हैं। अनुशासित होकर ही हम, हमारा परिवार, समाज, राज्य एवं देश शिष्ट और विकसित हो सकता है। दूसरी बात यह है, कि हम स्वयं अनुशासित होंगे, तभी दूसरे को भी अनुशासित कर सकेंगे। क्योंकि उपदेश से उदाहरण अधिक अच्छा होता है।

नास्तिक पिता आस्तिक पुत्र

दीपक सिंह राठौर
षष्ठ 'ग'

सायंकाल का समय था। ईश्वर का अस्तित्व मानने और प्रचार करने के अपराध में आठ वर्ष के बालक प्रहलाद को आज सबके सामने मृत्यु दण्ड दिया जाना है। एक बालक के मृत्यु दण्ड को देखने के लिए असंख्य नर-नारी न्यायालय के विस्तृत प्रांगण में एकत्रित हैं। ऊँचे-ऊँचे भवनों के झरोखों से झाँक रहीं संभ्रान्त नारियाँ इस करुण दृश्य की कल्पना से ही शोक मग्न हो रही हैं। प्रहलाद की माता कयाधू की अन्तर्व्यथा का वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। पिता-पुत्र के इस संघर्ष ने उनके जीवन में तो विष ही घोल दिया है। निश्चित समय पर दो रक्षा पुरुषों द्वारा प्रहलाद को दैत्यों के राजा हिरण्यकशिपु के सम्मुख उपस्थित किया गया। राजा ऊँचे सिंहासन पर विराजमान था।

अभागे बालक! समय है, अब भी अपनी भूल स्वीकार कर लो। मैं संसार में वर्ग-विहीन, धर्म विहीन, ईश्वर विहीन, समाज की नींव रखने जा रहा हूँ। तू व्यर्थ उसमें बाधक मत बन। अन्यथा तुम्हें मृत्युदण्ड मिलेगा। क्षमा करें पिता जी, संसार का कोई प्रलोभन, कोई भय प्रहलाद को अपने मार्ग से नहीं हटा सकता... प्रहलाद का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि हिरण्यकशिपु क्रोधावेश में खड़ा हो गया। वह चिल्लाकर बोला-बस बन्द करो। यह बकवास। प्रहरी। ले जाओ इस दुराग्रही को। सिंह का भोजन बनना ही इसके भाग्य में लिखा है।

धन्य है, सत्य और ईश्वर प्रेम पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाला यह बालक जिसके लिए अन्त में प्रभु को नृसिंह अवतार धारण करना ही पड़ा।

बुद्धिवाद और बुद्ध

अश्विनी अग्निहोत्री
अष्टम 'क'

बुद्धि हावी हो गई है, बुद्ध का 'दर्शन' नहीं है।
बुद्धि का विग्रह प्रतिष्ठित, भाव संवेदन नहीं है।
शून्य अब संवेदना से, मनुज मन रहने लगा।
पक्षी पीड़ा से द्रवित मन, जीव वध करने लगा।
सिसकती करुणा, मनुज मन सुन रहा क्रंदन नही
बुद्धि का विग्रह प्रतिष्ठित, भाव संवेदन नहीं है॥
अम्बपाली आज भी, बंदी बनी है वासना की।
अब न मिलती शरण को, बुद्ध की सद्भावना है।
घोष नारी जागरण के, किंतु आरक्षण नहीं है।
बुद्धि हावी हो गई है, 'बुद्ध का दर्शन' नहीं है।
आज अँगुलिमाल' नर संहार में ही जुट रहा है।
अँगुलियाँ क्या, राष्ट्र के ही राष्ट्र का सिरकट रहा है।
बुद्धिवादी राक्षसों का हृदय परिवर्तन नहीं है।
बुद्धि का विग्रह प्रतिष्ठित, भाव संवेदन नहीं है।
बुद्ध कोई व्यक्ति है क्या, बुद्ध जीवंत त्याग तप है।
स्रोत है संवेदना का, धार करुणा की स्रवित है।
निरंकुश क्यों क्रूरता, क्या बुद्ध की तड़पन नहीं है।
बुद्धि हावी हो गई है, बुद्ध का दर्शन नहीं है।
बुद्धि का फिर अवतरण, मन प्राण में करना पड़ेगा।
हो नहीं बुद्धत्व धारण, मनुज का लक्षण नहीं है।
बुद्धि का विग्रह प्रतिष्ठित, भाव संवेदन नहीं है।
स्वयं को कसना पड़ेगा,अनय से लड़ना पड़ेगा।

सुख दुःख क्या है?

सोनम
अष्टम 'ख'

सुख दुःख दोनों यहीं पर है, परन्तु हमें इस बात का ज्ञान ही नहीं है। जब सुख आता है। तो हर प्राणी बहुत ही प्रसन्न होता है तथा सोचता है कि हमें सब प्रभु ने ही दिया है लेकिन जरा सा भी दुःख आने पर प्राणी विचलित हो जाता है। तब हर प्राणी भगवान को दोष देता है लेकिन यह गलत है। भगवान तो हमें हमेशा सुख ही देते हैं। दुःख तो हमारे भाग्य के हैं जो हमें मिलते हैं। कभी भी दुःख में घबराना नहीं चाहिए।

चाहे कितनी भी परेशानी आये हर मुश्किल में प्रभु का ही ध्यान करना चाहिए भगवान तो इतना अच्छा करते हैं कि हम सोच भी नहीं सकते हैं। अरे उसकी लीला तो देखो कितनी निराली है। जब कोई जीव जन्तु इस धरती पर जन्म लेता है। परमात्मा उसका भोजन तुरन्त ही माता की छाती में पैदा कर देते हैं। भगवान तो हमारा भला ही सोचते हैं। वह तो हमें हर प्रकार से सुखों से खुश रखते हैं। पृथ्वी पर इतने सुन्दर फल-फूल उगाकर हमारे लिए हर प्रकार की वस्तु प्रभु ने पहले ही दे दी फिर भी हम उसका नाम नहीं लेते। अरे प्रभु की ही तो लीला है-जो हम देख सकते हैं, सुन सकते है, चल सकते हैं और बोल सकते हैं।

दुःख में कभी भी दुःखी मत हो। हिम्मत से काम लो। भगवान सबकी सुनते हैं। सुख में ज्यादा सुखी मत हो, फूले मत समाओ, किसी को अशब्द मत कहो। सबका आदर सत्कार करो परिवार में हमेशा खुशी बाँटो। फिर देखो हमारा जीवन कैसे खिलता है। परेशानियों से लड़ना सीखो। अरे, परेशानी किस पर नहीं आयी। परेशानियों का डटकर मुकाबला करो, तो हमारा जीवन सुन्दर होगा, हमें अपना लक्ष्य बनाकर चलना है। यही है हमारे जीवन का आधार।

धर्म और मर्यादा

लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने पर भगवान राम ने लंका से सुषेण वैद्य को बुलाया तो सुषेण वैद्य ने लक्ष्मण का उपचार करने से पहले कहा-भगवान मैंने सुना है कि आप तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं, तो बताइए कि क्या मर्यादा यही कहती है कि मैं लंकापति रावण का राजवैद्य हूँ और आप मेरे राजा के शत्रु हैं तो क्या ऐसे में मैं अपने राजा के शत्रु के भाई को जीवित करूँ? सुषेण वैद्य की वाणी सुनकर भगवान राम ने कहा-आप अपनी मर्यादा मत त्यागना और हनुमान को आदेश दिया कि हे हनुमान जी आप सुषेण वैद्य जी को सम्मान सहित लंका वापस भेज दो। भगवान की ऐसी मर्यादा पूर्ण वाणी सुनकर सुषेण वैद्य जी कहने लगे, कि वैद्य का भी एक धर्म है कि रोगी चाहे वैरी ही क्यों न हो, उसके प्राणों की रक्षा करना एक वैद्य का परम् कर्त्तव्य है।

अतः सूर्य उगने से पूर्व संजीवनी बूटी लाकर इन्हें पिला दी जाये तो इन के प्राण बच सकते हैं। किसी भी परिस्थिति में हमें मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिए तथा अपने कर्त्तव्य का धर्म पूर्वक पालन करना चाहिए।

ममतामयी माँ

अश्वनी शाण्डिल्य
षष्ठ 'ख'

इस दुनियाँ में सभी की माँ होती है। इस संसार में एक नन्हीं चींटी से लेकर एक विशाल हाथी तक की माँ होती है। माँ हमें जन्म देती है और हमें दूध पिलाती है। हमें चलना सिखाती है। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाती है। माँ हमें दु:ख का एहसास नहीं होने देती है। माँ हमारे दु:खों को हँसते हुये झेल लेती है। माँ को इस दुनिया में भगवान से बढ़कर दर्जा दिया गया है। माँ की हमेशा पूजा करनी चाहिए।

माँ बालक की प्रथम पाठशाला होती है। माँ हमें हमेशा सिखाती है कि दुखों से कभी घबराना नहीं चाहिए। माँ खुद तो भूखी रहती है किन्तु अपने बच्चों का पेट भर देती है। लेकिन जब बच्चे बड़े हो जाते तो वे माँ के त्याग को भूल जाते हैं। फिर भी माँ सोचती है कि हमारे बच्चे आसमान की ऊँचाई को छू लें और सबसे आँगे निकलें।

इस दुनियाँ में जो माँ को दु:ख देता है वह कभी सुखी नहीं रह सकता। इसलिए हमें हमेशा माँ की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

"जिस माँ ने हमको जन्म दिया है, उस माँ के लिए हमें कुछ करना है।"

इस संबंध में भगवान श्री रामचन्द्र ने भी कहा है "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

गुरु की सीख

चंद्रसेन एक प्रतापी राजा था। वह दयालु था, इसलिए अपनी प्रजा के बीच बहुत लोकप्रिय था। वह अपने गुरु जी के हर सुझाव पर अमल करता। गुरु जी कभी राजा के पास न जाते। राजा को जब जरूरत होती तो आशीर्वाद और सलाह लेने के लिए उनकी कुटिया में पहुँच जाते। गुरु जी नदी के किनारे झोपड़ी बनाकर रहते। जो मिलता भोजन कर लेते। किसी भी प्रकार का कोई असंतोष होता तो वह राजा से कह देते और राजा उनकी सलाह मानकर उनके असंतोष को दूर कर दिया करता।

राजा को अपने गुरु के प्रति इतना सम्मान था कि उसके कई मंत्रियों को यह बर्दाश्त नहीं होता था। यहाँ तक कि उनके सुझावों को गुरु के कहने पर राजा खारिज कर देता। मंत्रियों को यह अपमान जनक लगता, लेकिन वे लाचार थे। एक दिन नाराज मंत्रियों ने गुप्त सभा आयोजित की। उन सबने तय किया कि राजा और गुरु जी के बीच दूरियाँ बढ़ा दी जायें जिससे राजा अपने गुरु जी की बात नहीं मानेगा। एक अनुभवी मंत्री सोमेश ने कहा कि एक ही रास्ता है। कि किसी तरह गुरु जी को राजा पर आश्रित बना दिया जाये। जब तक वह स्वाभिमान और स्वालंबी हैं, उनको राजा से दूर नहीं किया जा सकता।

एक दिन सोमेन्द्र ने गुरु जी की कठिनाइयों का जिक्र करते हुए राजा से कहा कि महाराज, इस

उम्र में गुरु जी को भोजन बनाने में दिक्कत होती है, क्यों न हम उन्हें राजमहल का भोजन करने के लिए राजी कर लें। कुछ दिनों तक तो सब ठीक-ठाक चला। समय पर गुरु जी को भोजन मिलता, किन्तु इसके बाद सोमेन्द्र के इशारे पर खेल होने लगा कभी समय पर भोजन न पहुँचाया जाता, कभी रास्ते में ही भोजन गायब कर दिया जाता तो कभी रास्तें में भोजन को बेस्वाद बना दिया जाता, इस बात से गुरु जी राजा से अंदर ही अंदर नाराज रहते।

एक महीने में ही स्वावलंबी और आत्म सम्मानी गुरु जी का धैर्य जवाब दे गया। वह सोचने लगे- 'राजा तो ऐसा कर नहीं सकता, तो फिर यह षडयन्त्र कोई दूसरा व्यक्ति तो नहीं कर रहा है। राजा को यह पता नहीं है। उसका पता लगाना जरूरी है। यह सोचकर गुरु जी ने राजा को बुलाकर पूछा- "सच बताना, कि तुम्हें मेरे लिए खाना पहुँचाने की सलाह किसने दी थी? राजा ने अधीरता से पूछा, क्या कोई गड़बड़ है गुरुवर, यह सलाह तो मंत्री सोमेन्द्र ने दी थी।"

"उसे फौरन राज्य से बाहर करो। वह तुम्हारे खिलाफ षड्यन्त्र रचने का अपराधी है। एक तो उसने मुझे पराश्रित बनाने का प्रयास किया, ताकि मेरा स्वाभिमान टूट जाए। इससे दु:खी होकर मैं तुमसे नाराज हो जाऊँ और फिर वह तुम्हें इच्छानुसार हाँकना शुरु कर दे।"

राजा को असलियत समझ में आ गई। उसने गुरु जी से दुर्व्यवहार के लिए क्षमा माँगी गुरु जी ने राजा को समझाते हुये कहा- "यह तुम्हारे लिए सबक है, हमेशा अपने पर भरोसा रखना। किसी भी मामले में किसी का भी आश्रय लेकर अपना स्वाभिमान कभी मत खोना। आज से मैं अपना भोजन स्वयं पकाऊँगा। उधर सोमेन्द्र को जैसे ही खबर मिली, वह राज्य से भाग खड़ा हुआ। उसके साथ उसके चापलूस मित्र भी भाग गये। गड़बड़ करने वालों के भागने के बाद राज्य फिर से सुचारू रूप से चलने लगा।

विचारणीय प्रश्न है कि सुख क्या है? इस सम्बन्ध में मनोविज्ञान शास्त्र के विद्वानों ने एक प्रयोग किया। एक ऐसी परखनली में जिसके भीतर एक दूसरे से जुड़े हुए तीन रास्ते थे। एक छोटा सा कीड़ा परखनली के एक रास्ते के छोर पर रख दिया। शेष बचे दो रास्तों में से बायीं ओर के रास्ते पर बिजली का करेंट जोड़ दिया। यह कीड़ा आगे बढ़कर जब बायीं ओर जाता था तो उसे बिजली के प्रवाह का धक्का लगता था। वह वापिस आता था। बार बार उस कीड़े ने बिजली का धक्का खाया और दाहिनी ओर के रास्ते पर मुड़ा।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

वह अधूरा स्वप्न

अनुज ओमर
अष्टम 'क'

आपके विचार में यह जीवन क्या है? वही जीवन जो दर-दर की ठोकरें खाकर जी रहे अपाहिज या वे गरीब जो स्टेशन पर भीख माँग रहे हैं। उनके लिए तो यह जीवन नरक से भी बदतर है पर क्या हमने कोई प्रयास किया। जिससे उनका नरक स्वर्ग में बदल सकता। इसका उत्तर है नहीं। सरकार न तो अनेक नियम, कायदे कानून इन गरीबों व झोपड़ पट्टियों में रह रहे लोगों के लिए बनाये पर क्या उनका पालन होते देखा गया है, नहीं। इसका मूलकारण है शिक्षा का अभाव जो कि साँप की कुण्डली बनाकर गरीबों को जकड़े हुए है। पर क्या वे इससे उबर पाए? नहीं नहीं। गरीबों में जानकारी का भी अभाव इसका मूल कारण है पर कुछ जो इस विषय से परिचित हैं उन्होंने इस विषय पर ध्यान देकर अपना नरक स्वर्ग में बदल दिया। गरीबों को तो सपने देखने तक का अधिकार नहीं है। वे तो इस वर्तमान समय में घटित हो रही घटनाओं पर भी ध्यान आकृष्ट नहीं कर पाते हैं। उन्हें यह सोचने तक का अधिकार नहीं कि उन्हें कैसी-कैसी विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है। और जहाँ तक रही बात अमीरों की तो वे पार्टी, जुआ आदि पर रूपये लुटाते घूमते हैं। परंतु कोई भिखारी उनके पास माँगने आ जाए तो रूपये देने में उनके हाथ काँपते हैं। पर क्या वे गरीबों पर रूपये नहीं खर्च कर सकते या उनकी इतनी सामर्थ्य नहीं है। अब इस नष्ट होते समाज को बचाने का उत्तरदायित्व हम पर है पर क्या हम उन अधूरे स्वप्नों को पूरा कर पाएँगे, और जिससे गरीबों का जीवन सुधर सकें। इसके लिए हमें एक जुट होकर प्रयास करना होगा।

भाषा

आकाश कुशवाहा
षष्ठ 'ग'

क्या आप जानते हैं कि मनुष्य और जानवरों में क्या अन्तर है? कोई नहीं पहचान पाता। मुझे लगता है कभी जानवरों के पास भी हमारी तरह ही भाषा होती थी। लेकिन उसका दुरुपयोग करने से भगवान ने उनकी भाषा छीन ली। आज जो मनुष्य गूँगा है। उसने अपने पिछले जन्म में भाषा को लेकर अपने ऊपर घमंड किया होगा। इसलिए भगवान ने उसकी भाषा छीन ली। अगर मनुष्य भाषा का दुरुपयोग करेगा, तो इंसान और जानवरों में कोई अन्तर नहीं रहेगा। मनुष्य अपनी भाषा का सदुपयोग करेगा, तभी मनुष्य बना रह सकता है।

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक से एक प्रखर, हैं छिपे मानवों के भीतर।
मेंहदी में जैसी लाली हो, वर्तिका बीच उजियाली हो॥

अन्तर्ज्ञान

यश मिश्र
षष्ठ 'ख'

एक दिन शाम का समय था मैं अपने घर से निकला और मैंने अपने मित्र महेश को बुलाया। हम दोनों नगर के बाहर भगवान राम जी के मन्दिर की ओर चले। जब हम नदी के पास पहुँचे, तो हमें एक अन्धा व्यक्ति भी मन्दिर जाता हुआ दिखाई दिया। उस अन्धे व्यक्ति को देखकर मेरे मित्र को हँसी आ गई। उसके हँसी का कारण मैं समझ नहीं सका। मैंने, उससे कहा, तुम क्यों हँस रहे हो? मेरे मित्र ने कहा, "यह अन्धा व्यक्ति मन्दिर क्यों जा रहा है? इसे कुछ भी तो दिखाई देगा नहीं। यह सुनकर उस बुद्धिमान (अन्धे) व्यक्ति ने कहा "जो कुछ आपने कहा है वह सत्य है। मैं मन्दिर में कुछ भी नहीं देख सकूँगा। भगवान रामजी तो अन्धे नहीं है। क्या वे मुझे नहीं देख सकेंगे। मैं उनसे यही प्रार्थना करूँगा कि वे किसी को अन्धा न बनायें। यह सुनकर मेरा मित्र लज्जित हो गया।

जीभ का प्रबन्धन

कमाल है, ढाई इंच जीभ का, यह चाहे तो 6 फुट के मनुष्य की हड्डी तुड़वा दे। हॉल में तालियाँ बजवा दे। स्वाद की आसक्ति छोड़ दे तो योगी बना दे। चटोरी हो तो भोगी बना दे। ज्यादा खाये तो रोगी बना दे। ज्यादा चले तो काम बिगाड़ दे। कम चले तो भी काम बिगाड़ दे। शरीर के सब अंग बूढ़े होते हैं। पर जवान रहती है सदा जबान। 32 दाँतों में छिप जाती है। यदि कुछ पल बाहर ही निकली रहे (चिढ़ाना) तो भी संकट पैदा कर देती है। खट्टा, मीठा, कड़ुआ, ठण्डा, गरम सब झेल जाती है। यह कभी बीमार नहीं होती पर बीमारी का हाल बता देती है। यह जीभ तलाक करा दे, संबंध जुड़वा दे, मुकदमा जिता दे। मुकदमा हरा दे, प्रसन्न कर दे। दुखी कर दे अच्छा गा दे, बेसुरा गा दे तो हाल खाली करा दे। गले में माला डलवा दे। हाथी पर बैठा दे। झगड़ा करा दे, दोस्ती करा दे। अन्धों के अन्धे ही होते हैं, यह जीभ का ही कमाल था महाभारत करा दिया। कहावत है, "जवाँ शीरी, मुल्क गीरी" अर्थात मीठा बोल कर मनुष्य संसार को प्रसन्न कर सकता है। इसलिये जब भी बोलो मीठा बोलो, पहले तौलो फिर बोलो। जिसने जीभ का प्रबन्धन कर लिया, वह अजात शत्रु बन जायेगा उसके शत्रु नहीं मित्र होंगे। हमें मित्र बनाना चाहिए।

वाह बिस्मिल

आयुष द्विवेदी
सप्तम 'ख'

'बिस्मिल' का अर्थ होता है घायल। राम प्रसाद ने अपना यह उपनाम क्या सोचकर रखा था, कोई नहीं जानता। पर 'बिस्मिल' रहे बिस्मिल ही।

सबसे बड़ा घाव तो उनके सीने में देश की गुलामी का था। अपनों के दिए हुए घाव भी न जाने कितने थे। उनके साथ विश्वास घात किया गया। उन्हें जान से मार डालने की कोशिश की गई उन पर झूठे इल्जाम भी लगाए गए। इन सब बातों के घाव भी कोई कम न थे।

हर आदमी के जीवन में माँ और गुरु का बड़ा महत्व होता है। माँ ही पहली शिक्षक है। रामप्रसाद बिस्मिल को अत्यंत ममतामयी और बहादुर माँ मिलीं। उनके गुरु महान संत और विद्वान थे। इन्हीं दोनों की कृपा से वह महान देशभक्त बने। वह अपनी माँ की कोई सेवा नहीं कर पाए-यह कसक उन्हें अन्तिम क्षण तक बेधती रही। उन्होंने लिखा है, "मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है। किस प्रकार अपनी देववाणी का उल्लेख करके तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया। तुम्हारी दया से ही मैं देश सेवा में संलग्न हो सका... जन्मदात्री जननी! केवल एक तृष्णा है। वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती दिखाई नहीं देती।"

राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन में जो निखार आया, जो दृढ़ता आई, वह उनके गुरु स्वामी सोमदेव की शिक्षाओं से बिस्मिल लिखते हैं, "धार्मिक तथा आत्मिक जीवन में जो दृढ़ता मुझ में उत्पन्न हुई, वह स्वामी जी महाराज के सदुपदेशों का ही परिणाम है।"

राम प्रसाद बिस्मिल को अपनी मौत का गम न था। गम था तो अपने साथ अशफ़ाक उल्ला, राजेन्द्र लाहिड़ी और रोशन सिंह की फाँसी की सजा का। उन्होंने सारा दोष अपने ऊपर लेते हुए अदालत में कहा था, "यह सब मेरा ही करा-कराया है। इन सब निर्दोषों को फँसा कर क्यों सताया जा रहा है" अन्यायी सरकार ने एक न सुनी। जिस दिन राम प्रसाद को इलाहाबाद में फाँसी दी गई, उसी दिन अशफाक उल्ला को फैजाबाद में और रोशन सिंह को इलाहाबाद में फाँसी दी गई थी।

राम प्रसाद बिस्मिल ने कुल तीस साल का जीवन पाया। इन तीस सालों में ग्यारह साल क्रान्तिकारी जीवन बिताया। भारत माता को आजाद कराने के लिए उन्होंने अपना बलिदान दे दिया। वह मातृभूमि को आजाद नहीं करा पाए यह कसक रह गई। इसीलिए वह बार-बार भारत में जन्म लेना चाहते थे।

यदि देशहित मरना पड़े मुझको अनेकों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।
हे ईश! भारत वर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,

कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

आज भारत स्वतंत्र है। भारत की आजादी में बिस्मिल का भी योगदान है। उनके बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनका नाम अमर है। उन्होंने सत्य ही कहा था-

यह सच है हमें मौत मिटा देगी एक दिन

लेकिन हमारा नाम मिटाया न जाएगा।

हाँ, उनका नाम नहीं मिटाया जा सकता। उनका सदैव ही गुणगान होता रहेगा। पीढ़ियाँ उन्हें श्रद्धा से नमन करती रहेंगी। समय के मस्तक पर हमेशा अंकित रहेगा 'वाह! बिस्मिल'।

काम ही मनुष्य का असली शत्रु है

रोहित आनन्द
अष्टम 'ख'

भगवान श्रीकृष्ण की कही हुई बातें, आज भी इसीलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वह मनुष्य को सही आचरण करना सिखाती हैं। उन्होंने हर बुराई पर से बचने का मार्ग बताया है। इसीलिए जब अर्जुन ने उनसे पूछा, अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पुरुषः। अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः अर्थात् हे श्रीकृष्ण, तो यह मनुष्य किससे प्रेरित होकर न चाहते हुए भी बलपूर्वक लगा दिए हुए की भांति पापमय आचरण करता है। भगवान श्रीकृष्ण ने बताया,

काम एष, क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्। अर्थात् रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है। यह बहुत खाने वाला है तथा महापापी है। इस विषय में तू काम को ही अपना शत्रु समझ। कहने का तात्पर्य है कि इंद्रियों का निग्रह न होने की वजह से मन में कामना पैदा होती है। कामना पूर्ण न होने से क्रोध उत्पन्न होता है। चूंकि कामनाओं का कोई अंत नहीं होता। अतः वह मनुष्य की बुद्धि का अपहरण करके बलपूर्वक पापकर्म में प्रवृत्त करती रहती है। इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण ने ये कहा है,

'जहि शत्रु महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।'

अर्थात् हे महाबाहो अर्जुन, तू कामरूपी दुर्जय शत्रु को मार दे।

ठीक् यही बात त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने विभीषण से कही थी,

'महाअजय संसार रिपु जीति सकई सो वीर।'

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना, बाजु-ए-कातिल में है।
वक्त आने पर बता देंगे, तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बता दें, क्या हमारे दिल में है।

बिस्मिल

मैं तुझे अमृतमय कर दूँगा

प्रीति कुमारी
षष्ठ 'क'

संध्या हो रही है। पक्षी अपने घोंसलों की ओर वापस लौट रहे हैं। चारों ओर शान्ति है। खुद प्रकृति भी अपनी गति को मानो समेट रही है प्रिय साधक! तुम भी अपने अंतर देश की ओर लौट जाओ। इस प्राकृतिक संध्या का उपयोग कर लो। स्नानादि से प्रफुल्लित बन आसनस्थ हो बैठ जाओ। संध्याकाल में मन शीघ्रता से हृदय मन्दिर के अंतर प्रदेश में, शांति के परम धाम में प्रवेश कर जायेगा। जीवन बहुत अल्प है, वासनाएँ हैं। संसार के लिए, शरीर के लिए पूरा दिन बिताया। अब थोड़ा समय अपने लिए भी तो बिताओ। ईश्वर के लिए, गुरु-अमृत के लिए भी कुछ घड़ियाँ निकालो। वे बहुत कम माँगते है, इतना ही कि स्वयं को, अपने-आपको जान लो।.. और इसी में साधना का पूरा रहस्य निहित है, क्योंकि खुद को जान लेने से तुम गुरु-अमृत के लिए भी कुछ जान लोगे और परमात्मा को भी। जो परमात्मा है, जिस परम तत्त्व में गुरु रमण करते हैं वही तुम्हारा भी उद्‌गम-स्थान है। जीवन की संध्या ढले उससे पहले, दिन और रात्रि के इस सन्धिकाल में तुम इस रहस्य में एक गोता मार लो। किसान कण-कण से अन्न का भंडार भर लेता है। कंजूस एक-एक रूपया इकट्‌ठा करके धन का खजाना बना लेता है। हे अध्यात्म मार्ग के प्यारे पथिक। तुम भी अपनी आयु की संध्याओं में बैठकर ध्यान के द्वारा परमात्मा से अपना एकत्व जान कर रहस्य खजाने को पालो। तुम ही हो।

शांति का मतलब कायरता नहीं

विकास कुमार
सप्तम 'ख'

विश्व के अग्रणी देशों में भारत को सबसे अधिक शांतिप्रिय देश का दावेदार माना जाता है। शांतिप्रिय देश होने के बावजूद अपना देश शक्ति संपन्न राष्ट्रों की सूची में है। परन्तु कुछ देश हमारी इस शांति को कायरता समझ हमारे सीमावर्ती इलाकों को आये दिन परेशान करते रहते हैं। परन्तु उनकी इस दुष्टता के लिए दोषी सिर्फ वे ही नहीं बल्कि हम भी हैं। क्योंकि कहा गया है- जुर्म करने वाले से ज्यादा दोषी जुर्म सहने वाले होते हैं। हमे आश्चर्य तब होता है, जब हमारे ही वतन के लोग चंद पैसों के खातिर अपने ही मुल्क के गुनहगारों को अपने घरो में पनाह देते हैं। इस विषय पर हमने क्या कभी सोचा कि वे ऐसा क्यों करते हैं। इसका स्पष्ट कारण है हमने उन्हें कभी अपना नहीं समझा। अपने देश के चालीस प्रतिशत हिन्दू मुसलमानों को अपने से हीन समझते हैं। कोई जन्म से हिन्दू और मुसलमान नहीं होता बल्कि हम लोग ही उन निर्दोष नवजातों के धर्मों की बेड़ियों में जकड़ देते हैं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम हिन्दू और मुसलमान बाद में हैं, इससे पहले हिन्दुस्तानी हैं। इसलिए भी अन्य देश हमारे देश को कायर समझते हैं- जब भी हमारी भारत माँ के तन के आभूषणों को उनकी मर्जी के खिलाफ नोचते रहते हैं, तो हथियार बंद होते हुए भी हम उन पर कार्यवाही करने के बजाय खामोश खड़े रहतें हैं। गुलाम भारत के गाँधी अगर आजाद भारत के वर्तमान युग में जिंदा रहते तो वह अहिंसा के महान पुजारी भी डंडे का प्रयोग सिर्फ चलने के लिए ही नहीं बल्कि आत्मसुरक्षा के लिए भी करते। हमें शांति को कायम रखना चाहिए पर शांति का मतलब कायरता नहीं।

कोकीन का घातक व्यसन

सूर्यांश सचान
षष्ठ 'क'

कोकीन में अन्य घातक पदार्थों के साथ-साथ भयंकर विष होते हैं, जो डॉ. बेनेट के मतानुसार अँतड़ियों, श्वांस प्रणाली, ग्रन्थि प्रणाली और रक्त प्रवाह प्रणाली पर घातक प्रभाव डालते हैं। इसका उपयोग प्राय: उच्च वर्ग के व्यक्ति करते हैं, जो सामाजिक बंधनों के कारण शराब या अफीम का खुला उपयोग नहीं कर पाते। भारत में वेश्याओं के यहाँ इसकी अधिक खपत है। व्यभिचारी व्यक्ति प्राय: इसका प्रयोग क्षणिक उत्तेजना के लिए किया करते हैं। इसके नशे में वे सत-असत विवेक बुद्धि को भूल जाते हैं।

कोकीन के दुष्परिणाम बड़े भयंकर हैं, इससे पाकाशय के स्नायु तथा ज्ञान तंतु अकर्मण्य हो जाते हैं। फलत: दो-दो, तीन-तीन दिन क्षुधा प्रतीत नहीं होती। शरीर कृश हो जाता है। आरंभ में कोकीन के प्रयोग से ज्ञानतंतु और स्नायु के उद्‌गम स्थान पर कुछ झनझनाहट और वेग प्रतीत होता है, परंतु यह आवेग आधे घंटे से अधिक शेष नहीं रहता। उतार प्रारंभ होने पर हृदय डूबता सा मालूम होता है। संपूर्ण शरीर पर आलस्य एवं नैराश्य की भावना छा जाती है। एक प्रकार का शैथिल्य एवं शारीरिक निर्बलता सर्वत्र छा जाती है।

जन्म देने वाली माँ और मातृभूमि भारत माता

हर्ष पटेल
षष्ठ 'ग'

जन्म देने वाली माता के समान ही हमारा पालन-पोषण करने वाली एक और माता है, वह है हमारी भारत माता जिसे हम अपनी मातृभूमि मानते हैं। यही माँ अपने सीने पर अन्न उगाकर हमारा पेट भरती है। पीने के लिए पानी और जीवित रहने के लिए हवा देती है। यही नहीं जब हम मर जाते है, तो जन्म देने वाली माँ थोड़ी देर बाद जब हमें भूमि पर लिटा देती है, तब यही मातृभूमि भारत-माता अपनी गोद में हमें सदा के लिए सुला लेती है। इस प्रकार भारत माता के कण-कण में हमारा शरीर घुल-मिल जाता है। अपने अन्न, जल, वायु से हमें जीवन देने वाली यह मातृभूमि भी हमारी माता है। इसलिए हम इसे पुण्य भूमि भी कहते हैं।

इस माता की गोद में पलने वाले हर भारतवासी आपस में भाई-बहन हैं। हम एक-दूसरे के साथ स्नेह प्रेम से रहें। अच्छा काम करें ऐसा कोई काम हमसे नहीं होना चाहिए जिससे दूसरों को कष्ट हो। वह सन्तान नेक मानी जाती है, जो अपने काम व व्यवहार से अपने माँ-बाप का नाम ऊँचा करती है। इसी प्रकार अपने देश का नाम दुनियाँ में तभी रोशन होगा, जब हम पढ़ लिखकर अच्छे इन्सान बनकर देश के काम आएँगे भारत-माता यही चाहती है कि उसकी हर सन्तान अच्छी परिश्रमी एवं देशभक्त बने, इसी से दुनिया में भारत देश सम्मान पा सकेगा।

विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान

हिमांशु यादव
एकादश 'क'

सर्वप्रथम मैं आपको एक घटना बताना चाहता हूँ। एक व्यक्ति को एक ऋषि ने एक बहुत बड़ा बोझ देकर अपने घर ले जाने को कहा। वह व्यक्ति ऋषि का बहुत सम्मान करता था, इसलिए उसने मना नहीं किया और तैयार हो गया। परन्तु वह उस बोझ को अन्यमनस्कता के साथ ले जा रहा था। रास्ते में उसे एक किसान मिला जिसने उसे बताया कि तुम्हारे सिर पर रखा बोझ तो मोतियों से भरा है। अब उस व्यक्ति की खुशी का ठिकाना न रहा। वह प्रसन्न मन से उस बोझ को ले जाने लगा।

अब इस घटना पर विचार करते हैं। क्या बाद में उस बोझ का भार कम हो गया? नहीं। अब उस व्यक्ति की मनः स्थिति बदल चुकी थी। उसे पता चल गया था कि इस बोझ को ले जाने में उसका फायदा है।

इस घटना को छात्रों के जीवन से जोड़ते हैं। हम सबको भी रत्नस्वरूप पाठ पढ़ने को दिये गये हैं। ये पाठ हमें तभी तक बोझ लगेंगे जब तक हमें यह नहीं पता होगा कि ये हमारे लिए कितने जरूरी हैं।

आज छात्रों को ये शिकायतें रहती हैं "कितना कुछ पढ़ना है।, "पढ़ना अच्छा नहीं लगता"। इन शिकायतों का समाधान ऊपर की घटना में छिपा है।

आज यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि छात्र इस बात को जाने कि वे कोई भी विषय क्यों पढ़ते हैं? जैसे हम इतिहास क्यों पढ़ते हैं। हम इतिहास इसलिए पढ़ते हैं कि हम अपने अतीत को जान सकें। अतीत में कौन-कौन से महान व्यक्ति हुए? उन्होंने क्या-क्या किया? हम भी वैसा कर सकते हैं कि नहीं? हमारा इतिहास इन सबकी जानकारी हमें देता है। इतिहास हमें कुछ सिखाता है, कुछ संदेश देता है। हर क्षेत्र के व्यक्तियों को वहाँ से मार्गदर्शन मिल सकता है। वैज्ञानिक बनकर विज्ञान के क्षेत्र में कुछ नया करने के इच्छुक लोग न्यूटन, एडीसन, आर्यभट्ट, आइन्सटीन से काफी कुछ सीख सकते हैं। देश का प्रशासन चलाने वाले चाणक्य, मैकियावेली, लेनिन, अरस्तू से काफी कुछ सीख सकते हैं। सेना के सिपाही भी सैन्य इतिहास से काफी कुछ सीख सकते हैं।

अब एक दूसरे प्रश्न पर विचार करते हैं। हम विज्ञान क्यों पढ़ते हैं? इसलिए कि परीक्षा में अच्छे अंक पा सकें। नहीं। इसलिए कि विज्ञान की आधारभूत चीजों को जानकर हम भी कुछ नया सोंचे। विज्ञान के क्षेत्र में अभी अनंत संभावनाएँ हैं। हम भी न्यूटन बन सकते हैं। देश को तकनीकी विकास की जरूरत है। हम किताबों से निकलकर वास्तविक जीवन में आयें। हम अपने जीवन और शिक्षा में तारतम्य बनायें। हमारी शिक्षा हमारे जीवन से सघनता से जुड़ी है। हम शिक्षा को जीना सीखें।

आज जरूरत है कि बच्चों में आत्मविश्वास भर जाये। बच्चे दुनिया से अपने को अलग और कम न समझें। हम सब मानसिक संकीर्णताओं से बाहर आयें। जैसा कि हम सब गीत गाते हैं-

"सभी दिशाएँ मिल जाती हैं, उस अनन्त नभ को पाना।"

॥तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

अच्छा निबन्ध कैसे लिखें?

हिमांशु यादव
एकादश 'क'

मैंने कई विद्यार्थियों को देखा है, जिन्हें यह समस्या रहती है कि अच्छा निबन्ध कैसे लिखें? मैं आप सबको बताना चाहता हूँ कि एक अच्छा निबन्ध कैसे लिखें। इसके पहले मैं एक एक्ट के बारे में बताना चाहता हूँ।

मार्च, 1878 ई. में भारत के तत्कालीन वायसराय ने एक एक्ट पारित किया जिसका नाम था- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट। इस एक्ट के द्वारा भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिये गये। अंग्रेजों ने ऐसा क्यों किया? कारण बस एक था। उस समय के क्रांतिकारियों के क्रांतिकारी विचारों से जो तूफान मच रहा है, जिनसे भारत जाग सकता है। अगर भारत जाग गया तो उनका यहाँ रहना मुश्किल हो जायेगा।

मैं आपको एक और ऐतिहासिक तथ्य बताता हूँ। बाल गंगाधर तिलक को 'मराठा' और 'केसरी' पत्रिकाओं में क्रांतिकारी लेख लिखने के कारण गिरफ्तार कर लिया। अंग्रेजों को यह भय था कि इन लेखों से महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन उभर रहा है।

ये दोनों ऐतिहासिक घटनाएँ बताने के पीछे यह कारण है कि मैं आपको कलम की ताकत से परिचित कराना चाहता हूँ। ऐसा क्या था तिलक के लेखों में जिससे अंग्रेजी सरकार डर रही थी वो एक जुनून था-

"गर कलम नहीं छीनी गई, तो हिन्दुस्तान बदलकर रख दूँगा।
इंसान है क्या चीज, मैं दुनिया का भगवान बदलकर रख दूँगा।"

ये था वो जज्बा जिससे अंग्रेजी सरकार डर रही थी। अब मैं मूल विषय पर आता हूँ। एक वो थे जो अपनी 'कलम' से 'दुनिया का भगवान' तक बदलने की हिम्मत रखते थे और आज हम कलम उठाने से डरते हैं।

निबंध अपने को वयक्त करने का एक मौका हैं अच्छा निबन्ध लिखने के लिए अपने जीवन से जुड़ी बातों पर सोचना शुरु कीजिए। इससे आपके पास 'अपने विचार' हो जायेंगे। इन्हीं विचारों को आवाज देने के लिए उन्हें सरल भाषा में लिख दीजिए। आप जो सोचते हैं, उसे दूसरों तक पहुँचा सकें, इसी का साधन है- भाषा।

निबंध लिखने का पहला कदम यह है कि देश की समस्याओं पर सोचिए। देश की समस्याएँ आपकी और हमारी ही समस्याएँ हैं। फिर कोई ऐसा विषय चुनिए जिसके बारे में आपके पास 'विचार' हो। उन्हीं को लिख दीजिए।

हम लोग बाल गंगाधर तिलक के ही देश के है। अपने अन्दर इन्हीं लोगों जैसा आत्मविश्वास लाइए। अपने अन्दर की ताकत को पहचानिए। आप की कलम में भी वो ताकत आ जायेगी जो 'दुनिया का भगवान' बदल दे।

॥तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

अकबर-बीरबल

सहस्त्राब्दि सिंह साहू
सप्तम 'ख'

मोचियों का न्यायः एक दिन बातें करते हुए बीरबल अचानक अकबर से बोला, "हुजूर। यदि कभी मुझसे कोई अपराध हो जाए, तो सजा सुनाने के लिये अपनी पसंद के न्यायाधीश (पंच) चुनने की इजाजत मुझे दी जायेगी। कृपया, मेरी यह विनती स्वीकार करें।

एक दिन असावधानी वश बीरबल से गंभीर अपराध हो गया। बीरबल के इस अपराध की ओर अकबर ने ध्यान दिलाया और सजा भुगतने को कहा।

तब बीरबल ने कहा कि पंचों का चुनाव वह स्वयं करेगा। बादशाह हैरानी भरे सवर में बोले, "यह मोची क्या न्याय करेंगे? तुम्हें पढ़े लिखे, काबिल लोगों को ही बीरबल के मुकदमें का फैसला करने का दायित्व मिला। बीरबल ने उन्हें बताया कि उससे क्या अपराध हुआ है। और वह सजा भुगतने को तैयार है। तभी मोचियों को याद हो आया कि कुछ अरसा पहले उन्हें बीरबल की वजह से काफी परेशानी उठानी पड़ी। अब उन्हें बदला लेने का मौका मिल रहा था। पहला मोची बोला, "हुजूर! बीरबल का अपराध काफी गंभीर है। उस पर सौ रूपये जुर्माना लगाया जाता है। तभी दूसरा मोची बोला, "नही, यह तो बहुत कड़ी सजा है।" उसका सोचना था कि सौ रूपये रकम बहुत ज्यादा है और इसे चुकाने में बीरबल के बीवी बच्चों को बहुत परेशानी होगी। उसने सजा में बीस रूपये कम कर दिये। तीसरे मोची को अस्सी रूपये की रकम भी बहुत ज्यादा लगी और उसने घटाकर रकम साठ रूपये कर दी।

चौथे मोची को साठ रूपये भी बहुत ज्यादा प्रतीत हुए। पांचवा मोची भी अपने साथियों से सहमत था।

आखिरकार थोड़ी बहस के बाद उन्होंने तय किया कि बीरबल को बतौर जुर्माना पच्चीस रूपये अदा करने होंगे। यह निर्णय सुनकर बादशाह अकबर तुरंत समझ गए कि बेहद चतुराई से काम लेते हुए बीरबल ने मोचियों को पंच गुना और बड़ी सजा पाने से बच गया। मोची चले आए। बादशाह के हिसाब से बीरबल के लिये तो पच्चीस रूपये की रकम कुछ भी न थी, लेकिन गरीब मोचियों के लिये एक साथ पचीस रूपये चुका पाना स्वप्न में भी संभव न था। साल भर हाड़-तोड़ मेहनत के बाद भी दस रूपये सालाना बचा पाना भी उनके लिए मुहाल था।

बादशाह का दिल गरीब मोचियों के लिए जहाँ एक ओर दया से भरा था, वहीं वह बीरबल की प्रशंसा किए बिना भी रह न सके।

संत एकनाथ

ऋषभ सिंह
अष्टम 'ख'

ज्ञान का वारिस कोई शिष्य होता है, अपना पुत्र नहीं। इसलिए मैंने ग्रन्थ को पूरा करने के लिए, पूरण (शिष्य) का चयन किया है। ये वाक्य संत एकनाथ के थे।

संत एकनाथ के आश्रम में बहुत से लोग ध्यान साधना का अभ्यास करते थे। संत एकनाथ सभी को बराबर स्नेह दिया करते थे। वहाँ एक किशोर पूरण भी अध्ययनरत था। उसकी माँ विधवा थी। वह आश्रम में किसी तरह जीवन यापन कर रही थी और अपने बेटे पूरण को पाल रही थी। आश्रम के साधक पूरण से हमेशा मजाक में कहा करते थे कि पेट भरने के लिए ही वह अपनी माँ के साथ आश्रम में टिका हुआ है पर पूरण साधकों की बातों में ध्यान नहीं देता था। वह संत एकनाथ के प्रवचन ध्यान से सुनता और उस पर अमल करने की हर संभव कोशिश किया करता था। संत एकनाथ अपने इस किशोर शिष्य की सेवा व श्रम से सदैव प्रसन्न रहते थे। जीवन के अन्तिम क्षणों में जब एकनाथ दुनियाँ से विदा ले रहे थे तो उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, "मैं जो ग्रन्थ लिख रहा था उसे पूरा पूरण से करवाना।" शिष्यों को आश्चर्य हुआ और उन सभी ने कहा, "जब आपके पुत्र हरि पंडित जैसे विद्वान सभा में मौजूद हैं, तो फिर पूरण संत एकनाथ ने कहा कि हरि को मैं पुत्र मानता हूँ, शिष्य नहीं और ज्ञान का वारिस कोई शिष्य ही होता है, पुत्र नहीं। इसीलिए मैंने ग्रन्थ को पूरा करने के लिए पूरण का चयन किया है।

कहते हैं कि एकनाथ जी के दिवंगत हो जाने पर उनके पुत्र हरि ने उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ पूरा करने की लाख कोशिश की पर पूरा न हुआ। अन्ततः उसे पूरण ने ही पूरा किया।

वनस्पतियों का हमारे जीवन से सम्बन्ध

रोहन मुकेश
अष्टम 'क'

प्राचीन काल में मनुष्य पेड़ों के नीचे तथा जंगलों में प्राकृतिक गुफाओं में रहता था। पेड़ों की छाल तथा पत्तियों से अपना तन ढाँकता था। संयोग से उसे पता चला कि बीज से नये पौधे उत्पन्न होते हैं, उसके मन में बीज बोकर गेहूँ, धान, मक्का, के पौधे उगाकर खेती करने का विचार आया। आज भी वह अपने चारों ओर पाये जाने वाले पौधों का दोहन नई-नई विधियों से कर रहा है। वनस्पतियाँ हमारे लिए अनेक प्रकार से उपयोगी हैं; जैसे अन्न हमारा प्रमुख भोजन है, चावल, गेहूँ, जौ मक्का आदि से कार्बोहाइड्रेड मिलता है। तनों का उपयोग पशुओं के भोजन के रूप में करते हैं। सभी प्रकार की दालों से प्रोटीन प्राप्त होता है। आर्किड के फलों से वेनीला प्राप्त होती है, जिससे आइस्क्रीम सुगन्धित होती है। नीम के पेड़ का प्रयोग औषधि रूप में अधिक होता है। इसे प्राकृतिक औषधालय कहते हैं। तुलसी की पत्ती का प्रयोग गले की खराश, त्वचा रोग में होता है। नीम की पत्ती एण्टीसेप्टिक त्वचा रोग को दूर करती है। सर्पगन्धा की जड़ों का चूर्ण अनिद्रा एवं रक्तचाप कम करने में उपयोग करते हैं। ईसबगोल बीच की भूसी पेचिस में, चाल मोगरा का बीज कुष्ठ रोग तथा खुजली में उपयोग, सिनकोना की छाल से मलेरिया की दवा, जामुन के बीजों का चूर्ण मधुमेह में लाभदायक होता है।

सफलता के सूत्र

आलोक कुमार
षष्ठ 'ग'

एक लकड़हारा था। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ी काटकर बेचता था वर्षों से वह यह काम करता आ रहा था। एक दिन जंगल के एक साधु ने उससे कहा - कि तुम इतने दिनों से लकड़ी काट रहे हो इससे तुम्हारा काम नहीं चलता होगा। तुम थोड़ा और आगे बढ़ जाओ। लकड़हारा आगे गया। उसने देखा जंगल में बहुत से ताँबे के टुकड़े पड़े हुए हैं। उसने बटोरा और उसे बाजार ले गया। उससे काफी आमदनी हुई। वह बहुत खुश हुआ। दूसरे दिन वह साधु के पास गया और कहा-बाबा मुझे बहुत कुछ मिल गया है। मुझे काफी पैसा मिल गया है। बाबा ने कहा-ठीक है तुम थोड़ा और भीतर जाओ। वह और भीतर गया। वहाँ उसने देखा कि चाँदी के काफी टुकड़े पड़े हुए हैं, वह उसे देखकर दंग रह गया। उसने उसे बटोरा फिर उसे बेचा जिससे उससे अधिक पैसा मिला। तीसरे दिन बाबा ने फिर उस लकड़हारे से कहा कि तुम और घने जंगल में जाओ। वह बढ़ता गया फिर उसे सोने और हीरे के टुकड़े मिले। उसकी प्रसन्नता देखकर बाबा ने उस लकड़हारे से कहा कि तुम वर्षों जंगल के किनारे लकड़ी बटोरते रहे, लेकिन तुम्हें धन नहीं मिला। जब तुम घने जंगल में बढ़ने लगे, तो अब तुम हीरे जवाहरात प्राप्त कर रहे हो। ठीक यही बात हमारे जीवन की भी है। जो लोग जीवन के अगल-बगल में घूमते रह जाते हैं वे जीवन भर लकड़ियाँ बटोरते रह जाते है, और जो जीवन में प्रवेश करना जान लेते हैं, उन्हें हीरे-जवाहरात, रत्न आदि मिलने लगते हैं। मनुष्य इसी शरीर से अच्छे काम और बुरे काम भी करता है। अच्छा काम करने पर उसे सन्तोष होता है। खुशी मिलती है और लोग प्रशंसा करते हैं। बुरे काम करने पर लोग निन्दा करते हैं, घृणा करते हैं। वास्तव में भीड़ से अलग हटकर जो व्यक्ति अपनी पहचान बनाना सीख लेता है, वह जीवन में सफल होता है। वही देश का नेतृत्व करता है, सफल होने के लिए हमें अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित करना होता है, अर्थात् परोपकार के लिए अपने जीवन का सदुपयोग करना ही सच्ची सफलता है।

एक नजर सचिन पर

आलोक कुमार
षष्ठ 'क'

महान बल्लेबाज मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर अब तक बहुत सारे रिकार्ड कायम कर चुके हैं। वे छः वर्ल्ड कप खेल चुके हैं। जिनमें कुल मैच 44 रन 2260 हैं, इनमें 6 शतक तथा 15 अर्धशतक बनायें हैं। 2003 के वर्ल्ड कप में सचिन ने 152 रन की तूफानी पारी नामीबिया के खिलाफ पीटरामार्टिजबर्ग में खेली। उन्होंने 2003 में ही 11 मैचों में 673 रन बनाकर एक शतक बनाया था। वर्ल्डकप में सबसे ज्यादा रन, सबसे ज्यादा शतक व अर्धशतक भी इन्ही के नाम है।

सचिन ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शानदार विश्व रिकार्ड 200 (नाबाद) रन की पारी खेली और आज तक कोई भी खिलाड़ी इस महान स्कोर को नहीं छू सका।

जीवन और मृत्यु का सत्य

अनुज ओमर
अष्टम 'क'

जीवन! आखिर यह जीवन क्या है? मैं हमेशा यह चिन्तन करता रहता हूँ मुझे लगता है कहीं मैं कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा। कभी-कभी मैंने अपने अन्दर झाँकने की कोशिश की परन्तु मैं नाकाम रहा। मेरे विचार से जब इंसान की मृत्यु निश्चित है, तो ईश्वर ने हम लोगों को इस धरती पर क्यों भेजा और भेजा ही था तो इस माया-मोह में क्यों डाला और सबको समान दर्जा क्यों नहीं दिया। मैं जब भी यदा-कदा रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन के किनारे पड़े वृद्ध असहाय लोगों को देखता हूँ, तो मैं भावुक हो जाता हूँ और मन में कई प्रकार के विचार आते हैं। यदि उस समय मैं समर्थ होता तो उनके लिए कुछ कर सकता और जहाँ तक अमीर घरानों के वारिसों का सवाल है वे हजारों रूपये व्यर्थ के कार्यों में खर्च करते हैं तो ईश्वर ने उन झोपड़ी, स्टेशन के किनारे रह रहे लोगों की मदद क्यों नहीं की? मेरे मन में सवाल आते हैं कि शायद उन लोगों ने पिछले जन्म में कुछ पाप किए होंगे जिनकी सजा उन्हें इस जन्म में मिल रही है। परन्तु इस जन्म में कष्ट देकर भगवान उनके पापों का लेखा-जोखा पूर्ण कर लेंगे। पर क्या वे उनके अंदर ईश्वर के प्रति उत्पन्न हुई हीनभावना के भागी नहीं होंगे? जीवन में कुछ व्यक्तियों और वस्तुओं का अनुभव सिर्फ एक बार ही प्राप्त होता है पर वे उतने समय में ही गहरी छाप छोड़ जाते हैं। मैं उन पलों को सँभाल कर रखना चाहता हूँ। मैं इस मृत्युलोक का भागी नहीं बनना चाहता और न ही कष्ट झेलना चाहता हूँ। जीवन एक स्वप्न की तरह है और जब व्यक्ति उस स्वप्न से जागता है, तो उसे संसार की कटु सच्चाई का ज्ञान होता है। साथ ही कई विरले ऐसे भी हैं, जो इस स्वप्न रूपी जीवन को सार्थक कर देते हैं। मेरी भी यही आशा है कि मैं उन विरले लोगों की तरह ही साहसी बनूँ और भविष्य में होने वाले अनुभवों के लिए सदैव तैयार रहूँ और जीवन के उस कटु सत्य के दौर से मुझे न गुजरना पड़े।

बुद्धि का सुख भी अन्तिम चिरानन्द सुख नहीं है। बुद्धि से भी ऊपर आत्मा का सुख है। माँ बच्चे को गोद में लेकर आत्मिक सुख का अनुभव कराती है। यह आत्मा की विशालता का सुख है। इसके सामने अन्य सभी सुख तुच्छ हैं। भयमुक्त और स्वार्थमुक्त होने पर सिवाय आनन्द के अन्य कुछ रह ही नहीं जाता। इसलिए व्यक्ति इसकी खोज में विशालता स्वीकार करता जाता है।

इस प्रकार शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा चारों प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आचार्य परिवार

1.	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	प्रधानाचार्य	एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान), बी.एड.
2.	श्री हेमन्त शुक्ल	प्रवर आचार्य	एम.एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
3.	श्री कैलाश जोशी	"	एम.सी.सी (गणित), बी.एड.
4.	श्रीमती शारदा राव	"	एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य), बी.एड.
5.	श्रीमती रेखा निगम	"	एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
6.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	"	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
7.	डॉ. मनोज कुमार शुक्ल	"	एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी) साहित्याचार्य, पी.एच.डी.
8.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	"	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) बी.एड. पत्रकारिता परास्नातक
9.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	आचार्य	एम.ए. (भूगोल), डी.पी.एड.
10.	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	"	एम.ए. (संस्कृत) शिक्षा शास्त्री
11.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	"	एम.ए. (इतिहास),एम.एड.
12.	श्री जगपाल सिंह	"	एम.ए. (भूगोल), बी.एड.
13.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	"	एम.एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
14.	श्री सुधीर अवस्थी	"	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
15.	श्री मनजीत सिंह	"	एम.एस.सी. (गणित), बी.एड.
16.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	"	डिप्लोमा (कम्प्यूटर) ए-लेविल, बी.एस.सी., एम.ए.
17.	श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय	"	एम.कॉम., एम.सी.ए.
18.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	"	एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
19.	श्रीमती मीना अग्रवाल	"	एम.एस.सी. (गणित) बी.एड.
20.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	"	बी.ए., बी.एड. (Vocational Course in Broad Casting & Media Entrepreneurship, Linguistics & Phonetics)
21.	श्रीमती पल्लवी अग्रवाल	"	एम.एस.सी. (वनस्पति विज्ञान)
22.	श्री सुनील दीक्षित	"	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.

23. श्री आलोक द्विवेदी	"	एम.एस.सी. (बायोकेमिस्ट्री), बी.एड.
24. श्री दुर्गा प्रसाद सिंह	"	एम.एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
25. डॉ. मधुलता त्रिपाठी	"	एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी. (संस्कृत)
26. श्री उमेश कुमार गुप्त	"	एम.एस.सी. (गणित), बी.एड.
27. श्रीमती दीप्ति अवस्थी	"	एम.एस.सी. (वनस्पति विज्ञान), बी.एड.
28. श्री वेद कुमार शर्मा	"	बी.ए., बी.एड. (आई.जी.डी. बाम्बे)
29. सुश्री प्रीति तिवारी	"	एम.एस.सी. (पर्यावरण विज्ञान, एम.फिल. एम.ए.(अंग्रेजी)
30. श्रीमती शक्ति श्रीवास्तव	"	बी.एस.सी., एम.ए. (समाज शास्त्र)
31. श्रीमती स्मिता वाजपेयी	"	एम.काम., एन.टी.टी.
32. श्री अंकुर दुबे	"	संगीत प्रभाकर

कार्यालय

1. श्री राजेन्द्र गुप्त	कार्यालय अधीक्षक
2. श्री ओंकारनाथ गुप्त	
3. श्री बी.पी. सिंह	
4. श्री रिण्टू घोष	

छात्रावास

1. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	छात्रावास अधीक्षक
2. श्री बाबू सिंह बिसेन	
3. श्री शैलेश दीक्षित	
4. श्री अजय मिश्र	
5. श्री किशन स्वरूप अवस्थी	

ENGLISH SECTION

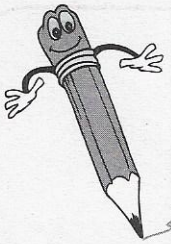

FROM THE EDITOR'S DESK

Dear students, parents and friends

We are living in an era of rapid transition. Individuals are faced with moral dilemmas at every turn of their lives. It is very essential to have a strong foundation of moral values and I am very much convinced that at Pt. Deen Dayal we are providing our students, the strength of character to face the challenges of life and to take the right decisions as and when required.

"True education is when one knows how to love, how to live, how to hope and how to pray". So dear students may your endeavours throughout this year be, to imbibe the values that will enhance your personality, build a strong character and make you an asset to your family and the nation.

The year gone by has given us many challenges and opportunities to strive for, for excellence in academics as well as extra curricular activities. I am very thankful to God for all that we, at Pt. Deen Dayal, were able to achieve in imparting quality and value based education to the students. I am also thankful to all parents for their support, guidance and co-operation.

Meanwhile, dear children, you would be into your new classes, with new books and new dreams for the new academic session. Moving up another class may not mean growing up biographically (as after a birthday) but certainly it means growing up more responsibly.

All the very best !

Mrs. Tripti Prem
Primary Co-ordinator

Having a talent isn't worth much unless you know what to do with it.

I MET AN ANGEL.....

The public and people, I certainly wouldn't convene as I honestly mean that there are Angels in heaven and God does beckon to some to come to earth to preach that virtue wins over vice and goodness never dies. Believe me or not, I can bet as fifty eight years ago (year 1954), I met the Angel.... indeed. Fine and fair, tall and towering in metaculous white, he stood in the college - verandah with his creamy skin, gentle face and innocent eyes. So impressive, so graceful and so majestic was he in figure and face that I could not help wishing him. It was later on, I was informed that he was Barrister Narendrajit Singh - the moving spirit behind all these famous educational & vocational institutes.

I rushed to him at once to request the Principal Mr. L. C. Tandon to allow me to offer all the three Literatures in B.A. class as I explained to him how I was at a loss to leave the university of Allahabad only for this cause. To my astonishment without a moment's delay he sent me straight away to the Principal with a note that I should be helped then and there.

This was the beginning of my career. I joined not only the V.S.S.D. College but also the hostel, that too at a concessional rate. To my good luck, the professors like Mr. V.D. Mishra & Dr. H.N. Mishra (English) Mr. A. N. Sharma & Mr. K.C. Deva "Brihaspati" (Hindi) Prof. S. N. Pandey & Dr. R.S. Tripathi (Sanskrit) were by all means unique and unparalleled and I did very well studying at their holy feet. My acquaintance with Mr. Dhirendrajit Singh brought me closer to him and I certainly feel proud that I enjoyed his fatherly affection. Undoubtedly, the reverend Buji was also specially kind to me and I dined by her side almost for many days every fortnight.

God is great but greater are the Angels for they shower their eternal love and care on the needy and poor. Surely I am today what his kindness made me - a veteran teacher, a successful Principal (KVS), a poet, a writer and above all a true human being who will never shrink from helping any man. Last but not least, his qualities are beyond description. He was not a man but an 'Age of knowledge and learning'. He can never be forgotten. He shall always remain unique, universal and important. Even the dare devil death cannot sweep away his foot prints from the sands of time. I feel myself fortunate in extending my humble tribute to his loving memory.

"As living witness stands this centenary,
An Angel dear nice and noble was He.
Sent surely to us by God Almighty
To preach, to teach and bless thee humanity."

K.K. Gupta "Nishchhal"
Ex-Lecturer (English)

3 and 3 can make 33 and zero as well as 6 therefore, think and use your imagination.

ANNUAL SPORTS FUNCTION

On the 1st, 2nd & 3rd of February, a grand sports event was organised at Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharm Vidyalaya, Azad Nagar, Kanpur. The Annual Sports showcased the sporting talents of the athletes who were filled with thrill and exhilaration. Mr. Naresh Kumar, the Chief Guest inaugurated the function and graced the occasion with his presence. Mr. P. N. Bajpai, the Principal of the school, welcomed the esteemed guests and parent community.

The lighting of the torch signalled the beginning of the Annual Sports Day. Soon after, the Chief Guest hoisted the sports flag and declared the Meet open. This was followed by a scintillating P.T. performance by Class-I and a unique pyramid formation by Class-V. The athletic events began with the 8 x 100 m finals followed by the sack race, lemon race, book balancing race and many other delightful races by the juniors.

Prizes to the winners of the athletic events were given away by the Chief Guest much to the cheering and excitement of the winners.

Mrs. Tripti Prem
(Primary Co-ordinator)

THANKS MA !

Thanks Ma ! for giving me birth
for making me a part of this beautiful earth.
Thanks Ma ! for providing me the best education,
you carried your responsibilities well and with devotion.
You scolded me when when I went wrong,
but thanks Ma ! ..... for hugging me again,
and not bridging the distance for long,
Thanks Ma ! for helping me to become strong.
Thanks Ma ! for giving me a proper name,
so that I can earn both respect and fame.
Thanks Ma ! for criticizing me and being loud,
when I become a lot too proud.
Thanks Ma ! for being the best mother,
I feel proud to call you 'Ma' and be your 'son'.

Sankalp Singh Sengar
6 - C

Having a talent isn't worth much unless you know what to do with it.

CHIMKI - THE SQUIRREL

Once upon a time, in the forest of a mysterious land of India, there lived a squirrel, Chimki, with her family in a hole in the bark of a tall tree.

Chimki and her family loved to run around and chase each other in the tall grass and wild flowers that grew at the base of the trees.

Still, Chimki was always worried for her family, for on the same oak tree, there lived a pair of eagles, Cheel and Haka. The eagles would often sweep down and carry away little animals for food.

Chimki was always careful and kept an eye on the sky but the younger squirrels would be having too much fun to be watchful. Some had become a meal for the sharp - eyed eagles.

Then, came a time when Cheel and Haka had eggs in their nest on the oak tree.

Now, they were hunting for food even more often and Chimki could hardly sleep because she was worried for her children.

One Sunny afternoon, Chimki was burying walnuts in the ground near the tree when she heard a rustling sound in the tall grass. She knew from the sound that it was not a squirrel and she scurried up the tree to look down from a safe height.

Out of the tall grass came a large black snake, Kalu who was hissing with pleasure and singing a song.

"Juicy, juicy eagle eggs

Sitting alone in the nest

Before the eagles will be back

They will all be Kalu's snack".

Kalu did not see Chimki watching him from the tree. He coiled himself up and hid in a hole near the roots of the tree. Chimki understood that when the eagles left the next day to hunt for food, Kalu would climb the tree and eat their eggs. Chimki was happy, for she knew that the eagles would move away to a different part of the forest on losing their eggs here.

That night, Chimki was very excited thinking about finally being able to get rid of Cheel and Haka.

She was also restless, for she knew that Cheel and Haka had lived on that tree for a long time and were very happy about having babies.

Chimki was not sure of what she would do next. She stayed up thinking till she made a decision and then she slept very well.

Admit your mistakes gracefully.

She woke up the next morning and scared yet brave, she started to climb the eagle's nest. Cheel and Haka were shocked to see the little squirrel climbing into their nest. Chimki told them all about Kalu. Haka dropped big rocks in the hole where Kalu was hiding and trapped him. Chimki did not ask for anything in return but no eagle troubled her family again.

Written by : **Alok Mehrotra**

Submitted by :
Prakhar Srivastava

Class - 1

LAUGHTER IS THE BEST MEDICINE

One day, a teacher told her children to write an essay on 'A Cricket Match'. All the students were busy in writing the essay except one student. He wrote - "Due to rain, no match".

✧✧✧

Two students were fighting outside the examination hall. Then a teacher came and asked them the reason. Then one student answered "That fool left the paper blank.".

Sir - So what is your problem ?

2nd student - Sir, I also did the same, the teacher will think that I cheated.

✧✧✧

Girl - Do you know why Egyptian children are confused ?

Boy - Why ?

Girl - Because after death their daddies become mummies.

✧✧✧

Deepak - I have to act like a stupid in the play. How to rehearse ?

Mahesh - There is no need to rehearse, just appear what you are.

Arjun Yadav
Class - 5

Keep yourself away from temptation.

MY SCHOOL

1. The name of my school is Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharm Vidyalaya.
2. The name of my Principal is Shri P.N. Bajpai.
3. There is a big library in my school.
4. There are many swings in my school.
5. The building of my school is very beautiful.

Dhruv Omer
Class - 1

ANIMAL HELPERS

Bees gives us honey
Cows give us milk.
Hens give eggs
And silkworms silk.

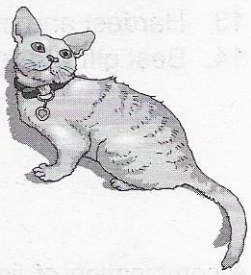

Sheep give us wool
We make into clothes.
Animals help us
In ways like those.

Dogs guide the blind
And some herd sheep.
Some others guard homes
While are are fast asleep.

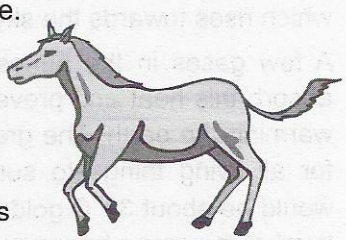

Horses give rides
On country roads.
And mules help farmers
Pull heavy loads.

Animals are pets
Like a bird or a cat.
Animals help us
In ways like that.

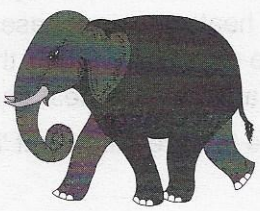

Prakhar Pandey
Class - 2

Lessons are not given; they are taken.

ALWAYS REMEMBER

1. The best day - Today.
2. Hardest thing to do - To begin
3. The greatest handicap - Fear
4. Easiest thing to do - Finding faults.
5. Most useless asset - Pride
6. Most useful asset - Humility
7. The greatest mistake - Giving up
8. The greatest stumbling block - Egotism
9. The greatest comfort - Work well done
10. Most disagreeable person - The complainer.
11. Worst bankruptcy - Loss of enthusiasm.
12. Greatest need - Common sense.
13. Hardest and most painful to accept - Defeat.
14. Best gift - Forgiveness.

Archit Pandey
7 - B

GLOBAL WARMING

A combination of light and heat energy from the sun reaches the earth and warms the land, oceans and air. When the earth's surface is warmed up, it radiates heat which rises towards the sky.

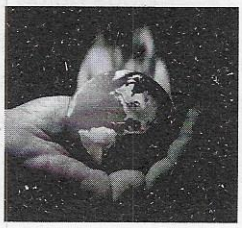

A few gases in the atmosphere called the green house gases absorb this heat and prevent it from escaping in the space, thus warming the earth. The green house gases keep the earth warm for all living things to survive. Without this warmth, the earth would be about 33°C golden than it is today ! However, when the level of the green house gases in the atmosphere increases, they trap the excess heat. Over time, this results in global warming. For years now, human beings have been burning fuels like coal and oil in factories, power plants, industries, vehicles etc. By pumping tons and tons of carbondioxide, methane and other heat trapping gases into the atmosphere, we have been disrupting the balance of Nature. When there are many heat trapping gases in the atmosphere, they will absorb more heat and warm the planet beyond limits.

So let us take a pledge to save our planet 'Earth'.

Aanand Mishra
6 - C

Anger is one letter short of danger.

DID YOU KNOW ABOUT TIGERS ?

- The Bengal Tiger's roar can be heard from up to three kilometers away.
- White tigers have a pink nose and pink paw pads.
- Tigers also roar to tell other tigers to keep out of their territory.
- Unlike most big cats, tigers are fond of water. In the wild they are often found bathing in ponds, lakes and rivers.
- Because of the soft pads on its paws, a tiger can walk without making a sound.
- Tigers will occasionally eat vegetation for dietary fibre.
- A tiger can go two to three days without eating.
- From its nose to the tip of its tail on an average an Indian male tiger measures 10 feet.
- There are many sub - species of tigers like :
  - ★ Indian Tiger
  - ★ Caspian Tiger
  - ★ Bengal Tiger
  - ★ Javan Tiger
  - ★ Siberian Tiger
  - ★ Sumatran Tiger
  - ★ South China Tiger

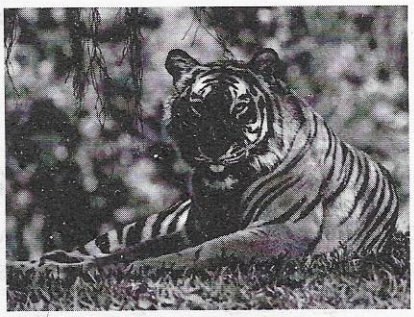

Kritika Mishra
8 - B

MATHEMAGIC

Here is a number which will surprise you.

This magic number is 142857.

142857 x 2 : 285714
142857 x 3 : 428571
142857 x 4 : 571428
142857 x 5 : 714285
142857 x 6 : 857142

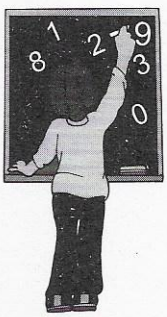

Rohit Anand
8 - B

Opportunity sometimes knocks very softly. Learn to listen.

SECRETS OF SUCCESS

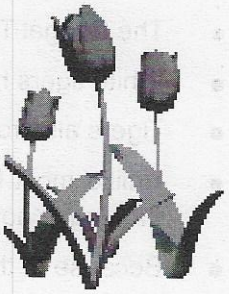

Read - but write more
Talk - but think more
Play - but study more
I promise, you will succeed for sure.

Eat - but chew more
Weep - but laugh more
Sleep - but walk more
I promise, you will succeed for sure.

Punish - but pardon more
Spend - but save more
Consume - but produce more
I promise, you will succeed for sure.

Preach - but follow more
Order - but do more
Hate - but love more
I promise, you will succeed for sure.

Lokendra Pratap Singh
8 - B

100% DISCIPLINE

To achieve anything in life we must have 100% discipline and it can be proved mathematically.
If we give a number to all the alphabets of English, see what happens.

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
Y	Z										
25	26										

D	04
I	09
S	19
C	03
I	09
P	16
L	12
I	09
N	14
E	05
SUM =	**100**

Yash Mishra
6 - B

Books are the best investment you can ever make.

WHAT IF ???

Last night, while I lay thinking here
Some 'What Ifs' crawled inside my ear
And pranced and partied all night long
And sang their same old 'What If' song.
What if I'm dumb in school ?
What if they've closed the swimming pool ?
What if I get beaten up ?
What if worms poison my cup ?
What if I start to cry ?
What if I get sick and die ?
What if I flunk that test ?
What if green hair grows on my chest ?
What if nobody likes me ?
Every thing seems swell, and then
The night time, 'What If' strikes again !'

Prince Singh
6 - B

MANY WONDERS OF THE UNIVERSE

Ever seen water spin ? Hurricanes, tornadoes and bigger bodies of water always go clockwise in the Southern Hemisphere and anticlockwise in the Northern Hemisphere. This is due to the rotation of the earth.

Ever wondered how big the sun is ? Well.... only about 3,30,330 time larger than the earth.

The radius of the earth at the North Pole is 44 mm longer than that at the South Pole.

All the planets in the solar system are named after Gods, except the one we live on: Earth! Did you know that there is zero gravity at the centre of earth ?

Ever experienced a solar eclipse ? Be sure to wear something warm. During a total solar eclipse the temperature can drop by 6 degree celsius.

On Uranus, summer lasts for 21 years. And so does winter.

Pranjul Omer
8 - B

To the optimist all doors have handles and hinges.
To the pessimist - all doors have locks and latches.

THE EVENING IS COMING

The evening is coming,
the sun sinks to rest.
The birds are all flying,
straight home to the nest.
"Caw" says the crow,
as he flies overhead;
"It's time little children,
are going to bed!"

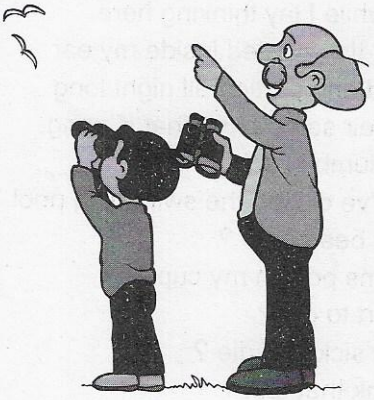

Mansi Shukla
Class - 1

CHANGE WHAT YOU CAN

When you change your thinking,
you change your beliefs,
When you change your beliefs,
you change your expectations.
When you change your expectations,
you change your attitude.
When you change your attitude,
you change your behaviour.
When you change your behaviour,
you change your performance.
When you change your performance,
you change your life.

Shitanshu Singh Bhadauria
Class - 10

Let us learn from a humble madariwala. He does his job very well and is stress free because he focusses on one ball at a time.

ENGLISH

As gardens grow with flowers
English grows with words
Words that have secret powers
Words that give joy like birds.

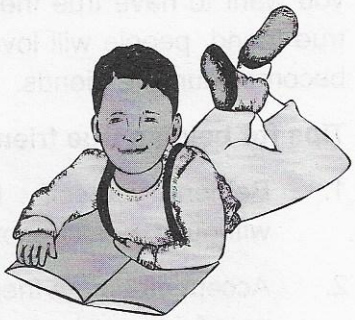

Some of the words you say
Both in and out of school
Are brighter than the day
And deeper than a pool.

Some words there are that dance
Some words there are that sigh
The fool's words come by chance
The poet's to heaven fly.

When you are grown, your tongue
Should give the joys of birds.
Get while you are young
The gift of English words.

Anukriti Shukla
8 - A

DO YOU KNOW ??

1. Amazon is the largest river in the world.
2. Real is the currency of Brazil.
3. Abyssinia is the old name for Ethiopia.
4. Andaman and Nicobar Islands are called the "Nature's Paradise".
5. Study of inscriptions is called Epigraphy.
6. Thailand is called the 'Land of white elephants'.
7. Mother Teresa was the first to receive the Nobel Prize.
8. In 1498 Vasco-da-Gama found a new sea route to India.

Divya
7 - B

TIPS FOR TRUE FRIENDSHIP

We all want to have true friends, but the quality of our friends depends on us. If you want to have true friends, you should be a true friend yourself. By being a true friend, people will love to be around you and many of them will eventually become your true friends.

Tips for being a true friend

1. Befriend yourself : Friendship with one self is very important, because without it, one cannot be friends with anyone else in the world.
2. Accept others : A friend is someone who understands your past, believes in your future and accepts you just the way you are.
4. Be a good listener : Friends are those rare people who ask how we are and then wait to hear the answer.
5. Enrich others' life : Friendship is a treasured gift and every time friends talk with each other they feel as if they are getting richer and richer.
6. Be interested : If you want to be interesting you should first be interested. Be curious. Cultivate interest about many things. If you do that, you can genuinely be enthusiastic. When people talk to you about something, they will feel appreciated and will love to be around you.
7. Trust others : Confidence is the foundation of friendship. Trust begets trust.
8. Have integrity : There can be no friendship without confidence and no confidence without integrity.
9. See the positive side of others : A true friend is some one who thinks that you are a good egg even though he knows that you are slightly cracked.
10. Be present in difficult times : True friendship isn't about being there when it's convenient, it's about being there when it's not.

Satyendra Singh Yadav
8 - B

Let us learn from a humble madariwala. He does his job very well and is stress free because he focusses on one ball at a time.

A MATHEMATICAL WEDDING

Mrs. & Mr. Algebra
request the pleasure of your company
on the occasion
of the wedding of their son
Differenciation
with
Integration
(D/o Mrs. & Mr. Calculus)

On the day on which Ramanujan was born
at the time of his birth.

Venue :
Matrix Hall
Square Root Tower
5, Parallel Line Street
Bodmas Nagar.
(Near Polynomial Hospital)

With best compliments from :
Rational Numbers
Indices
Theorums.

Bus Route : Tan 90°, or 30°, Sec 45°, Cot 15°
(Kindly avoid fractions)

Harsh Wardhan
Class - 5

You cannot be anything, if you want to be everything.

CHRISTMAS

Christmas is one of the most celebrated festivals of the world. It falls on December 25th of each year and is celebrated by Christians all over the world. Christmas is celebrated to mark the birth of Jesus Christ. The Christians follow his principles of love, truth and compassion.

During Christmas, the shops are well - lit, the houses are cleaned and brightly illuminated. Everybody gets into a festive mood. Christmas carols are sung to glorify the birth of Lord Jesus Christ. People dress in their best outfits to visit their relatives and friends.

Preeti Kumari
6 - A

DO ALL.... YOU CAN

Do all the good you can
By all the means you can
In all the ways you can
In all the places you can
At all the times you can
To all the people you can
As long as you can.

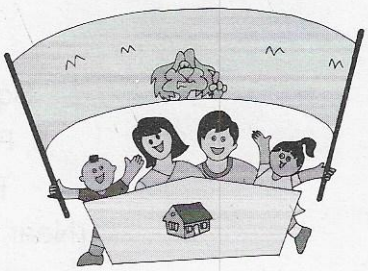

HOW DID THE PLANETS FORM ?

The sun was born from an immense cloud of gas and dust 4,500 million years ago. Then it was surrounded by a disk of surplus material. Gradually, this disk formed into a number of smaller, cold bodies orbitting the sun. They are the planets. Together the sun and the planets make up the solar system.

Ajay Kunar
Class - 5

Laugh - If you cannot laugh, you will miss many things in life.
People who cannot find time for recreation are prone to illness.

DID YOU KNOW ?

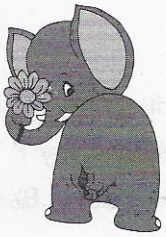

1. Gold fish do not have a stomach.
2. A giraffe can clean its ears with its 21 inch tongue.
3. In olden days, light houses were lit by candles.
4. The Chinese invented fire works to scare away evil spirits.
5. Smelling bananas and green apples can help you lose weight.
6. Mice that feed on peanuts have energy charged muscles and a lower heart rate, much like trained athletes.

Prince Singh
6 - B

DEAR COW

Dear Cow, you are very sweet,
You have soft eyes and black feet.
Your milk is white like the snow.
Mother says, your milk makes,
Children grow.
She also says, big or small,
Milk is good for us all.

Mansi Shukla
Class - 1

MY SISTER

My sister, I love you.
Play with me, when I call you.
Help me, when I ask you to
My sister, I love you.

Akshat Dubey
Class - 1

Keep yourself away from temptation.

THE LAUGHING - MANTRA

Husband to his wife : Drink fast

Wife : Why ?

Husband : Because hot coffee is for Rs. 5 and cold coffee is for Rs. 10.

✧✧✧

Teacher : This writing is very poor. Ask your father to meet me tomorrow.

Harshit : How do you know it's my father's writing ?

✧✧✧

Amit Kumar
6 - C

NEW YEAR GREETINGS IN 16 LANGUAGES

English	A Happy New Year
Latin	Vee Aaras Arus Tious
German	Glook Rich New Jaahar
Urdu	Sall Mubarak
Hindi	Nav Varsh Mangalmaya Ho
Arabian	Mallan aayee din
Sanskrit	Nutan Varsh Sukhee Bhav
Bengali	Sukhee Nutan Vatsar
Marathi	Navin Varsh Sukhehen Javs
Tamil	Puchuvarsh Vajham
Oriya	Nutan Varsh Shukhee Jav
Sindhi	New sall ji Mubarak
Gujrati	Navu Varsh Safal Thavon
Kannad	Shubh Kon Basan Vagdi

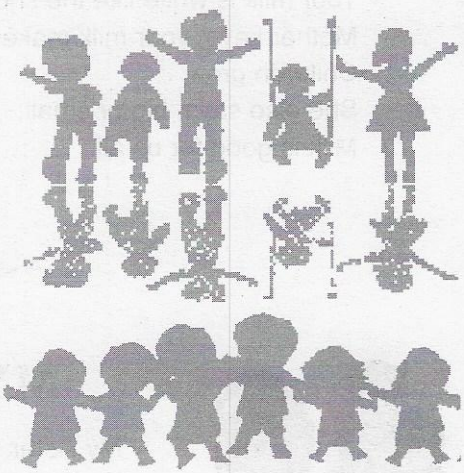

Lokendra Pratap Singh
8 - B

It doesn't matter whether you can be proud of your ancestors, what matters is, if they can be proud of you.

WHAT IS I.M.E.I. NUMBER ?

I.M.E.I. stands for International Mobile Equipment Identity.

I.M.E.I. is a 14/15 digit that is assigned to all mobile phones. It is a number which helps the people recover their lost mobile phones.

There is a website : www.magicmobilesecurity.com which is very helpful. When the mobile phone is lost or stolen, at first we open this website and after that we put the IMEI number into it. By entering the IMEI we come to know the SIM card being used in that mobile, the customer's name who is using the sim and the place where the mobile phone is being used at that time.

Rohit Anand
8 - B

THE BEST USE OF TIME

Life is what we make it. Our future depends on what we do today. Success in life comes with proper planning. Success does not fly and come to us, but, we have to work hard for it. We all know that 'Fortune favours the brave'. Similarly we can also overcome our difficulties with courage and determination.

Proper planning results in good performance. If one wants to get success in life, one must make the proper use of time. It is said that time is money. In the real sense of the world time is more valuable than money. We can re-earn money after spending it but we cannot regain time which has been lost.

If we really want to succeed in life, we should learn how to use time. There is no shortcut to success. To reach the top we must climb step by step. We must focus on our target and try hard to achieve it. We must always remember that hard work is the key to success. I end with the words of Swami Vivekanand:

"Arise, awake and stop not
till the goal is achieved."

Sonam
8 - B

To the optimist all doors have handles and hinges.
To the pessimist - all doors have locks and latches.

WHO IS A TEACHER ?

A teacher is someone who teaches you the finer aspects of life.
Someone who encourages you to share your gifts and talents wisely.
And inspires you to value truth above all.
And friendship, over power, wealth and fame.
A teacher is someone who helps
you to find happiness in simple pleasures.
And to see the rainbow and not the falling rain.
A teacher is someone who encourages you
to live each day to your potential
and find good in everything you see.
And grooms you into the person only you were meant to be.

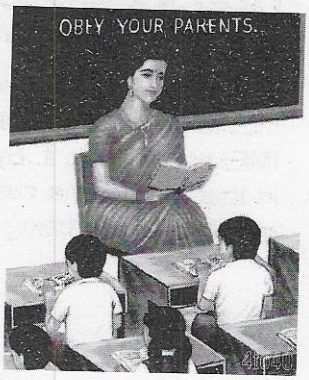

Ashutosh Gupta
8 - B

DAYS OF THE WEEK

Monday we have so much fun.
Tuesday is for lesson some.
Wednesday brings us lots of cheer.
Thursday seems so very dear.
On Friday we learn a numbers few.
On Saturday there is joy anew.
Sunday is the day for rest.
Mummy says, you are the best.

Harshwardhan
5

Admit your mistakes gracefully.

KEYS TO SUCCESS

1. Start your day with good thoughts - It leads you to success.
2. Respect your parents and elders - They are your well wishers.
3. Choose good friends - They will share your problems.
4. Be active - In helps you to be efficient.
5. Be disciplined - It speaks of your culture.
6. Cultivate good habits and hobbies - They give you self confidence.
7. Be kind and generous - That will give you joy and peace.
8. Pray to God - He will always take care of you.

Kartikay Pratap Singh
7 - C

TEACHERS

Teachers are like beautiful pearls
They take care of all boys and girls
They are very helpful and kind
Everything they teach settles in our mind.
They are never rude
They never scold
They make us confident, they make us bold.
Their minds are intelligent
Their hearts are pure
They are very gentle, they are very nice
We will not forget them or their advice.
They always help us, they always love us.
We love our teachers
We sing in chorus
"Listen to your teacher, it will certainly pay in the long run".

Jaya Srivastava
Class - 5

WINNERS OF VARIOUS COMPETITIONS HELD IN THE PRIMARY WING

Cartoon Making Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Akshat Dubey	Shruti Mishra	Rudra Raj
2nd	Mansi Shukla	Shikhar Dwivedi	Ansh Singh
3rd	Prakhar Srivastava	Mayank Sharma	Adrika Tripathi
		Akhand Pratap Singh	

Coloring Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Ayushi Katiyar	Aditya Thakur	Adrika Tripathi
2nd	Vani Negi	Srishti Dubey	Ansh Singh
3rd	Mansi Shukla	Safal	Armaan Agnihotri

English Handwriting Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Mansi Shukla	Atul Pal	Armaan Agnihotri
2nd	Arjun Gupta	Himanshi	Aditya Kumar
3rd	Abhay Singh	Srishti Dubey	Ishan Gaur

Rakhi Making Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Vani Negi	Kissna Trivedi	Aditya Sharma
2nd	Mansi Shukla	Prakhar Tiwari	Harshwardhan
3rd	Dhruv Omar	Harshwardhan	Adrika Tripathi

Diya Decoration Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Akshat	Shikhar Dwivedi	Ansh Singh
2nd	Prakhar	Himanshi	Armaan Agnihotri
3rd	Dhruv Omar	Kissna Trivedi	Anjali Yadav

Quality means doing it right the first time.

हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता

	Class I	Class II	Class V
1st	Prakhar	Atul Pal	Pratyaksh Sachan
2nd	Vani Vajpeyi	Vishal Tiwari	Shraddha Katiyar
3rd	Dhruv Omar	Dhruv Singh	Ankit Katiyar

Flag Making Competition

	Class I	Class II	Class V
1st	Ghanisht Umrao	Shruti	Abhinav Shukla
2nd	Ayushi Katiyar	Divyanshu	Ansh Singh
3rd	Akshat Dubey	Vishal Tiwari	Abhijay Krishna

CONGRATULATIONS TO THE SPORTS CHAMPIONS

Class I

Ball Race

1st Mansi Shukla
2nd Prakhar Srivastava
3rd Ghanisht Umrao

Sack Race

1st Mansi Shukla
2nd Prakhar Srivastava
3rd Shashank Gupta

Chocolate Race

1st Vani Negi
2nd Ayushi Katiyar
3rd Vani Vajpayee

Three Legged Race

1st Anukalp Kashyap & Ghanisht Umrao
2nd Akarsh Srivastava & Divyansh Dixit
3rd Arjun Gupta & Shrey Nishad

Class II

Lemon Race

1st Prakhar Pandey
2nd Lakshya Dixit

Ball Race

1st Srishti Dubey
2nd Shruti Mishra
3rd Himanshi Pandey

It doesn't matter whether you can be proud of your ancestors, what matters is, if they can be proud of you.

Sack Race

1st Mayank Yadav
2nd Divyanshu Adhikari

Banana Race

1st Harsh Vardhan Rai
2nd Abhishek Pal
3rd Sparsh Katiyar

One Leg Race

1st Divyanshu Adhikari
2nd Atul Pal
3rd Prakhar Tiwari

Frog Jump

1st Saurabh Dubey
2nd Anugrah Jha
3rd Mayank Yadav

Class - V

Needle and Thread Race

1st Aditya Kumar

Book Balance Race

1st Aman Mishra

Lemon Race

1st Ansh Singh
2nd Vaibhav Kannaujia
3rd Dhanurdhar Tripathi

Water Bowl Race

1st Jaya Srivastava
2nd Aman Mishra

100 m. Race

1st Arman Agnihotri
2nd Sumit Singh
3rd Abhinav Shukla

Relay Race

First

Dhanurdhar Tripathi	(Class V)
Harshwardhan	(Class V)
Saurabh Dubey	(Class II)
Prakhar Srivastava	(Class I)

Second

Armaan Agnihotri	(Class V)
Aditya Kumar	(Class V)
Divyanshu Adhikari	(Class II)
Shrey Nishad	(Class I)

Third

Prakhar Mishra	(Class V)
Aman Mishra	(Class V)
Mayank Yadav	(Class II)
Ayush Gupta	(Class I)

Give fish to your son, he eats for a day; teach him to fish, he eats everyday.

ART ATTACK

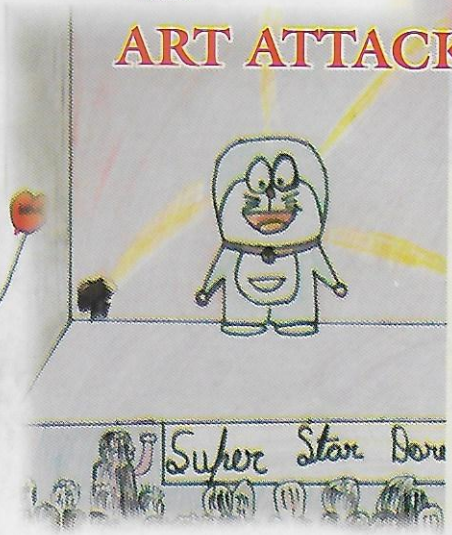

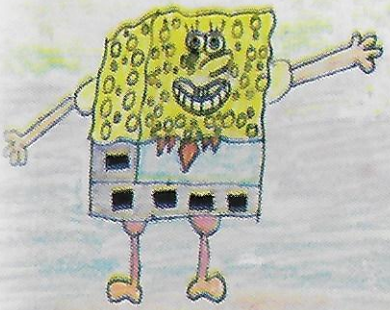

सूरज की –

एक किरण
पीपल के पत्ते पर
ठहरी है

एक किरण
बेले के फूलों पर
फिसली है

एक किरण
ताल की तरंगों पर
थिरकी है

एक किरण
शिशु की दँतुलियों पर
बिहँसी है।

–त्रिलोचन

Sharda Graphics (P) Ltd., Kanpur • Ph. : 3072925